CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

B1

निवेदन

'उत्सवः सुधियामेव हन्त दुर्मेधसो हताः' विद्यार्थिजनोचित इन उद्‌गारों के शमन हेतु 'दशकुमारचरित' की पूर्वपीठिका पर भूमिका सहित हिन्दी-संस्कृत-टीका लिखने में लेखकद्वय का प्रयास नये दृष्टिविन्दुओं के साथ चर्चित विषयों के संकलन का ही है, पूर्णतया मौलिक कथमपि नहीं। भूमिका में 'दण्डी का साहित्यिक मूल्याङ्कन' के अतिरिक्त शेष भूमिका सहित टीका भाग श्री शिव-वालक द्विवेदी जी द्वारा सम्पादित किया गया है जिसमें 'दण्डी' के पदलालित्य' एवं उनकी वशवर्तिनी भाषा के सौष्ठव को उन्मीलित करने के प्रयास में व्याकरणात्मक टिप्पणियों का विशेष महत्त्व है। दण्डी की कृतियों के साहित्यिक आनन्द का लाभ उठाने के लिये जिस पृष्ठभूमि की आवश्यकता मुझे अनुभव हुई उसी को आलोचनात्मक कृतियों में तथा स्वयं 'दशकुमारचरित' के कलेवर में प्राप्त मल्यों के आधार पर समझे हुए तथ्यों का संकलन दण्डी के साहित्यिक मूल्याङ्कन में है। वस्तुतः दशकुमारचरित रचयिता दण्डी एवं 'काव्यादर्श प्रणेता' दण्डी को एक ही व्यक्ति मानने वाली परम्परा ने 'दश-कुमारचरित' के साहित्यिक अनुशीलन स्वरूप केवल 'दण्डिनः पदलालित्यम्' ही देख पाया है बाकी सब कुछ तो काव्यादर्श रचयिता की प्रतिभा के विषय में ही कहा गया है। नवीन अनुसंधानों ने सिद्ध कर दिया है कि 'दशकुमार-चरित' साहित्यिक दृष्टि से इतनी महत्त्वपूर्ण एवं परिपूर्ण कृति है कि 'मृच्छ-कटिक' की भाँति प्रसिद्ध कवियों को उसके लेखकत्व का आश्रय अपेक्षित है इसीलिये परम्परा उसके लेखक में उसकोटि की प्रतिभा का आकलन कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकी । मैंने जो कुछ लिखा है केवल 'दशकुमारचरित' के आधार पर ही लिखा है, 'काव्यादर्श' के चमत्कार जन्य पूर्वाग्रह से रहित होकर, अतः उसकी प्रामाणिकता सुधीजन परीक्ष्य है । इस कृति की पाण्डुलिपि के संयोजन में कु० सुमन मिश्रा बी० ए० का पर्याप्त सहयोग रहा है साथ ही मुद्रणादि कार्यों में श्री जगदीश त्रिपाठी एम० ए० ने अत्यन्त सहयोग किया है । एतदर्थ ये लोग आशीर्वाद तथा धन्यवाद के भाजन हैं ।

विनीत

दिनाङ्क २१-११-७५ —लेखकद्वय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय-सूची

भूमिका ९-७८

संस्कृत-काव्य का उद्भव एवं विकास ९
गद्यसाहित्य का उद्भव एवं विकास १३
काव्य-प्रयोजन २०
काव्य का स्वरूप २३
काव्य के भेद २६
गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति २७
कथा एवं आख्यायिका ३०
महाकवि दण्डी ३३
कृतियों के आलोक में महाकवि दण्डी ३७
दशकुमारचरित का साहित्यिक मूल्याङ्कन ४४
दशकुमारचरित में प्रकृतिचित्रण ७५

दशकुमारचरितम् (पूर्वपीठिका) १-२३२

प्रथमोच्छ्वासः १
द्वितीयोच्छ्वासः ९६
तृतीयोच्छ्वासः १२५
चतुर्थोच्छ्वासः १४५
पञ्चमोच्छ्वासः १८२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

संस्कृत-काव्य का उद्भव एवं विकास

संस्कृत भाषा संसार की समस्त भाषाओं से प्राचीन है। वाइस काङ्मय अन्य भाषाओं से श्रेष्ठ, सम्पन्न एवं मनोहर है। भारतीय-संस्कृति से अनुप्राणित सुरभारती-मन्दाकिनी की सुधा-धारा में अवगाहन कर हृदय को परम विश्रान्ति मिलती है। यह युग-युगों से प्रवाहित होने वाली भारतीय चिन्तन की वह अक्षुण्ण धारा है जो कि अनेक संक्रमण-व्युत्क्रमणों को पार करती हुई आज भी अपने अनवद्य वपु के द्वारा प्रवाहित होती चली जा रही है। भारत तथा भारतीयता से प्रेम रखने वाले विद्वज्जन जिसे सम्मान की दृष्टि से देखते हुए जिसके उपदेशामृत को पान कर तृप्ति का अनुभव नहीं करते हैं, उस विश्व-विश्रुत सुरभारती की उपासना से ही भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन आदि का तात्त्विक अनुशीलन किया जा सकता है। भारत की समस्त मौलिक निधि संस्कृत में ही निहित है—इस कथन में रंचक मात्र भी सन्देह नहीं है। भारतीय दर्शन, विज्ञान, गणित, फलित, ज्योतिष, संगीत, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, विधि-शास्त्र, स्थापत्य, आयुर्वेद, इतिहास, पुराण, काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, कलायें आदि सब कुछ संस्कृत में ही है। अतः हम यह संदेह के बिना कह सकते हैं कि भारत के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान अत्यावश्यक है। प्रस्तुत प्रसंग संस्कृतकाव्य से सम्बन्धित है। अतः यहाँ संस्कृत काव्य-विषयक चर्चा ही प्रसंगानुकूल है। संस्कृतकाव्य के अनुशीलन से पूर्व यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है कि इसका उद्भव एवं विकास किस प्रकार हुआ है?

यह निश्चय पूर्वक कह सकना कठिन है कि भारतीय काव्य-कला की सृष्टि कब और किस प्रकार हुई? मननशील मनीषी इस तथ्य की अनेक प्रकार से मीमांसा करते हैं, परन्तु प्रामाणिक पहलुओं के अभाव में उक्त प्रश्न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के समाधान के सन्दर्भ में कोई निश्चित निर्णय कर लेना अत्यन्त कठिन है। फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि भारतीय काव्य-कला की सृष्टि सहस्रों वर्ष पूर्व हो चुकी थी, जो आज भी अपने नूतन स्वरूप को लेकर प्रवाहित होती चली आ रही है। किसी निश्चित निमित्त को काव्य में कारण के रूप में दे सकना तो असम्भव है, पर सामान्य दृष्टि से हम यह कह सकते हैं कि काव्य मानवीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है, अतएव यह मानव जाति की सृष्टि के साथ ही उत्पन्न हुआ है। कारण यह है कि काव्य में मानवीय भावनाओं की प्रधानता हैं। इसीलिए काव्य को सहृदयसंवेद्य, सहृदयाह्लादक आदि कहा जाता है। मानव मानस को जब सहसा सुख-दुःख, क्रोध, करुणा, भय, विभ्रम, विलास आदि की मार्मिक अनुभूति होती है, जब हृदय के मर्मस्थल पर इनके संवेग का गम्भीर आघात होता है तो वह सहसा ही उस अनुभूति से अनुस्यूत होकर उन भावों को अभिव्यक्त करना चाहता है। यही कारण है कि विश्व विभूति, महानुभूति, महाकवि भवभूति ने मर्म-स्थल की संवेदना पर आघात से करुणामयी अनुभूति से ओत-प्रोत मानस होकर करुण रस को ही सभी रसों का कारण माना है। उनका कथन है कि–

"एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्
भिन्नः पृथग् पृथगिव श्रयेत विवर्तान्।
आवर्त्तबुद्बुदतरङ्गमयान् विकारान्
अम्भो यथासलिलमेव हि तत् समस्तम्॥

जब वह सहृदय तन्मय होकर भावसम्पृक्तमानस से झूमने लगता है तो उसी स्थिति में उसके बहिर्निर्गत सुधोपम छलकते हुए भाव काव्यधारा के रूप में प्रवाहित होने लगते हैं। इसी को लक्ष्य कर कहा गया है–

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से निकला होगा गान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निकल कर नयनों से चुपचाप,
वही होगी कविता अनजान ॥"

इस प्रकार हम देखते हैं कि जब आनन्दातिरेक से मन आप्यायित हो जाता है तो वह रस रूप में कविता के स्वरूप को लेकर लोक के समक्ष प्रकट होता है । लौकिक संस्कृत काव्य के जन्म के सन्दर्भ में उपर्युक्त तथ्य ही कारण रूप में रहता है । लौकिक संस्कृत के आदिकाव्य रामायण के प्रणयन में यही भावात्मकता मूल में है । एक समय जब महर्षि वाल्मीकि माध्यन्दिन सवन के लिए तमसा नामक नदी पर पहुँचते हैं तो वहाँ व्याध के द्वारा मारे गये क्रौञ्चयुगल में से एक को विलाप करते हुए देखते हैं । जिसे देखकर सहसा ही उनके मानसिक भाव निकल पड़ते हैं–

"मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥"

(अर्थात् निषाद ! तू अधिक समय तक प्रतिष्ठा को नहीं प्राप्त कर सकेगा जो कि तूने क्रौञ्च युगल में से काम से मोहित एक को मार डाला है ।)

ये वस्तुतः वाल्मीकि के मानस के उद्‌गार हैं जो कि उनके शोकाकुल हृदय से सहसा निकल पड़ते हैं । महर्षि वाल्मीकि का यह शोक ही कविता है जो कि उनके हृदय का स्पर्श कर उन्हें कुछ बोलने के लिए विवश कर देता है । यह उनकी रागात्मिका वृत्ति ही है जो उन्हें काव्य व्यापार में प्रवृत्त करती है । उनका यह अनिर्वचनीय शोक ही श्लोक का रूप धारण कर लेता है––

"सोऽनुव्याहरणाद् भूयः शोकः श्लोकत्वमागतः ।" और वे विचार करने लगते हैं

"पादबद्धोऽक्षरसमः तन्त्रीलयसमन्वितः ।
शोकार्त्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा ।"

इस सन्दर्भ में यह कथन भी अप्रासंगिक न होगा कि चाहे सुख का भाव हो अथवा दुःख का, निर्वेद अथवा ग्लानि का, परन्तु ये सभी भाव आनन्द देने वाले होते हैं । यहाँ यह प्रश्न उठता है कि करुणादि रस के दुःखमय होने पर उनमें आनन्दत्व कैसे रह सकता है ? इसका समाधान करते हुए कविराज विश्वनाथ जी कहते हैं–

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'करुणादावपि रसे जायते यत्परं सुखम् ।
सचेतसामनुभवः प्रमाणं तत्र केवलम् ।।"

(अर्थात् करुण आदि रसों में भी जो परमानन्द प्राप्त होता है, उसमें केवल सहृदयों का अनुभव ही प्रमाण है।)

काव्य की सम्यक् अनुभूति केवल सहृदय को ही होती है सहृदयता से रहित हृदय काव्य मार्ग में प्रवृत्त ही नहीं हो सकता । अतएव कहा भी गया है

"सवासनानां सभ्यानां रसस्यास्वादनं भवेत् ।
निर्वासनास्तु रङ्गान्तः काष्ठकुड्याश्मसन्निभाः ।।"

(अर्थात् वासना से युक्त सहृदय रसिकों को ही रस का आस्वादन होता है। वासना से रहित पुरुष तो नाट्यशाला में काष्ठ, दीवार तथा पत्थर के समान जड़वत् पड़े रहते हैं।)

जिस प्रकार युद्धादि में होने वाले नखक्षत, दन्ताघात, केशाकर्षण, अङ्ग-मर्दन आदि दुःख के कारण होते हैं परन्तु सुरत में इनसे भी सुख ही होता है उसी प्रकार काव्य में स्थित दुःखादि भाव भी सुख के जनक होते हैं।

भारतीय विचार धारा काव्य को आनन्दस्वरूप मानती है। आनन्दस्वरूप होने के कारण ही रस को ब्रह्म कहा गया है। (रसो वै सः, रस ह्येवायं लब्ध्वा

हेतुत्वं शोकहर्षादिर्गतेभ्यो लोकसंश्रयात् । शोकहर्षादयो लोके जायन्तां नाम लौकिकाः ।। अलौकिकविभावत्वं प्राप्तेभ्यः काव्यसंश्रयात् । सुखंसंजायते तेभ्यः सर्वेभ्योऽपीति का क्षतिः ।। ये खलु वनवासादयो लोके 'दुःखकारणानि' इत्युच्यन्ते त एव हि काव्यनाट्यसमर्पिता अलौकिकविभावनव्यापारतया कारणशब्दवाच्यतां विहायालौकिकविभावशब्दवाच्यत्वं भजन्ते । तेभ्यश्च सुरते दन्तघातादिभ्य इव सुखमेव जायते । अतश्च लौकिकशोकहर्षादिकारणेभ्यो लौकिकशोकहर्षादयो जायन्ते । इति लोक एव प्रतिनियमः । काव्ये पुनः सर्वेभ्योऽपि विभावादिभ्यः सुखमेव जायते' इति नियमान्न कश्चिद्दोषः ।

साहित्यदर्पण ३ । ६–७ ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आनन्दीभवति) उसी को वेदान्ती सच्चिदानन्द कहते हैं। इसी आनन्द की प्राप्ति के लिए काव्य का विकास हुआ है। प्रसिद्ध संस्कृत काव्यालोचक आचार्य मम्मट कविताकामिनी को ह्लादैकमयी कहकर उसे नवरसरुचिरा बतलाते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि काव्य की सृष्टि में भावना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मानव की सुखदु:खात्मक अनुभूति ही काव्य का रूप धारण कर लेती है। इस तथ्य के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि काव्य का मानव जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। मानव जीवन से उनके भावों को पृथक् नहीं किया जा सकता है। अतः मानव जाति के उद्भव के साथ ही साथ काव्य का उद्भव स्वीकार किया जा सकता है और मानव जाति के विकास के साथ ही साथ काव्य विकास होता आया है।

गद्यसाहित्य का उद्भव एवं विकास

गद्य की उत्पत्ति के विषय में विचार करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रारम्भ में मानव के भाव पद्य की अपेक्षा गद्य में ही रहे होंगे; क्योंकि प्राथमिक अभिव्यक्ति छन्दोबद्ध भाषा में होनी सम्भव नहीं है। अतः इसमें सन्देह नहीं है कि गद्य पद्य की अपेक्षा प्राचीनतर है।

संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत गद्य का प्रयोग उसके प्राचीनतम वैदिक वाङ्मय में ही देखने को मिलता है। यद्यपि ऋग्वेद में गद्य का अभाव है परन्तु फिर भी जर्मन के सुप्रसिद्ध विद्वान् ओल्डेन वर्ग ने गद्य की स्थित ऋग्वेद में मानी है। उनका विचार है कि ऋग्वेद संवाद सूक्तों में गद्य का सम्मिश्रण रहा होगा परन्तु शनैः शनैः वह लुप्त हो गया होगा। क्योंकि पद्य की अपेक्षा गद्य की स्मृति अधिक समय तक नहीं रहती है। गद्य का प्राचीनतम रूप हमें कृष्ण यजुर्वेद में मिलता है। कृष्ण यजुर्वेद को कृष्णत्व प्राप्त कराने में गद्य का मिश्रण ही कारण है। इसके अतिरिक्त समस्त ब्राह्मण साहित्य गद्यमय है। आरण्यकों और उपनिषदों में भी गद्य की प्रचुरता है। संक्षेप में हम गद्य-साहित्य के विकास को इस प्रकार विभक्त कर सकते हैं—

१. वैदिक साहित्य का गद्य

(क) वेदकालीन गद्य, (ख) ब्राह्मणग्रन्थ, (ग) उपनिषद्, (घ) उप-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निषदुत्तरकालीन-गद्य ।

२. लौकिकसाहित्य का गद्य

(क) दण्डी, (ख) सुबन्धु, (ग) बाणभट्ट, (घ) बाण से परवर्ती गद्य, (ङ) आधुनिक काल का गद्य।

(क) वेदकालीन गद्य–वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त होने वाला गद्य सरस, सरल एवं सहज है। इसमें प्रौढ़ता और समास बहुलता का अभाव है। वैदिक गद्य में सीधे सादे और छोटे-छोटे शब्दों का प्रयोग हुआ है। वाक्यों में रोचकता सरसता और सरलता का समावेश है। समासों का प्रयोग नाममात्र के लिए है। उपमा और रूपक जैसे अलंकारों का सुन्दर सन्निवेश गद्य के कमनीय कलेवर को कान्त बना रहा है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित गद्य भाग को देखें–

'व्रात्य आसीदीयमान एव स प्रजापति समैरयत् । स प्रजापतिः सुवर्णमात्मन्नपश्यत् तत्प्राजनयत् । तदेकमभवत् तल्ललाममभवत्, तन्महदभवत् तज्ज्येष्ठमभवत्, तत् ब्रह्माभवत्, तत्तपोऽभवत्, तत्सत्यमभवत तेन प्राजायत ।'

(अथर्व १५ काण्ड १ सूक्तम्)

(ख) ब्राह्मण-ग्रन्थ–ब्राह्मण ग्रन्थों में भी सुन्दर, सरस एवं चित्ताकर्षक गद्य मिलता है। ब्राह्मणग्रन्थों में भी प्रयुक्त हुए गद्यों में सरलता एवं सुन्दरता का अपूर्व सामञ्जस्य है। उदाहरण के लिए निम्न गद्यखण्ड को देखें–

अग्निर्वै देवानामवमो विष्णुः परमस्तदन्तरेण सर्वा अन्या देवता । अग्नावैष्णवं पुरोडाशं निर्वपन्ति दीक्षणीयमेकादशकपालं सर्वाभ्य एवैनं तद्देवताभ्योऽनन्तरायं निर्वपन्ति । (ऐतरेय ब्राह्मणम् १ ।१)

ब्राह्मणग्रन्थों के ही समान आरण्यक ग्रन्थों में भी सुन्दर व सरस गद्य का प्रयोग मिलता है।

(ग) उपनिषद्–उपनिषद् ग्रन्थों का गद्य ब्राह्मणग्रन्थों के ही समान है। इसकी भाषा सरस, सरल और सजीव है। इसमें लम्बे-लम्बे समास वाले पदों का प्रयोग न होकर पुनरुक्ति के द्वारा वाक्यों को हृदय में आत्मसात् कराने का प्रयास परिलक्षित होता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित गद्य भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को देखें—

"वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति । सत्यं वद । धर्मं चर । स्वाध्यायान्मा प्रमदः । आचार्य्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः ।

सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न प्रमदितव्यम्······मातृदेवोभव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । अतिथि देवो भव······श्रद्धया देयम् । अश्रद्धयादेयम् । श्रिया देयम् । ह्रिया देयम् । भिया देयम् । संविदा देयम् । एष आदेशः । एषा वेदोपनिषत् । एतदनुशासनम् । एवमुपासितव्यम् । एवमु चैतदुपास्यम् ।

(घ) **उपनिषदुत्तरकालीन गद्य**—इस काल में वैदिक और लौकिक संस्कृत के गद्य का सामञ्जस्य रहता है । यह दोनों गद्यों की सन्धि का काल है । उपनिषद् साहित्य के पश्चात् वेदाङ्ग साहित्य में जो गद्य मिलता है उसमें समास शैली के दर्शन होने लगते हैं । यहीं से संक्षेपीकरण की प्रवृत्ति दिखलायी देने लगती है । इस शैली का चरम विकास पाणिनि की अष्टाध्यायी के सूत्रों में मिलता है । महर्षि पाणिनि ने समास शैली को अपनाकर गागर में सागर ही भर दिया है । यास्क का निरुक्त, भारतीय दर्शन और समस्त वेदाङ्ग साहित्य का गद्य इसी शैली में है । इस शैली ने आगे चलकर जिस संस्कृत गद्य का प्रवर्तन किया उसे परिष्कृत और अलंकृत गद्य कहा जा सकता है । इस काल के गद्य को अध्ययन की सुविधा के लिए हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं—१. पौराणिक गद्य २. शास्त्रीय गद्य ३. शिलालेखीय गद्य ।

१. **पौराणिक गद्य**—इस गद्य के अन्तर्गत महाभारत एवं पुराणों का गद्य आता है । पौराणिक गद्य सरस, स्वाभाविक एवं चमत्कारपूर्ण है । यत्र तत्र अलंकारों का भी प्रयोग हुआ है । कहीं-कहीं साहित्यिकता के भी दर्शन होते हैं । उदाहरण के लिए श्रीमद्भागवत के प्रौढ़ गद्य को देखें—

सा च तदाश्रमोपवनमतिरमणीयं विविधनिविडविटपिविटपनिकरसंश्लिष्टपुरटलतारूढ़स्थलविहङ्गममिथुनैः प्रोच्यमानश्रुतिभिः प्रतिबोध्यमानसलिलकुक्कुटकारण्डवकलहंसादिभिर्विचित्रमुपकूजितामलजलाशयकमलाकरमुपबभ्राम ।

(श्रीमद्भागवत ५।२।४)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा

तामेवाविदूरे मधुकरीमिव सुमनस उपजिघ्रन्तीं दिविजमनुजमनोनयनाल्हाद-दुघैर्गतिविहारव्रीडाविनयावलोकसुस्वराक्षरावयवैर्मनसि नृणां कुसुमायुधस्य विदधतीं विवरं निजमुखविगलितामृतासवसहासभाषणामोदमदान्धमधुकरनिकरो-परोधेन द्रुतपदविन्यासेन वल्गुस्पन्दनस्तनकलशकबरभाररशनां देवीं तदवलोकनेन विवृतावसरस्य भगवतो मकरध्वजस्य वशमुपनीतो जडवदिति होवाच ।

(श्रीमद्भागवत ५।२।६)

२. **शास्त्रीयगद्य**—शास्त्रीयगद्य हमें व्याकरण, दर्शन आदि ग्रन्थों में मिलता है। इस शैली का चरम लक्ष्य अर्थ की अभिव्यक्ति रहा है। चाहे जिस प्रकार के शब्दों का प्रयोग हो; परन्तु भावाभिव्यक्ति स्पष्ट होनी चाहिए। उदाहरण के लिए निम्नलिखित गद्यांश देखें—

ये पुनः कार्याभावा निर्वृत्तौ तावत् तेषां यत्नः क्रियते। तद्यथा—घटेन कार्यं करिष्यन् कुम्भकारकुलं गत्वाह—"कुरु घटं कार्यमनेन करिष्यामि। न तद्वच्छ-ब्दान् प्रयुयुक्षमाणो वैयाकरणकुलं गत्वाह—'कुरु शब्दान् प्रयोक्ष्य' इति। ताव-त्येवमर्थमुपादाय शब्दान् प्रयुञ्जते।'

(महाभाष्यम्)

आचार्य जयन्तभट्ट ने न्यायमञ्जरी नामक ग्रन्थ में अत्यन्त सुन्दर, सरस और प्राञ्जल गद्य का प्रयोग किया है। उनके गद्य में व्यंग्योक्ति की प्रधानता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित गद्यखण्ड को देखें—

आः क्षुद्रतार्किक। सर्वत्रानभिज्ञोऽसि, ब्रह्मैव जीवात्मानो नहि ततोऽन्ये। नहि दहनपिण्डाद् भेदेनापि भान्तः स्फुलिङ्गाः अग्निस्वरूपा भवन्ति तत् किं ब्रह्मण एवाविधा ? न च ब्रह्मणोऽविद्या।

३. **शिलालेखीय गद्य**—शिलालेखों में प्राप्त होने वाला गद्य अत्यन्त गम्भीर सरस एवं पाण्डित्यपूर्ण है। इस समय तक प्रौढ़ एवं पाण्डित्यपूर्ण गद्य की रचना होने लग गयी थी। शिलालेख के गद्य में प्रौढ़ता, प्राञ्जलता, मंजुलता, अलौ-किकता, अलंकारता आदि गुण विद्यमान हैं। रुद्रदामन् के गिरनार के लेख में गद्य की उत्कृष्टता देखें—

"स्फुटलघुमधुरचित्रकान्तशब्दसमयोदारालंकृत······गद्यपद्यप्रमाणमानोन्मान-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वरगतिवर्णसारसत्त्वादिभिः परमलक्षणव्यञ्जनैरुपेतकान्तमूर्तिना स्वयमधिगतमहाक्षत्रपनाम्ना नरेन्द्रकन्यास्वयंवरानेकमाल्यप्राप्तदाम्ना महाक्षत्रपेण रुद्रदाम्ना वर्षसहस्राय गोब्राह्मणार्थंधर्मकीर्तिवृद्धयर्थं चापिडयित्वा करविशिष्टप्रणयक्रियाभिः पौरजानपदं जनं स्वस्मात्कोशान्महता घनौघेनानतिमहता च कालेन त्रिगुणतरविस्तारायामं सेतुं विधाय संवर्तते······सुदर्शनतरं कारितम् ।"

इस प्रकार इस गद्य को देखने के पश्चात् हम यह कह सकते हैं कि इस समय तक अलंकृत एवं प्रौढ़ गद्य की सृष्टि हो चुकी थी । यह प्रौढ़ गद्य लेखन की कला सहसा ही आविर्भूत नहीं हुई होगी । इसमें निश्चित ही शताब्दियों का प्रयास रहा होगा । कुछ ऐसे संकेत मिलते हैं जिनसे अलंकृत गद्य-ग्रन्थों का अनुमान लगाया जा सकता है । महर्षि कात्यायन ने अपने वार्तिकों में आख्यायिका का उल्लेख किया है—

"लुवाख्यायिकाभ्यो बहुलम्, आख्यानाख्यायिकेतिहासपुराणेभ्यश्च ।"

महर्षि पतञ्जलि ने भी लिखा है—"अधिकृत्य कृते ग्रन्थे बहुलं लुग्वक्तव्यः ।" वासवदत्ता, सुमनोत्तरा न च भवति भैमरथी ।"

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वासवदत्ता, सुमनोत्तरा और भैमरथी ये तीन आख्यायिकायें अवश्य ही रही हैं जो कि उपलब्ध नहीं हैं । इनके अतिरिक्त भोज एवं दण्डी ने मनोवति, वररुचि ने चारुमति आदि गद्य ग्रन्थों का उल्लेख किया है जो कि सम्प्रति उपलब्ध नहीं हैं ।

यद्यपि अनेक गद्यग्रन्थों के दर्शन नहीं हो रहे हैं परन्तु इनसे यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि गद्यकाव्य का विकास क्रमिक हुआ है । संस्कृत गद्यकाव्य का जो अलंकृत रूप हमें उपलब्ध हो रहा है वह सहसा ही आविर्भूत नहीं हुआ अपितु उसके पहले उस क्षेत्र में निरन्तर अभ्यास और प्रयत्न होता रहा होगा ।

आचार्य दण्डी—अलंकृत संस्कृत गद्य साहित्य में आचार्य दण्डी का अप्रतिम स्थान है । इन्हें अलंकृत संस्कृत के प्रथम गद्यकार के रूप में माना जाता है । इनके वास्तविक नाम का आज भी पता नहीं है । दण्डी तो इनकी उपाधि थी । इनके ग्रन्थ काव्यादर्श के अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इनका जन्म-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थान विदर्भ देश है और ये दाक्षिणात्य हैं। इनके समय के विषय में विद्वानों में मतभेद है। अधिकांश विद्वान् इन्हें छठी शताब्दी का बतलाते हैं। इनकी भाषा शैली प्रसादगुणोपेत है। इनके विषय में अग्रिम पृष्ठों पर विस्तार से बतलाया जायगा।

सुबन्धु—दण्डी के पश्चात् अलंकृत गद्य साहित्यकारों में महाकवि सुबन्धु का नाम लिया जाता है। सुबन्धु के गद्य में प्रौढ़ता एवं प्राञ्जलता का मंजुल सामञ्जस्य है। इनका समय भी ईशा की छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही ठहरता है। इनका लिखा हुआ वासवदत्ता नामक एक मात्र ग्रन्थरत्न उपलब्ध है। इनकी यह कृति प्रत्यक्षर श्लेषमयी होने के कारण संस्कृत साहित्य में अत्यंत प्रतिष्ठित भी है। इनके ग्रन्थ में चमत्कार प्रदर्शन प्रवृत्ति के दर्शन अधिक हो रहे हैं। ऐसा लगता है कि वे मानों शब्दों को पकड़-पकड़ कर अपनी कथा को अलंकृत और चमत्कृत करने में लगे हों। इस विषय में उन्होंने अपनी पाण्डित्य-प्रदर्शन प्रवृत्ति का सहयोग लिया है। निम्नलिखित उद्धरण को देखें जहाँ अनुप्रास अलंकार की छटा छिटक रही है—

"सुकान्ते कान्तिमति मन्द मन्दमपनय वाष्पविन्दून्। यूथिकालंकृतयूथिकं संचारय नलिनीदलतालवृन्तेनार्द्र वातान्।"

बाणभट्ट—संस्कृत गद्यसाहित्य में महाकवि बाणभट्ट का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके गद्यकाव्य संस्कृत गद्यजगत् में तुलना नहीं रखते हैं। इनका स्थितिकाल सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्धकाल है। महाकवि बाणभट्ट की कीर्ति-कौमुदी को बिखेरने का श्रेय 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' नामक गद्य ग्रन्थों को है। इनके अतिरिक्त भी निम्नलिखित रचनायें महाकवि बाणभट्ट की ही बतलायी जाती हैं—

(१) चण्डीशतक, (२) पार्वतीपरिणय, (३) मुकुटताडितक और (४) पद्य कादम्बरी।

महाकवि बाण का गद्य तत्कालीन गद्य शैलियों के समन्वित रूप का परिचायक है। बाण ने अपनी गद्य शैली में भावपक्ष और कलापक्ष दोनों का सम्यक् निर्वाह किया है। आदर्श गद्य शैली के स्वरूप का उल्लेख वे स्वयं इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार करते हैं—

> "नवोऽर्थो जातिरग्राम्या श्लेषोऽक्लिष्टः स्फुटो रसः ।
> विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुष्करम् ॥"

"अर्थात् नूतन एवं चमत्कारपूर्ण अर्थ, सुरुचिपूर्ण स्वभावोक्ति, सरस-श्लेष, स्पष्ट रूप से प्रतीत होने वाला रस तथा अक्षरों की दृढ़बन्धता—ये सब विशेषताएँ किसी काव्य में एक साथ प्राप्त होनी कठिन हैं।" बाण के गद्य में ये सभी गुण समन्वित रूप में मिल जाते हैं।

बाण पाञ्चाली गद्यरीति के आचार्य हैं। उन्होंने अर्थ के अनुरूप शब्दों की योजना की है। बाण की विषयानुरूपिणी शैली उनके गद्य को स्वाभाविक तथा प्रभावपूर्ण बनाने में समर्थ है। कोमलकान्त पदावली से युक्त पम्पासर का वर्णन देखें—

"उत्फुल्लकुमुदकुवलयकह्लारम्, उन्निद्रारविन्दमधुविन्दुबद्धचन्द्रकम्, अलिकुलपटलान्धकारितसौगन्धिकम्, सारसितसमदसारसम्, अम्बुरुहमधुपानमत्तकलहंसकामिनीकृतकोलाहलम्, अनेकजलचरपतङ्गशतसञ्चलनचलितवाचालवीचिमालम्, अनिलोल्लासितकल्लोलशिशिरशीकराब्धदुर्दिनम् ।"

बाण ने अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है। उनके लम्बे-लम्बे समस्त पद पाठकों के चित्त को आल्हादित कर देते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि महाकवि बाणभट्ट के गद्य में समस्त विशेषताएँ समन्वित रूप में विद्यमान हैं। उनके विषय में श्री चन्द्रदेवकी निम्नलिखित उक्ति प्रसिद्ध है—

> श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषये केचिद्रसे चापरेऽ
> लंकारे कतिचित्सदर्थविषये चान्ये कथावर्णने ।
> आ सर्वत्र गभीरधीरकविताविन्ध्याटवी चातुरी
> संचारीकविकुम्भिकुम्भभिदुरो बाणस्तु पंचाननः ॥

बाणभट्ट के अनन्तर कई एक गद्य लेखकों ने उन्हीं का अनुकरण किया है। इनमें धनपाल की तिलकमञ्जरी, वादीभसिंह की गद्यचिन्तामणि, वामन-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भट्टवाण का वेमभूपालचरित और अनन्तशर्मा का मुद्राराक्षसपूर्वसंकथानक अधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं ।

आधुनिककाल का गद्य—आधुनिक गद्य लेखकों में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास, पण्डित हृषीकेष भट्टाचार्य, पण्डित क्षमाराव कवियित्री, पण्डित विश्वेश्वर पांडेय के नाम उल्लेखनीय हैं । इन लेखकों की भाषा सरस सरल एवं प्रसादगुणोपेत है । कहीं-कहीं पांडित्य प्रदर्शन की भी प्रवृत्ति पायी जाती है । इनके अतिरिक्त पण्डित मेधावृत, टी राजम्मा, श्रीनारायण शास्त्री खिस्ते, श्रीकृष्णमाचार्य, टी०के० गणपति शास्त्री, पण्डित रामावतार शर्मा, श्री द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री, डा० हरिदत्त शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

काव्य-प्रयोजन

मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह दुःख से निवृत्त होकर सुख शान्ति को प्राप्त करना चाहता है । इस सुखोपलब्धि के लिए हमारे यहाँ अनेक प्रकार से सोचा विचारा गया है । यद्यपि वेदाध्ययन, तपश्चर्या, दर्शन आदि अनेक साधन उस सुख-सिद्धि में हेतु हैं, परन्तु मानव जाति की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह सरल से सरल साधन के द्वारा अपना प्रयोजन सिद्ध करना चाहता है, उसे कठिन परिश्रम इष्ट नहीं है । एतदर्थ उसने एक ऐसे मार्ग का अनुसंधान किया है जो कि सरल, सरस एवं जनसाधारण को प्राप्तव्य है—यही काव्य नाम से प्रसिद्ध है ।

हमारे यहाँ काव्यप्रयोजन के विषय में प्राचीनकाल से ही विचार होता चला आ रहा है । यहाँ पाश्चात्त्य काव्य समीक्षकों के "Art for arts sake" (कला केवल कला के लिए) के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं किया गया है । हमारे मनीषियों ने कला को पर्याप्त महत्त्व दिया है । कला का सम्बन्ध केवल भौतिक तथा बाह्य विषयों तक ही सीमित नहीं है अपितु वह हृदय पक्ष से सम्बन्ध रखती है । अतएव कहा गया है—

"विश्रान्तिर्यस्य सम्भोगे सा कला न कला मता ।
लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला ।।"

अर्थात् जिसकी उपयोगिता सम्भोग में ही समाप्त हो जाती है वह कला-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कला नहीं है अपितु जिसके द्वारा आत्मा को परम आनन्द की अनुभूति होती है, वही उत्कृष्ट कोटी की कला है ।"

भरत मुनि का विचार है कि काव्य का प्रयोजन, लोक का मनोरंजन एवं शोकपीड़ित तथा परिश्रान्त जनों को विश्रान्ति प्रदान करना है–

वेदविद्येतिहासानामाख्यानपरिकल्पनम् ।
विनोदजननं लोके नाट्यमेतद् भविष्यति ।।
दुःखार्त्तानां श्रमार्त्तानां शोकार्त्तानां तपस्विनाम् ।
विश्रामजननं लोके नाट्यमेतद् भविष्यति ।।

काव्य-प्रयोजन की व्याख्या करते हुए कविराज विश्वनाथ कहते हैं कि "काव्य के द्वारा अल्पबुद्धि मानव भी सुखपूर्वक धर्म, अर्थ काम एवं मोक्ष रूप पुरुषार्थचतुष्टय को प्राप्त कर सकता है–

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि ।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते ।।

काव्य की उपादेयता के विषय में अग्निपुराण में कहा गया है कि संसार में मनुष्य होना दुर्लभ है, विद्याप्राप्ति इससे भी दुर्लभ है, कवित्वशक्ति उससे भी दुर्लभ है और कविप्रतिभा तो अत्यन्त दुर्लभ है–

"नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ।।"

काव्य-प्रयोजन पर वाग्देवतावतार आचार्य मम्मट ने विस्तारपूर्वक विचार किया है। वे इस प्रकार लिखते हैं –

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ।।"

अर्थात् काव्य रचना यश प्राप्ति के लिए, धनार्जन के लिए, व्यवहार ज्ञान के लिए, अमंगल-विनाश के लिए, सद्यः परमानन्द की प्राप्ति के लिए और प्रियतमा के समान उपदेश देने के लिए होता है । प्रस्तुत सन्दर्भ में आचार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मम्मट ने[1] कान्तासम्मित उपदेश की मीमांसा करते हुए कहा है कि किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए (१) प्रभुसम्मित (२) मित्रसम्मित और (३) कान्तासम्मित उपदेशों से प्रेरणा प्राप्त होती है।

(१) वेदशास्त्रों का उपदेश राजा या स्वामी की आज्ञा के समान होता है, इसमें शब्द की प्रधानता रहती है। आज्ञा-प्रधान होने के कारण लोग इस उपदेश को उस भाव से नहीं ग्रहण करते हैं जिस प्रकार अन्य उपदेशों को।

(२) पुराणादि का उपदेश मित्र के समान है। जिस प्रकार कोई मित्र किसी मित्र को प्रयोजन समझाकर उसे किसी कार्य के लिए प्रेरित करता है उसी प्रकार पुराणादि उचित मार्ग दर्शन कराके किसी व्यक्ति को कार्य में प्रवृत्त करते हैं।

(३) तीसरे प्रकार का उपदेश कान्ता के समान है। जिस प्रकार कोई प्रियतमा सरसता के साथ अपने प्रिय को अपनी बात सुनाने के लिए आकृष्ट कर किसी कार्य के लिए प्रेरित करती है उसी प्रकार काव्य भी श्रोता को सरसता के द्वारा आकृष्ट कर उसे समुचित शिक्षा देता है। इस प्रकार काव्य का उपदेश कान्तासम्मित उपदेश है। पाश्चात्य समालोचकों का काव्य प्रयोजन के सम्बन्ध में इस प्रकार अभिमत है–

"To teach, to please, these are the poets aim or at once to porofit and to amuse"

—Horace

इस प्रकार हम देखते हैं कि मम्मट का काव्यप्रयोजन पाश्चात्य समीक्षकों से एक विचित्र साम्य रखता है। काव्य के द्वारा ही वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्रीहर्ष आदि अनेक महाकवि अत्य-

१. प्रभुसम्मितशब्दप्रधानवेदादिशास्त्रेभ्यः सुहृत्सम्मितार्थतात्पर्यवत्पुराणादीतिहासेभ्यश्च शब्दार्थयोर्गुणभावेन रसाङ्गभूतव्यापारप्रवणतया विलक्षणं यत्काव्यं लोकोत्तरवर्णनानिपुणकविकर्म तत् कान्तेव सरसतापादानेनाभिमुखीकृत्य रामादिवद्वर्तितव्यं न रावणादिवदित्युपदेशं च यथायोगं कवेः सहृदयस्य च करोतीति सर्वथा तत्र यतनीयम्। —(काव्यप्रकाश)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धिक यश प्राप्त कर सके हैं । ऐसे ब्रह्मानन्द-सहोदर काव्यशास्त्र के परिशीलन में अनुरक्त होना मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति ही है ।

काव्य का स्वरूप

भारतीय समालोचकों ने कवि को प्रजापति की पदवी से विभूषित किया है[1] । महावैयाकरण श्री भानु जी दीक्षित ने कवि शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है—"कवते श्लोकान् ग्रथते वर्णयति वा कविः" अर्थात् वर्णन करने वाले को कवि कहते हैं और "कवेर्भावः कर्म काव्यम्" अर्थात् कवि के भाव या कर्म को काव्य कहते हैं ।

काव्य शरीर की रचना शब्द और अर्थ से होती है । ये दोनों परस्पर सम्पृक्त रूप में रहते हैं । एक के विना दूसरा ठहर ही नहीं सकता है । दोनों ही अन्योन्याश्रित हैं । अतएव कविकुलगुरु महाकवि कालिदास ने मंगलाचरण के श्लोक में शब्द और अर्थ की एकता बतलायी है—

"वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥"

इस प्रकार शब्द तथा अर्थ का परस्पर अटूट सम्बन्ध है । शब्द तथा अर्थ से काव्य बनता है । परन्तु काव्य के लक्षण के सम्बन्ध में सभी आचार्य एक मत नहीं हैं । कोई अलंकार को काव्य की आत्मा मानता है, कोई रीति को, कोई रस को, कोई ध्वनि को तो कोई वक्रोक्ति को ही काव्य का जीवन मानता है । संक्षेप में विभिन्न आचार्यों के मतों को छः सम्प्रदायों में विभक्त किया जा सकता है—

१—अलंकार सम्प्रदाय

२—रस सम्प्रदाय

३—रीति सम्प्रदाय

४—ध्वनि सम्प्रदाय

---

१. अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः ।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५–वक्रोक्ति सम्प्रदाय

६–औचित्य सम्प्रदाय

१. अलंकार सम्प्रदाय – इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य भामह माने जाते हैं। भामह के अतिरिक्त दण्डी, भोज आदि इसके प्रमुख आचार्य हैं। इन आचार्यों ने अलंकारों को काव्य के लिए अनिवार्य माना है आचार्य भामह ने तो यहाँ तक कहा है–

"न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनिताननम् ।"

अर्थात् सुन्दर होते हुए भी अंलकारों से रहित सुन्दरी का मुख शोभा नहीं देता है। जयदेव ने तो अपने चन्द्रालोक में यहाँ तक कहा हैं कि अलंकार-रहित काव्य को काव्य कहना उष्णता से रहित अग्नि को अग्नि कहने के समान है–

"अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती ।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलङ्कृती ॥"

२. रस सम्प्रदाय – इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक भरत मुनि माने जाते हैं। उनका कथन है–"नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते ।" रस के अस्तित्व को सभी आचार्यों ने स्वीकार किया है। परन्तु कविराज विश्वनाथ ने तो "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" लिखकर काव्य में रस की महत्ता को स्पष्ट उद्घोषित किया है।

३. रीति सम्प्रदाय – आचार्य वामन ने रीति को काव्य की आत्मा स्वीकार किया है–"रीतिरात्मा काव्यस्य" विशिष्ट पदरचना को रीति कहते हैं (विशिष्टपदरचना रीतिः) ।

४. ध्वनि सम्प्रदाय – ध्वनिसम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य आनन्दवर्धन माने जाते हैं। उन्होंने अपने ध्वन्यालोक में लिखा है–

"काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः।

ध्वनि की परिभाषा करते हुए वे लिखते हैं कि जहाँ अभिधा का अर्थ व्यञ्जना से दब जाता है वहाँ ध्वनि रहती है –

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः ॥"

आचार्य मम्मट ने भी ध्वनि काव्य को उत्तम कोटि का काव्य माना है– "इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः ।" इस सम्प्रदाय का साहित्यशास्त्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

५. **वक्रोक्ति सम्प्रदाय** – इस सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य कुन्तक हैं। इनके अनुसार काव्य की परिभाषा इस प्रकार है –"कवि के वक्रोक्ति वाले व्यापार से युक्त जिस बन्ध में शब्द और अर्थ उस वक्रता के उपकारक होकर गुँथे रहते हैं, उस बन्ध को काव्य कहते हैं–

"शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि ।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि ।"

६. **औचित्य सम्प्रदाय** – इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य क्षेमेन्द्र माने ज़ाते हैं। इन्होंने औचित्य को काव्य का मूलतत्त्व माना है और रस का जीवन बतलाया है–

"औचित्यस्य चमत्कारकारिणश्चारुचर्वणे ।
रसजीवितभूतस्य विचारं कुरुतेऽधुना ॥"

इसके अतिरिक्त अग्निपुराण में अभीष्ट अर्थ व्यक्त करने वाले दोषरहित एवं गुण सहित वाक्य-विधान को काव्य कहा गया है–

"संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ।
काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद्दोषवर्जितम् ॥"

आचार्य मम्मट ने उस शब्दार्थ को काव्य माना है जो दोषों से रहित, गुणों से युक्त तथा कहीं अलंकार से रहित भी हो–

"तददोषौ शब्दार्थौ सगुणालंवनकृती पुनः क्वापि ।"

रसगंगाधर के प्रणेता पंडितराज जगन्नाथ ने रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द को काव्य कहा है–

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् ।

उपर्युक्त मतों की समीक्षा करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि चमत्कार पूर्ण, रसात्मक, गुणालङ्कारयुक्त निर्दोष वाक्य को काव्य कहते हैं।

काव्य के भेद

दृश्य तथा श्रव्य के भेद से काव्य दो प्रकार का होता है।[1] दृश्य-काव्य को रूपक कहते हैं। यह नाटक, प्रकरण भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अङ्क, वीथी और प्रहसन के भेद से दश प्रकार का होता है–

'नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः ।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश ॥"

श्रव्य-काव्य के भी पद्य, गद्य एवं मिश्र (पद्य और गद्य मिश्रित) ये तीन भेद होते हैं। इनमें भी पद्य-काव्य के सात भेद हैं –

१. महाकाव्य, २. खण्डकाव्य ३. कुलंक, ४. कलापक, ५. सन्दानितक, ६. युग्मक सौर ७. मुक्तक। मिश्र (चम्पू) काव्य भी विरुद तथा करम्भक के भेद से दो प्रकार का होता है।

सुप् और तिङ जिसके अन्त में हों इस प्रकार का पदों का समुदाय जो कि चरणों में आवद्ध न हो गद्य कहलाता है ('अपदः पदसन्तानो गद्यं तदपि गद्यते'– अग्निपुराण)

कविराज विश्वनाथ ने गद्य की सामान्य परिभाषा इस प्रकार की है– 'वृत्तगन्धोज्झितं गद्यम्' अर्थात् गद्य छन्द की गन्ध से रहित होता है। अग्नि-पुराण में गद्य के तीन रूप बतलाये गये हैं–१. चूर्णक, २. उत्कलिका और ३. वृत्तगन्धि। जिस गद्य में कम से कम विग्रह हो और जो अत्यन्त मृदु सन्दर्भ पर निर्भर न हो वह गद्य चूर्णक कहलाता है। जिसमें दीर्घ समास होता है उस गद्य को उत्कलिका कहते हैं। जो मध्यम सन्दर्भ वाला होता है जिसका विग्रह अत्यन्त कुत्सित नहीं होता है जिसमें यत्र तत्र वृत्त (छन्द) के भी

---

१. दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्। सा० द०६।१।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दर्शन होते हैं और जो अत्यन्त उत्कंट नहीं होता है उस गद्य को वृत्तगन्धि कहते हैं –

"चूर्णकोत्कलिकावृत्तगन्धिभेदात् त्रिरूपकम् ।
अल्पाल्पविग्रहं नातिमृदुसन्दर्भनिर्भरम् ॥
चूर्णकं नामतो दीर्घसमासोत्मलिका भवेत् ॥
भवेन्मध्यंसन्दर्भं नातिकुत्सितविग्रहम्
वृत्तच्छायाहरं वृत्तसन्धिनैतत् किलोत्कटम् ॥"
(अग्निपुराण)

कविराज विश्वनाथ ने गद्य के चार भेद बतलाये हैं–१. मुक्तक, २. वृत्तिगन्धि, ३. उत्कलिकाप्राय और ४. चूर्णक। मुक्तक गद्य समास रहित होता है। वृत्तिगन्धि में पद्य के अंश रहते हैं। उत्कलिकाप्राय में दीर्घ समास रहते हैं। चूर्णक में छोटे-छोटे समास रहते हैं:–

वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं मुक्तकं वृत्तगन्धि च ।
भवेदुत्कलिकाप्रायं चूर्णकं च चतुर्विधम् ।
आद्यं समासरहितं वृत्तभागयुतं परम् ।
अन्यद्दीर्घसमासाढ़्यं तुर्यं चाल्पसमासकम् ॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि अग्निपुराणकार ने मुक्तक नामक गद्य के भेद का उल्लेख नहीं किया है जिसका कि कविराज विश्वनाथ ने अपने साहित्य-दर्पण में उल्लेख किया है। हो सकता है कि अग्निपुराण के समय में मुक्तक गद्य को प्रतिष्ठित गद्य के रूप में मान्यता न मिली हो, जिसे आगे चलकर विद्वानों ने महत्त्व दिया हो। कविराज विश्वनाथ ने मुक्तक गद्य को सर्व प्रथम लिखा है जिससे यह ज्ञात होता है कि कविराज विश्वनाथ के समय तक मुक्तक गद्य को अत्यन्त प्रतिष्ठा मिल गयी होगी। अतः उन्होंने समास रहित स्वाभाविक गद्य को सर्व प्रथम स्थान दिया है।

गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति

गद्य एवं पद्य ये दोनों भाषा भामिनी के सुललित चरण हैं। इनके द्वारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही भाषा के समस्त कार्य सम्पन्न होते हैं। भाषा के लिए ये दोनों ही अत्यन्त आवश्यक उपादान हैं। यदि एक ओर पद्य की लयवद्धता एवं मधुरता सहृदयों के मन को लुभा लेती है तो दूसरी ओर दैनिक व्यवहार के लिए समाज में गद्य की अनिवार्यता सर्वथा अपेक्षित है। व्यावहारिक रूप में पद्य की अपेक्षा गद्य का अधिक महत्त्व है। साधारणतया मानव की दैनिक अभिव्यक्तियाँ गद्य के द्वारा ही सम्पन्न होती हैं। इतना होने पर भी संस्कृत साहित्य में गद्य की अपेक्षा पद्य का ही प्राचुर्य है। संस्कृत में गद्य के अल्पीभाव के अनेक कारण हैं।

प्राचीन काल में ग्रन्थों के छापने की मशीनों का अभाव था। प्रायः लोग रचनाओं को कण्ठाग्र करके ही सुरक्षित रखते थे। पद्य साहित्य को कण्ठाग्र करके ज्यों का त्यों सुरक्षित रखना सरल है जबकि गद्य साहित्य को याद करके उसी रूप में सुरक्षित रखना अत्यन्त कठिन है। पद्यों के स्वर माधुर्य एवं संगीत के आकर्षण से साधारण जन भी उनमें अनायास ही प्रवृत्त हो सकता है। गेय होने के कारण लोग उन्हें ज्यों का त्यों याद करके सुरक्षित रख सके हैं जबकि गद्य के विषय में यह सब कुछ सम्भव नहीं है। यही कारण रहा है कि पद्य-रचना अत्यन्त लोकप्रिय होती हुई कर्ण-परम्परा से सुरक्षित बनी रही। इसके विपरीत गद्य रचनाओं की स्थिति अधिक समय तक न रह सकी। इसके अतिरिक्त तत्कालीन समाज में पद्य साहित्य की अधिक प्रतिष्ठा रही है। बहुशः राजदरबारों में कवि गोष्ठियाँ होती रही हैं जिनमें विभिन्न कवियों को सम्मानित किया जाता था। ऐसी गोष्ठियों में पद्य में रचना का ही प्रचार-प्रसार रहा है। पद्य की लयबद्धता, मधुरता, सरसता लोगों को आकृष्ट करती रही है। इस प्रकार राजकीय प्रश्रय होने के कारण लोग पद्यरचना में अधिक रुचि रखते हैं। गद्य रचना की न्यूनता का सबसे बड़ा कारण रहा है उसकी प्रकृष्टतम प्रौढ़ता। पद्य रचना गद्य रचना की अपेक्षा सरल है। कारण यह है कि पद्य रचना में कवि अपनी अयोग्यता को भली-भाँति छिपा सकता है। पद्य रचना छन्दों में की जाती है। छन्द में गुरु, लघु, यति, विराम, मात्राओं तथा वर्णों की संख्या निश्चितप्राय रहती है। ऐसी दशा में यदि कवि किसी भाव को उसके अनुरूप भाषा के द्वारा प्रस्तुत नहीं कर पाता है तो भी सामाजिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन उसे कवि का दोष नहीं मानते हैं। वे छन्द योजना को ही उसके कारण रूप में प्रस्तुत करते हैं। यदि कहीं कोई बड़ी भी भूल हो जाती है तो उसे छन्द की भूल ठहराकर कवि को उस दोष से मुक्त कर दिया जाता है। अनेक दोषों के रहते हुए भी पद्यरचना की सरसता, रोचकता एवं लयात्मकता से प्रभावित होकर सामाजिक जन वाह-वाह ही करने लगते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पद्य-रचना में कवि के दोषों को छिपाने की अद्‌भुत क्षमता है। इसके विपरीत गद्य-रचना में लयात्मकता न होने से उसमें सरसता एवं रोचकता लाने के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है। पद्य-रचना के ही समान यदि गद्य रचना में कोई दोष आ जाये तो वह धुले हुए धवल वस्त्र में काले धब्बे के समान दूर से ही चमकने लगेगा और कवि के करे कराये परिश्रम पर पानी फेर देगा। गद्यरचना में शब्द,अर्थ, मात्रा, भाव, व्याकरण, रीति, अलंकार, रस आदि के दोष दूर से ही चमकने लगते हैं और कवि के सारे परिश्रम को फिर-फिरा कर देते हैं। यदि कोई गद्य लेखक अत्यन्त परिश्रम के साथ गद्यरचना में प्रवृत्त होकर सुन्दर गद्य ग्रन्थ की निर्मिति करता है और उसे सर्वथा निर्दोष बनाने की चेष्टा करता है, फिर भी यदि कहीं धोखे से रंचक मात्र भी असावधानी हो जाय तो उसकी कृति पर आलोचक लोग नाक-भौं सिकोड़ने लगेंगे, परन्तु यदि पद्य रचना अनेक दोषों से युक्त हो, उसमें अस्वाभाविकता, कृत्रिमता आदि की स्थिति हो, सारी की सारी रचना बेकार हो ऐसी स्थिति में भी यदि अन्तिम चरण भी रोचक व आह्लादक बन पड़ा तो सभा के मध्य में वाह-वाही तो मिल ही जायगी। यही कारण है कि गद्य रचना में अधिकांश लोगों की प्रवृत्ति नहीं हुई। किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है–

थक-थक के हर मुकाम पर दो चार रह गये।
आगे न चल सकें तो लाचार क्या करें॥

इससे यह स्पष्ट ही हो जाता है कि कवि की वास्तविक परीक्षा गद्यरचना के द्वारा ही की जा सकती है। पद्यरचना में तो कोई भी प्रवृत्त हो सकता है और येन-केन प्रकारेण कुछ लिख लिखाकर यश भी प्राप्त कर सकता है, परन्तु गद्य के क्षेत्र में प्रवृत होकर यश प्राप्त कर लेना विरले ही कवि के द्वारा सम्भव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है । इसी को लक्ष्य कर कहा गया है–

"गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति ।"

वस्तुतः गद्य रचना के द्वारा ही भाषा-सौन्दर्य, वर्णन चातुर्य, कल्पना-वैचित्र्य, पद-लालित्य, रस-वैदग्ध्य, अलंकार-वैशिष्ट्य आदि काव्य शास्त्रीय गुणों का अनुभव किया जा सकता है जो कि साधारण कवि के द्वारा सम्भव नहीं है।

कथा एवं आख्यायिका

अग्नि पुराणकार ने गद्य काव्य के पांच भेद बतलाये हैं–१. आख्यायिका २. कथा ३. खण्डकथा ४. परिकथा और ५. कथानिका–

"आख्यायिका कथा खण्डकथा परिकथा तथा ।
कथानिकेति मन्यन्ते गद्य काव्यं च पञ्चधा ।।"

(अग्निपुराण अध्याय ३३६।१२)

अग्नि पुराण के गद्य काव्यीय विश्लेषण से ऐसा लगता है कि इसके पूर्व समाज में उक्त प्रकार की रचनायें होती रही हैं; परन्तु आज कथा और आख्यायिका ये दो ही भेद उपलब्ध हैं । आख्यायिकाओं का अनेक स्थानों पर उल्लेख है परन्तु दुर्भाग्यवश अनेक आख्यायिकाओं का नाम मात्र ही शेष रह गया है सम्प्रति गद्य काव्य के दो ही रूप उपलब्ध हैं–१. आख्यायिका और २. कथा । अग्निपुराणकार ने आख्यायिका का लक्षण इस प्रकार बतलाया है कि आख्यायिका में कर्त्ता के वंश की प्रशंसा कन्याहरण संग्राम विप्रलम्भ, विपत्ति आदि होते हैं । इसमें रीति वृत्ति की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट रहती हैं, उच्छ्वासों के द्वारा परिच्छेद निश्चित होते हैं । वक्त्र एवं अपरवक्त्र नामक छन्दों का प्रयोग होता है और चूर्णक गद्य का प्रयोग किया जाता है–

"कर्तृवंशप्रशंसा स्याद् यत्र गद्येन विस्तरात् ।
कन्याहरण-संग्राम-विप्रलम्भ-विपत्तयः ।
भवन्ति यत्र दीप्ताश्च रीति-वृत्ति-प्रवृत्तयः ।
उच्छ्वासैश्च परिच्छेदो यत्र या चूर्णकोत्तरा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वक्त्रं चापवक्त्रं वा यत्र साख्यायिका स्मृता ॥
(अग्निपुराण)

कथा का लक्षण अग्निपुराणकार ने इस प्रकार दिया है–

"कथा में कवि संक्षेप में अपने वंश की प्रशंसा करता है। प्रमुख कथा के लिए गौण कथा का आश्रय लेता है। इसमें परिच्छेद का अभाव रहता है। कहीं-कहीं लम्बकों के द्वारा विभाजन किया जाता है और चतुष्पदी पद्यों का प्रयोग होता है–

"श्लोकैः स्ववंशं संक्षेपात् कविर्यत्र प्रशंसति ।
मुख्यार्थस्यावताराय भवेद् यत्र कथान्तरम् ।
परिच्छेदो न यत्र स्याद् भवेद् वा लम्बकैः क्वचिद् ।
सा कथा नाम तद्गर्भे निबध्नीयात् चतुष्पदीम् ॥
(अग्निपुराण अ० ३३६।१५-१७)

अमरकोषकार का कथन है कि आख्यायिका ऐतिहासिक कथन पर आधारित होती है और कथा कल्पना जन्य होती है–

"आख्यायिकोपलब्धार्था, प्रबन्धकल्पना कथा ।"

आचार्य भामह ने आख्यायिका के विषय में अपनी सम्मति इस प्रकार दी है कि इसमें सुन्दर शब्द चयन, भावी इति वृत्त के सूचक श्लोक, वक्त्र एवं अपवक्त्र छन्दों का प्रयोग नायक के द्वारा कथानक का कथन, कन्याहरण, संग्राम, विप्रलम्भ आदि का सांगोपाङ्ग वर्णन होना चाहिए और कथा में वक्त्र एवं अपवक्त्र छन्दों का अभाव, उच्छ्वासों का अभाव, नायक के द्वारा कथानक का अप्रस्तुतीकरण संस्कृत अथवा अपभ्रंश का प्रयोग आदि विशेषताएँ रहती हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्य भामह ने कथा और आख्यायिका के सम्बन्ध में कोई मौलिक बात नहीं कही है। आचार्य दण्डी के अनुसार इन दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। उन्होंने कथा एवं आख्यायिका का अन्तर्भाव जाति के अन्तर्गत किया है । उनका विचार है कि आख्यायिका में सम्पूर्ण कहानी नायक स्वयं कहता है जबकि कथा में कहानी कहने वाला नायक भी हो सकता है और कोई अन्य पात्र भी। आख्यायिका की कहानी उच्छ्वासों में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विभक्त रहती है जबकि कथा में ऐसा नहीं होता है। आख्यायिका में वक्त्र तथा अपवक्त्र छन्दों का प्रयोग होता है जबकि कथा में इनका प्रयोग नहीं होता है।

आचार्य रुद्रट ने कथा और आख्यायिका में महत्त्व पूर्ण परिवर्तन किये हैं। इनके अनुसार कथा के प्रारम्भ में गुरु एवं देवताओं की वन्दना और अपने वंश का वर्णन होना चाहिए। भाषा अनुप्रास युक्त होनी चाहिए। प्रारम्भ में कवि दूसरी कथा के द्वारा रचना करता है परन्तु वही दूसरी कथा आगे आने वाली दूसरी कथा में विलीन हो जाती है। इसमें कन्या की प्राप्ति का वर्णन रहता है तथा शृंगार रस की प्रधानता होती है।

आख्यायिका का प्रारम्भ कथा के समान ही होना चाहिए। इसमें पुरातन कवियों की प्रशंसा भी रहती है। इसके द्वारा किसी राजा की प्रशंसा की जाती है। विषय के विभाजन के लिए उच्छ्वासों का प्रयोग होता है और उच्छ्वासों के प्रारम्भ में भावी कथा को सूचित करने वाले आर्याछन्दों का प्रयोग होता है।

आचार्य आनन्दवर्धन का विचार है कि आख्यायिका में दीर्घ समास एवं विकट बन्ध की स्थिति रहती है। जब कि कथा में विकटबन्ध के रहते हुए सरसता आवश्यक है। इस सन्दर्भ में कविराज विश्वनाथ का भी अभिमत विचारणीय है क्योंकि उनका मत आधुनिक मत है। इनके मतानुसार कथा में सरस कथा वस्तु गद्यों के द्वारा ही बनायी जाती है। इसमें कहीं-कहीं आर्या छन्द और कहीं वक्त्र और अपवक्त्र छन्द प्रयुक्त होते हैं। प्रारम्भ में पद्यों के द्वारा गुरु आदि को नमस्कार और दुष्टों की निन्दा की जाती है–

कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्।
क्वचिदत्र भवेदार्या क्वचिद्वक्त्रापवक्त्रके॥
आदौ पद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्तकीर्त्तनम्।

उपर्युक्त लक्षणों से युक्त महाकवि बाणभट्ट की सरस रचना कादम्बरी है।

इसी प्रकार कथा के समान ही आख्यायिका होती है। इसमें कवि के वंश का वर्णन होता है तथा अन्य कवियों का वृत्तान्त एवं पद्य भी कहीं-कहीं रहते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। कथा भागों का विभाजन आश्वासों में होता है। आर्या, वक्त्र या अपवक्त्र छन्द के द्वारा अन्योक्ति से आश्वास के प्रारम्भ में भावी कथा की सूचना दे दी जाती है–

आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशानुकीर्तनम् ।
अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित् ।।
कथाशांनां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते ।
आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित् ।।
अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम् ।

महाकवि दण्डी

संस्कृत गद्य-साहित्य-मे महाकवि दण्डी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। दण्डी, सुवन्धु और वाणभट्ट का प्रौढ़गद्य संस्कृत जगत् में अत्यन्त प्रतिष्ठित हुआ है। यह निश्चित है कि उपर्युक्त गद्यकारों से पूर्व भी अन्य अनेक प्रसिद्ध गद्यकार रहे होगें परन्तु आज उनकी कृतियाँ उपलब्ध नहीं हैं। महाकवि बाणभट्ट ने हर्ष चरित में भट्टार हरिचन्द्र नामक एक गद्यकार का उल्लेख किया है। परन्तु उनकी कोई भी कृति आज उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में यह कह सकना कठिन है कि उपर्युक्त प्रथम लेखक किस गद्य-विधा से प्रभावित हुये हैं। क्योंकि इससे पूर्ववर्त्ती निश्चित गद्यकाव्य परम्परा के दर्शन नहीं होते हैं अतः यह प्रश्न भी विचारणीय हो जाता है कि संस्कृत गद्य-काव्यों की इस उपलब्ध-परम्पर में किसी मौलिक शैली का प्रयोग हुआ है अथवा अपने पूर्ववर्ती और समकाल गद्य-विधाओं से प्रभावित हुयी रचनाओं को प्रश्रय मिला है। वस्तुस्थिति तो यह है कि कोई भी साहित्यिक धारा सर्वतन्त्र स्वतन्त्र रूप में प्रवाहित नहीं हो सकती है। वह अपने से पूर्ववर्ती और तत्कालीन अन्य साहित्यिक विधाओं से प्रभावित रहती है। संस्कृत-गद्य-साहित्य के विपय में भी यही नियम लागू होता है। कतिपय ऐसे तत्त्व मिलते हैं जो कि उपलब्ध साहित्य को उसके प्राचीन-साहित्य से प्रभावित सिद्ध करते हैं। संस्कृत प्रौढ़ गद्य-शैली के पण्डितों में दण्डी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं यद्यपि उनके गद्य-साहित्य को सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं कहा जा सकता है तथापि उनकी मौलिकता एवं कल्पना-विचित्रता सर्वथा श्लाध्य है।

जीवन-परिचय–दण्डी के जीवनचरित के सम्बन्ध में उनकी अवन्ति-सुन्दरी कथा में कहा गया है कि उनके पूर्वज लोग गुजरात के आनन्दपुरी नामक स्थान में निवास करने वाले थे। वहाँ से किन्हीं कारणों से वे नासिक आये और उसके बाद वे लोग अचलपुर नामक स्थान में आकर रहने लगे। इस कुल में नारायण-स्वामी नामक ब्राह्मण के दामोदर नामक पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ। यही दामोदर महाकवि भारवि के नाम से प्रसिद्ध हुये। इन्हीं भारवि ने किरातार्जुनीय नामक महाकाव्य की रचना की थी। महाकवि भारवि के पश्चात् दण्डी तक की वंश परम्परा के सम्बन्ध में अवन्तिसुन्दरी-कथा में इस प्रकार लिखा है–

'मनोरथाह्वयस्तेषां मध्यमो वंशवर्द्धनः ।
ततस्तनूजाश्चत्वारः स्रष्टुर्वेदा इवाभवन् ।।
श्रीवीरदत्त इत्येषां मध्यमो वंशवर्द्धनः ।
यवीयानस्य च श्लाध्या गौरी नामाभवत्प्रिया ।।
ततः कथंचित्सा गौरी द्विजाधिपशिरोमणेः ।
कुमारं दण्डिनामानं व्यक्तशक्तिमजीजनत् ।।'

अर्थात् भारवि के मध्यम पुत्र का नाम मनोरथ था। उसके चार पुत्र हुये जिनमें सबसे छोटे वीरदत्त थे जोकि अत्यन्त सुयोग्य विद्वान् थे। वीरदत्त की पत्नी का नाम गौरी था। गौरी के गर्भ से ही महाकवि दण्डी का जन्म हुआ था। इस प्रकार दण्डी भारवि के पौत्र ठहरते हैं। ये दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे। हिन्दुओं की पवित्र नगरी काञ्ची इनकी जन्मभूमि थी। इनके जन्म स्थान के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। उनके दाक्षिणात्य होने के प्रमाण काव्यादर्श में आये हैं। काञ्ची, कावेरी, चोल, तथा दशकुमारचरित में आये काञ्ची अश्मकदेश, लाटदेश, अंगदेश, चम्पा, श्रावस्ती आदि हैं। परन्तु दण्डी के उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों में विदर्भ का स्थान-स्थान पर उल्लेख हुआ है। अतएव कुछ विद्वान् उन्हें विदर्भवासी बतलाते हैं परन्तु अवन्तिसुन्दरीकथा में उन्होंने अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आप को काञ्ची निवासी बतलाया है। फिर भी विदर्भ के बारम्बार उल्लेख से यह कहा जा सकता है कि दण्डी का जन्मस्थान भले ही काञ्ची रहा हो परन्तु विदर्भ से उनका घनिष्ट सम्बन्ध रहा होगा। इनके माता-पिता का बाल्यावस्था में ही स्वर्गवास हो गया था। अतएव ये आश्रयहीन हो गये थे। इनके समय में काञ्ची पर से पल्लव शासकों का प्रभुत्व समाप्त हो गया था अतएव इन्हें काञ्ची छोड़कर इधर-उधर भटकना पड़ा। पुनः काञ्ची पर पल्लवों के अधिष्ठित हो जाने पर महाकवि दण्डी पल्लव नरेश की सभा में लौट आये और वहीं पर आकर उन्होंने अवन्तिसुन्दरीकथा की रचना की। परन्तु इस उपर्युक्त तथ्य को तभी माना जा सकता है जबकि अवन्तिसुन्दरी-कथा को महाकवि दण्डी की रचना मान लिया जाय। विद्वानों का एक पक्ष तो अवन्तिसुन्दरी कथ को भी दशकुमारचरित के रचयिता महाकवि दण्डी की कृति मानता है तो दूसरा पक्ष अवन्तिसुन्दरी कथा किसी अन्य दण्डी की कृति मानता है। वस्तुतः कालिदास के ही समान संस्कृत-साहित्य के इतिहास में एक से अधिक दण्डी भी आते हैं।

स्थिति-काल—महाकवि दण्डी के स्थितिकाल के विषय में विद्वानों में मत-भेद है। महाकवि दण्डी के स्थितिकाल को किसी भी प्रकार नवीं शताब्दी ई० के बाद नहीं रक्खा जा सकता है क्योंकि नवीं शताब्दी के ग्रन्थों में दण्डी का उल्लेख हुआ है। डा० बार्नेट के अनुसार "सिय-बस-लकर" नामक सिंहली भाषा के अलंकार ग्रन्थ की रचना दण्डी के काव्यादर्श के आधार पर की गयी है। इसकी रचना ८४६–८६६ ई० के लगभग हुई थी। कन्नड़ भाषा के अलङ्कार ग्रन्थ 'कविराज मार्ग' पर भी दण्डी के काव्यादर्श का प्रभाव दिखायी पड़ता है। यहाँ तक कि कतिपय स्थानों पर तो काव्यादर्श से अविकल रूप में उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। कविराज-मार्ग ग्रन्थ के लेखक अमोघवर्ष का स्थितिकाल ८१५ ई० के लगभग माना जाता है। इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि काव्यादर्श के रचयिता दण्डी का स्थितिकाल नवम शताब्दी ई० से पूर्व ही ठहरता है।

महाकवि दण्डी के काव्यादर्श के आधार पर उनकी स्थिति के निर्धारण में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अत्यन्त सहायता मिलती है। काव्यादर्श में अनेक स्थानों पर पूर्ववर्त्ती कवियों के पद्यों को प्रस्तुत किया गया है। महाकवि कालिदास के 'मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति' इस पद्य खण्ड से दण्डी ने काव्यादर्श में 'लक्ष्म लक्ष्मीं तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः' इस रूप में उद्घृत किया है। काव्यादर्श में प्रवरसेन के सेतुबन्ध नामक प्राकृत काव्य को भी प्रस्तुत किया है। प्रवरसेन का स्थितिकाल ५ वीं शताब्दी है। अतः महाकवि दण्डी का स्थितिकाल ५ वीं शताब्दी से पूर्व नहीं जा सकता है।

उपर्युक्त दो विचारों से दण्डी का स्थितिकाल ५ वीं और ९ वीं शताब्दी के मध्य ठहरता है। संस्कृत के गद्य-लेखकों में बाण का स्थितिकाल सुनिश्चित है। उसके आधार पर महाकवि दण्डी के स्थितिकाल के विषय में कुछ कहा जा सकता है परन्तु दण्डी और बाण के पूर्वापर के विषय में विद्वानों में मतभेद है। पीटर्सन और याकोबी का कहना है कि दण्डी के काव्यादर्श के एक श्लोक पर कादम्बरी के शुकनासोपदेश की छाया प्रतिबिम्बित होती है। दण्डी ने बाण और मयूर की प्रशंसा की है। प्रो० पाठक का विचार है कि काव्यादर्श में निर्वर्त्य, विकार्य और प्राप्य हेतु का विभाग भर्तृहरि के अनुसार किया गया है। प्रो० आर० नरसिंहाचार्य और डा० बेलवेलकर महोदय दण्डी का स्थिति-काल सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध मानते हैं। इन्हीं तर्कों के सहारे श्री बलदेव उपाध्याय भी दण्डी का समय सातवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध अथवा आठवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध मानते हैं। परन्तु विद्वान् कतिपय अन्य तथ्यों को भी प्रस्तुत करते हैं। दण्डी और बाण की काव्य-शैलियों की समीक्षा करने पर दण्डी बाण से पूर्ववर्त्ती प्रतीत होते हैं। जिस प्रकार संस्कृत पद्य-साहित्य में वाल्मीकि, कालिदास, अश्वघोष, भारवि, माघ और श्रीहर्ष के काव्यों में क्रमशः कृत्रिमता और प्रौढ़ता होती चली गयी है उसी प्रकार गद्य की यही स्थिति रही होगी। गद्य-शैली की दृष्टि से यदि विचार किया जाय तो दण्डी का गद्य बाण के गद्य से पूर्ववर्ती ठहरता है। यदि दण्डी बाण के परवर्ती होते तो उनका गद्य भी बाण के ही समान विभिन्न अलङ्कारों से अलंकृत एवं प्रौढ़ होना चाहिये था। इसके अतिरिक्त एक बात और ध्यान देने की है कि दशकुमारचरित में जिस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामाजिक वृत्त का चित्रण हुआ है वह वस्तुतः हर्षवर्धन से पूर्व के भारत से सम्बन्धित है। गुप्त राजाओं की शक्ति समाप्त होने पर भारतीय समाज में जो अव्यवस्था फैली थी, दशकुमारचरित में उसी का चित्रण हुआ है। इस प्रकार महाकवि दण्डी हर्षवर्धन (६०६–६४८ ई०) से पूर्ववर्ती ठहरते हैं। इस प्रकार इन तथ्यों के आधार पर दण्डी का स्थिति काल ६०० ई० के लगभग ठहरता है।

कृतियों के आलोक में महाकवि दण्डी

'व्यक्तित्व' का सामान्य परिचय

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये जरा-मरणजं भयम् ॥

यश के प्रति निर्लोभ रससिद्ध कवीश्वरों ने आत्म-प्रकाशन की प्रवृत्ति को प्रशस्त न मानते हुये संस्कृत-साहित्य के इतिहास प्रणेताओं के समक्ष गहन समस्या उत्पन्न कर दी है। उनकी कृतियों के अनुशीलन से प्राप्त आन्तर साक्ष्य समस्त समाधान को अनुमान तक ही प्रत्यक्ष करा पाते हैं उनसे निश्चयात्मक तथ्यों का अनुसंधान लगभग नहीं ही हो पाता है। यही कारण है कि अपने साहित्य से इतना आत्मीय हो जाने वाला हमारा कवि अपने जीवन के वृत्तान्त से हमें परिचित कराये बिना जिज्ञासाओं की राशि अनुसंधित्सुओं के लिये एकत्रित कर यशःकाय में अमर हो जाता है। उसके जीवन तथा उसके व्यक्तित्व के परिचायक उसकी मानसी संततियाँ होती हैं। महाकवि दण्डी भी अपने स्वयं के इतिवृत के लिये उतने ही मौन हैं जितने कालिदास प्रभृति अन्य संस्कृत कवि। इसलिए जब हम उनके व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त करना चाहते हैं तो दो प्रकार के साधनों का आश्रय लेना पड़ता है--

१– इतिहास अथवा परवर्त्ती साहित्य में उसके उल्लेख के द्वारा,

२– उसकी कृतियों में प्राप्त सूत्रों के सहारे उसके जीवन को अनुसंधान की अंतर्भेदी दृष्टि द्वारा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दण्डी के विषय में परवर्ती साहित्य में निम्नवत् उल्लेख हैं–

त्रयोऽग्नयस्त्रयो देवास्त्रयो वेदास्त्रयो गुणाः ।
त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः ।।

राजशेखर (सूक्तिमुक्तावली) ४/७४

जाते जगति वाल्मीकौ शब्दः कविरिति स्थितः ।
व्यासे जाते कवी चेति कवयश्चेति दण्डिनि ।।

(सुभाषितरत्नभाण्डागार २/२९)

आचार्यदण्डिनो वाचामाचान्तामृतसम्पदाम् ।
विकासो वेधसः पत्न्या विलासमणिदर्पणः ।।

(अज्ञात)

तथा 'दण्डिनः पदलालित्यम्' इत्यादि प्रसंगों से हम दण्डी को महाकवि के रूप में प्रतिष्ठित पाते हैं । राजशेखर ने उनकी तीन कृतियों के कर्त्ता के रूप में प्रशस्ति की है । वे कृतियाँ सम्भवतः दशकुमारचरित, अवन्तिसुन्दरीकथा तथा 'द्विसन्धान' हो सकती हैं । 'काव्यादर्श' रचयिता दण्डी और 'दशकुमारचरित' रचयिता दण्डी एक ही व्यक्ति हैं इसमें अधुनातन अनुसन्धानों के अनुसार संदेह है । डॉ० जयशंकर प्रसाद त्रिपाठी ने 'काव्यादर्श' का सूक्ष्म एवं गहन तुलनात्मक विवेचन कर यह निष्कर्ष निकाला है–

काव्यादर्श एवं दशकुमार चरित दोनों ग्रंथ एक ही दण्डी की कृति माने जाते रहे हैं । सन् १९१५ ई० में श्री गणेश जनार्दन आगाशे ने दि इन्डियन एन्टीक्वेरी, मार्च १९१५ में– टू रोट दि दशकुमारचरित, नामक लेख (पृष्ठ ६७-६८) में यह प्रश्न उठाया कि 'काव्यादर्श' का रचयिता 'दशकुमार चरित' का लेखक नहीं हो सकता । क्योंकि 'काव्यादर्श' में जिन दोषों से विशेषतया ग्राम्यता दोष और जटिल शब्द गम्फ से काव्य को मुक्त रखने का निर्देश किया गया है वे सब दशकुमारचरित में पाये जाते हैं । उन्होंने काव्यादर्श का रचना काल ७वीं शती ई० उत्तरार्द्ध और 'दशकुमार चरित' का १२वीं शती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ई० उत्तरार्द्ध माना है । (दशकुमारचरित, द्वि० सं० भूमिका), (बाम्बे संस्कृत सीरीज) । यहाँ श्री अगाशे महोदय ने काव्यादर्श के तृतीय परिच्छेद में चतुः स्थान-नियम शब्दचित्र की चर्चा नहीं की है जिसका पालन करके दशकुमार चरित के सप्तम उच्छ्वास की रचना ओष्ण्य वर्णों से रहित करके की गयी है (क्योंकि वक्तापात्र (मन्त्रगुप्त) के अधर उसकी प्रिया के द्वारा दन्तक्षत थे) । डॉ० त्रिपाठी के अनुसार श्री अगाशे महोदय का कथन अपने स्थान पर ठीक है । 'काव्यादर्श' का तृतीय परिच्छेद बाद में चित्रमार्ग के निरूपण से उसे पूर्ण करने के लिए किसी अन्य द्वारा लिखा गया है और वह प्रथम-द्वितीय परिच्छेद के लेखक की कृति नहीं है । तृतीय परिच्छेद का रचनाकाल और 'दशकुमार चरित' के लेखक का समय प्रायः एक ही है । तृतीय परिच्छेद का स्थान-नियम प्रथम परिच्छेद के श्रुत्यनुप्रास-नियम के जो माधुर्य गुण का सहयोगी है, विपरीत (एवं परवर्ती) पड़ता है और इस श्रुत्यनुप्रास का यही विरोध 'दशकुमारचरित' के ओष्ठय वर्ण रहित सप्तम उच्छ्वास से है जो शब्द चित्र के निदर्शन की ओर उन्मुख है । श्री अगाशे महोदय का प्रश्न उचित भूमिका रखता है और हमें इस सम्भावना की ओर उन्मुख होना पड़ता है कि 'काव्यादर्श' की रचना कम-से-कम एक शती के अनन्तर 'दशकुमारचरित' लिखा गया । डॉ० रांगेय राघव ने भी (दशकुमार चरित के हिन्दी रूपान्तर की भूमिका के पृष्ठ २४ में) श्री अगाशे महोदय के कथन को दुहराया है कि दशकुमार चरित का लेखक यथार्थ परिस्थितियों के चित्रण में रुचि रखता है और 'काव्यादर्श' शिष्ट साहित्य के नियम प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ है— अतः दोनों ग्रंथ एक ही लेखक की कृति नहीं हैं । डॉ० रांगेय राघव ने दशकुमार चरित का छटी शती ई० के पहले का माना है । म० म० वासुदेव विष्णु मिराशी ने 'दशकुमारचरित' के अष्टम उच्छ्वास में वर्णित राजनीति के आधार पर उसका ऐतिहासिक लेखा-जोखा करते हुए 'दशकुमार चरित' के लेखक दण्डी को ५५० ई० के बाद का नहीं माना है (एनाल्स भाण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, १९४५ ई० म० म० वा० वि० मिराशी का लेख— हिस्टारिकल डेटा इन दण्डीज दशकुमार चरित पृ० ३१) ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्तः साक्ष्यों के आधार पर भी त्रिपाठी ने यह प्रमाणित किया है कि 'दशकुमार चरित' की रचना के समय देश की राजनीतिक स्थिति में जैसी उथल पुथल चल रही थी । काव्यादर्श के कुछ प्रसंग उसकी विपरीत स्थिति के द्योतक हैं । मिराशी जी ने भी अपने लेख में 'काव्यादर्श' या काव्यादर्शकृत् दण्डी की चर्चा नहीं की है । अन्यत्र मिराशी जी ने अपने एक ग्रन्थ 'वाकाटक राजवंश का इतिहास तथा अभिलेख' में दण्डी को आद्य आलङ्कारिक स्वीकार किया है और उनका यह भी कहना है कि दण्डी ने वेद की रीति को जो उत्कृष्ट रीति (मार्ग) कह कर स्तुति की है, वह उस इतिहास का परिणाम है जो वाकाटक राजाओं की स्वयं की संस्कृत काव्य रचना और संस्कृत कवियों के आश्रय से निर्मित हुआ है, क्योंकि वाकाटक विदर्भ के शासक थे अतः विदर्भ के राजाओं से प्रोत्साहित काव्य मार्ग वैदर्भ मार्ग कहा जा कर आदृत हुआ ।

डा० त्रिपाठी ने काव्यादर्श का तत्त्व विवेचन कर काव्यादर्श के रचयिता और 'दशकुमारचरित' के रचयिता को एक नहीं माना है तथा उन दोनों लेखकों के रचनाकाल में कम से कम एक शती का अन्तर अनुमानित किया है । किन्तु संस्कृत साहित्य के इतिहास-प्रणेताओं के अनुसार काव्यादर्श तथा 'दशकुमारचरित' के रचयिता एक ही कवि दण्डी है । इन इतिहासकारों में आचार्य बलदेव उपाध्याय, वाचस्पति गैरोला, डा० राम जी उपाध्याय, श्री केदार नाथ शर्मा प्रभृति साहित्यालोचक हैं किन्तु अद्यतन शोधों के अनुसार प्रो० एस० के० डे० ने 'संस्कृत पोयटिक्स' वा० । में, मार्क कॉलिन्स ने 'दि ज्योग्रिफिकल डाटा ऑफ दि रघुवंश एण्ड दि दशकुमारचरित' में, प्रो० ए० बी० कीथ ने इण्डियन स्टडीज इन ओनर आफ लैममैन' में, एच० एच० विलसन ने 'दशकुमारचरित' के अंग्रेजी रूपान्तर की भूमिका में इस मत की पुष्टि की है कि 'काव्यादर्श' और 'दशकुमारचरित' के रचयिता एक ही हैं यह तथ्य सन्देहास्पद है । आ० बलदेव उपाध्याय ने श्री जे० जी अगाशे की मान्यता को बहुत ही अगम्भीर दृष्टि से समीक्षित किया है उन्होंने 'दशकुमार चरित' के भोग वादी दर्शन को कालिदास के 'कुमारसम्भव' के शिव पार्वती के दाम्पत्यचित्रण तथा 'नैषध' के संयोग शृङ्गार के समकक्ष रख कर श्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगाशे द्वारा प्रस्तुत किये गये तर्क का खण्डन किया है। अस्तु निश्चित मतों की स्थापना होने तक विषय अनिर्णीत ही समझा जा सकता है। उसी प्रकार का विवाद 'अवन्तिसुन्दरी कथा' तथा 'दशकुमारचरित' के रचयिताओं के एकत्व में है। सौभाग्य से दक्षिण भारत के मालावार प्रदेश में दो हस्त लिखित पुस्तकों की उपलब्धि हुई है--जिसमें से एक अत्यन्त दयनीय दशा में थी--न तो यह पूर्ण है और न ही कहीं ग्रन्थकार का परिचय प्राप्त होता है। इसके आरम्भ में हर्षचरित की भाँति प्राचीन कवियों का वर्णन श्लोकों में प्राप्त हुआ है। शेष भाग गद्य में लिखा हुआ है। दूसरे ग्रन्थ के आधार पर इसका नाम 'अवन्तिसुन्दरी-कथा' तथा रचयिता महाकवि दण्डी माने गये हैं। दूसरा ग्रन्थ अपेक्षाकृत अच्छी दशा में है। यह प्रायः अनुष्टुप् छन्दों में रचा गया है पर सर्गान्त में भिन्न-भिन्न वृत्त भी हैं, ग्रन्थ के आदि छः परिच्छेद शुद्ध तथा पूर्ण हैं केवल सप्तम परिच्छेद खण्डित है। रचयिता का नाम इसमें भी लुप्त है, ग्रन्थ का नाम 'अवन्तिसुन्दरी कथासार' दिया गया है। जिससे यह पहले ग्रन्थ का छन्दोबद्ध सारांश प्रतीत होता है। इसके पहले परिच्छेद में दण्डी के पूर्वजों का वर्णन किया गया है जो गद्यकाव्य के प्रवन्ध रूप में लक्षण शास्त्रों में अनुमोदित है। यह परिचय निम्नवत् है--

अस्त्यानन्दपुरं नाम प्रदेशो पश्चिमोत्तरे ।
आर्यदेशशिरोरत्नं यत्रासन् वहवो नृपाः ।।
ततोऽभिनिःसृता काचित् कौशिकब्रह्मसन्ततिः ।
सुरलोकादिवायान्ती पुण्यतीर्थसरस्वती ।।
नासिक्यभूमावौत्सुक्यान्मूलदेवनिवेशिताम् ।
प्राप्याचलपुरं .... रीमधि वसत्यसौ ।।
तस्यां नारायणस्वामी नाम्ना नारायणोदरात् ।
दामोदर इति श्रीमान् आदिका वाभवत् ।।
स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवं गिराम् ।
अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्द्धने ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दण्डी के विषय में इस कथा से निम्नलिखित बातों का परिचय मिलता है। दामोदर जो 'भारवि' के नाम से सन्दिग्ध हैं, के तीन पुत्र हुए जिनमें 'मनोरथ' मध्यम पुत्र था।

मनोरथाह्वयस्तेषां मध्यमो वंशवर्द्धनः ।
ततस्तनूजाश्चत्वारः स्रष्टुर्वेदा इवाभवन् ।
श्रीवीरदत्त इत्येषां मध्यमो वंशवर्द्धनः ।
यवीयानस्य च श्लाघ्या गौरी नामाभवत्प्रिया ।।
ततः कथंचित् सा गौरी द्विजाधिपशिखामणेः ।
कुमारं दण्डिनामानं व्यक्तशक्तिमजीजनत् ।
स बाल एव मात्रा च पित्रा चापि व्ययुज्यत ।।

मनोरथ के भी चारों वेदों की भाँति चार पुत्र उत्पन्न हुये जिनमें 'वीरदत्त' सबसे छोटा होने पर भी एक सुयोग्य दार्शनिक था। 'वीरदत्त' की स्त्री का नाम 'गौरी' था। 'दण्डी' इन्हीं के पुत्र थे। बचपन में ही इनके माता-पिता दिवंगत हो गये थे। ये काञ्ची में निराश्रय ही रहते थे। एक बार जब काञ्ची में विप्लव उपस्थित हुआ, तब ये काञ्ची छोड़कर जङ्गलों में इधर-उधर भटकते फिरे थे। अनन्तर शहर में शान्ति होने पर ये फिर पल्लव-नरेश की सभा में आ गये और वहीं रहने लगे। 'अवन्ति सुन्दरी कथासार' की इस उद्भावना के अतिरिक्त और कोई भी परिचय कवि दण्डी का किसी ग्रन्थ के आदि में नहीं दिया गया है जब कि 'बाण' ने अपनी दोनों गद्य कृतियों में अपने वंश का वर्णन दिया है। यदि आख्यायिका का एक लक्षण मानकर दण्डी ने इसमें इसका प्रयोग किया; यह सोचा जाये तो 'पद्यमय' होने के कारण इस तथ्य में विचिकित्सा होने लगती है। साथ ही यह प्रश्न भी उठ सकता है कि यदि दण्डी की यह कृति ही वास्तविक है तो यह उतनी प्रसिद्धि को न प्राप्त होकर 'दशकुमारचरित' और काव्यादर्श' क्यों हुये। 'अवन्ति सुन्दरी कथा' 'दशकुमार' के पूर्वार्द्ध में वर्णित कथा के अनुरूप है अतः कथा को दण्डी की असली रचना मानने से दशकुमार के पूर्वार्द्ध में सन्देह होने लगा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार यह सन्देह 'आज का नहीं है। बहुत पहले विल्सन तथा 'चिपणूलकर शास्त्री' (संस्कृत-कवि पञ्चक—पृ० २२६-२२७) को भी शब्दों की निरुक्ति तथा कथा के पूर्वापर के कई अंशों में निरोध होने से यह सन्देह होने लगा था कि उत्तर-पीठिका तो वास्तव में असली है परन्तु पूर्वपीठिका नहीं। के० बी० लक्ष्मण राव का कहना है कि वास्तविक रचना कथा ही है (दण्डी ची अवन्तिसुन्दरी कथा विविध ज्ञान विस्तार, वर्ष ५४, अङ्क ८, अगस्त १९२३) परन्तु समयानंतर किसी कारण से वह शीघ्र ही लुप्त हो गई और उसी कथा के आधार पर किसी ने पीछे से पूर्वपीठिका जोड़कर समग्र कथा का सिलसिला जारी रखा।' उक्त विवरण देते हुए आ० बलदेव उपाध्याय ने 'अवन्तिसुन्दरी कथा' को दण्डी की मूल रचना माना है तथा प्रायः सभी संस्कृत साहित्य के इतिहासकारों ने उसे दण्डी की रचना माना है।

सबसे अधिक मत भेद दण्डी की तीसरी रचना के सन्दर्भ में है। डा० पिशेल ने 'मृच्छकटिक' का लेखक दण्डी को बताया है किन्तु अनुसन्धानों से यह तथ्य निर्मूल सिद्ध हो चुका है। पीटर्सन तथा याकोबी ने 'छन्दोविचिति' को तीसरी रचना माना है परन्तु "सा विद्या नौर्विवक्षूणाम्" में छन्दोविचिति' को दण्डी ने ही 'विद्या' कहा है, ग्रन्थ नहीं। अतएव यह ग्रन्थ न होकर छन्द-शास्त्र का द्योतक है (डा० बेल्वेलकर—नोट्स ऑन काव्यादर्श)। इसी प्रकार कलापरिच्छेद को भी ग्रन्थ मानना उचित नहीं। भोजराज की 'शृङ्गार प्रकाशिका' में 'दण्डी' के 'द्विसन्धान' नामक काव्य से निम्न श्लोक उद्धृत किया है—

उदारमहिमारामः प्रजानां हर्षवर्द्धनः।
धर्मप्रभव इत्यासीत् ख्यातो वराहपूर्वजः॥

इसी काव्य को जो सम्भवतः महाकाव्य था दण्डी की रचना मानने में अधिकांश आलोचकों का आग्रह है।

कृतियों के सन्दर्भ में कवि दण्डी का प्रायः समग्र कर्त्तव्य सन्दिग्ध है इन अर्थों में कि एक ही व्यक्ति 'दण्डी' था अथवा इतिहास में एक से अधिक दण्डी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थे, इसलिये 'दशकुमारचरित' के रचयिता के विषय में जो कुछ भी कहा जा सकता है वह उस कृति में अनुस्यूत है तथा यदि विशुद्ध दृष्टि से देखा, जाए 'दशकुमार-चरितम्' की संस्कृति एक ऐसे समाज एवं सभ्यता की कहानी प्रस्तुत करती है जो पश्चिम की भोगवादी संस्कृति के अत्यधिक निकट है इसीलिये यूरोपीय विद्वानों ने दण्डी के यथार्थ चित्रण के साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इस तथ्य से कवि के व्यक्तित्व की यह विशेपता परिलक्षित है कि उसने जीवन की वास्तविकता, व्यावहारिकता और जनसामान्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति को पहिचाना है और उसे विना अतिरेक के, विना परिष्कार के अभिव्यक्त करने में न केवल सिद्धहस्त है अपितु उसका वहिष्कार करने के पक्ष में भी नहीं है। जो एक ऐसे निर्भीक, स्वतंत्रचेता, समाज पर्यवेक्षक हैं जिनसे भारतीय आदर्शवाद- की भावना को भले ही आघात लगा हो उस काल के सजीव चिन्तन को मूर्त्त रूप प्राप्त हुआ है। दण्डी का जीवन भी यायावर का जीवन रहा जिसने उन्हें लोकानुभव संगृहीत करने का यथासम्भव अवसर प्रदान किया, राजकुमारों, राजकीय कर्मचारियों तथा धनाढय कुलों में व्याप्त ऐश्वर्य एवं कामिनी का विलास उन्होंने निकट से देखा था, राजघरानों में राज्यलिप्सा, एवं भोगलिप्सा ने राजाओं, रानियों एवं मन्त्रियों को किस सीमा तक निरंकुश वना दिया था यह सब भी उन्होंने अपनी सांसारिक बुद्धि से समझा था, इसीलिये उन्होंने काव्य के व्याज से उस 'विष' को जो भारतीय समाज में मानवीय दुर्बलताओं के कारण फैलता जा रहा था उसे इस प्रकार नग्न कर रखा जिससे उसके बीभत्स रूप से सुधी समाज सजग हो सके। 'वैदर्भी के प्रति अनुराग उनका दाक्षिणात्य होना सिद्ध ही करता है साथ ही वैदर्भी का प्रयोग पाण्डित्य प्रदर्शन के प्रति उनकी अरुचि व्यक्त करता है वे सहज गति में जीवन की सहजता में विश्वास करते थे कृत्रिमता उनके व्यक्तित्व के विकास के मार्ग को अवरुद्ध नहीं कर सकी थी।

दशकुमार-चरित का साहित्यिक मूल्याङ्कन

'सहितयोःभावः साहित्यम्' शब्द तथा अर्थ की सहितता ही काव्य है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शब्दार्थौं सहितौ काव्यम्, आदि परिभाषाओं से भी काव्य के शब्द और अर्थ के रमणीय साहचर्य का ही बोध होता है। किसी भी कृति का साहित्यिक मूल्यांकन करने के लिये उसमें प्रयुक्त मञ्जुल शब्दार्थ का ही विवेचन करना होता है। साथ ही उस विधा पर विचार करना होगा जिसमें वह कृति लिखी गई है क्योंकि समग्र साहित्यशास्त्र इसीलिये अस्तित्वमय है कि उसने काव्यों का वर्गीकरण किया उनके कलातत्व एवं भावतत्व की पृथक्-पृथक् प्रत्यभिज्ञा करने के लिये रूपरेखायें बनाईं, उनके अन्तर और बहिर्विश्लेषण के लिये, साङ्गोपाङ्ग विवेचन के लिये काव्य तत्वों को विविध संज्ञायें प्रदान कीं-- इसलिये 'दशकुमारचरित' की साहित्यिक समीक्षा करने के लिये हम निम्न तत्त्वों के आधार पर उसका अध्ययन करेंगे।

दशकुमारचरित की विधा :--संस्कृत में गद्य-पद्य साहित्य में कोई मौलिक भेद नहीं है, गद्य भी काव्य कहा जाता है और पद्य भी। इसी कारण समस्त आलङ्कारिक काव्यों का वर्गीकरण करते हुए सर्वप्रथम उसे श्रव्य' तथा 'दृश्य' दो भागों में विभक्त करते हैं जिससे 'रूपकों' की शाखा पृथक् विस्तार को प्राप्त होती है। श्रव्य काव्य के अन्तर्गत प्रबन्ध, खण्ड, तथा मुक्तक ये तीन मुख्य भेद होते हैं। प्रबन्ध काव्य केवल भाषा की दृष्टि से तीन रूपों में दृश्यमान है। पद्यमय, गद्यमय तथा गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू काव्य। पद्यमय प्रबन्ध काव्य महाकाव्य कहलाये तथा गद्यमय आख्यायिका, कथा तथा गद्यकाव्य नाम से अधिक जाने गये। काव्यादर्शकार दण्डी के समय गद्यकाव्य में गद्य की ये दोनों विधायें पृथक्-पृथक् प्रतिष्ठित की जा रही थीं। इनके पूर्व कथा और आख्यायिका में कोई मौलिक भेद नहीं स्वीकार किया जाता था। 'दण्डी' ने आख्यायिका और कथा का लक्षण न बताकर दोनों में भेद बताने वाले जैसे सर्गबन्ध महाकाव्य में काव्य की अन्य छोटी विधायें अन्तर्भूत रहती हैं वैसे ही आख्यान के अन्य भेद--खण्डकथा, सकल-कथा, परिकथा, आख्यान, निदर्शन, प्रवह्लिका, मतल्लिका मणिकुल्या, उपकथा, वृहत्कथा आदि---भी कथा और आख्यायिका में ही अन्तर्भूत हो जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कथा 'दण्डी' की अधिक अभिमत विधा है। उन्होंने आख्यायिका का पूर्वपक्ष की भाँति पहले निरूपण कर बाद में कथा में उत्तरपक्ष की भाँति आख्यायिका के लक्षणों की उपस्थिति बतलाकर दोनों की एकता स्थापित की है और कथा को आख्यायिका से भिन्न नहीं माना है। आख्यायिका का केवल संस्कृत में लिखा जाना उसका राजचरित से सम्बद्ध होना था। इसलिये स्वभावतः आख्यायिका लिखने वाले का सम्मान राज सभा में होता था और कथा लिखने वाले लोक में आदृत होते थे। परन्तु इस कोटि की पहली विधा कथा ही थी, उसी के अनुकरण पर इतिहास या राजचरित को लेकर आख्यायिकाओं की रचना का आरम्भ हुआ, जैसे पुराण के राजचरितों को लेकर महाकाव्य का प्रणयन किया गया। राज्याश्रित विद्वानों का स्वभावतः पक्षपात आख्यायिका के प्रति रहा होगा और वे कथा से उसे भिन्न मानकर उसके लिये विशेष नियमों और रूढ़ियों को अपेक्षित बताने लगे होंगे जो दण्डी को अच्छा नहीं लग रहा था, उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति मनोहारी लोक काव्यों की ओर रही है। उन्होंने संस्कृत के किसी काव्य या कथा का नामतः उल्लेख अपने 'काव्यादर्श' में नहीं किया है किन्तु प्राकृत एवं 'भूतभाषा' की कृतियों-- 'सेतुबन्ध' एवं 'बृहत्कथा' का उल्लेख आदर के साथ करते हैं।

भूतार्थशंसी वक्ता नायक द्वारा अपने गुणों और अपनी जीवन घटनाओं के वर्णन की परम्परा 'पुराण' और 'इतिहास' से ही ग्रहण की गई है। पुराणों में विशेषतः महाभारत में वक्ताओं की दीर्घ परम्परा का उल्लेख मिलता है, उन्होंने किस प्रकार कहाँ कहाँ पहुँच कर कैसे दूसरे वक्ता से उसे सुना और ग्रहण किया और फिर कहाँ जाकर किस सत्र की सभा में स्वयं सुनाया इसकी चर्चा उनके पीछे आने वाला वक्ता करता है। इतिहास में घटी हुई घटनायें ही ऐसे वक्ता कहा करते थे, कल्पित नहीं था जो सुना रहता था उसे कहते थे--उसी अर्थ में दण्डी ने उन्हें भूतार्थशंसी कहा है। को उत्तर दिया है और इस अभेद को स्थापित करने में ही उनके प्रमुख लक्षण निरूपित हो गये हैं वे उनकी अभेद प्रतिष्ठा इस प्रकार करते हैं :-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा ।
इति तस्य प्रभेदौ द्वौ तयोराख्यायिका किल ।।
नायकेनैव वाच्यान्या नायकेनेतरेण वा ।
स्वगुणाविष्क्रिया दोषो नात्र भूतार्थशंसिनः ।।
अपि त्वनियमो दृष्टस्तत्राप्यन्यैरुदीरणात् ।
अन्यो वक्ता स्वयं वेति कीदृग्वा भेदकारणम् ।।
वक्त्रं चापरवक्त्रं च सोच्छ्वासत्वं च भेदकम् ।
चिह्नमाख्यायिकायाश्च प्रसङ्गेन कथास्वपि ।।
आर्यादिवत् प्रवेशः किं न वक्त्रापरवक्त्रयोः ।।
भेदश्च दृष्टो लम्भादिरुच्छ्वासो वास्तु किं ततः ।
तत् कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञा ह्यांकिता ।।
अत्रैवान्तर्भविष्यन्ति शेषाश्चाख्यानजातयः ।।
कन्याहरण-संग्राम -- विप्रलम्भोदयादयः ।
सर्गवन्धसमा एव नैते वैशेषिका गुणाः ।।
कविभावकृतं चिह्नमन्यत्रापि न दुष्यति ।
मुखमिष्टार्थसंसिद्धौ किं हि न स्यात् कृतात्मनाम् ।।

काव्यादर्श १।२४-३०

'कथा' तथा 'आख्यायिका' के भेदक तत्त्वों का एकत्र संन्निवेश कर दण्डी ने दोनों को एक ही माना है केवल संज्ञायें पृथक्-पृथक् होने से ही इनका द्वैधीभाव है। इस निष्कर्ष को स्थापित किया है।

संस्कृत के अन्य आलङ्कारिकों एवं लक्षणशास्त्रों के अनुसार आख्यायिका तथा कथा के भेद के निम्न निष्कर्ष हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आख्यायिका	कथा
१. संस्कृत में लिखी जाती है।	१. संस्कृत के अतिरिक्त प्राकृत ए[वं] अपभ्रंश में भी लिखी जाती है।
२. इसमें यत्र-तत्र भावी घटनाओं के सूचक वक्त्र-अपरवक्त्र छन्दों का प्रयोग होता है।	२. वक्त्र-अपरवक्त्र छन्दों का समावेश नहीं होता।
३. इसमें इति वृत्ति का विभाग उच्छ्वासों में होता है।	३ विभाग लम्भकों में होता है।
४. इसमें नायक स्वचरि का स्वयं वर्णन करता है।	४. नायक स्वचरित का वर्णन स्वयं नहीं करता, कथात्मक शैली में वर्णन होता है।

कथा के प्रति अपना आग्रह दिखाकर दण्डी ने लोककाव्य को प्रोत्साहन देने का सराहनीय कार्य किया है, नहीं तो पिछले महाकाव्य जिस प्रकार राजचरितों के गुण वर्णन में निष्प्राण होते गये, कथा और उसकी समान्तर विधा आख्यायिका की भी वही दशा होती। लोककाव्य मूलतः प्रणय की सीमाओं में पल्लवित और कुसुमित होता है, महाकाव्यों के राजचरितों से आक्रान्त हो जाने पर उसके निष्प्राण होने के साथ उसके इसी कलेवर में प्रणय का लोककाव्य किस प्रकार आ गया और अत्यन्त प्रथित हुआ, जिसका उदाहरण 'गीत-गोविन्द' है। 'मेघदूत' महाकाव्य के उदय-काल की लोक की प्रणयात्मक काव्य रचना है। तथा 'गीतगोविन्द' महाकाव्य के ह्रास काल का प्रणयात्मक लोक काव्य। 'मेघदूत' लोककाव्य के मूल कलेवर में है और 'गीतगोविन्द' ने दहते हुए महाकाव्य का स्थान ले लिया है। किन्तु 'दण्डी' का 'कथा' के प्रति जो आग्रह बढ़ा स्यात् उसका उल्टा प्रभाव पड़ा। 'आख्यायिका' की विधा के प्रति विद्वानों का आदर बढ रहा था, लोक भूमि से पल्लवित काव्य विधायें अपना अस्तित्व अलग स्थापित कर रही थीं। अतः दण्डी की अभेद स्थापना के विपरीत भामह ने आख्यायिका के स्वरूप को कथा से अधिक भिन्न प्रतिष्ठित किया—यही नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आख्यायिका के लिये उन्होंने दण्डी से आगे बढ़कर उन विशेषताओं को प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया, जो महाकाव्य में होती थीं—मनोहारी, सुनने योग्य शब्द-अर्थ एवं पदवृत्ति तथा उदात्त विषय।

'काव्यादर्श' के आलोक में 'कथा' एवं आख्यायिका के उक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'दशकुमारचरित' न पूर्णतया आख्यायिका है और न पूर्णतया 'कथा'। स्वरूप को देखकर एक बार उसे 'आख्यायिका' तो कहा जा सकता है किन्तु केवल 'स्वरूप' के आधार पर 'कथा' कथमपि नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः जैसे काव्यादर्शकार 'दण्डी' कथा एवं आख्यायिका में मौलिक भेद नही मानता वैसे ही 'दशकुमारचरित' का रचयिता दण्डी भी गद्यकाव्य की व्यापकता में ही विश्वास रखता है दशकुमारचरित के स्वरूप की व्याख्या करते हुए निम्न तथ्य दृष्टव्य हैं—

१. इसका विभाजन उच्छ्वासों में हुआ है, साथ ही 'पूर्व-पीठिका' और 'उत्तरपीठिका' तथा संक्षिप्त उत्तर-पीठिका इस प्रकार का विभाजन दशकुमार-चरित में है। पूर्वपीठिका के लिये विद्वानों का अनुमान है कि 'अवन्ति-सुन्दरी कथा' ही पूर्वपीठिका है जो पाँच उच्छ्वासों में विभक्त है इसका प्रारम्भ मंगलाचरण से हुआ है जिसमें वामनरूपधारी विष्णु के द्वितीय 'चरणदण्ड' की आराधना है। आराधना, की शैली नाटकों की नान्दी के अनुरूप है। 'उत्तर पीठिका' (जो पुनः 'प्रथम उच्छ्वास' से प्रारभ होती है) में पूर्व-पीठिका के सन्दर्भ से कथा प्रारम्भ की गई है यहाँ तक कि अवन्तिसुन्दरी की आधी कथा पूर्वपीठिका के पञ्चम उच्छ्वास में है और आगे की उत्तरपीठिका के प्रथम उच्छ्वास में। राजवाहन जो दशों कुमारों का अग्रणी तथा मुख्य नायक है उसका चरित भी इसी प्रकार पूर्वपीठिका से प्रारम्भ होकर उत्तर पीठिका के प्रथम दो उच्छ्वासों में विस्तार को प्राप्त होता है। इसलिये दण्डी ने पूर्व-पीठिका और उत्तर पीठिका यह विभाजन किया है इस तथ्य में संन्देह के पर्याप्त आधार हैं।

२. कथा प्रारम्भ होती है वर्णनात्मक शैली में और प्रवाह को प्राप्त है आत्मसंस्मरणात्मक शैली में। मगधराज का वर्णन और दसों कुमारों की प्राप्ति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिक्षा,-दीक्षा आदि का वर्णन तो कवि कथात्मक शैली से करता है तथा बाद का अर्थात् कुमारों का अपना-अपना अनुभव सुनाने का वृत्तान्त आत्मसंस्मरण प्रस्तुत करने की शैली में इसका औचित्य सिद्ध है। दशकुमारचरित का रचयिता स्वाभाविकता में तथा यथार्थता में आस्था रखता है इसलिये जगत् के व्यवहार के अनुरूप कथा को प्रस्तुत करना उसने श्रेयस्कर समझा।

३. मङ्गलाचरण के स्रग्धरा के अतिरिक्त पूरे दशकुमार चरित में दो अन्य आर्यायें हैं जो उत्तर पीठिका के द्वितीय तथा षष्ठ उच्छ्वास में हैं ये आर्यायें भी भावी घटनाओं की सूचना देने वाली नहीं हैं। वक्त्र तथा अपरवक्त्र छन्दों का प्रयोग भी नहीं हुआ है।

४. कथा का मूल उत्पाद्य है। वैसे बृहत्कथा में तथा हितोपदेश में इस प्रकार के नामों के राजकुमारों की कथायें हैं किन्तु 'दशकुमार चरित' का उपजीव्य बृहत्कथा नहीं है। आख्यायिका की कसौटी पर भी इसे नहीं रखा जा सकता क्योंकि आख्यायिका में राजचरित ऐतिहासिक होना चाहिये फिर भी राजचरित यथावत् वर्णित है इसलिये काल्पनिक होते हुए भी भूतार्थशंसी है।

५. कन्याहरण, संग्राम, वियोग आदि यथास्थान प्रसङ्गानुसार वर्णित हैं उनके प्रति विशेष आग्रह कथाकार का नहीं है।

६. किसी प्रकार के कवि का अभिप्राय विशेष व्यक्त करने वाले चिह्न प्रत्येक उच्छ्वास में नहीं है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आख्यायिका और कथा में से किसी के भी लक्षणों का एकान्ततः पालन न करते हुए कवि ने केवल गद्य-काव्य के तत्वों पर ध्यान रखा है। जो आधुनिक विधा गद्यकाव्यात्मक उपन्यास के नाम के अधिक अनुरूप है क्योंकि इसमें 'उपन्यास' (जोकि संस्कृत में १९ वीं शदी के अन्त तक उन्हीं अर्थों में व्यवहृत नहीं था जिन अर्थों में हिन्दी में है) के सभी तत्व सरलता से ढूँढ़े जा सकते हैं। खड़ी बोली के पूर्णविकास के पहले प्रारम्भिक उपन्यास कुछ-कुछ इसी आख्यान शैली पर लिखे गये जिसमें 'दशकुमारचरित' है। यह अवश्य है कि भाषा एवं काव्य की दृष्टि से दोनों में कोई तुलना नहीं है। 'उपन्यास' की आधुनिक परिभाषाओं के आधार दश-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमार चरित की समीक्षा करने पर पुनः निम्न तथ्य दर्शनीय हैं—

पण्डित अम्बिका दत्त व्यास प्रतिभाशाली आलङ्कारिक एवं समीक्षक भी थे। अपनी गद्यकाव्य मीमांसा नामक कृति में उन्होंने गद्यकाव्य सम्बन्धी प्राचीन सिद्धान्तों की समीक्षा करते हुए गद्यकाव्य किसी कारण विशेष से (सम्भवतः बंगला और अँग्रेजी उपन्यासों के प्रभाव से) 'उपन्यास' शब्द में रूढ़ हो गया है। वस्तुतः उपन्यास वर्तमान काल में उन अर्थों में प्रयुक्त विधा बन चुका है जिसके तात्पर्य में संस्कृत के प्रबन्ध काव्य अथवा महाकाव्य प्रणीत होते थे। अन्तर केवल इतना है कि एक छन्दोबद्ध रचना है तथा दूसरी गद्यमयी। एक अभिव्यक्ति की कलात्मकता पर बल देता है तो दूसरा अभिव्यक्ति की यथार्थता एवं स्पष्टता पर। 'गद्यकाव्य' को उपन्यास के इस सन्दर्भ में देखने पर 'दशकुमारचरित' को सहज ही प्रस्तुत किया जा सकता है। इसीलिये काव्यादर्शकार दण्डी ने भी कथा, आख्यायिका के एकत्व को स्थापित करते हुए अन्य विशेषताओं सहित उस सर्गबन्ध काव्य की कोटि में रख दिया है। किन्तु जैसा कि पहले भी अनेकशः स्पष्ट किया जा चुका है कि काव्यादर्श के रचयिता और दशकुमारचरित के रचयिता दो भिन्न 'दण्डी' हैं। इसीलिये जहाँ शिल्प की दृष्टि से दशकुमारचरित के गद्यकाव्य को रखा जा सकता है वहीं 'वस्तु', पात्र एवं चरित्र-चित्रण की दृष्टि से नहीं। महाकाव्य का नायक 'धीरोदात्त' ही हो सकता था जब कि 'दशकुमारचरित' के नायक भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदर्शों के लिये खुली चुनौती हैं, जहां उस परम्परा में 'शिवेतरक्षति' काव्य का मुख्य प्रयोजन था वहाँ दशकुमारचरित में शिवेतर का दिग्दर्शन है—क्या सामाजिक के हृदय में उसकी कुरूपता जन्य विरक्ति है तुक अथवा सत्यमात्र के उपासनार्थ ?। सम्भवतः सन्दिग्ध लेखकत्व इस कृति में विधा की सन्दिग्धता भी घुणाक्षरन्याय से अन्वित है।

इसीलिये विभिन्न आलोचकों ने इसे केवल 'गद्य-रचना' 'गद्य-काव्य' तथा किसी-किसी ने आख्यायिका समझा है। वस्तुस्थिति यह है कि यह गद्य की किसी पारम्परिक विधा में नहीं लिखा गया यह एक अपने प्रकार का अनूठा ही प्रयोग था जिसका परिवेश 'भाणों' का शिल्प 'गद्यकाव्य' का, आवरण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'आख्यायिका' का, कथा-शैली पुराणों एवं इतिहास की तथा वस्तु एवं पात्र अतिसाधारण अपितु निम्नगामी समाज को प्रस्तुत करते हैं, जहाँ धर्म, काम एवं अर्थ का अनुचर है।

कथावस्तु--भारतीय संस्कृति में आदर्शवाद की प्रमुखता का उद्घोष भारतीय-साहित्य के द्वारा जितना किया गया उतना विश्व के किसी साहित्य द्वारा किसी संस्कृति का न किया गया होगा। विशेष कर प्राचीन साहित्य तो आदर्श के प्रचार के हेतु ही लिखा गया ऐसी प्रतीति होती है। यद्यपि 'मृच्छकटिक' 'दशकुमारचरित' जैसी नितान्त यथार्थवादी रचनायें भी विश्व-विश्रुत हुई और पाश्चात्य रुचि के अनुरूप होने के कारण विश्वव्यापी ख्याति भी अर्जित की। दशकुमारचरित की कथावस्तु ही वास्तव में उस चमत्कार का केन्द्र है जिसका विन्यास अत्यन्त कौशल के साथ किया गया है। कथा-वस्तु लक्षण ग्रन्थों में प्रवन्ध काव्य की कथा वस्तु के लिये निर्देश थे कि इसका निवन्धन इतिहास–महाभारत, रामायण आदि अथवा अन्य कथाओं के आश्रय से निष्पन्न सत्य वृत्तान्त को लेकर होता है। उस सत्य वृत्तान्त का लक्ष्य चतु-वर्ग धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है उसका केन्द्रविन्दु कोई चतुर तथा उदात्त नायक होता है।

'इतिहास-कथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम् ।
चतुर्वर्गफलायत्तं चतुरोदात्तनायकम् ।

काव्यादर्श १।१५

इस दृष्टि से देखा जाये तो दशकुमारचरित की कथा वस्तु न तो इतिहास, पुराण, महाभारत अथवा वृहद् कथा आदि से ली गई और न ही उसका उद्देश्य चतुवर्ग की प्राप्ति है। जैसा कि पहले भी कहा गया कि लोक जीवन से लोक काव्यों का प्रणयन हुआ और विद्वानों के एक वर्ग का आग्रह परम्परा-बद्ध काव्यों की अपेक्षा लोक काव्य की ओर उन्मुख था–सम्भवतः इसी के परिणाम स्वरूप 'दशकुमारचरित' भी लोक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है–'A New History of Sanskrit Literature' में कृष्ण चैतन्य लिखते हैं–

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'It is not the courtly world of elegant kings and aristocrats; the familiar characters of the kavys that we meet here, the world of Mriccbakalik and the Buans comes to life again and we rub shoulders with bawds, courtesans, unfaihful wives, crooked priests, bypoorifical ascefies unscrouplous rogues, incorrigible rakes, light hearled idlers."

दशकुमारचरित की कथावस्तु का शिल्प विन्यास भी अनूठा है--विद्वानों की असंदिग्ध मान्यता है कि पूर्वपीठिका जिसमें कथा का उपोद्घात है, प्रस्तुतीकरण है, अंग्रेजी में जिसे 'Frame work' कह सकते हैं वह प्रक्षिप्त है और उसी प्रकार अन्तिम भाग जहाँ कथा का उपसंहार है वह भी वाद में जोड़ा गया अंश है--ये निष्कर्ष दशकुमारचरित के वर्त्तमान रूप की तुलनात्मक समीक्षा के फलस्वरूप निकले हैं। इस मत को मान लेने पर दो कठिनाइयाँ आती हैं एक तो यह कि मूल चरित-भाग प्रारम्भ तथा अन्त दोनों से अधरा प्रतीत होता है उसके अवशिष्ट अंश कहाँ हैं ? और दूसरा यह कि मूलभाग इतना ही है तो इसका नाम अष्टकुमारचरितम् क्यों न हुआ ? वर्त्तमान दशकुमारचरित' की कथा इस प्रकार है।

मंगलाचरण के अनन्तर कादम्बरी की शैली में कथा का प्रारम्भ है। मगध देश की पुष्पपुरी नामक नगरी में राजहंस नामक राजा था, उसकी पत्नी का नाम वसुमती था, कुल परम्परागत धर्मपाल, पद्मोद्भव एवं सितवर्मा तीन उसके सचिव थे। उनमें से सितवर्मा के सुमति और सत्यवर्मा, धर्मपाल के सुमन्त्र सुमित्र एवं कामपाल तथा पद्मोद्भव के सुश्रुत और रत्नोद्भव नाम के पुत्र हुए। उनमें से धर्मपरायण सत्यवर्मा संसार की असारता को समझ कर तीर्थयात्रा की इच्छा से देशान्तर चला गया, कामपाल अनाचारी हो गया, रत्नोद्भव वाणिज्य में निपुण होने के कारण सामुद्र व्यवसाय में संलग्न हुआ। शेष मंत्रि-पुत्र अपने पिताओं की भाँति मंत्रि-पद पर आसीन हुए। मगधेश्वर राजहंस ने मानसर के मालवा में बढ़ते प्रताप को न सहते हुए से प्रबल सेना सहित उस पर आक्रमण किया दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुआ विजयी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मगधराज राजहंस ने विजित मानसार को पुनः उसके सिंहासन पर आरूढ़ कर दिया और स्वयं निःसन्तान होने के कारण भगवान् नारायण की सेवा करने लगा, कालान्तर में वसुमती ने गर्भ धारण किया किन्तु इसी समय कुचले हुए शत्रु मानसार ने सैन्य नियोजन कर लिया था अबकी बार युद्ध मालवेश्वर की ओर से प्रारम्भ किया गया था और साधना से अर्जित दिव्य साधनों के साथ अतः पराक्रमी एवं साधना सम्पन्न होते हुए भी मगधराज राजहंस परास्त हुए। वन में खोजे जाने पर भी राजा को न पाकर रानी वसुमती सती होने को उद्यत हुईं किन्तु अमात्यों ने उन्हें पुत्र-जन्म से आश्वस्त होने और शत्रु से प्रतिशोध लेने का परामर्श देकर जीवन धारण को रहने की प्रार्थना की। दैवयोग से थोड़े ही समय में उन्हें पति एवं पुत्र की प्राप्ति हुई। समस्त संस्कारों को सम्पन्न करा कर उसका नाम राजवाहन रखा गया। उसी समय सुमति, सुमन्त्र, सुश्रुत मन्त्रियों के भी प्रमति, मित्रगुप्त एवं विश्रुत नाम रखे गये। राजवाहन अपने मित्र मन्त्रिपुत्रों के साथ खेलता हुआ बढ़ने लगा। दैववशात् अपने अभिभावकों से वियुक्त सोमदत्त, पुष्पोद्भव अर्थपाल नाम के मन्त्रिपुत्र तथा अपहार वर्मा एवं उपहार वर्मा नाम राजहंस के मित्र प्रहारवर्मा के जुड़वां पुत्र भी विविध माध्यमों से राजहंस के पास पहुँचाये गये। ये दशकुमार एक साथ सुशिक्षित हुए। एक दिन महर्षि वामदेव (जिनके पास राजहंस मालवेश्वर से प्रतिशोधार्थ परामर्श ए सहायता लेने गया था) इस कुमार समूह के पास आए और राजा से कहा कि अनुकूलमित्र राजवाहन अब सब प्रकार से समर्थ हो गया है इसे सहचरों के साथ दिग्विजय करने के लिये भेजिए। कुमार राजवाहन भी उत्साहित होकर मित्रों के साथ निकल पड़ा और सर्वत्र प्रताप फैलाता हुआ विन्ध्याटवी पहुंचा। वहाँ उसने विचित्र रूपधारी ब्राह्मण देखा, परिचय जानने के प्र उसके आमंत्रण पर वह रात्रि को मित्रों को बताये बिना ब्राह्मण मातङ्ग के साथ पाताललोक के राज्य प्राप्ति की आशा में आ गया। मित्र-वर्ग ने प्रातः काल राजवाहन को न पाकर उसे आस पास ढूंढा फिर भी न मिलने खिन्न हो मतकर पुनः एकत्र मिलने के लिये संकेत स्थान बना कर पृ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पृथक् दिशाओं में उसे ढूंढने निकल पड़े। राजवाहन ने मातङ्ग की सहायता से पाताल लोक तथा पाताललोक सुन्दरी असुरराज कन्या कालिन्दी पर अपना आधिपत्य किया। मातङ्ग की अनुमति से कालिन्दी से विवाह कर तथा रसातल का राज्य पाकर आनंदित राजवाहन अपने मित्रों को ढूंढने के लिये पृथ्वी पर आया। चलते समय कालिन्दी ने भूख प्यास न लगने वाली एक मणि उसको दी। किन्तु भूमितल पर आकर भी मित्रों को न पाकर वह भूमण्डल में घूमने लगा। घूमते-२ विशालापुरी में उसने वियुक्त मित्र सोमदत्त को पाया। सोमदत्त ने अपते भ्रमण के वृत्तान्त को राजवाहन को बताया इसी प्रकार पुष्पोद्भव भी मिला और उसने भी अपने वृत्तान्त को सुनाया राजवाहन ने भी अपने अनुभव उन दोनों को सुनाये जिनमें अवन्तिसुन्दरी के प्राप्त होने, उसे सभी प्रकार के कौशलों से हस्तंगमित करने की कथा है। इसी प्रकार क्रमशः अपहार वर्मा, उपहार वर्मा, अर्थपाल, प्रमति, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त तथा विश्रुत सभी घूमते-घूमते राजवाहन से मिलते हैं और अपने यात्रा के अनुभवों को उपलब्धियों के साथ बतलाते हैं। इन कुमारों की उपलब्धियाँ थीं सुन्दरी तरुणियाँ, प्रभाव, राज्य एवं ऐश्वर्य जो इन्होंने सब प्रकार की नीतियों से प्राप्त किये थे। अन्त में पुनः सबने मिल कर मालवेश्वर पर चढ़ाई की और खोये हुए राज्य को प्राप्त कर लिया।

उक्त कथा का विवेचन कर यह सहज ही कहा जा सकता है कि प्रबन्ध-काव्यों की भाँति इसमें कथा का निर्वाह किया गया है। राजवाहन मुख्य नायक है तथा अन्य नौ कुमार सह-नायक, अतः राजवाहन की कथा आधिकारिक कथा है तथा सोमदत्त आदि की कथाएँ (पताका) प्रासङ्गिक कथायें हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक पताका कथा के साथ एक अथवा एक से अधिक प्रकरी कथाएं भी हैं। इतनी कथाओं, घटनाओं तथा पात्रों के होते हुए भी दण्डी के कथा विन्यास में कहीं भी शिथिलता नहीं है। प्रत्येक घटना तथा कथा मुख्य आधिकारिक कथा के सूत्र में पिरोयी हुई प्रतीत होती है। आ० बलदेव उपाध्याय के अनुसार :—

"कथा वैचित्र्य इस चरित में बहुत ही मनोरञ्जक है। इनकी कथाओं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की जान इनकी विचित्रता है।"

प्रो० कृष्ण चैतन्य ने कथा विन्यास की निम्न रूप में आलोचना की है–

"While the frame is rather static in the other cycles, he there is progression in the framə–story too, for the now concludes with Raj-Vahan reqaining his kingdome with th help of his friends."

'अद्‌भुत भारत' नामक ग्रन्थ में ए० एल० वाराम ने दशकुमारचरित कथा शिल्प की सराहना करते हुए लिखा है कि–

दण्डी का दशकुमार चरित भावोत्तेजक तथा चातुर्यपूर्ण कहानियों संग्रह ग्रंथ है। वे कहानियाँ कथा निर्माण द्वारा सब एक साथ प्रस्तुत हुई और महान् चातुर्य द्वारा सब अन्तर्ग्रंथित हैं।

चरित्र-चित्रण :–उपन्यासों में चरित्र-चित्रण का महत्त्व सम्भवतः सर्वा शायी है इसलिये दण्डी की प्रतिभा का आकलन उनकी चरित्र-चित्रण कला से सहज ही हो सकेगा। किसी भी साहित्यकार का साहित्य जीवन समाज के प्रति उसकी निजी प्रवृत्तियों, स्वप्नों एवं आस्थाओं का ही प्र फलन होता है, जिसे वह अपने पात्रों द्वारा मूर्त्त करता है। कि दण्डी के विषय में विशेष कर 'दशकुमारचरित' के सन्दर्भ में उनके पात्रों भूमिका संस्कृत साहित्य की परम्परा के विपरीत नितान्त यथार्थवादी दृ कोण में सिद्ध होती है। उनके पात्र महाकाव्यों के पात्रों की भाँति महास तो हैं। किन्तु गम्भीर नहीं उनमें मर्यादा के नाम पर स्वनिर्मित शास्त्रीय हैं, पर स्त्रीगमन, हत्या, षड्यन्त्र, कपट, चोरी, मिथ्या सम्भाषण, द्यूत अ के अपराध भी नायकोचित हैं।

इन पात्रों के माध्यम से दण्डी ने अपने युग के समाज में व्याप्त भ्रष्टा राजकीय विलास, कूट व्यापार, षड्यन्त्र, संधि, विग्रह तथा असीम भोग तृ का अनावृत नर्त्तन प्रस्तुत किया है। सफलता येन केन प्रकारेण उपलब्ध वरेण्य है, नारी पात्रों में भी 'सौन्दर्य' के अतिरिक्त कोई अन्य मानवीय गरिमा तथा औदात्त्य ढूंढने से भी नहीं उपलब्ध होता। देवी वसुमती का के साथ सती होने के लिये प्रवृत्त होना तथा गोमिनी का सुलक्षण होना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो स्थानों पर नारी के प्रति आस्था व्यक्त की गई अन्यथा सर्वत्र कुटनी, व्यभिचारिणी, कामान्ध, वित्तलोलुप, तथा सभी प्रकार से निकृष्ट नारी पात्रों की उद्भावना कवि ने की है। अपने पति को कुंये में ढकेल कर आर्थिक सहायता के लिये अपंग को कन्धे पर लाद कर चलने वाली धूमिनी पतिव्रता का पाखण्ड रचाती है, मात्र दैहिक सौन्दर्य के वशीभूत रानी अपने प्रेमी की सहायता से अपने पति की हत्या कराती है, राजकुमारियाँ तथा धनिकों की पुत्रियाँ विवाह से पहले माता वन कर पुत्र को मृत घोषित करने में सफल हो जाने पर वुद्धिमती कहलाती हैं और इसी प्रकार के न जाने कितने स्त्री पात्रों से दशकुमारचरित भरा पड़ा है। यहाँ वेश्यायों की प्रतिष्ठा है, उनका पृथक् जीवन दर्शन है, वे राजदरबारों तथा महर्षियों के आश्रमों सर्वत्र मुखर स्वर में अविकार व्यक्त करती हैं।

इस प्रकार के चरित्रों के कुचक्रों, अनैतिकताओं एवं चरम भोग लिप्तता यथार्थ के प्रति कुरूपता का वोध कराती है। अवन्तिसुन्दरी कथा के प्रस्तावना में दण्डी ने इतना तो स्वीकार किया है कि युवावस्था में वे जंगलों में इधर से उधर भटकते रहे किन्तु उन्होंने ऐसा वीभत्स स्त्री तथा पुरुष समाज भी देखा इसका अनुमान हमें दशकुमारचरित से ही मिलता है।

The characters are wise to all the fricks Queen vasundhara finds a brilliant way of spreading a false rumour. She inirtes the oldest of the citizens and the highest of ministers to a secret meetting at which under the most solener pledge of secrecy she reveals the canard.

फिर भी पात्रों की नैतिकता को छोड़कर उनके साहस, शौर्य, संकल्प, वुद्धि एवं मित्रों के पारस्परिक प्रेम की सराहना की जा सकती है। वे सुशिक्षित हैं, अपनी सफलता के लिये स्वयं मार्ग बना लेने में सिद्धहस्त। उसी प्रकार स्त्रियाँ भी शोषित होने योग्य निर्बल नहीं हैं उनमें प्रत्युत्पन्नमतित्व, साहस, निष्ठुरता, दृढ़ता, स्थिरता आदि अस्त्रियोचित गुण भी विद्यमान हैं। प्रेम के प्रति अवश्य ही न स्त्री और न पुरुष का उदात्त दृष्टिकोण है; संस्कृत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कवियों में भौतिक रूप मात्र के प्रति नारी की इतनी आसक्ति यहाँ अनठी एवं पहली है उसी प्रकार यौवन के मद में समस्त अपचारों की उपासना भी यहीं प्राप्त होती है।

अस्तु, चरित्र चाहे जैसे भी हों उनका चित्रण व्यञ्जना गर्भित वैदर्भी शैली में होने के कारण स्वाभावोक्ति के सौन्दर्य को मूर्त्त कर देता है। संक्षेप में अधिक कह देने की क्षमता भी दण्डी की चरित्र-चित्रण कला का ही अंग है। आचार्य राम जी उपाध्याय के अनुसार--

"सारे विधान अद्भुत हैं किन्तु उनकी संघटना इस कुशलता से की गई है कि सब कुछ विश्वसनीय प्रतीत होता है। यही दण्डी की कला है"

पाश्चात्य आलोचना दण्डी का चरित्र चित्रण अत्यन्त प्रशस्त माना गया क्योंकि अरस्तु साहित्य यथार्थ की प्रमुखता पर बल देता है उसके अनुसार वास्तविक जीवन के पात्र ही अनुरूप एवं अनुकूल साहित्यिक प्रभाव छोड़ने में सक्षम होते हैं। शास्त्रीय नायिका भेद के आधार पर दशकुमार-चरित की नायिकाओं में मुग्धा, प्रगल्भा स्वकीया, परकीया, ऊढा, अनूढा, स्वयंदूती, प्रोषितपतिका आदि प्राय: मुख्य सभी प्रकार की हैं। दण्डी ने उनका चरित्र चित्रण भी उस रूप में किया है जिससे उनके तद्-तद् रूप उद्भावित होने में अतीव सफलता प्राप्त हुई है।

वर्णन कला अथवा वस्तु प्रस्तुतीकरण:—गद्य में वैदर्भी का प्रयोग करने वाले दण्डी का आदर्श 'ओज: समा सभूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्' नहीं था क्योंकि उनके समक्ष जितना प्रचुर वर्ण्य था उसके उपयुक्त वैदर्भी रीति ही थी। पारम्परिक गद्य(सुबन्धु एवं बाण के गद्य को यदि छोड़ भी दिया जाये तो)अत्यधिक अलङ्कृत था उसमें वर्ण्य खो कर रह जाता था, दण्डी का यह अभिप्रेत नहीं था उनके लिये 'चरित' प्रधान था कला गौण। जो कि स्वयं कला है तथापि अलङ्करण, रीति, गुणों एवं कवि रूढ़ियों सभी का प्रयोग साधन रूप में है। सौन्दर्य के प्रति (नारी सौन्दर्य ही वर्णित है) परिष्कृत एवं वैभवमयी सुरुचि व्यक्त है। यौवन के गुण से शारीरिक सौन्दर्य का परिपूर्ण होना कालिदास की भाँति दण्डी के सौन्दर्य दर्शन में भी लक्षित है। बाण की भाँति स्त्री का नख शिख

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौन्दर्य का उद्घाटन दण्डी ने भी किया है किन्तु अत्यन्त संक्षिप्त एवं ध्वन्यात्मक है, उनके सौन्दर्य चित्रण में उपमान अथवा अप्रस्तुत सर्वथा नवीन हैं। सौन्दर्य आह्लादक नहीं उत्तेजक है–उसका निर्माण ही काम के विविध उपादानों से हुआ है, दण्डी की दृष्टि में नारी पूर्णतया 'कामिनी' है, 'मोहिनी' है उसके रूप का मोह पाश 'काम' पुरुषार्थ है उसकी उपासना वरेण्य है–दण्डी के वर्णन शिल्प में सौन्दर्य के ये सभी तत्व उद्घाटित हो गये हैं।

अन्य वर्ण्य हैं अरण्य, मार्ग, भवन, वृक्ष, वाटिका आदि । घटनाओं की क्षिप्रता एवं प्रचुरता के कारण सुबन्धु एवं बाण की भाँति उपादानों को सजाकर प्रस्तुत करने का अवकाश दण्डी के पास नहीं था फिर भी वातावरण की सृष्टि के लिये सभी वर्ण्य पर्याप्त ध्वन्यात्मकता के साथ निखरे हैं। दण्डी का यथार्थवादी जीवन दर्शन वस्तुओं के अतिशयोक्ति रहित चित्रण में व्यक्त हुआ है। वस्तुगत वैचित्र्य भी वर्णन शैली के कारण सहज गतिमय प्रतीत होता है।

मानवीय प्रवृत्तियों, चेष्टाओं, धूर्त्तताओं एवं कुचक्रों का वर्णन अत्यन्त निर्भीकता के साथ परिपूर्ण रूप में किया गया है। व्यक्तिगत मान्यताओं को शास्त्रीय समर्थन प्राप्त कराते हुये जहाँ आलंकारिक सौन्दर्य दर्शनीय है वहीं काव्यवचन भी पुष्ट हुआ है। कपट योजनायें, कुचक्र तथा षडयन्त्र कितने ही गम्भीर एवं दीर्घ क्यों न हों भाषा के प्रवाह तथा शब्दों के उपयुक्त प्रयोग के कारण संश्लिष्ट नहीं हुये हैं।

रसाभिव्यञ्जना :–जैसा कि प्रबन्ध काव्यों में प्रायः दृश्यमान है कि नवो रसों की यथास्थान अभिव्यक्ति होती है, नाटक के जीवन का आद्योपान्त चित्रण होने के कारण जीवन की सुख-दुःखमयी स्थितियों तथा अनुभूतियों का यथा तथा चित्राङ्कन काव्य में विभिन्न रसों का प्रयोजक बनता है। दशकुमारचरित में भी न्यूनाधिक रूप में सभी प्रकार के भावों को सहृदयसंवेद्य बनाया गया है किन्तु प्रधानता तीन ही रसों की है 'शृङ्गार' 'वीर' एवं 'अद्भुत'। राजवाहन से लेकर अपहारवर्मा, उपहार वर्मा, अर्थपाल, प्रमति, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त, विश्रुत, सोमदत्त तथा पुष्पोद्भव सभी ने जब दिग्विजय के लिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्थान किया तभी से तीनों लौकिक पुरुपार्थों धर्म, अर्थ, काम के अभ्युदय हेतु कृत संकल्प थे। इनमें से भी धर्म की उपासना वृद्धावस्था के लिये छोड़कर अर्थ एवं काम सञ्चय में यथाशक्ति संलग्न हो गये थे। ये दोनों ही पुरुषार्थ पौरुष से प्राप्य थे अतएव एक से एक साहसिक, रोमाञ्चक कृत्यों से 'वीर' रस की अभिव्यंजना हुई है। ये एक-एक कुमार अपने बुद्धि वैभव तथा शारीरिक बल से बड़े-बड़े संगठित राज्यों को हस्तगमित करने में सफल हुए उनमें राजन्योचित शौर्य एवं पराक्रम कवि की अद्भुत वर्णन शैली में अभिव्यक्त हुआ है। उत्कलिका शैली में युद्ध तत्पर मानसार का उत्साह व्यक्त किया गया है—

"ततः कदाचिन्नानाविधमहदायुधनैपुण्यरचितागण्यजन्यराजन्यमौलिपालिनिहितनिशितसायको मगधनायको मालवेश्वरं प्रत्यग्रसङ्ग्रामघस्मरं समुत्कटमानसारं मानसारं प्रति सहेलं न्यक्कृतजलधिनिर्घोषाहङ्कारेण भेरीझाङ्कारेण हठिकाकर्णनाक्रान्तभय चण्डिमानं दिग्दन्तावलवलयं विघूर्णयन्निजभरनमन्मेदिनीभरेणायस्तभुजगराजमस्तकबलेन चतुरङ्गबलेन संयुतः संग्रामाभिलाषेण रोषेण महताविष्टो निर्ययौ।"......

तयोरथ रथतुरगखुरक्षुण्णक्षोणीसमुद्भूते करिघटाकटस्रवन्मदधाराधौतमूले नव्यवल्लभवरणागतदिव्यकन्याजनजवनिकापटमण्डप इव वियत्तलव्याकुले धूलीपटले दिविषदध्वनिधिक्कृतान्यध्वनिपटहध्वानबधिरिताशेष दिगन्तरालं, शस्त्राशस्त्रि हस्ताहस्ति परस्पराभिहतसैन्यं जन्यमजनि।

भाषा भाव की प्रवाहिका है इसलिए भावानुसार गुणों एवं अल्पवृत्ति अथवा समस्तपदी का प्रयोग श्रव्यकाव्यों में 'रस' के सन्दर्भ में विशेष प्रयोजक होता है। दण्डी 'रस' की इस संप्रेषणशीलता के प्रति सजग थे इसीलिये वैदर्भी के उपासक होते हुए भी उन्होंने 'वीर', रौद्र तथा 'अद्भुत' रस के सन्दर्भ में गद्य की उत्कलिका शैली तथा विकटाक्षरबन्ध का आश्रय लिया है। बाण के काव्य की भाँति दण्डी के काव्यों में भी 'रस' की स्फुट स्थिति साध्य है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शृङ्गार के सन्दर्भ में दण्डी ने संयोग शृङ्गार की पराकाष्ठा तक अभिव्यक्ति की है। मगधेश्वर राजहंस का पत्नी वसुमती के साथ सात्विक दाम्पत्य से प्रारम्भ कर उपहार वर्मा की परस्त्रीरति तक 'रति' स्थायी भाव अपने उदात्त-तम तथा निकृष्टतम रूप में स्फुटित हुआ है। दैहिक एवं ऐन्द्रिय आसङ्ग में आकण्ठ निमग्न दण्डी के पात्र कालिदास अथवा बाण के पात्रों की भांति अलौकिक प्रेम की अनुभूति भले न करते हों वे कामोत्कण्ठा जन्य उत्तेजना में समस्त भौतिक भोग की उपलब्धि कर लेते हैं। काम की दसों दशायें स्त्री पात्रों में संकेतित हैं। शृङ्गार का अनावृत चित्रण करने में दण्डी उस सीमा तक मुक्त हैं जहाँ अश्लीलता भी अभिव्यङ्ग्य हो गई है इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए तत्वमर्मज्ञ विद्वानों ने काव्यादर्शकार दण्डी और दशकुमारचरितकार 'दण्डी' में विभेद स्थापित किया है। संयोग शृङ्गार के चित्रण में दण्डी का स्थान नैषधीयचरित के प्रणेता श्रीहर्ष अथवा कुमारसम्भव के कालिदास से भी अग्रगण्य है। ऐन्द्रिय उत्तेजना, तृप्ति एवं मुक्ति का जैसा स्पष्ट एवं विशद चित्रण दशकुमारचरित में मिलता है वैसा परवर्त्ती काल में अमरूकशतक, शृङ्गारशतक जैसे लोककाव्य में ही देखने को मिला है। 'राजवाहन' एवं 'अवन्तिसुन्दरी' का पारस्परिक राग किस प्रकार अभिव्यक्त होकर पूर्णकाम हुआ इसका चित्रण संक्षिप्त किन्तु ध्वन्यात्मक है :—

"अम्बुजासनास्तनतटोपभुक्तमुरःस्थलं चेदमालिङ्गयितुम्" इति प्रियोरसि प्रावृडिव नभस्युपास्तीर्णगुरुपयोधरमण्डला प्रौढ़कन्दलीकुड्मलमिव रूढरागरूषितं चक्षुरुल्लासयन्ती वर्हिवर्हवलीविडम्बयता कुसुमचन्द्रकशारेण मधुकरकुलव्याकुलेन केशकलापेन स्फुरदरुणकिरणकेसरकरालं कदम्बमुकुलमिव कान्तस्याधरमणिमधीरमाचुचुम्ब।

—दशकुमारचरित पृ० १३०-१३१

इस प्रकार के अथवा इससे भी अधिक स्पष्ट रति के चित्रण दशकुमारचरित में बहुलता से प्राप्त होते हैं— 'रस' की सामाजिक में अभिव्यक्ति के दृष्टिकोण से यदि देखा जाये तो इस प्रकार के चित्रण कामोत्तेजक तो हो सकते हैं किन्तु प्रेम की स्थायी तथा उदात्त अभिव्यञ्जना कथमपि नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर सकते ।

दशकुमारचरित में सर्वाधिक प्रकृष्ट अभिव्यञ्जना एवं व्यापक प्रभावशील रस अद्भुत है, जो एक ओर कथा के कौतूहल में अभिवृद्धि करता है तो दूसरी ओर पाठक को चमत्कृत किए बिना नहीं रहता । विचित्ररूपधारी द्विज मातङ्ग, ७ क्षपणक दिगम्बर जैन साधु, ऐन्द्रजालिक आदि विशिष्ट पात्र तथा बहुत से राजाओं का ही विकट वेश विन्यास के आद्भु ुत्य को व्यक्त करने में सक्षम है । अद्भुत दृश्य की उद्भावना तथा अवतारणा करने में दण्डी की कला का दिग्दर्शन हमें कई स्थलों में होता है–राजवाहन की सहायता के लिये ऐन्द्रजालिक जो खेल दिखाता है उसमें तरह–तरह के वाद्यों से पहले रोमाञ्चक वातावरण की सृष्टि की गई जिसमें वेश्यायों के मधुर गायन के साथ मोर के पंखों को घुमा-घुमा कर सामाजिकों की चित्तवृत्ति को पूर्णतया सम्मोहित कर लिया गया । इसके बाद वह चुपचाप बैठ गया और उसके अन्य साथी उसके चारों ओर घूमने लगे जिससे बड़े-बड़े फनवाले बहुत से सांप निकलते दिखाई पड़े । वे अपने मुख से भयानक विष उगल रहे थे और उनके मस्तक के मणि उस राजमन्दिर के आंगन को देदीप्यमान कर रहे थे। उसी समय बहुत से गीध आये और उन बड़े-बड़े सांपों को अपनी चोंच में दबाकर आकाश में उड़ने लगे । इसके बाद उस ब्राह्मण ने नृसिंह भगवान् के द्वारा हिरण्यकशिपु की छाती फाड़ने का विस्मयजनक अभिनय दिखलाया। और अन्त में राजा से कहा–राजन् ! अब खेल के अन्त में एक शुभसूचक खेल देखना उचित है । मैं आपकी कन्या के आकार की एक तरुणी का सर्वलक्षणोपेत एक राजकुमार से विवाह कराऊंगा' उसने तत्काल समस्त जनसमुदाय को मोहित करने वाला एक विशेष अञ्जन अपनी दोनों आखों में लगा कर चारो तरफ देखा और वैवाहिक मंत्रों के उच्चारण के साथ अग्नि को साक्षी कर पहले से ही आई हुई अवन्तिसुन्दरी (वास्तविक) का विवाह राजवाहन से करवा दिया" ।

इस प्रकार अद्भुत कर्म से अद्भुत परिणाम की संयोजना यद्यपि पूर्णतया काल्पनिक ही हो सकती है तथापि अद्भुत रस की सर्जना में कृतकर्मा है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसी प्रकार उपहारवर्मा का विकटवर्मा की पत्नी तथा राज्य को प्राप्त करने के लिए 'चित्र' के अनुरूप उसे वना देने के व्याज से अंधरी रात में यज्ञाग्नि में जीवित जला देने का दृश्य कारूणिक न होकर अद्भुत की ही सृष्टि करता है। कारुणिक स्थलों की अवतारणा अपेक्षाकृत न्यून है यद्यपि वस्तु में उसके उपयक्त पर्याप्त संकेत प्राप्त होते हैं, कुमार अर्थसिद्धि तथा कामसिद्धि के लिए अनेक हत्यायें करते हैं किन्तु ये हत्यायें वह प्रभाव छोड़ती हैं जो अन्याय, अनाचार तथा कुत्सित कार्यों की समाप्ति की व्यञ्जना कराता है। फलतः नायक गत उत्साह की अभिव्यक्ति होती है। मृत के प्रति करुणा का सञ्चार नहीं। केवल मगधेश्वर राजहंस के मालव नरेश मानसार से युद्ध के अनन्तर की आपत्ति वसुमती का विलाप तथा द्विजों एवं अमात्यों के सान्त्वना वचनों में करुणा के उपयुक्त पृष्ठभूमि है, कुमार जो मन्त्रिपुत्र थे उनके अपने अभिभावकों से वियुक्त होकर तथा दैवयोग से अनेक आपदायें पार करके जिस प्रकार धात्रियों, सेविकाओं, सखियों द्वारा राजा के पास लाये गये वे भी करुण रस की अभिञ्जना करने में समर्थ स्थल है। दण्डी का जीवन दर्शन भोगवादी रहा है इसीलिए संसार को आशावादी दृष्टिकोण से देखा गया है जहाँ विषाद के लिए विलाप का प्रश्रय नहीं दिया गया है।

'हास्य' रस की स्फुट अभिव्यक्ति अनेक स्थलों पर हुई है, चौरकर्म द्यूतक्रीड़ा षडयन्त्र धूर्त्तता, तरह-तरह के व्याज से अभीप्सित स्त्रियों से मिलना आदि अनेक प्रसंगों में हास्य रस को पर्याप्त अवसर प्राप्त हुआ है। इन्द्रजाल के खेल के साथ राजवाहन एवं अवन्ति सुन्दरी का विवाह हो जाना सुरङ्ग द्वारा से कन्यान्तः पुर में पहुंच जाना, राजकुमार अपहारवर्मा की चोरी की निपुणता, वेश्याओं की विविध कल्पनाओं का ऊहापोह विशेष कर काम मञ्जरी का महर्षि को मूर्ख बनना, स्त्रीवेश में कुमार का राजकुमारी के अन्तःपुर में रहना आदि नाना प्रसङ्ग हास्यरस की प्रकृष्ट अवतारणा करने में सफल हुये हैं।

इन रसों के अतिरिक्त रौद्र, वीभत्स भयानक तथा शान्त रसों की यथावसर अभिव्यक्ति हुई है। वीभत्स रस का संप्रेषण युद्ध स्थलों में सावसर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कराया जा सकता था किन्तु दण्डी को युद्ध के बाद के उत्साह के समक्ष उसका बीभत्स रूपधारी परिणाम नगण्य लगा। वस्तुतः कवि का सारा ध्यान श्रृङ्गारिक तथा वीररस का उद्रेक कराने वाली घटनाओं में केन्द्रित रहा है। इसलिए अन्यभावों को गौण स्थान ही उपलब्ध हो सका।

रीति—'रीतिरात्मा काव्यस्य' कहने वाले आचार्यों में काव्यादर्श प्रणेता दण्डी का भी प्रमुख नाम है। इसे 'मार्ग' तथा यहाँ तक कि 'काव्य' जैसा उदात्त अर्थ भी आचार्यों ने दिया है। इसलिये किसी कृति की समीक्षा करने में उसमें प्रयुक्त 'रीति' का विवेचन अपरिहार्य हो जाता है। भाषा के प्रयोग-कर्त्ता जनों की व्युत्पत्ति को लक्ष्य कर वाणी के विचित्र मार्गों की रचना विधि का शास्त्रीय निबन्धन विद्वानों ने किया है। वाणी के अनेक मार्ग हैं। और जिनमें परस्पर व्यवहारगम्य प्रयोग लक्ष्य भेद हैं। उनमें वैदर्भ तथा गौड़ीयमार्ग का भेद बहुत स्पष्ट है। अन्य पाञ्चाल तथा लाट मार्ग इन्हीं की मिली जुली विशेषताओं से बने हैं।

श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारत्व, ओज, कान्ति तथा समाधि ये दस गुण वैदर्भ मार्ग के प्राण हैं। वैदर्भ का नाम दाक्षिणात्य भी है

किन्त गौड़ मार्ग में इन दशों गुणों का विपर्यय देखा जाता है। कुछ का बिल्कुल अभाव है, कुछ का अंशतः ग्रहण और कुछ का ग्रहण। गौड़ मार्ग को पौरस्त्य काव्य पद्धति भी कहते हैं।

वैदर्भ और गौड़ के भी अपने उपभेद हैं, जो उनके अनुगामी प्रत्येक कवियों के अपने हो सकते हैं। ईख, दूध, गुड़, शर्करा—सभी के स्वाद में जो मधुरता है उसे एक समान नहीं कहा जा सकता, एक दूसरे की मधुरता में परस्पर महान् अन्तर है इसी प्रकार विविध कवि मार्गों की शोभा एवं चमत्कार भी पृथक्-पृथक् कोटि का होता है, जो उसकी विशिष्टता का परिचायक होता है। हिन्दी अलोचना में इसे 'शैली' कहा जाता है, 'शील' एवं 'शैली' कवि का अपना अपना कवित्व, लेखकत्व जो अपनी विशिष्टता को काव्यशास्त्र में वर्णित रेखाओं के आधार पर भी पृथक् रूप से व्यक्त कर देता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है वही उसकी 'रीति' अथवा 'शैली' है। अंग्रेजी में इसीलिये शैली की परिभाषा करते हुए कहा गया है–

Man is himself is style.

Murry. the Style.

'दशकुमारचरित' में दण्डी की 'रीति' का विवेचन करते हुए हम निम्न निष्कर्षों में पहुँचे हैं।

१. दण्डी ने 'गद्यकाव्य' में भी ओजस् जो समस्तपदी में सिद्ध होता है उसकी अवहेलना की है जो गद्य-काव्यकारों की परम्परा के विपरीत था।

२. कालिदास के वैदर्भमार्ग की लोकप्रियता को देखते हुए उससे प्रभावित होकर उन्होंने वैदर्भ मार्ग को श्रेष्ठ स्वीकार किया है और उसी का प्रयोग दशकुमारचरित है।

३. दण्डी के समय तक काव्य के दश से भी अधिक गुण प्रसिद्ध थे जिनमें श्लेष, समता, प्रसाद 'माधुर्य, ओजस्, कान्ति, समाधि, अर्थव्यक्ति, उदारत्व तथा सुकुमारता के अन्तर्गत समस्त काव्य शरीर की शोभा का अन्तर्भाव माना जाता था। दशकुमारचरित में श्लेष, अर्थव्यक्ति, प्रसाद, माधुर्य, कान्ति एवं ओज गुणों का भावानुसार प्रयोग है। वैदर्भीरीति की परिभाषा करते हुए आचार्य ने लिखा है––

माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका ।
अल्पवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते ।।

अर्थात् वैदर्भी रीति वह है जिसमें अधिकाधिक माधुर्यगुण के व्यञ्जक वर्णों का संन्निवेश हो तथा काव्य रचना में शब्द तथा अर्थ का ललित सामञ्जस्य हो, भाषा में समास अत्यल्प हों अथवा समासों का नितान्त अभाव हो। इस परिभाषा के अनुसार दशकुमारचरित को पूर्णतया वैदर्भी रीति में नहीं बाँधा जा सकता क्योंकि जहाँ 'रचना' शब्दों में ललितात्मिका है वहाँ भाव सर्वत्र ललित नहीं हैं, उसी प्रकार जहाँ युद्ध, सेना आदि के वर्णन हैं वहाँ समस्तपदी का बहुल प्रयोग है। माधुर्य व्यञ्जक हो नहीं प्रसाद एवं ओज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यञ्जक वर्णों का भी प्रायशः प्रयोग है। यह अवश्य है कि पदों का लालित्य, माधुर्य, अर्थ-व्यक्ति, प्रसाद एवं सुकुमारता गुणों ने दशकुमारचरित के पद सौष्ठव में चरमसीमा तक अभिवृद्धि की है। दण्डी की इस वैदर्भी रीति का ही महत्त्व है जिससे इनकी गणना 'वाण' जैसे 'शेमुषीसम्पन्न' गद्यसम्राट् के समकक्ष की जाती है अन्यथा भाव समृद्धि एवं रसाभिव्यज्जना में दण्डी एवं बाण की कोई तुलना नहीं थी।

"दण्डी का गद्य अपनी विशेषता रखता है। सुवन्धु के गद्य के समान न तो यह 'प्रत्यक्षर श्लेषमय' है और वाणभट्ट के गद्य के बराबर सरस स्वर वर्षपद से सुशोभित तथा साहित्यिक गद्य का आदर्श है। यह प्रतिदिन के काम में लाने लायक 'व्यावहारिक' गद्य का नमूना है। यह शैली 'दशकुमार' की कथा के वर्णन के लिये खूब ही उपयुक्त है। पदों में लालित्य भी है। वर्णन भी लम्बे-लम्बे समासों में नहीं है। वाक्य प्रायः छोटे-छोटे हैं।"

आ० वलदेव उपाध्याय "संस्कृत सुकवि समीक्षा" पृष्ठ २९५।

"His phrases are easy and graceful and alliteration, often employed by him using sweet and soft words -adds a yaculior charm to his style"

Dr. Neeta Sharma "Literary Study of Baubhatta"

page 222.

"The style is sensitive and can capture the beauty of down and dusk of spring of woman in play and repose.' Dandi can not restrain himself from slwwing off his technical brilliance. Tuis style does not lose its confidence when the tone shifts to the sondre;;

Prof krishna cuattarya. A; new history of sanskrit fiteratur

page 381

दण्डी की शैली पर विद्वानों के उक्त विचारों को देखते हुए 'दशकुमार चरित' में उनकी शैली की विविधता, भावानुरूप भाषा का प्रयोग, पद-लालित्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

('पद' अर्थात् 'शब्द' का रमणीय अर्थ के प्रतिपादन में क्षमता सम्पन्न होना) साथ ही मनोहर एवं सुरुचिपूर्ण शब्द प्रयोग, सुगमता, सरसता, प्रवाह- तथा अनरणनात्मकता आदि गुण सहज ही लक्षित किये जा सकते हैं । भाषा पर उनके सशक्त अधिकार का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है कि पूरा सप्तम उच्छ्वास ओष्ठ्यवर्ण रहित रचा गया है क्योंकि वक्ता मन्त्रगुप्त का अधर प्रिय के दंतदंश से क्षत था तथापि उक्त उच्छ्वास काव्यत्व, रस, प्रकृति-चित्रण तथा भावाभिव्यक्ति की यथार्थता आदि किसी क्षेत्र में भी हीनमहत्त्व नहीं है ।

गुण :--रीति विवेचन के अन्तर्गत यद्यपि उसके गुणों का अभिधान हो चुका है किन्तु काव्य गुणों का स्वरूप, उनकी परिभाषा सहित पृथक्-पृथक् उदाहरण प्राप्त कर दशकुमारचरित में उनके यथादेश निवसन का मूल्याङ्कन अभीष्ट है । जैसा कि मम्मट के काव्यप्रकाश में सबसे अधिक स्पष्ट रूप से जाना गया कि 'गुण' काव्य के लिये अपरिहार्य तत्त्व हैं उन्होंने काव्य का स्वरूप निर्धारित करते हुए लिखा है--

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' अर्थात् दोष रहित वही शब्दार्थ काव्य हो सकता है जो गुण सम्पन्न हो एक बार चाहे अलङ्कार न हों तब भी, क्यों कि 'गुणों' की काव्य में वही स्थिति है जो रमणी में उसके कान्ति, लावण्य, दीप्ति आदि की जब कि अलङ्कार उसके शरीर पर स्थित बाह्य सौन्दर्याधायक साधन हैं वे उसकी शोभा की अभिवृद्धि तो कर सकते हैं । किन्तु उसमें शोभा का आधान करने वाले 'गुण' ही हैं । वरञ्च दण्डी ने तो यहाँ तक कहा है--

काश्चिन्मार्ग विभागार्थमुक्ताः प्रागप्यलंक्रियाः ।
साधारणमलंकारजातमन्यत् प्रदर्श्यते ॥

काव्यादर्श २।३

अर्थात् गुण मार्ग (काव्य) के अलङ्कार हैं विशिष्ट काव्य (मार्ग) की विशिष्ट अलंक्रिया । इसके पूर्व के भावयुक्त साधारण काव्य के साधारण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपमा आदि दूसरे हैं।

दश गुणों की उनकी परिभाषा सहित दशकुमारचरित में तत्तद उदा- हरण दृष्टव्य हैं।

श्लेष--जब पदावली बीच-२ में महाप्राण अक्षरों और संयुक्त वर्णों से युक्त होती है तब उसमें श्लेष गुण होता है। श्लेष का अर्थ है रचना में शैथिल्य का अभाव और पूर्णबन्ध।

"सोऽपि परमानन्देन पल्लवितचेता विकसिताननारविन्दः। मम स्वामी सोमकुलावतंसो विशुद्ध यशोनिधी राजवाहन एषः"

–दशकुमार चरित यू० पी० पृ० ६२

प्रसाद--प्रसिद्ध अर्थ वाले पदों के प्रयोग से वाणी जहाँ अनायास ही अर्थ का बोध करा देती है वहाँ प्रसाद गुण होता है।

पूर्वमेव कृतरणनिश्चयो मानी मानपालः संनद्धयोधो युद्धकामो भूत्वा निःशङ्कं निरगात्। वही पृ० ७१

समता--आदि से अन्त तक एक समान पद संघटना को समता कहते हैं। वर्णों का बन्ध या संघटना तीन प्रकार की होती है। मृदु (ट–वर्ग रहित, असंयुक्त) विकट (ट–वर्ग युक्त, संयुक्त अक्षर), तथा उभयात्मक विकट एवं मृदु दोनों वर्णों से युक्त।

मृदु बन्ध--'तस्य वसुमती नाम सुमती लीलावती कुलशेखरमणी रमणी बभूव'।

विकटबन्ध------वीरभटपटलोत्तरङ्गतुरङ्गकुञ्जरमकरभीषणसकलरिपुगण-कटकजलनिधिमथनमन्दरायमाणसमुदण्डभुजदण्डः, पुरन्दरपुराङ्गणवनविहरण-परायणतरुणगणिकागण जेगीयमान.........

उभयात्मक---:राजहंसो नाम घनदर्पकन्दर्पसौन्दर्यसोदर्यहृद्यनिरवद्यरूपो भूपो बभूव।

यही नहीं पूरा दशकुमारचरित इसी गुण की विविध बानगियों स्वरूप लिखा प्रतीत होता है।

माधुर्य :---माधुर्य गुण गुणों एवं स्वयं काव्य का प्राणस्वरूप है। दण्डी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का कहना है कि माधुर्य गुण से वाक्य में रसवत्ता आती है। अर्थात् वाणी तथा अर्थ की 'रसवत्ता' ही माधुर्य है।

मधुरं रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसस्थितिः ।
येन माद्यन्ति धीमन्तो मधुनेव मधुव्रताः ॥

काव्यादर्श १।५१

यहाँ 'रस' का वह अर्थ ग्राह्य नहीं है जो नाट्यशास्त्रियों ने नौ प्रकार के रसों की व्याख्या करते हुए की है। अपितु 'रस' एक सामान्य कथन है, वाणी में रसवत्ता होने का तात्पर्य है-'श्रुति मधुर संगीतमय पदों का प्रयोग'। वस्तु अथवा अर्थ में रसवत्ता का तात्पर्य है काव्य अथवा कथा में आनन्ददायी प्रकरण का सन्निवेश। 'दण्डिनः पदलालित्यं' के रूप में दण्डी की पदललितता इसी माधुर्य गुण के प्रयोग की पर्याय है। वस्तुतः दशकुमारचरित' मे पदों की सरस शय्या वस्तु के मधुर अर्थ की अभिव्यञ्जना कराने में सर्वथा सक्षम है। अवन्तिसुन्दरी के सौन्दर्य चित्रण में पद तथा भाव का माधुर्य दर्शनीय है। वसन्त के वर्णन में भी उभय माधुर्य गुण सहजलक्षित किया जा सकता है--

अथ मीनकेतनसेनानायकेन मलगिरिमहीरुहनिरन्तरावासिभुजंगाभिभुक्ता वशिष्टेनेव सूक्ष्मतरेण धृतहरिचन्दन··· ···मानिनीमानसोत्कलिकामुपनयन् माकन्दसिन्दुवाररक्ताशोककिंशुकतिलकेषु कलिकामुपपादयन्··········मदनमहोत्सवाय रसिकमनांसि समुल्लासयन वसन्तसमयः समाजगाम।

माधुर्य गुण में पद की रसवत्ता का स्पष्टीकरण यद्यपि आचार्यों ने पृथक्-पृथक् रूप में किया है किन्तु सबका सार अथवा उद्देश्य एक ही है। अग्राम्यता माधुर्य रस के लिये अनिवार्य है अर्थात् ऐसे शब्दों का प्रयोग न किया जाये जिनका अव्यवहित श्रवण (एक साथ पढ़ने या सुनने पर) नये पद के रूप में अश्लील (असभ्य) अर्थ का वाचक बन जाय तथा ऐसे शब्दों का प्रयोग भी न किया जाय जो लोक में अपशब्द अथवा फूहड़ अर्थों में प्रसिद्ध हो-दण्डी ने इसका उदाहरण दिया है भार्या के लिये 'कन्ये' सम्बोधन। दशकुमारचरित में यदि सूक्ष्मतया देखा जाये तो अश्लीलता बोधक शब्दों का प्रयोग नहीं हुआ है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किन्तु सम्भोग शृङ्गार का चित्रण इस प्रकार किया है जो कि पाठक को उद्वेजक प्रतीत होता है जैसे राजवाहन आदि का सुरत के पश्चात् की क्लान्ति का वर्णन, दारुवर्मा का वासना की प्रबलता से बालचन्द्रिका के प्रति कामान्ध होने का वर्णन । सोती हुई राजकुमारी को देखकर अपहारवर्मा का कामोत्तेजक सुरत के लिये स्पष्ट आमन्त्रण के लिये प्रयुक्त 'आर्या' आदि की भाँति के नाना प्रसङ्गों से अश्लील अर्थ की व्यञ्जना होती है। सम्भवतः इसी प्रकार के चित्रणों को देखकर कहा गया है कि 'दशकुमारचरित' उस दण्डी की रचना नहीं है कि जिसकी रचना काव्यादर्श है ।

सुकुमारता :—इसका तात्पर्य है कि 'परुष' तथा संयुक्ताक्षरों का एकत्र प्रायः प्रयोग न हो, एकान्ततः इस प्रकार के वर्णों का अभाव भी न होना चाहिये वैदर्भी शैली के निष्णात दण्डी की रचना में यह गुण दुष्कर नहीं है।

चिरविलसनखेदनिश्चलां शरदम्भोधरोत्सङ्गशायिनीमिव
सौदामनीं राजकन्यामपश्यम् ।

अर्थव्यक्ति :—रचना में पदों का ऐसा सम्यक् प्रयोग, जिनके कारण अध्याहार आदि कष्ट-कल्पना के बिना ही अनायास अर्थ का बोध हो जाता है, अर्थ-व्यक्ति नाम का गुण है। 'अर्थव्यक्ति' गुण गद्य मयी रचना के लिये अपरिहार्य है । क्योंकि कि छन्दादिक बन्धन न होने के कारण यहाँ कवि को किसी भी अर्थ की स्पष्टा सुबोध अभिव्यक्ति के लिये उपयुक्ततम शब्द देने के लिये अवकाश रहता है । 'दशकुमारचरित' इस गुण का निदर्शन कहा जा सकता है कोई काव्यात्मक सौन्दर्य खोये विना इसमें वर्णन सुस्पष्ट है । गद्य काव्यों में इसीलिये इसे सरलतम कहा गया है। 'बाण' ने हर्षचरित की प्रस्तावना में 'आख्यायिका' के लिये जो 'सुखप्रबोध ललिता' विशेषण दिया है उससे इसी गुण के लिये उन्होंने संकेत किया है ।

उदारत्व :—जहाँ वाक्य द्वारा वर्णनीय वस्तु के किसी विशेष उत्कर्ष की अभिव्यक्ति हो वहाँ उदारगुण होता है ।

दशकुमारचरित में अलङ्करण, वर्णन तथा रूप चित्रण इसी 'गुण'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारण संक्षिप्त किन्तु ध्वन्यात्मक है। जिनसे कथित से अधिक अकथित है। 'कल्पसुन्दरी' का चित्रगत पुरुष सौन्दर्य को आत्मसात् कर उसके लिये कामना कीभाषाभिव्यक्ति अधिक नहीं है किन्तु उससे उसकी काम की दशों दशाओं का जो संकेत मिल गया है वह इसी उदारत्व गुण का चमत्कार है—

'अम्ब किं ब्रवीमि। शरीरं हृदयं जीवितमिति सर्वमिदमल्पमनर्हं च। ततो न किंचिल्लप्स्यते। न चेदयं विप्रलम्भस्तस्यामुष्य दर्शनानुभवेन यथेदं चक्षुश्चरितार्थं भवेत्तथानुग्रहः कार्यः' इति।

ओजस् :—'ओजः समासभूयस्त्वम्। बहुलता से समस्त पदों का प्रयोग ओज गुण है। दण्डी ने काव्यादर्श में इसे गद्य का प्राण बताया है। बाण तथा सुबन्धु का गद्य काव्य इसके निदर्शन हैं किन्तु दशकुमारचरित में सर्वत्र ही इस प्रकार की शैली का प्रयोग नहीं है। यह ओजस् गुण दो प्रकार से देखा जाता है—उल्बण अर्थात् गुरु तथा संयुक्त वर्णों का विकटपदबन्ध और अनुल्बण अर्थात् लघु वर्णों की प्रचुरता। दशकुमारचरित में अनुल्बण ओजस् ही दृश्यमान है। युद्धादिक के वर्णनों में इस प्रकार का प्रयोग भावानुरूप होने के कारण प्रशस्त माना जाता है। अतएव दण्डी ने भी केवल उन्हीं स्थानों पर इस प्रकार की पदावली का प्रयोग किया है।

कान्ति :—पदों का ऐसा अर्थ-विधान जो लोक प्रसिद्ध अर्थ का परित्याग न करे और स्फुट चमत्कार से अबोध से लेकर विदग्ध जन तक को चमत्कृत करे, कान्ति गुण है। इसका सम्बन्ध लोक व्यवहार से है जैसा कि स्पष्ट है। 'दशकुमारचरित' में लोक-व्यवहारोपयोगी भाषा की अपेक्षा वस्तु को है एतद् हेतु 'कान्तिगुण' की वहाँ महती उपादेयता स्वयंसिद्ध है।

समाधि :—लोक व्यवहार को पालन करने वाला कवि जब पदों में किसी अप्रस्तुत के धर्म का प्रस्तुत के अर्थ में व्यवहार करता है तब ऐसी रचना समाधि गुण में होती है।

चिरविलजन-खेदनिश्चलां शरदम्भोधरोत्सङ्गशायिनीमिव सौदामनीं राजकन्यापश्यम्।

यहाँ चिरविलसन खेद अप्रस्तुत सौदामनी के साथ प्रस्तुत राजकन्या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की क्रीडा की क्लान्ति को गौण वृति से प्रस्तुत कर रहा है।

उक्त दश गुणों में–श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति ओज–ये सात तो स्पष्ट ही अक्षर और पद के चमत्कार पर आश्रित हैं। शेष तीन गुणों––उदारत्व कान्ति तथा समाधि–का चमत्कार अर्थगत मानकर भी उनकी परिभाषाओं में पद प्रयोग की विशिष्टता पर बल दिया गया। इस प्रकार ये दश गुण काव्य में शब्दगत सौष्ठव से उसके अर्थ में भी सहायक होते हैं।

वस्तुतः काव्य में गुणों की स्थिति तादात्म्य की होती है। जैसे धर्म को धर्मी से पृथक् कर समझना कठिन है वैसे ही काव्य गुण को काव्य से पृथक् कर समझना। सम्भवतः यही कारण है कि 'गुण' की परिभाषा के विषय में अधिकांश आलङ्कारिक उदासीन रहे। उन्होंने श्रेष्ठ काव्य में दश गुणों की स्थिति की व्याख्या की तदनुसार दशकुमारचरित की काव्यकला की दृष्टि से समीक्षा करने पर श्रेष्ठ काव्यों की परम्परा में मुख्य स्थान सहज ही दिया जा सकता है।

अलङ्करण :—

काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।
ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कार्त्स्न्येन वक्ष्यति।

अर्थात् काव्य के शोभा-कारक धर्मों को अलङ्कार कहते हैं। अमरकोश में शोभा शब्द कान्ति, द्युति और छवि के अर्थ में है। और परम शोभा को सुषमा कहते हैं। निरुक्त में शुभम् शब्द जल का पर्याय है। यदि शोभा की व्युत्पत्ति 'शुभ' से अन्वित की जाये तो शोभा का अर्थ सरसता होगा। कुन्तक ने अलङ्कार के प्रसङ्ग को लेकर शोभा का अर्थ कान्ति किया है। काव्य के विषय में कान्ति और सरसता का ग्रहण वस्तु का चमत्कार-पूर्ण अर्थ-बोध तथा उसके साथ होने वाली भावानभूति है और इनका कारक धर्म है अलङ्कार। काव्यालंकार सूत्रवृत्ति में वामन ने लिखा है–

काव्याशोभायाः कर्तारो धर्मा गुणाः। तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थात् काव्य में शोभा को उत्पन्न करने वाले धर्म तो गुण हैं किन्तु उस शोभा में अभिवृद्धि करने वाले धर्म अलङ्कार हैं। रीतिकालीन काव्यों में अलङ्कारों की यही भूमिका रही है। 'दशकुमारचरित' में अलङ्कारों की समीक्षा करते हुये भी अलङ्कार विषयक इसी धारणा को आधार बनाना होगा। काव्यादर्श में दण्डी ने अलङ्कारों को दो कोटियों में रखा है। पहली 'स्वाभावोक्ति' तथा दूसरी 'वक्रोक्ति'। मम्मट ने 'काव्यप्रकाश' में 'शब्दालङ्कार' तथा 'अर्थालङ्कार' दो वर्गों में विभाजित किया। शब्दालङ्कारों के अन्तर्गत--

१. वक्रोक्ति २. अनुप्रास ३. यमक ४. श्लेष ५. चित्रालङ्कार तथा पुनरुक्तवदाभास अलङ्कार रखे हैं तथा साधर्म्य मूलक उपमा आदिक अलङ्कारों को अर्थालङ्कार के अंतर्भूत माना है।

'दशकुमारचरित में अलङ्कार योजना को समझने के लिये प्रो० कृष्ण चैतन्य का निम्न कथन उद्धरणीय है--

"Dandin does not renounce ornament but he uses it in just measure and avoids laboured conceits compared to Subandhu, he emerges as the master of vigourous and elegant sanskrit prose."

दण्डी के प्रिय अलङ्कार हैं अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा दीपक। किन्तु इन अलङ्कारों का प्रयोग भी सायास नहीं किया गया है। वे 'गुणों' की भांति 'रस' के ही प्रयोजक बने हैं। वर्णन की संक्षिप्त, ध्वन्यात्मकता एवं पूर्णता के साधन स्वरूप प्रयुक्त उपमा, यमक, अनुप्रासादिक अलङ्कारों के द्वारा वाणी में ओज एवं माधुर्य का समावेश हुआ है। कुछ उद्धरण दृष्टव्य हैं। अनुप्रास तथा यमक प्रायः संश्लिष्ट रूप में प्रयुक्त हैं–

१. तत्र प्रख्यातयोरेतयोरसंख्ये वर्त्तमाने सुहृत्साहाय्यकं कुर्वाणो निजबले सति विदेहे विदेहेश्वरः प्रहारवर्मा जयवता रिपुणाभिगृह्य कारुण्येन पुण्येन ··
·········दशकुमारचरित पूर्वपीठिका प्रथम उच्छ्वास।

२. वैलक्ष्यलक्ष्यहृदयो वीतदयो महाकालनिवासिनं कालनिवासिनमनश्वरं महेश्वरं समाराध्य तपःप्रभावसंतुष्टादस्मादेकवीराराति घ्नीं भयदां गदां

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लब्ध्वात्मानमप्रतिभटं मन्यमानो महाभिमानो भवन्तमभियोक्तमुद्युङ्क्त ।

दशकुमारचरित पूर्वपीठिका—पृ० १७

३. रोषरूक्षेण निटिलाक्षेण भस्मीकृतचेतने मकरकेतने तदा भयेना वद्या वनितेति मत्वा तस्य रोलाम्वावली केशजालम् । प्रेमाकरो राजनीक विजितारविन्दं वदनम् । जयध्वजायमानो मीनो जायायुतोऽक्षि युगलम् ।

'Though Dandin also ues rhetorial ornaments but th are always kept under moderate poundds.'

डा० नीता शर्मा के उक्त आलोचनात्मक शब्दों से दण्डी के यमक त अनुप्रास प्रयोग का लालित्य स्पष्टतः लक्षित किया जा सकता है । उत्प्रे का एक उदाहरण दृष्टव्य है—

अथ तन्मनश्च्युततमःस्पर्शभियेवास्तं रविरगात । ऋषिमुक्तश्च रागः संध्य त्वेनास्फुरत् । तत्कथादत्तवैराग्याणीव कमलवनानि समकुचन् । अनुमतमु शासनस्त्वहममुनैव सहोपास्य सध्यामनुरूपाभिः कथाभिस्तमनुशय्य नीतरा प्रत्युन्मिषत्युदयप्रस्थादावकल्पे कल्पद्रुमकिसलया वधीरिण्यरुणार्चिषि नमस्कृत्य नगरायोदचलम् । दशकुमारचरित उत्तरपीठिका पृ० १७७

उपमामूलक अलङ्कारों का सौन्दर्य उसकी स्फुटता एवं साधारण धर्म स्पष्ट करने की क्षमता में निहित होता है । कालिदास की भांति दण्डी उपमाओं में यह सौन्दर्य विद्यभान है जो प्रकृत वस्तु को उसके सम वैशिष्टयों के साथ उन्मीलित करने में समर्थ होता है ।

आमीलितलोचनेन्दीवरम्..........

'चिरविलसनखेदनिश्चलां शरदम्भोधरोत्संगशायिनीमिव सौदाम राजकन्यामपश्यम् । दशकुमारचरित, उत्तरपीठिका पृ० २४१

'तदपि शीतलोपचरणं सलिलमिव तप्ततैले तदङ्गे दहनमेव समन्ता विश्चकार'—... ... ..

तप्त तेल में पानी की बूंद जिस प्रकार शीतलता के स्थान पर अधिक उद्वेजित करती है उसी प्रकार शीतलता पहुचानें वाले उपकरण तप्ताङ्गी के लिये और अधिक उद्वेजक प्रतीत हुए । पीड़ानुभूति तथा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संताप की सर्वथा नवीन उद्भावना इस उपमा द्वारा व्यक्त होती है ।

'प्रियसखि कामः कुसुमायुधः पञ्चबाण इति नूनमसत्यमुच्यते । इयमहम-योमयैरसंख्यैरिषुभिरनेन हन्ये । सखि चन्द्रमसं वडवानलादतितापकरं मन्ये । यदस्मिन्नन्तःप्रविशति शुष्यति पारावारः सति निर्गते तदैव वर्द्धते । दोषा-करस्य दुष्कर्म किं वर्ण्यते मया । यदनेन निजसोदर्याः पद्मालयाया गेहभूतमपि कमलं विहन्यते ।'

प्रस्तुत अनुच्छेद में पूर्वराग की कामदशाओं के चित्रण में जिस प्रकार अपह्नुति, विषम, काव्यलिङ्ग, अप्रस्तुतप्रशंसा तथा श्लेष आदि अलङ्कारों के माध्यम से हृदयावर्जकता प्रभावोत्पादक है ।

इस प्रकार दण्डी के अलङ्कार प्रयोग के विषय में यदि हम संस्कृत साहित्य में दूसरा समानधर्मा कवि ढूंढे तो वह कालिदास ही हैं । वस्तुतः कालिदास और दण्डी दोनों ही वैदर्भी शैली के आचार्य हैं । इसीलिये माधुर्य गुण की सृष्टि में सहायक इनकी भाषा में उपमामूलक अर्थालङ्कार गद्यानुरूप ओजस्विता के हेतुभूत यमक, अनुप्रास आदि अलङ्कारों का यथा स्थान समावेश हो गया है ।

दशकुमारचरित में प्रकृतिचित्रण

संस्कृत साहित्य में दण्डी—कालिदास, भवभूति तथा बाणभट्ट जैसे प्रकृति कवियों की गणना में नहीं आते हैं तथापि प्रसङ्गानुसार, प्रबन्धकाव्य की मर्यादा के अनुरूप दशकुमारचरित में प्रकृति की भूमिका मनोहारी हैं । अलङ्करण की भांति ही 'प्रकृति' भी साध्य न हो कर सशक्त 'साधन' बन कर प्रयुक्त हुई है । वस्तुतः 'दशकुमारचरित' में इतिवृत्त के विस्तृत एवं प्रधान होने के कारण गद्यकाव्यकला से लेकर सौन्दर्याधायक सभी तत्त्व गौण हो गये हैं; संक्षेप में कथा की सत्वरता, कल्पनावैचित्र्य, अनेक पात्रों की कथाओं का संकलन और सबका एक सूत्र में अनस्यूत होना, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों की संश्लिष्टता आदि अनेक तत्त्व दशकुमारचरित में काव्य के परम्परावादी तत्त्वों के अपकर्षक हो गये हैं इसीलिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्रकार की प्रतिभा से सम्पन्न होते हुए भी कवि को लेखनी के सम 'तूलिका' को तिरस्कृत करना पड़ा है।

दण्डी के प्रकृति चित्रण में भी उनका यथार्थवादी दृष्टिकोण ही मुख्य है प्रकृति के नाना उपादानों को नैसर्गिक क्रियाकलापों को उन्होंने स्थूल चर्म चक्षुओं से ही देखा है तथा उत्प्रेक्षा आदि अलङ्कारों के साहाय्य से उसे प्रभावो त्पादक बनाया है। सूर्यास्त का एक चित्रण दृष्टव्य है—

'अस्तगिरिशिखरगैरिकतटसाधारणच्छायतेजसि, अचलराजकन्यकाकद नायन्तरिक्षाख्येन शंकरशरीरेण संसृष्टायाः सन्ध्याङ्गनायाः रक्तचन्द चर्चितएकस्तनकलशदर्शनीये दिनाधिनाथे........................ ...'

उत्तरपीठिका पृ० ४८

प्रसिद्ध उपमानों की अपेक्षा दण्डी के उपमान चयन में नवीनता व वैचित्र्य है यहाँ अस्ताचलगामी सूर्य को सध्याङ्गना के रक्तचन्दन चर्चित ए स्तन के रूप में देखना अभूत पूर्व है। उसी प्रकार वर्ण संयोजन में भी द की शैली पारम्परिक शैली से भिन्न है—

नक्षत्रसंतानहारयाकृष्टयग्रथितरत्नम्, क्षणदान्धकारगन्धहस्तिदारणं केसरिणम्, कनकशैलश्रृङ्गरङ्गलास्यलीलानटम्, गगनसागरघनतरङ्गरा लङ्घनैकनक्रम्, सहस्रार्चिषं सहस्राक्षदिगङ्गनाङ्गरागरागायितकिरणजा रक्तनीरजाञ्जलिनाराध्य · ··· ···············

उत्तरपीठिका पृ० ४८

सूर्योदय के उक्त चित्रण में न केवल वर्णसंयोजनजन्य चमत्कार हैं अ मानवीय क्रियाकलाप के सन्दर्भ में उसका तारतम्य भी दृष्टव्य है।

प्रकृति केवल वस्तु जगत को वर्ण्य होकर ही नहीं प्रयुक्त है अपितु मान भावों के संदीपन में उसका योगदान दण्डी की भौतिकता प्रधान दृष्टि से अनदेखा नहीं रहा है। पुष्पधन्वा के धनुप से नायिका के 'भ्रू पताक, की उ तो सर्वत्र श्रुत है किन्तु 'नखशिख' चित्रण में भी मात्र कामदव के वि उपकरण समर्थ हो सकें यह कल्पना सर्वथा नवीन है।

या वसन्तसहायेन समुत्सुकतया रतेः केलीशालभञ्जिकाविधित्सया क

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नारीविशेषं विरच्यात्मनः क्रीडाकासारशारदारविन्दसौन्दर्येण पादद्वयम्, उद्यान-वनदीर्घिकामत्तमरालिकागमनरीत्या लीलालसगतिविलासम्, तूणीरलावण्येन जङ्घे, लीलामन्दिरद्वारकदलीलालित्येन मनोज्ञमूरुयुगम्, जैत्ररथचातुर्येण घनं जघनम्, किञ्चिद्विकसल्लीलावंतसकह्लारकोरककोटरानुवृत्या, गंगावर्त-सनाभिं नाभिम्, सौधारोहणपरिपाट्या वलित्रयम् मौर्वीमधुकरपंक्तिनीलिम-लीलया रोमावलिम्, पूर्णसुवर्णकलशशोभया कुचद्वन्दं, लतामण्डपसौकुमार्येण बाहू, जयशङ्खाभिख्यया कण्ठम्, कमनीयकर्णपूरसहकारपल्लवरागेण प्रति-बिम्बीकृतबिम्बरदनच्छदम्, बाणायमानपुष्पलावण्येन शुचिस्मितम् ......समस्त मकरन्दकस्तूरिकासम्मितेन मलयजरसेन प्रक्षाल्य कर्पूरपरागेण संमृज्य निर्मितेव रराज ।

दशकुमारचरित पूर्वपीठिका पञ्चमोच्छ्वास पृ० १०१–१०२

सम्पूर्ण अयवय समस्त प्रसाधन एलं अशेष मण्डन सामग्री प्रकृति के विविध उपादानों में बिखरी पड़ी है जिसके एकत्र सन्निवेश से अवन्तिसुन्दरी का निर्माण हो सका ।

प्रकृति का उद्दीपक रूप वसन्तचित्रण में इस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है कि वह काम का सक्रिय सहायक सा प्रतीत होता है ।

'अथ मीनकेतनसेनानायकेन मलयगिरिमहीरुहनिरन्तरावासिभुजंगमभुक्ताव-शिष्टेनेव सूक्ष्मतरेण घृतहरिचन्दनपरिमलभरेणेव मन्दगतिना दक्षिानिलेन वियोगिहृदयस्थं मन्मथानलमुज्ज्वलयन्, सहकारकिसलयमकरन्दास्वादनरक्त-कण्ठानां मधुकरकलकण्ठानां काकलीकलकलेन दिक्चक्रं वाचालयन् मानिनी-मानसोत्कलिकामुपनयन्, माकन्दसिन्धुवाररक्ताशोककिंशुकतिलकेषु कलिका-मुपपादयन् मदनमहोत्सवाय रसिकमनांसि समुल्लासयन् वसन्तसमयः समा जगाम ।

दशकुमारचरित, पूर्वपीठिका पृ० ९९

सूर्योदय, सूर्यास्त, प्रातः, सन्ध्या के आकाशाश्रयी दृश्यों के संयोजन में तथा उपवन आदि के चित्रण में स्थलीय शोभा की ओर कवि का ध्यान विशेषेण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिमुख है । उसी प्रकार ऋतुओं के चित्रण में मानवीय भावों के उद्दीपन की ओर दृष्टि है तथा समान रूप से पशुपक्षिजगत भी प्रभावित प्रदर्शित है। जैसा कि प्रबन्ध काव्यों में अभीष्ट है, इति वृत्त के अनुरूप प्रकृति चित्राङ्कन शैली होती है । दण्डी के प्रकृति चित्रों में संक्षिप्ति ध्वन्यात्मकता तथा प्रभावोत्पादकता प्रधान है विस्तार, अनेक उपमाओं से एक उपमेय को पुनः पुनः विविधता देने के प्रयासों से बचा गया है । यही कारण है कि पाश्चात्य आलोचकों को दण्डी का यथार्थवाद अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशकुमारचरितम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशकुमारचरितम्

पूर्वपीठिका

प्रथमोच्छ्वासः

मङ्गलाचरणम्

ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः शतधृतिभवनाम्भोरुहो नालदण्डः
क्षोणीनौकूपदण्डः क्षरदमरसरित्पट्टिकाकेतुदण्डः ।
ज्योतिश्चक्राक्षदण्डस्त्रिभुवनविजयस्तम्भदण्डोऽङ्घ्रिदण्डः
श्रेयस्त्रैविक्रमस्ते वितरतु विबुधद्वेषिणां कालदण्डः ।।

अन्वय—ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः शतधृतिभवनाम्भोरुहः नालदण्डः क्षोणीनौकूपदण्डः क्षरदमरसरित्पट्टिकाकेतुदण्डः ज्योतिश्चक्राक्षदण्डः त्रिभुवनविजयस्तम्भदण्डः विबुधद्वेषिणां कालदण्डः त्रैविक्रमः अंघ्रिदण्डः ते श्रेयः वितरतु ।

शब्दार्थ—ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः=ब्रह्माण्डरूपी छत्र का दण्ड, शतधृतिभवनाम्भोरुहः=ब्रह्मा के उत्पत्तिस्थान कमल का, नालदण्डः=नालदण्ड, क्षोणीनौकूपदण्डः=पृथ्वीरूपी नाव का कूपदण्ड (मस्तूल), क्षरदमरसरित्पट्टिकाकेतुदण्डः=वहती हुयी आकाशगंगारूपी पताका का ध्वजदण्ड, ज्योतिश्चक्राक्षदण्डः=ग्रह तथा नक्षत्रों के मण्डलरूपी रथचक्र (रथ के पहियों) का अक्षदण्ड (धुरा), त्रिभुवनविजयस्तम्भदण्डः=तीनों लोकों की विजय (को सूचित करने वाला) स्तम्भ (खूँटा), विबुधद्वेषिणां=देवताओं या विद्वानों के द्रोहियों (असुरों) का, कालदण्डः=विनाश करने वाला दण्ड, त्रैविक्रमः=तीन पाद-विन्यासों में तीनों लोकों को नाप लेने वाले भगवान् वामन का, अंघ्रिदण्डः=चरणदण्ड, ते=तुम्हारा, श्रेयः=कल्याण, वितरतु=करे ।

हिन्दी-अनुवाद—ब्रह्माण्डरूपी छत्र का दण्ड अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आधार, ब्रह्मा के उत्पत्तिस्थान कमल के नालदण्ड अर्थात् ब्रह्मा तथा उनके उत्पत्तिस्थान कमल (भवन) के भी आश्रय, पृथ्वीरूपी नौका का कूपदण्ड (मस्तूल) अर्थात् पृथ्वी को स्थिर रखने एवं नियमित रूप से चलाने का आधार, ग्रहनक्षत्र-मण्डलरूपी चक्र का अक्षदण्ड (धुरा) अर्थात् ग्रहनक्षत्रों के सञ्चरण का आधार, तीनों लोकों की विजय को सूचित करने वाला स्तम्भदण्ड, देवताओं या विद्वानों के द्वेषी अर्थात् असुरों का नाश करने वाला (यमदण्ड) भगवान् त्रिविक्रम (वामन) का चरणदण्ड तुम्हें कल्याण दे अर्थात् तुम्हारा कल्याण करे।

संस्कृत-व्याख्या—अथ तत्रादौ तत्रभवान् श्रीमान् संस्कृतसाहित्यसागरपोत-दण्डी महाकविर्दण्डी निर्विघ्नं प्रारिप्सितपरिसमाप्तिकामः 'निर्विघ्नपरिसमाप्ति-कामो मङ्गलमाचरेत्' इति शिष्टानुशासनमनुसरन् सर्वविधविघ्नव्रातविघात-भगवतो वामनरूपधारिणो विष्णोः पादपद्मं ब्रह्माण्डेत्यादिना प्रणमति। ब्रह्माण्डेति-ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः=ब्रह्माण्डमखिलं विश्वं तदेव छत्रमातपत्रं तस्य दण्डः-आधारभूतस्तम्भः, शतधृतिभवनाम्भोरुहः=शतधृतेः पितामहस्य भवनमिति शतधृतिभवनम्, शतधृतिभवनञ्च तदम्भोरुट् कमलमिति शतधृतिभवनाम्भोरुट् तस्य, नालदण्डः=वृन्तभूता, क्षोणीनौकूपदण्डः=क्षोणी पृथ्वी 'क्षोणी ज्या काश्यपी क्षितिः' इत्यमरः, एव नौः तरणिः तस्याः कूपदण्डः गुणवृक्षः, क्षरदम-सरित्पट्टिकाकेतुदण्डः=क्षरन्ती-वहन्ती या अमरसरित् देवनदी–सा एव पट्टिका-पताका तस्याः केतुदण्डः-ध्वजदण्डः, ज्योतिश्चक्राक्षदण्डः=ज्योति-ग्रहनक्षत्रमण्डली एव चक्रं-रथाङ्गं तस्य अक्षदण्डः-मध्यस्थितकाष्ठदण्डविशेष त्रिभुवनविजयस्तम्भदण्डः=त्रिभुवनस्य-त्रिलोकस्य विजयः-जयः तस्य स्तम्भ-दण्डः-स्तम्भदण्डभूतः, विबुधद्वेषिणां=सुरद्वेषिणां बुधद्वेषिणां वा 'अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः' इत्यमरः 'विबुधो ज्ञे सुरे' इति मेदिनी दैत्यानां कालदण्डः=यमदण्डः, त्रैविक्रमः=त्रिविक्रमस्य अयमिति अण्-त्रैविक्रमः विष्णुसम्बन्धी 'पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः' इत्यमरः, अंघ्रिदण्डः=चरणदण्डः 'पादः पदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम्' इत्यमरः, ते=तुभ्यं श्रेयः=कल्याणं वितरतु=ददातु। एवमुक्तगुणविशेषविशिष्टः शौरेः चरणदण्डः तुभ्यं कल्याणं ददातु इति भावः। अत्र 'अंघ्रिदण्डः ते श्रेयः वितरतु' इत्यर्थेन नमस्कार आशी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्यते, एवं तं प्रति प्रणत इत्यर्थो हि लभ्यते। अनेन विष्णोः त्रिभुवनस्याधारभूतत्वं ध्वनितम्। इत्थं कवेः भक्तिभावः सम्यग् दरीदृश्यते। उक्तञ्च दर्पणे-'सञ्चारिणः प्रधानानि देवादिविषया रतिः। उद्बुद्धमात्रः स्थायी च भाव इत्यभिधीयते ।। अत्र रूपकालङ्कारस्य संसृष्टिः। रूपकं तावत्-'रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे।' संसृष्टिश्च-'मिथोऽनपेक्षयेतेषां स्थितिः संसृष्टिरुच्यते'। यमकं च--सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः। क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते। अनुप्रासश्च-'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्'। अत्र 'त्रिविक्रमस्ते श्रेयो वितरतु' इत्येवं न कथयित्वा 'त्रैविक्रमोऽङ्घ्रिदण्डः ते श्रेयो वितरतु' इत्येवं कथितमस्ति। यद्यपि त्रिविक्रमस्यांघ्रिदण्डः त्रिविक्रमान्न भिन्नः, तथापि स हि श्रेयः कार्ये असाधारणकारणत्वेनोपन्यस्तो यतो हि चरणदण्डः कल्याणसाधने समर्थः, असुराणां कालदण्डत्वात् यथा तेन बलिनियमनादिः; एवमत्र वस्तुध्वनिः। अलंकारध्वनिः रसध्वनिश्च अत्र। इत्थमत्र वस्त्वलंकाररसभेदेन त्रिधा ध्वनिः। गुणश्चात्र प्रसादः-चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः। स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च ।। पाञ्चाली रीतिः-वर्णैः शेषैः पुनर्द्वयोः। समस्तपञ्चषपदो बन्धः पाञ्चालिका मता। स्रग्धरा वृत्तम्-"म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्"। इति तल्लक्षणात्।

टिप्पणी--ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः-ब्रह्माण्डमेव छत्रं ब्रह्माण्डच्छत्रम् (कर्मधारय) ब्रह्माण्डच्छत्रस्य दण्डः=ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः (तत्पुरुष)। छत्रम्=छादयतीति-छद्+णिच्+ष्ट्रन् तथा ह्रस्व। दण्डः-'दण्डो यमे मानभेदे लगुडे दमसैन्ययोः। व्यूहभेदे प्रकाण्डेऽश्वे कोशमन्थानयोरपि। अभिमाने ग्रहे दण्डचण्डांशोः पारिपार्श्विके ।।" इति विश्वः। शतधृतिभवनाम्भोरुहः=शतधृतेः भवनमिति शतधृतिभवनम् (तत्पुरुष) शतधृतिभवनञ्च तदम्भोरुट् शतधृतिभवनाम्भोरुट् तस्य (कर्मधारय)। अम्भोरुहम्-अम्भसि रोहति इति 'बिसप्रसून-राजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च' इत्यमरः। क्षोणीनौकूपदण्डः=क्षोणी एव नौः क्षोणीनौः (कर्मधारय), तस्य कूपदण्डः (तत्पुरुष)। क्षोणी-क्षौति इति ' 'टुक्षु' शब्दे' धातु से बाहुलकात् नि प्रत्यय तथा ङीप् अथवा क्षै+डोनि=क्षोणि+ङीप्। 'धरा धरित्री धरणी क्षोणी ज्या काश्यपी क्षितिः'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्यमरः, क्षरदमरसरित्पट्टिकाकेतुदण्डः=क्षरन्ती च सा अमरसरित् क्षरदमरसरित् (कर्मधारय) सा एव पट्टिका (कर्मधारय) तस्याः केतुदण्डः (तत्पुरुष) क्षरत्–क्षर्+शतृ । ज्योतिश्चक्राक्षदण्डः=ज्योतिषां चक्रं ज्योतिश्चक्रम् (तत्पुरुष) तस्य अक्षदण्डः (तत्पुरुष) । ज्योतिस्–द्योतते इति द्युत्+इसिन् दस्य जादेशश्च । 'ज्योतिरग्नौ दिवाकरे । पुमान्, नपुंसकं दृष्टौ स्यान्नक्षत्रप्रकाशयोः ।' इति मेदिनी । त्रिभुवनविजयस्तम्भदण्डः–त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम् (द्विगु), तस्य विजयः तस्य स्तम्भदण्डः (तत्पुरुष) । विबुधद्वेषिणाम्–विबुधान् द्विषन्तीति विबुधद्वेषिणः तेषाम् (उपपदसमास, कृदन्त)। विबुध+द्विष्+णिनि (इन्) । विबुधः–विशिष्टो बुधो येषाम्, विशेषेण बुध्यन्ते वा; वि+बुध्+क=विबुध । 'विबुधो ज्ञे सुरे' इति मेदिनी । विबुध शब्द देवता तथा विद्वान् अर्थ का वाचक है । त्रैविक्रमः–त्रयः विक्रमाः यस्य सः= त्रिविक्रमः (बहुव्रीहि) तस्यायम् । त्रिविक्रम+अण्=त्रैविक्रम । अंघ्रिदण्डः–अंघ्रिः दण्ड इव=अंघ्रिदण्डः (उपमित कर्मधारय) । 'पादः पदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम्' इत्यमरः । ते–युष्मद् शब्द की चतुर्थी विभक्ति के एकवचन 'तुभ्यम्' का दूसरा रूप । यह वक्ता तथा श्रोता का उपलक्षक है क्योंकि उन्हीं को सम्बोधित कर रहा है । सम्बोध्य पदार्थ की उपस्थिति में युष्मद्=तुम या आप का प्रयोग होता है । कहा भी गया है–"सम्बोधनसारो हि युष्मदर्थः" । श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा है कि वामनावतार में भगवान् विष्णु ने अपने चरण के द्वारा त्रिलोक को नाप डाला था । प्रस्तुत मङ्गलाचरण में उसी चरण की महिमा गायी गयी है । यहाँ यह बतलाया गया है कि भगवान् विष्णु का चरण समस्त ब्रह्माण्ड, ब्रह्मा, ब्रह्मा का भवन, पृथ्वी, गगन, ग्रह, नक्षत्र, तथा आकाश गङ्गा आदि समस्त पदार्थों का आधार है । उसने समस्त त्रिलोक को नापकर विजय को प्राप्त किया है । वह सभी का नियामक है तथा असुरों के लिए कालदण्ड के तुल्य है । उसके द्वारा ही बलि आदि दैत्यों का निग्रह हुआ है । इससे यह स्पष्ट होता है कि वह सत्पदार्थों का संस्थापक तथा असत् का विनाशक है । श्रीमद्भागवत में कहा गया है–"क्षितिं पदैकेन बलेर्विचक्रमे नभः शरीरेण दिशश्च बाहुभिः । पदं द्वितीयं क्रमतस्त्रिविष्टपं न वै तृतीयाय तदीयमण्वपि ॥"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहाँ 'त्रिविक्रम तुम्हारा कल्याण करें' ऐसा न कहकर 'त्रिविक्रम का चरण-दण्ड तुम्हारा कल्याण करे' ऐसा कहा गया है। यद्यपि त्रिविक्रम का चरणदण्ड उनसे भिन्न नहीं है तथापि वह कल्याण के कार्य में असाधारण कारण रूप से प्रस्तुत है, क्योंकि चरणदण्ड कल्याण करने में समर्थ है। वह असुरों के लिए कालदण्ड के तुल्य है। देवोद्धार तथा वलिनियमनादि उसके कार्य व्यापार हैं। इस प्रकार यहाँ वस्तुध्वनि है। ध्वनि की व्याख्या करते हुए आचार्य आनन्द-वर्धन इस प्रकार कहते हैं—

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः ।।

अर्थात् जहाँ अर्थ अपने आपको अथवा शब्द अपने अर्थ को दबाकर प्रतीय-मान अर्थ को अभिव्यक्त करता है, उस काव्य-विशेष को विद्वान् लोग 'ध्वनि' संज्ञा से अभिहित करते हैं।

'भगवान् विष्णु का चरणदण्ड कल्याण करे' इस कथन से विष्णु के प्रति नमस्कार आक्षिप्त होता है, क्योंकि जब हम उन्हें प्रणाम करेंगे तभी वे हमें कल्याण प्रदान करेंगे। इस प्रकार विष्णु के प्रति प्रेम होने से भक्तिभाव स्पष्ट है। दर्पणकार का कथन है—'सञ्चारिणः प्रधानानि देवादिविषया रतिः। उद्‌बुद्धमात्रः स्थायी च भाव इत्यभिधीयते ।।"

यहाँ रूपक अलंकार की संसृष्टि है। ब्रह्माण्ड, पृथ्वी तथा आकाशगंगा पर छत्र, नौका तथा पताका का क्रमशः आरोप प्रस्तुत किया गया है और यह आरोप भगवान् त्रिविक्रम के चरण में दण्ड, कूपदण्ड तथा ध्वजदण्ड के आरोप का कारण है; अतएव यहाँ परम्परित रूपक है अन्यत्र निरङ्ग रूपक है। इन सभी रूपकों की स्थिति परस्पर निरपेक्ष है, अतः रूपकालंकार की संसृष्टि है। लक्षण इस प्रकार हैं—रूपक—'रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे'। संसृष्टि—'मिथोऽनपेक्षयेतेषां स्थितिः संसृष्टिरुच्यते'। विबुध शब्द में श्लेष है। यह देवता तथा विद्वान् का वाचक है। श्लेष का लक्षण इस प्रकार है—'श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते'। अनुप्रास की भी स्थिति है। लक्षण—'वर्णसाम्यमनुप्रासः'। प्रसाद नामक गुण है। लक्षण—चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः। स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाञ्चाली रीति है। लक्षण–वर्णैः शेषैः पुनर्द्वयोः। समस्तपञ्चषपदो बन्ध पाञ्चालिका मता ॥

यहाँ 'दण्ड' शब्द का कई बार प्रयोग हुआ है। यह अत्यन्त व्यञ्जक है। यह सत् का संस्थापक तथा असत् का विघातक है–यही इसकी व्यञ्जकशक्ति है। दण्ड शब्द का कई बार प्रयोग कर महाकवि दण्डी ने अपने नाम के प्रति प्रेम प्रकट किया है–कुछ समालोचकों का ऐसा विचार है। कतिपय विद्वान् पूर्वपीठिका को दण्डी की रचना नहीं मानते हैं। उनका विचार है कि पूर्वपीठिका के रचयिता ने दण्डी को लक्ष्यकर 'दण्ड' शब्द का अनेक बार प्रयोग किया है। अन्य विद्वानों का विचार है कि महाकवि दण्डी का वास्तविक नाम कुछ और रहा होगा परन्तु इस श्लोक में उनके 'दण्ड' शब्द के प्रयोग से प्रभावित होकर लोग उन्हें 'दण्डी' कहने लग गये थे और वे 'दण्डी' के नाम से इतने अधिक प्रसिद्ध हुये कि लोग उनके वास्तविक नाम को ही विस्मृत कर गये। प्रामाणिक सामग्री के अभाव में उपर्युक्त मतों की सम्पुष्टि कर सकना कठिन है।

ग्रन्थ के निर्विघ्न रूप में समाप्त होने के लिए ग्रन्थकार ने मङ्गलाचरण किया है। मङ्गलाचरणविधान शिष्टाचार परम्परा प्राप्त है। महाभाष्यकार का कथन है–"मङ्गलादीनि हि शास्त्राणि प्रथन्ते वीरपुरुषाणि च भवन्ति, आयुष्मत्पुरुषाणि च अध्येतारश्च सिद्धार्थाः यथा स्युः।" माङ्गलिक श्लोक के साथ ही साथ प्रारम्भ में आया हुआ 'ब्रह्म' शब्द मङ्गलवाची है। मगण का प्रयोग भी माङ्गलिक है, कहा गया है–'मो भूमिः श्रियमातनोति।' स्रग्धरा छन्द का प्रयोग हुआ है जिसका लक्षण इस प्रकार है–

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

पाटलिपुत्रवर्णनम्

अस्ति समस्तनगरीनिकषायमाणा शश्वदगण्यपण्यविस्तारितमणिगणादिवस्तुजातव्याख्यातरत्नाकरमाहात्म्या मगधदेशशेखरीभूता पुष्पपुरी नाम नगरी।

हिन्दी–अनुवादः–(संसार की) समस्त नगरियों की (श्रेष्ठता को परखने की) कसौटी के समान सर्वदा असंख्य विक्रेय वस्तुओं के रूप में फैलाई हुयी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विभिन्न मणि आदि वस्तुओं के समूह से समुद्र के समान (अपने) माहात्म्य को प्रकट करने वाली मगध देश की शिरोमणि (राजधानी) पुष्पपुरी (पाटलिपुत्र, पटना) नामक नगरी है ।

संस्कृत-व्याख्या—समस्तनगरीनिकषायमाणा समस्ताः सकलाश्च ताः नगर्यः पुर्यः तासां निकषः आदर्शः, गुणपरीक्षास्थानं वा स इवाचरतीति । 'शाणस्तु निकषः कषः' इत्यमरः । शश्वदगण्यपण्यविस्तारितमणिगणादिवस्तुजातव्याख्यातरत्नाकर-माहात्म्या=शश्वत्-निरन्तरम् अगण्यैः—गणनातीतैः पण्यैः-विक्रेयवस्तुभिः विस्तारितैः—प्रसारितैः मणिगणादिवस्तुजातैः—मणिगणादिवस्तुसमूहैः व्याख्यातं—प्रकटीकृतं रत्नाकरस्य=समुद्रस्य इव माहात्म्यं-महिमा यस्याः सा तथाभूता विविधविधमणि-गणप्रपूरितापणेति भावः । 'रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपाम्पतिः' इत्यमरः । मगधदेशशेखरीभूता=मगधदेशस्य=मगधाख्यदेशस्य शेखरीभूता=शिरोभूषण-रूपा पुष्पपुरी=एतदाख्या, नाम संज्ञका "नाम कोपेऽभ्युपगमे विस्मये स्मरणेऽपि च । सम्भाव्य-कुत्साप्राकाश्यविकल्पेष्वपि दृश्यते ॥" इति मेदिनी । नगरी=पुरी, अस्ति=वर्तते ।

टिप्पणी—समस्तनगरीनिकषायमाणा-समस्ताश्च ताः नगर्यः (कर्मधारय) तासां निकषः (तत्पुरुष) स इव आचरतीति । निकषायमाणा-निकष+क्यङ्+शानच्+टाप् । 'शाणस्तु निकषः कषः' इत्यमरः । शश्वदगण्यपण्यविस्तारितमणिगणादिवस्तुजातव्याख्यातरत्नाकरमाहात्म्या-शश्वत् अगण्यपण्यविस्तारितानि च तानि मणिगणादिवस्तुजातानि तैः व्याख्यातं रत्नाकरस्य इव माहात्म्यं यस्याः सा तथाभूता (बहुव्रीहि) । पण्य—पण्+यत् । विस्तारित—वि+स्तृ+णिच्+क्त । व्याख्यात=वि+आ (आङ्) +ख्या+क्त। रत्नाकर—रत्नानाम् आकरः (तत्पुरुष) 'रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपाम्पतिः' इत्यमरः । मगधदेशशेखरीभूता—मगधदेशस्य शेखरीभूता (तत्पुरुष) । शेखरीभूता—शेखर+च्वि+भू+क्त+टाप् । शेखर-शिङ्खति इति 'शिखि गतौ' धातु से बाहुलक से अर तथा 'आगमशास्त्रस्यानित्यत्वान्न नुम्' । "शिखास्वापीडशेखरौ" इत्यमरः । नाम=नामकोपेऽभ्युपगमे विस्ये स्मरणेऽपि च । सम्भाव्यकुत्साप्राकाश्यविकल्पेष्वपि दृश्यते ।" इति मेदिनीकोष । अस्ति—'अस् भुवि सत्तायाम्' धातु लट् लकार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम पुरुष एकवचन ।

पुष्पपुरी नामक नगरी में असंख्य मणि आदि पदार्थ समूह विक्रय के लि विखरे हुये थे, अतएव वह नगरी रत्नाकर के समान प्रतीत हो रही थी । नगरी पर रत्नाकर की सम्भावना होने से यहाँ उत्प्रेक्षालङ्कार है। उत्प्रेक्षा का लक्ष इस प्रकार है–'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्,' । नगरी की अद्भु सम्पत्ति तथा वैभव की समुपस्थिति से यहाँ उदात्त नामक अलंकार भी है उदात्त का लक्षण इस प्रकार है–'उदात्तं वस्तुनः सम्पत्' इति मम्मटः । न, तथा ण, ण आदि वर्णों का अनुप्रास भी है । उक्त वर्णन से पुष्पपुरी नाम नगरी की समृद्धि अभिव्यञ्जित हो रही है ।

मगधराजराजहंसवर्णनम्

तत्र वीरभटपटलोत्तरङ्गतुरङ्गकुञ्जरमकरभीषणसकलरिपुगणकटकजलनिधिम नमन्दरायमाणसमुद्दण्डभुजदण्डमण्डलः, पुरन्दरपुराङ्गणवनविहरणपरायणतरुण णिकागणजेगीयमानयाऽतिमानया शरदिन्दुकुन्दघनसारनीहारहारमृणालमरालसु गजनीरक्षीरगिरिशाट्टहासकैलासकाशनीकाशमूर्त्या रचितदिगन्तरालपूर्ति कीर्त्याभितः सुरभितः……।

हिन्दी–अनुवादः–वहाँ (उस पुष्पपुरी नामक नगरी में) वीर योद्धाओं समूहरूप उत्ताल तरंगों वाले (हिलोरें लेने वाले), अश्व एवं गज रूपी मकर (नाकों) से भयङ्कर, समस्त शत्रुसमूह के सैन्यरूप समुद्र के मन्थन के लि मन्दराचल के समान विशाल भुजदण्डयुगल वाले; इन्द्र की नगरी (अमरावती के नन्दनवन में विहार करने वाली युवती वेश्याओं के समूह के द्वारा पुनःपुन गायी जाने वाली और अधिक परिमाणों वाली, शरच्चन्द्र, कुन्द-कुसुम, कपूर हिम (वर्फ), हार (मोतियों की माला), मृणाल (कमल-नाल), हंस, ऐरावत जल, दुग्ध, शिव का अट्टहास, कैलास (पर्वत) तथा काश (काश का फूल के समान (श्वेत एवं निर्मल) स्वरूप को धारण करने वाली और सर्व दिशाओं के मध्य भाग को परिपूर्ण करनेवाली कीर्ति के द्वारा चारों ओर सुगन्धित………

संस्कृत-व्याख्याः–तत्र=तस्यां पुष्पपुर्याम्, (राजहंसो नाम भूपो बभूव) राजहंसं वर्णयति–वीरभटपटलोत्तरङ्गतुरङ्गकुञ्जरमकरभीषणसकलरिपुगणकट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कजलनिधिमथनमन्दरायमाणसमुद्दण्डभुजदण्डमण्डलः—वीराः शूराश्च ते भटाः तेषां पटलेन—समूहेन उत्तरंगाः—उद्गतकल्लोलाः तुरंगाः—घोटकाः कुञ्जराः—हस्तिनश्च ते मकराः—नक्राः तैः भीषणाः—भयङ्कराः, सकलाः समस्ताश्च ये रिपवः अरयः तेषां गणाः—समूहाः तेषां कटकं—सैन्यं जलनिधिः —सागर इव तस्य मथने विलोडने मन्दरायमाणं—मन्दराख्याद्रिरिवाचरत् समुद्दण्डं—समुन्नतं भुजदण्डमण्डलं दोर्दण्डयुगलं यस्य सः । 'भुजबाहू प्रवेष्टो दोः' इत्यमरः । पुरन्दरपुराङ्गणवनविहरणपरायणतरुणगणिकागणजेगीयमानया—पुरन्दरस्य—पाकशासनस्य पुरं—नगरं तस्य अङ्गणवने—नन्दनवने विहरणे—विहारे परायणानां—तत्पराणां तरुणीनां—नवयुवतीनां गणिकानां—अप्सरसां गणैः—समूहैः, जेगीयमानया—पुनः पुनः कीर्त्यमानया । अतिमानया—अतिशयितं मानं यस्याः सा तया । शरदिन्दुकुन्दघनसारनीहारहारमृणालमरालसुरगजनीरक्षीरगिरिशाट्टहासकैलासकाशनीकाशमूर्त्या—शरदिन्दुः—शरत्सुधांशुः च कुन्दं—एतदाख्यं पुष्पञ्च घनसारः चन्दनरसश्च नीहारः—तुषारश्च हारः—मौक्तिकमाला च मृणालं—बिसञ्च मरालः—हंसश्च सुरगजः ऐरावतश्च नीरं—सलिलञ्च क्षीरं—दुग्धञ्च गिरिशाट्टहासः—शिवहास्यविशेषश्च काशः—काशकुसुमञ्च तैः नीकाशा—तुल्या मूर्तिः—स्वरूपं यस्याः सा तया । रचितदिगन्तरालपूर्त्या—रचिता—विहिता दिगन्तरालानां—दिङ्मध्यभागानां पूर्तिः—पूरणं यया तया, कीर्त्या—यशसा, अभितः—समन्तात् सुरभितः—सुगन्धितः ।

टिप्पणी—तत्र—तत्+त्रल् । वीरभट ···समुद्दण्डभुजदण्डमण्डलः—वीराश्च ते भटा इति वीरभटाः तेषां पटलः, तेन उत्तरङ्गाः तुरंगाश्च कुञ्जराश्च ते मकरा इव तैः भीषणं सकलरिपुगणकटकं तत् जलनिधिः इव तस्य मथने मन्दरायमाणं समुद्दण्डं भुजदण्डमण्डलं यस्य सः (बहुव्रीहि) । 'रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपाम्पतिः' इत्यमरः । जलनिधिः—'जलानि निधीयन्तेऽत्र' इस विग्रह से 'जल+नि+धा' से 'कर्मण्यधिकरणे च' इस सूत्र से 'कि' प्रत्यय होकर 'जलनिधि' शब्द बनता है । मन्दरायमाण—मन्दर+क्यङ्+शानच् । 'भुजबाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्' इत्यमरः । पुरन्दर···जेगीयमानया—पुरन्दरस्य यत् पुरांगणवनं तस्मिन् विहरणे परायणानांतरुणगणिकानां गणैः जेगीयमाना तया (तत्पुरुष)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरन्दर–पुरोऽरीणां दारयतीति पुर्+दृ+णिच्+खच् तथा मुम् का आगम। 'वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः' इत्यमरः । गणिका–'गणः समूहोऽस्त्यस्या भर्तृत्वेन' इस अर्थ में गण+ठन् अथवा गणयति इति गण्+ण्वुल् । 'वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा' इत्यमरः । जेगीयमानया–यङन्त गै (गा) धातु- जेगीय+शानच्+टाप्–जेगीय माना तृ० ए० व० जेगीयमानया। शरदिन्दु कुन्द......मूर्त्या–शरदिन्दुश्च कुन्दञ्च घनसारश्च नीहारश्च हारश्च मृणालञ्च मरालश्च सुरगजश्च नीरञ्च क्षीरञ्च गिरिशाट्टहासश्च कैलासश्च काशश्च तैः नीकाशा मूर्तिः यस्याः सा तया (बहुव्रीहि) । गिरिशाट्टहासः गिरिशस्य अट्टहासः (षष्ठी तत्पुरुष) । गिरिशः–'गिरिराश्रयत्वेनास्यास्तीति' इस अर्थ में गिरि शब्द से 'लोमादि–नियम के द्वारा 'श' होता है । अथवा 'गिरौ कैलास- पर्वते शेते' इस अर्थ में गिरि+शी+ड । 'भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः' इत्यमरः । मूर्तिः–मूर्च्छति इति 'मुर्च्छा मोहसमुच्छ्राययोः' से क्तिच् प्रत्यय। 'कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः' इत्यमरः । कीर्त्या–कीर्त्यते इति कृत्+क्तिन् । 'यशः कीर्तिः समज्ञा च' इत्यमरः । 'वीरभट मण्डलः' में रूपक तथा अनुप्रास । 'पुरन्दर जेगीयमानया' में अनुप्रास की छटा । 'शरदिन्दु मूर्त्या' में उपमा तथा अनुप्रास । प्रस्तुत सन्दर्भ में महाराज राजहंस के विशाल बाहुदण्डों की प्रशंसा की गयी है । उनके करकञ्ज विशुद्ध यशसमूह से सुशो- भित हैं–इस कथन से राजा के शौर्य,औदार्य, दाक्षिण्य आदि गुण ध्वनित होते हैं जिनके द्वारा उन्हें अनुपम यशोराशि का लाभ हुआ है ।

... स्वर्लोकशिखरोरुरुचिररत्नरत्नाकरवेलामेखलायितधरणीरमणीसौभाग्य- भोगभाग्यवान्, अनवरतयागदक्षिणारक्षितशिष्टविशिष्टविद्यासंभारभासुरभूसुर- निकरः, विरचितारातिसंतापेन प्रतापेन सतततुलितवियन्मध्यहंसः, राजहंसो नाम घनदर्पकन्दर्पसौन्दर्यसोदर्यहृद्यनिरवद्यरूपो भूपो बभूव ।

हिन्दी-अनुवाद–देवताओं (स्वर्लोक) के मुकुट के बहुमूल्य एवं मनोहर रत्नों वाले समुद्र की तटभूमि (वेला) रूपी करधनी से घिरी हुयी पृथ्वी रूपी कामिनी के सौन्दर्य तथा ऐश्वर्य का उपभोग करने वाले, निरन्तर किये जाने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाले यज्ञों की दक्षिणाओं के द्वारा शिष्ट (सदाचारपरायण) एवं विशिष्ट शास्त्रज्ञान के आधिक्य से तेजस्वी ब्राह्मणों के समूह की रक्षा करने वाले, शत्रुओं को संतप्त करने वाले (अपने) प्रताप से सर्वदा गगन के मध्य में (विराजमान) सूर्य के समान और महाभिमानी कामदेव के सौन्दर्य के समान मनोहर निर्दोष रूप वाले 'राजहंस' नामक राजा हुए ।

संस्कृत-व्याख्या– स्वर्लोकशिखरोरुरुचिररत्नरत्नाकरवेलामेखलायितधरणी-रमणीसौभाग्यभोगभाग्यवान्–स्वः–नाकः लोकः–आश्रयः येषां ते–अमराः तेषां शिखरेषु–चूडासु ऊरूणि–महान्ति रुचिराणि–सुन्दराणि रत्नानि–मणयः यस्य तादृशस्य रत्नाकरस्य–सागरस्य वेला–तीरं तया मेखलायिता–काञ्चीवाचरिता या धरणी–धरा एव रमणी–ललना तस्याः सौभाग्यस्य–सौन्दर्यस्य यः भोगः–तस्मिन् भाग्यवान्–भाग्ययुक्तः । अनवरतयागदक्षिणारक्षितशिष्टविशिष्टविद्या-सम्भारभासुरभूसुरनिकरः–अनवरतं–निरन्तरं यः यागः–यज्ञानुष्ठानं तस्य दक्षिणाभिः–दक्षिणरूपप्रदत्तद्रव्यविशेषैः रक्षितः–परिपालितः शिष्टानां–सज्जन-पुरुषाणां विशिष्टानां–महतां विद्यासम्भारेण–ज्ञानविस्तरेण भासुराणां–प्रदीप्तानां भूसुराणां–विप्राणां निकरः–समूहः । विरचितारातिसंताप-पेन–विरचितः–विहितः अरातीनां–शत्रूणां संताप–खेदः येन तेन तथाभूतेन, प्रतापेन–तेजसा, 'स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम्' इत्यमरः । सततत्तुलितवियन्मध्यहंसः–सततं–अविरतं तुलितः–समीकृतः वियन्मध्यहंसः–गगन मध्यसूर्यः येन सः, राजहंसो नाम–राजहंस इत्याख्यः । घनदर्पकन्दर्पसौन्दर्य-सोदर्यहृद्यनिरवद्यरूपः–घनः–सान्द्रः दर्पः–मदः यस्य सः–घनदर्पः यः कन्दर्प–मन्मथः तस्य यत् सौन्दर्य–रमणीयता तस्य सोदर्य–सहोदरं हृद्यं–सुन्दरं निरवद्यं–निर्दोषं रूपं–स्वरूपं यस्य स तादृशः, भूपः–नृपतिः, बभूव–अभूत् ।

टिप्पणी–स्वर्लोक···भाग्यवान्–स्वः लोकः येषां ते, तेषां शिखरेषु ऊरूणि रुचिराणि रत्नानि यस्य सः, स चासौ रत्नाकरः, तस्य वेलया मेखलायिता, सा चासौ धरणी, सा एव रमणी तस्याः सौभाग्यस्य भोगः तस्मिन् भाग्यवान् (तत्पुरुष) । स्वः–'स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः' इत्यमरः' 'स्वः प्रेत्य व्योम्नि नाके च' इति मेदिनी । रुचिर–रोचते इति 'रुच्' दीप्तावभिप्री-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तौ च' से 'इषिमदिमुदि' सूत्र से किरच् (रुच्+किरच्), 'सुन्दरं रुचिरं चा सुषमं साधु शोभनम्' इत्यमरः । मेखलायिता—मेखला+क्यच्+इट्+क्त-टाप् । रमणी—रमयति रम्यते वा रम्+ल्युट् णत्व ङीप्, 'प्रमदा मानि कान्ता ललना च नितम्बिनी । सुन्दरी रमणी रामा' इत्यमरः । भाग्यवान्—भ+ण्यत्=भाग्य+मतुप्=भाग्यवान् । याग—यज्+घञ् (कुत्व) । शिष्ट शास्+क्त । विशिष्टः—वि+शास्+क्त । विद्या—विद्+क्यप्+टाप् । भासु भास्+घुरच् । भूसुरः—भूवो भुवि वा सुर इव । निकरः—नि+कृ+अप् अनवरत···निकरः—अनवरतं यः यागः तस्य दक्षिणाभिः रक्षितः विद्यायाः सम्भा तेन भासुराः शिष्टाश्च ते भूसुराः तेषां निकरः (तत्पुरुष) । विरचितारा संतापेन—विरचितः अरातीनां संतापः येन तेन तादृशेन, अराति—न राति सु मिति 'रा' दाने धातु से क्तिच्, 'अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः' इत्यम सतत—सम्+तन्+क्त, 'सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम्' इत्यमरः वियत्—वि विश्वत एति व्याप्नोति (वि+इण्+शतृ), अथवा वियच्छति विरमति (वि+यम्+क्विप् मलोप तथा तुक्; 'वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्य काशविहायसी' इत्यमरः । हंस=सूर्य, हन्ति गच्छति इति 'हन् हिंसागत्यो पचाद्यच् से अच् 'भवेद्वर्णागमाद्धंसः— से सक् अथवा 'वृतृवदिवचिवसिहनि—से प्रत्यय । 'रविश्वेतच्छदौ हंसौ' इत्यमरः 'हंसो विहङ्गभेदे स्यादर्के विष्णौ हयान योगिमन्त्रादिभेदेषु परमात्मन्यमत्सरे । निर्लोभनृपतौ हंसः शारीरमरुदन्तरे इति विश्वः । घनदर्प··· रूपः—घनः दर्पः यस्य सः, सचासौ कन्दर्पः तस्य सौन्दर्य तस्य सोदर्यः हृद्यं निरवद्यं रूपं यस्य स तादृशः । कन्दर्पः—कुत्सितो दर्पोऽस्य कं यद्वा कं सुखं तत्र तेन वा दृप्यति (कम्+दृप्+अच्); 'कन्दर्पो दर्पकोऽनं कामः पञ्चशरः स्मरः' इत्यमरः । सौन्दर्यम्—सुन्दर+ष्यञ् । सोदर्य—सोदर+ यत् हृद्यम्—हृदयस्य प्रियम् इस अर्थ में हृदय शब्द से यत् प्रत्य हृदादेश; 'अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम्, इत्यमरः, 'हृद्यं धवलजं च हृत्प्रिये हृद्भवेऽपि च । वशकृद्वेदमन्त्रे च हृद्या वृद्ध्याख्यभेषजे ।' इति विश्व भूपः—भुवं पातीति भूपः; 'राज्ञि राट्पार्थिवक्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः' इत्यमर बभूव—भू धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन । यहाँ सर्वत्र अनुप्रास

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छटा छिटक रही है। 'सर्वलोक··· भाग्यवान्' में रूपक अलंकार है। 'सौभाग्य-भोगभाग्यवान्' आदि में कवि का अनुप्रास प्रेम दिखलाई पड़ता है। 'मध्यहंस राजहंस', 'घनदर्प कन्दर्प', 'सौन्दर्य सोदर्य', 'हृद्य निरवद्य' में यमकालंकार है। प्रस्तुत गद्यखण्ड में महाराज राजहंस के सौभाग्य, सौन्दर्य एवं निरवद्य रूप का वर्णन किया गया है।

राज्ञीवसुमतीवर्णनम्

तस्य वसुमती नाम सुमतिः लीलावतीकुलशेखरमणी रमणी बभूव।

हिन्दी-अनुवाद---उस (राजा) के कामिनी कुल की शिरोमणि अत्यन्त बुद्धिमती वसुमती नामक पत्नी थी।

संस्कृत-व्याख्या---तस्य=पूर्वोक्तस्य राज्ञः, लीलावतीकुलशेखरमणी=लीलावतीनां–ललनानां कुलस्य-वंशस्य शेखरं–शिरोभूषणं तस्य मणिः–रत्नस्वरूपा तादृशी, सुमतिः=सु–शोभना मतिः–मनीषा यस्याः सा तथोक्ता, वसुमती नाम–वसुमतीत्याख्या, रमणी=ललना, बभूव=आसीत्।

टिप्पणी---लीलावतीकुलशेखरमणी–लीलावतीनां कुलस्य यत्शेखरं तस्य मणिः तादृशी (तत्पुरुष)। लीलावती–लीला+मतुप्+ङीप्। लीला–अंगैर्वेषै-रलंकारैः प्रेमभिर्वचनैरपि। प्रीतिप्रयोजितैर्लीलां प्रियस्यानुकृतिं विदुः॥ अर्थात् अनुरागाधिक्य के कारण अंग, वेष, अलंकार तथा प्रेमभरे वचनों से प्रियतम के अनुकरण को 'लीला' कहते हैं। शेखर–शिख्+अरन् पृषोदरादि नियम से सिद्ध होता है। 'शिखास्वापीडशेखरौ' इत्यमरः। सुमतिः–शोभना मतिः यस्याः सा (बहुव्रीहि)। नाम–आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च। रमणी–सुन्दरी स्त्री; 'सुन्दरी रमणी रामा' इत्यमरः।

रोषरूक्षेण निटिलाक्षेण भस्मीकृतचेतने मकरकेतने तदा भयेनानवद्या वनितेति मत्वा तस्य रोलम्बावली केशजालम्, प्रेमाकरो रजनीकरो विजितारविन्दं वदनम्, जयध्वजायमानो मीनो जायायुतोऽक्षियुगलम्, सकलसैनिकाङ्गवीरो मलयसमीरो निःश्वासः, पथिकहृद्दलनकरवालः प्रवालश्चाधरबिम्बम्, जयशंखो बन्धुरा लावण्यधरा कन्धरा, पूर्णकुम्भौ चक्रवाकानुकारौ पयोधरौ, ज्यायमाने मार्दवासमाने बिसलते च बाहू, ईषदुत्फुल्ललीलावतंसकह्लारकोरको गंगावर्तस-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाभिर्नाभिः, दूरीकृतयोगिमनोरथो जैत्ररथोऽतिघनं जघनम्, जयस्तम्भभू सौन्दर्यभूते विघ्नितयतिजनारम्भे चोरुयुगम्, आतपत्रसहस्रपत्रं पादद्वय अस्त्रभूतानि प्रसूनानि तानीतराण्यंगानि च समभूवन्निव ।

हिन्दी-अनुवाद—क्रोध से निष्ठुर शङ्कर ने जब कामदेव के चैतन्य को भ कर दिया, तब मानो भय के कारण 'स्त्री निर्दोष होती है' ऐसा मान (उसके सभी साधन अपने-अपने स्वरूप के अनुसार वसुमती रानी के विभि अंग हो गये थे।) उस (कामदेव) की (सेना की) भ्रमरपंक्ति उसका के समूह, प्रेम का आकर (खजाना) चन्द्रमा कमल को भी पराजित करने वा उसका मुख, विजयध्वज बना हुआ मत्स्य (अपनी) पत्नी सहित उसका ने युगल, कामदेव के समस्त सैनिकों में प्रधान योद्धा मलयपवन उसका मुखप (साँस), पथिकों के हृदय को विदीर्ण करने में कृपाण के समान (कार्य क वाले) नवपल्लव उसका अधर बिम्ब, विजयध्वनि करने वाला (कामदेव का शंख उसकी ऊँची-नीची सौन्दर्यशाली ग्रीवा (कन्धरा), जल परिपूर्ण कलश च वाक पक्षी के तुल्य उसके स्तन, (कामदेव के धनुष की) प्रत्यञ्चा कोमलता अद्वितीय कमलनाल के सदृश उसकी दोनों भुजायें, (कामदेव के) विलासभू स्वरूपा थोड़ी खिली हुयी कमल की कलिका गंगा में भँवर के सदृश उस नाभि, योगियों के ध्यान आदि मनोरथ को दूर करने वाले (कामदेव का विजय करने वाला रथ अत्यधिक घने (कड़े तथा सटे हुए) उसके जघन भा (कामदेव के) विजयस्तम्भभूत, सुन्दर तथा योगियों के कार्यों में विघ्न देने वाले दोनों कदलीस्तम्भ उसकी दोनों जाँघें, (कामदेव के) छत्र स कमल उसके दोनों पैर तथा (कामदेव के) अस्त्रभूत पुष्प मानो उसके अ अंग हो गये।

संस्कृत-व्याख्या—रोषरूक्षेण=क्रोधनिष्ठुरेण, निटिलाक्षेण=निटिले मस्त अक्षि नेत्रं यस्य तेन शिवेनेत्यर्थः, भस्मीकृतचेतने=भस्मीकृता विनाशिता चेत चैतन्यं यस्य तस्मिन् तादृशे, मकरकेतने=मदने "मदनो मन्मथो मारः प्रद्यु मीनकेतनः" इत्यमरः, तदा=तस्मिन् काले, भयेन=भीत्या, अनवद्या=निर्दो सर्वाङ्गसुन्दरीति भावः, वनिता=ललना, इति=एवं मत्वा=विचिन्त्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्य=कामस्य, रोलम्बावली=भ्रमरपंक्तिः, केशजालं=कुन्तलकलापः, प्रेमाकरः=स्नेहनिधिः, रजनीकरः=चन्द्रः, विजितारविन्दं=न्यक्कृतकमलम्, वदनं=आननम्, जयध्वजायमानः=विजयपताकाध्वजदण्डतुल्यः, मीनः=अण्डजः, जायायुतः=जायया पत्न्या युतः, अक्षियुगलं=नेत्रयुगलम्, सकलसैनिकांगवीरः=सम्पूर्णसैन्यप्रमुखभटः, मलयसमीरः=मलयानिलः, निःश्वासः=श्वासवायुः, पथिकहृद्दलनकरवालः=अध्वनीनमानसविदलनासिरूपः, प्रवालः=नूतनकिसलयः, अधरबिम्बं=ओष्ठविम्बम्, जयशंखः=विजयकम्बुः, वन्धुरा=उन्नतानता, लावण्यधरा=सौन्दर्यपरिपूर्णा, कन्धरा=ग्रीवा, पूर्णकुम्भौ=परिपूर्णकलशौ, चक्रवाकानुकारौ=चक्रवाकसदृशौ, पयोधरौ=कुचौ, ज्यायमाने=प्रत्यञ्चासदृश्यौ, मार्दवासमाने=सौकुमार्य्यातुल्ये, विसलते=मृणालतन्तू, च बाहू=भुजौ, ईषदुत्फुल्ललीलावतंसकल्हारकोरकः=ईषत् स्वल्पम् उत्फुल्लः विकसितः लीलावतंसः क्रीडाभूषणं स चासौ कल्हारकोरकः कमलकुड्मलः, गंगावर्तसनाभिः=गंगायाः भागीरथ्याः आवर्तः जलभ्रमः तस्य सनाभिः सदृशः नाभिः, दूरीकृतयोगिमनोरथः=दूरीकृतः तिरस्कृतः योगिनां सिद्धपुरुषाणां मनोरथः स्पृहा येन स तादृशः, जैत्ररथः=जयशीलरथः, अतिघनं=अत्यन्तनिविडम्, जघनम्=कटिप्रदेशः, जयस्तम्भभूते=विजयस्तम्भस्वरूपे, सौन्दर्यभूते=अधिकरम्ये, विघ्नितयतिजनारम्भे=विघ्नितः विघ्नयुक्तः कृतः यतिजनानां=सिद्धपुरुषाणाम् आरम्भः योगोद्यमः याभ्यां ते, रम्भे=कदल्यौ, च=अपि, ऊरुयुगं=सक्थियुगलम्, आतपत्रसहस्रपत्रं=आतपात्रं छत्रं तत्तुल्यं (मदनस्य) सहस्रपत्रं कमलं, पादद्वयं=चरणयुगलम्, अस्त्रभूतानि=बाणतुल्यानि, तानि=लोकप्रसिद्धानि, प्रसूनानि=कुसुमानि, इतराणि=अन्यानि, अंगानि=अवयवाः, समभूवन्निव=जातानीव ।

टिप्पणी—रोपरूक्षेण=रोपेण रूक्षः रोपरूक्षस्तेन (तत्पुरुष) । निटिलाक्षेण=निटिले अक्षिणी यस्य तेन (बहुव्रीहि), निटिल=मस्तक, निटिलाक्ष=शिव । भस्मीकृतचेतने=भस्मीकृता चेतना यस्य तस्मिन् (बहुव्रीहि) । भस्मीकृत=भस्म+च्वि+कृ+क्त । चेतना–चित्+युच्+टाप् । "बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः । प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्यमरः । 'चेतना संविदि स्त्रियाम् । वाच्यवत्प्राणयुक्ते' इति मेदिनी । मकर केतने=मकरः केतने केतनं वा यस्य तस्मिन् । 'पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः' इत्यमरः । अनवद्या–न अवद्या=अनवद्या (नञ तत्पुरुष समास) मत्वा–मन्+क्त्वा (त्वा) । रोलम्बावली–रोलम्बानाम् अवली (षष्ठी तत्पुरुष) रोलम्ब=भौंरा, रो+लम्ब्+अच् (अ) । केशजालम्–केशानां जालम् (षष्ठी तत्पुरुष) । "चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः" इत्यमरः । प्रेमाकरः– प्रेम्णः आकरः (षष्ठी तत्पुरुष) । रजनीकरः–करोतीति करः, रजन्याः करः= रजनीकरः । विजितारविन्दम्–विजितम् अरविन्दं येन तत् तथाभूतम् (बहुव्रीहि) । विजित–वि+जि+क्त (त) । अरविन्दम्–अरं शीघ्रं लिप्सां विन्दति अथवा अराकाराणि पत्राणि विन्दति; अर+विद (विद्लृ)+श तथा नुम् का आगम । "वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम्" इत्यमरः । जयध्वजायमानः –जयस्य ध्वजः जयध्वजः (षष्ठी तत्पुरुष) जयध्वज इवाचरतीति जयध्वजायमानः । जयध्वज+क्यच् (य्)+शप् (अ)+मुक् (म्)+शानच् (आन) जायायुतः–जायया युतः (तृतीया तत्पुरुष) । अक्षियुगलम्–अक्ष्णोः युगलम् (षष्ठी तत्पुरुष) । सकलसैनिकांगवीरः–सकलसैनिकेषु अंगवीरः (सप्तमी तत्पुरुष) । मलयसमीरः–मलयस्य समीरः (षष्ठी तत्पुरुष) । "समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः" इत्यमरः । निःश्वासः–निस्+श्वस्+घञ् । पथिकहृद्दलनकरवालः–पथिकानां हृदः (ष० त०) तेषां दलनम् (ष० त०) तस्मिन् करवालः (सप्तमी तत्पुरुष) । पथिक–पथिन्+ष्कन् । दलनम्–दल्+ल्युट् (यु अन) । अधरबिम्बम्–अधरं बिम्बमिव (उपमित कर्मधारय) । जयशंखः–जयस्य शंखः (षष्ठी तत्पुरुष) । जय–जि+अच् (अ) । बन्धुरा–उन्नतावनत, ऊँची नीची, बध्नातीति 'बन्ध्' धातु से 'मद्गुरादयश्च' से 'उरच्' प्रत्यय होता है। 'बन्धुरं तून्नतानतम' इत्यमरः, 'बन्धुरं मुकुटे पुंसि स्त्रीचिह्नतैलकल्कयोः बन्धूके बधिरे हंसे त्रिषु स्याद्रम्यनम्रयोः । बन्धुरा पण्ययोषायां स्त्रियां भूमौ च सक्तुषु' इति मेदिनी, 'बन्धूरबन्धुरौ रम्ये नम्रे, हंसे तु बन्धुरः । बन्धूके विडङ्गे च बन्धुरा पण्ययोषिति, इति विश्वः । लावण्यधरा–लावण्यस्य धरा (षष्ठी तत्पुरुष) । लावण्य–लवणस्य भावः, लवण+ष्यञ् । लावण्य की प

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा–"मुक्ताफलेषु छायायास्तरलत्वमिवान्तरा । प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्य-मिहोच्यते ॥" चक्रवाकानुकारौ–चक्रवाकम् अनुकुरुतः (कृदन्त उपपद स०)। चक्रवाक+अनु+कृ+अण् । पयोधरौ–धरतीति धरः, धृ+अच्; पयसो धरः पयोधरः तौ पयोधरौ । 'स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ' इत्यमरः, 'पयोधरः कोष-कारे नारिकेले स्तनेऽपि च । कशेरुमेघयोः पुंसि' इति मेदिनी । ज्यायमाने–ज्या+क्यङ् (य)+शप्+मुक् (म्)+शानच् (आन) । 'मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः' इत्यमरः । मार्दवासमाने–मार्दवे असमाने (सप्तमी तत्पुरुष), बिसलते–बिसस्य लते (षष्ठी तत्पुरुष), 'अथास्त्रियाम् । मृणालं बिसम्······' इत्यमरः । ईषदुत्फुल्ललीलावतंसकल्हारकोरकः–ईषदुत्फुल्ल-श्चासौ लीलावतंसः स चासौ कल्हारकोरकः (कर्मधारय) । कल्हारम्–कस्य जलस्य हार इव अथवा के जले ल्हादते; 'सौगन्धिकं तु कल्हारम्' इत्यमरः, 'कलिका कोरकः पुमान्' इति चामरः । गङ्गावर्त्तसनाभिः–गङ्गायाः आवर्त्तः (ष० त०) तस्य तेन वा सनाभिः (तत्पुरुष) । दूरीकृतयोगिमनोरथः–दूरीकृतः योगिनां मनोरथः येन स तथाभूतः (बहुव्रीहि) । 'इच्छा कांक्षा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः' इत्यमरः । जैत्ररथः–जैत्रश्चासौ रथः (कर्मधारय)। जैत्र–जेतृ+अण् (अ) । जयस्तम्भभूते–जयस्य स्तम्भः (षष्ठी तत्पुरुष), तद्रूपे भूतस्तस्मिन् (तत्पुरुष) । सौन्दर्यं–सुन्दरस्य भावः सुन्दर+ष्यञ् । विघ्नितयति-जनारम्भे–यतिजनानामारम्भः–यतिजनारम्भः, विघ्नितः यतिजनारम्भः याभ्यां ते (बहुव्रीहि) । विघ्नित–वि+हन्+क=विघ्न; विघ्न+इतच्=विघ्नित । आतपत्रसहस्त्रपत्रम्–आतपत्रम् तद्रूपं सहस्त्रपत्रम (कर्मधारय) । आतपत्रम्–आतपात् त्रायते इति, आतप+त्रा (त्रैङ्)+क (अ) । 'वा पुंसि पद्मं नलिन-मरविन्दं महोत्पलम् । सहस्त्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥' इत्यमरः । प्रसू-नानि–प्रसूयते स्म, प्र+सू+क्त (त) तस्य नत्वम् । 'स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम्' इत्यमरः । समभूवन्–'सम्+भू' धातु लुङ् लकार प्र० पु० ब० व० ।

यहाँ अनुप्रास तथा यमक अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है । "भय के कारण कामदेव के साथी महारानी वसुमती को निर्दोष समझकर मानो उसके अवयव बन गये ।" इस हेतु की उत्प्रेक्षा होने के कारण यहाँ पर हेतूत्प्रेक्षा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अलंकार है । उक्त उत्प्रेक्षा का आधार पौराणिक कथा है । पुराणों में प्रसि
है कि कामदेव कामवासना का शरीरधारी प्रतिनिधि देवता है जो अत्य
सुन्दर है । इसी कामदेव को शंकर जी ने अपने क्रोधानल से भस्म कर दि
था । इसी पर कवि उत्प्रेक्षा करता है कि कामदेव के भस्म हो जाने पर म
उसके साथियों ने अपनी रक्षा के लिए अनवद्य वपु वाली महारानी वसुमती
विभिन्न अवयवों के रूप में अपने को परिणत कर लिया हो । ऐसा कर
पर फिर उन्हें मारे जाने का डर नहीं रहा, क्योंकि स्त्री अवला होती है, व
उसके शरीर में रहते हुए उन्हें भगवान् शंकर जी भस्म नहीं करेंगे ।

ललनाललाम वसुमती के वर्णन के सन्दर्भ में कवि की भाषा-भामिनी
सुमधुर लालित्य एवं लावण्य से परिपूर्ण है जो कि अपने मन्दस्मित से रसि
के चित्त को चुरा लेती है ।

**विजितामरपुरे पुष्पपुरे निवसता सानन्तभोगलालिता वसुमती वसुम
मगधराजेन यथासुखमन्वभावि ।**

हिन्दी-अनुवाद—अपने वैभव से अमरावती को जीत लेने वाले पुष्प
(पटना) में निवास करते हुए मगधराज (राजहंस) ने शेषनाग के फणों
धारण की गयी पृथ्वी के समान असंख्य भोगों से लालित (दुलरायी गयी)
महारानी वसुमती का सुखपूर्वक अनुभव किया अर्थात् महारानी वसुमती
साथ उपभोग के सुख को प्राप्त किया ।

संस्कृत-व्याख्या—विजितामरपुरे=विजितं तिरस्कृतम् अमरपुरं स्वर्गः
तस्मिन्, पुष्पपुरे= पाटलिपुत्रे, निवसता=निवासं कुर्वता, अनन्तभोगलालिता
अनन्तभोगेन असंख्यसुखेन लालिता पालिता, वसुमतीव=पृथ्वीव सा वसु
=एतदाख्या राजमहिषी, मगधराजेन=एतदाख्येन भूपतिना, यथासुखम्
सुखपूर्वकम्, अन्वभावि=समुपभुक्ता । पृथिवीपक्षे—अनन्तभोगलालिता=अनन्त
एतदाख्यसर्पराजस्य भोगेन फणेन लालिता धृता ।

टिप्पणी—अनन्तभोगलालिता—अनन्तभोगेन लालिता (तृतीया तत्पुरुष)
इस शब्द के दो अर्थ हैं १—रानी वसुमती के पक्ष में—अनन्त (असंख्य) भोगों
लालित (दुलारी गयी) । २—वसुमती (पृथ्वी) के पक्ष में—शेषनाग के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर आश्रित (आधारित)। अनन्त—न अन्तोऽस्येति अनन्तः; 'अनन्तः केशवे शेषे पुमान्निरवधौ त्रिषु। अनन्ता च विशल्यायां शारिवादूर्वयोरपि। कणादुराल-मापथ्यापार्वत्यामलकीषु च। विश्वम्भरागुडूच्योः स्यादनन्तं सुरवर्त्मनि।' इति मेदिनी, 'अनन्तोऽनवधावपि' इत्यमरः। भोगः—भुज्+घञ्; 'भोगः सुखे धने पुन्सि शरीरफणयोर्मतः। पालनेऽभ्यवहारे च निर्वेशे पण्ययोषिताम्।' इति मेदिनी। वसुमतीव=पृथिवी के समान, वसु धनमस्त्यस्याम्; वसु+मतुप्+ङीप्; 'सर्वंसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुन्धरा। गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनि-र्मेदिनी मही।" इत्यमरः।

यहाँ यमक तथा श्लेष से अनुप्राणित उपमा अलंकार है।

अमात्यवर्णनम्

तस्य राज्ञः परमविधेया धर्मपालपद्मोद्भवसितवर्मनामधेया धीरधिषणाव-धीरितविबुधाचार्यकार्यसाहित्याः कुलामात्यास्त्रयोऽभूवन्। तेषां सितवर्मणः सुमतिसत्यवर्माणौ, धर्मपालस्य सुमन्त्रसुमित्रकामपालाः, पद्मोद्भवस्य सुश्रुत-रत्नोद्भवाविति तनयाः समभूवन्। तेषु धर्मशीलः सत्यवर्मा संसारासारतां बुद्ध्वा तीर्थयात्राभिलाषी देशान्तरमगमत्। विटनटवारनारीपरायणो दुर्विनीतः कामपालो जनकाग्रजन्मनोः शासनमतिक्रम्य भुवं बभ्राम। रत्नोद्भवोऽपि वाणिज्यनिपुणतया पारावारतरणमकरोत्। इतरे मन्त्रिसूनवः पुरन्दरपुरातिथिषु पितृषु यथापूर्वमन्वतिष्ठन्।

हिन्दी-अनुवाद—उन महाराज राजहंस के अत्यन्त विनीत तथा अपनी गम्भीर बुद्धि से देवगुरु बृहस्पति के द्वारा विचारित कार्यकलाप को भी अनादृत कर देने वाले (अर्थात् अपनी बुद्धि के सामने बृहस्पति की भी बुद्धि को तिर-स्कृत कर देने वाले), कुलक्रमागत धर्मपाल, पद्मोद्भव और सितवर्मा नामक तीन मन्त्री थे। उनमें सितवर्मा के सुश्रुत और सत्यवर्मा, धर्मपाल के सुमन्त्र, सुमित्र और कामपाल तथा पद्मोद्भव के सुश्रुत और रत्नोद्भव ये पुत्र हुए। इन पुत्रों में धर्मशील सत्यवर्मा संसार की असारता को जानकर तीर्थयात्रा की इच्छा से देशान्तर को चला गया। विट (भाँड़), नट तथा वेश्याओं के सम्पर्क में आकर उद्दण्ड कामपाल अपने पिता तथा भाइयों के शासन का अतिक्रमण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर पृथ्वी पर विचरण करने लगा। रत्नोद्भव भी व्यापार कार्य में निपुण होने के कारण समुद्र पार करके द्वीपान्तरों को चला गया। शेष मन्त्रिपुत्र अपने पितृजनों के स्वर्ग का अतिथि बनने पर (अर्थात् उनका देहावसान हो जाने पर) पूर्व की भाँति उनके (अपने पितृजनों के) पदों पर कार्य करने लगे।

संस्कृत-व्याख्या–तस्य=राज्ञः राजहंसस्य, परमविधेयाः=अत्यन्तनम्राः, धर्मपालपद्मोद्भव–सितवर्मनामधेयाः=धर्मपालपद्मोद्भवसितवर्मनामानः, धीरधिषणावधीरितविबुधाचार्यविचार्यकार्यसाहित्याः=धीराभिः गम्भीराभिः धिषणाभिः मतिभिः अवधीरितानि तिरस्कृतानि विबुधाचार्यस्य सुरगुरोः विचार्याणां विचारयोग्यानां कार्याणां कर्मविधीनां साहित्यानि समुदायाः यैः ते, त्रयः कुलामात्याः=त्रयः वंशपरम्परागतमन्त्रिणः, अभूवन्=अभवन्। तेषां=मन्त्रिणां मध्ये, सितवर्मणः=एतदाख्यस्य मन्त्रिणः, सुमतिसत्यवर्माणौ द्वौ सुतौ अभूताम्। धर्मपालस्य=तन्नामकस्य मन्त्रिणः, सुमन्त्रसुमित्रकामपालाः इमे त्रयः सुताः समभूवन्। पद्मोद्भवस्य=एतदाख्यस्य मन्त्रिणः, सुश्रुतरत्नोद्भवौ=सुश्रुतरत्नोद्भवनामानौ द्वौ सुतौ समभूताम्। इति=एते, तनयाः=सुताः, समभूवन्=समभवन्। तेषु=अमात्यसुतेषु, धर्मशीलः=धर्मात्मा, सत्यवर्मा=एतदाख्यः। संसारतां=संसारस्य जगतः असारतां सारशून्यताम्, बुद्ध्वा=मत्वा, तीर्थयात्राभिलाषी=पुण्यभूमियात्रेच्छुकः, देशान्तरं=अन्यं देशं, अगमत्=अगच्छत्। विटनटवारनारीपरायणः=धूर्तशैलूष–वेश्यासक्तः, दुर्विनीतः=अशिष्टः, कामपालः एतदाख्यः, जनकाग्रजन्मनोः=पितु ज्येष्ठसोदरभ्रातुश्च, शासनं=आज्ञाम्, अतिक्रम्य=उल्लङ्घ्य भुवं=पृथ्वीम्, बभ्राम=सञ्चचार। रत्नोद्भवोऽपि=पद्मोद्भवस्य द्वितीयपुत्रोऽपि, वाणिज्यनिपुणतया–व्यापारनिपुणतया, पारावारतरणं–समुद्रपारगमनम् अकरोत्=चकार। इतरे=अन्ये, मन्त्रिसूनवः–अमात्यसुताः, पुरन्दरपुरातिथिषु=स्वर्गस्थेषु सत्सु, पितृषु–जनकेषु, 'तातस्तु जनकः पिता, इत्यमरः, यथापूर्वं=पूर्वमनतिक्रम्य, अन्वतिष्ठन्=मन्त्रिकार्यमकुर्वन्।

टिप्पणी–परमविधेयाः–परमाश्च ते विधेयाश्च (कर्मधारय)। धीरधिषणावधीरितविबुधाचार्यविचार्यकार्यसाहित्याः–धीरधिषणाभिः अवधीरितानि विबुधाचार्यविचार्यकार्यसाहित्यानि यैः ते (बहुव्रीहि)। 'बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः शेमुषी मतिः' इत्यमरः। कार्य–कृ+ण्यत्। अमात्याः–अमा सह समीपेवा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमा+त्यप् । 'मन्त्री धीसचिवोऽमात्यः' इत्यमरः । अभूवन्-'भू' धातु लुङ् लकार प्र० पु० ब० व० । तनयाः=सुत, तनोति कुलम् अथवा तन्यते अनेन, तन्+कयन् । 'आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः' इत्यमरः । बुद्ध्वा-बुध्+क्त्वा (त्वा) । अगमत्-'गम्' धातु लुङ् लकार प्र० पु० ए० व० । वारनारी-वेश्या, वारस्य वृन्दस्य स्त्री=वारस्त्री, 'वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा' इत्यमरः । शासनम्-शास्+ल्युट् (यु–अन) । अतिक्रम्य-अति+क्रम्+क्त्वा→ल्यप् । बभ्राम–'भ्रम्' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व० । वाणिज्यनिपुणतया-वाणिज्ये निपुणता=वाणिज्यनिपुणता तया । वाणिज्य-वणिजां कर्म, वणिज+ष्यञ् । निपुणता-निपुण+तल् । पारावारः-समुद्र, पारमावृणोति, पार+आ+वृ+अण्, 'समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः' इत्यमरः । तरणम-तृ+ल्युट् (यु) । अन्वतिष्ठन्-'अनु+स्था' धातु लङ् लकार प्र० पु० ब० व० ।

यहाँ अनुप्रास नामक अलङ्कार की छटा दर्शनीय है ।

राजहंसस्य युद्धवर्णनम्

ततः कदाचिन्नानाविधमहायुधनैपुण्यरचितागण्यजन्यराजन्यमौलिपालिनिहितनिशितसायको मगधनायको मालवेश्वरं प्रत्यग्रसङ्ग्रामघस्मरं समुत्कटमानसारं मानसारं प्रति सहेलं न्यक्कृतजलधिनिर्घोषाहङ्कारेण भेरीझाङ्कारेण हठिकाकर्णनाक्रान्तभयचण्डिमानं दिग्दन्तावलवलयं विघूर्णयन् निजभरनमन्मेदिनीभरेण आयस्तभुजगराजमस्तकबलेन चतुरङ्गबलेन संयुतः सङ्ग्रामाभिलाषेण रोषेण महताविष्टो निर्ययौ ।

हिन्दी-अनुवाद–तत्पश्चात् कभी (कालान्तर में) नाना प्रकार के बड़े-२ शस्त्रों के प्रयोग के कौशल से किये गये असंख्य सङ्ग्रामों में क्षत्रिय राजाओं के मस्तकों पर तीक्ष्ण बाणों का प्रहार करने वाले मगध-नायक (मगधाधिपति) राजहंस (शीघ्र ही सम्पन्न हो चुकने वाले) नवीन सङ्ग्राम में शत्रुओं का विनाश करने वाले अत्यधिक अभिमानी मालवेश्वर (मालव-नरेश) मानसार की ओर, बिना प्रयास के ही समुद्र के गम्भीर गर्जन के अहङ्कार को तिरस्कृत करने वाले नगाड़े के शब्दों को सहसा सुनने के कारण भय–त्रस्त दिग्गजों के मण्डल को कँपाते हुए अपने भार से दबी हुयी पृथ्वी के भार से शेषनाग के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तकबल को थकाने वाली चतुरङ्गिणी (हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल) सेना से युक्त संग्राम करने की अभिलाषा से अत्यन्त क्रोध के साथ निकल पड़े।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तदनन्तरम्, कदाचित्=जातु, नानाविधमहायुध-नैपुण्यरचितागण्यजन्यराजन्यमौलिपालिनिहितनिशितसायकः = नानाविधानां विविधप्रकाराणां महायुधानां विशालशस्त्राणां नैपुण्येन कौशलेन रचितानि विहितानि अगण्यजन्यानि असंख्ययुद्धानि यैः तादृशानां राजन्यानां क्षत्रियाणां मौलिपालिषु मस्तकप्रान्तभागेषु निहितः निक्षिप्तः निशितसायकः तीक्ष्णशरः येन स तादृशः, मगधनायकः=मगधनरेशः, मालवेश्वरं=मालवाधिपतिम्, प्रत्यग्र-संग्रामघस्मरं=प्रत्यग्रः नवीनः यः संग्रामः तत्रः घस्मरः विनाशशीलः तं तथा-भूतम्, समुत्कटमानसारं=समुत्कटः अत्यधिकः मानः गर्वः एव सारः अभिमाना-धिक्यं यस्य तादृशम्, मानसारं प्रति=एतदाख्यं भूपतिं प्रति, सहेलं=सावज्ञं, न्यक्कृतजलधिनिर्घोषाहङ्कारेण=न्यक्कृतः तिरस्कृतः जलधेः सागरस्य निर्घोष-हङ्कारः गम्भीरगर्जनगर्वः येन सः तेन तादृशेन, भेरीझाङ्कारेण=दुन्दुभिनादेन, हठिकाकर्णनाक्रान्तभयचण्डिमानं=हठिकाकर्णनात् सहसागतशब्दश्रवणात् आक्रान्तः प्राप्तः भयस्य भीतेः 'भीतिर्भीः साध्वसं भयम्' इत्यमरः। चण्डिमा प्रचण्डत्वं यस्य तथाभूतम्, दिग्दन्तावलवलयं=दिशाम् आशानां ये दन्तावलाः गजाः तेषां वलयं मण्डलम्, विघूर्णयन्=कम्पयन्, निजभरनमन्मेदिनीभरेण= निजभरेण स्वभारेण नमन्त्याः विनमन्त्याः मेदिन्याः पृथिव्याः भरेण भारेण, आयस्तभुजगराजमस्तकबलेन=आयस्तं सम्पीडितं भुजगराजस्य शेषस्य मस्त-कानां सहस्त्रशिरसां बलं शक्तिः येन सः तेन तादृशेन, चतुरङ्गबलेन चतुरङ्गसैन्येन, संयुतः=सहितः, संग्रामाभिलाषेण=संग्रामस्य युद्धस्य अभिलाषः कामः तेन, महता रोषेण=अत्यधिककोपेन, आविष्टः=युक्तः, निर्ययौ=निर्जगाम।

टिप्पणी—नानाविध……सायकः—महान्ति च तानि आयुधानि महायुधानि, नानाविधानि च तानि महायुधानि इति नानाविधमहायुधानि (कर्मधारय), तेषां नैपुण्यम् (तत्पुरुष), तेन रचितानि तानि च तानि अगण्यजन्यानि (कर्मधारय), तेषु राजन्याः (तत्पुरुष), तेषां मौलिपालयः, तासु निहिताः निशिताः सायकाः येन सः (बहुव्रीहि)। नैपुण्यम्—निपुण+ष्यञ्। रचित—रच्+

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(त) । जन्य–जननमिति इस अर्थ में 'जनेर्यक्' से यक् (य) प्रत्यय। 'जन्यं हट्टे परीवादे संग्रामे च नपुंसकम् । जन्या मातृवयस्यायां जन्यः स्याज्जनके पुमान् । त्रिषूत्पाद्यजनित्रोश्च नवोढाज्ञातिभृत्ययोः । वरस्निग्धे' इति मेदिनी; 'युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम्' इत्यमरः। राजन्य–राज्ञोऽपत्यम् इस अर्थ में राजन् शब्द से 'राजश्वशुराद्यत्' से यत् प्रत्यय; 'मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट्' इत्यमरः। मौलि–मूलस्य अपत्यम्, मूल+इञ्; 'चूडा किरीटं केशश्च संयता मौलयस्त्रयः, इत्यमरः, 'किरीटे धम्मिल्ले चूडायाम–नपुंसकम् । अशोकपादपे पुंसि' इति मेदिनी। पालिः–पालयति इति पाल्यते अनया वा; 'पाल्+णिच्' धातु से 'अच इः' से 'इ' प्रत्यय। 'पालिः कर्णलताग्रेऽस्त्री पङ्क्तावङ्कप्रभेदयोः। छात्रादिदेये स्त्री पाली यूकासश्म श्रुयोषितोः' इति मेदिनी । निहित–नि+धा (हि)+क्त (त) । नायक–नी+ण्वुल् । प्रत्यग्रसङ्ग्रामघस्मरं–प्रत्यग्रः यः सङ्ग्रामः तस्मिन् घस्मरः तम् (तत्पुरुष)। घस्मर–घसति इति इस अर्थ में घस्लृ (घस्) धातु से 'सृघस्यदः क्मरच्' सूत्र से क्मरच् (मर) प्रत्यय। 'भक्षको घस्मरोऽद्मरः' इत्यमरः। समुत्कटमानसारं–समुत्कटश्चासौ मानश्चेति समुत्कटमानः (कर्मधारय)' समुत्कटमानः एव सारः यस्य तम् (बहुव्रीहि) । मानसारं प्रति–यहाँ प्रति के योग में 'अभितः परितः समयानिकषा हा प्रति योगेऽपि' से द्वितीया होती है। न्यक्कृतजलधिनिर्घोषाहङ्कारेण–जलधेः निर्घोषाहङ्कारः=जलधिनिर्घोषाहङ्कारः; न्यक्कृतः जलधिनिर्घोषाहङ्कारः येन तेन (बहुव्रीहि) । जलधिः–जलानि धीयन्तेऽत्र जल+धा+कि । भेरीझाङ्कारेण–भेर्याः झाङ्कारेण (षष्ठी तत्पुरुष) । हठिका······चण्डिमानम्–हठिकाकर्णनात् आक्रान्तः भयचण्डिमा यं तम् (बहुव्रीहि) । भय–बिभेति अस्मात्; भी+अच् । 'दरत्रासौ भीतिर्भीः साध्वसं भयम्' इत्यमरः। दिग्दन्तावलवलयं–दिशां दन्तावलाः तेषां वलयम् (षष्ठी तत्पुरुष) । दन्तावलः– अतिशयितौ दन्तावस्य इस अर्थं में 'दन्त' शब्द से 'दन्तशिखात् संज्ञायाम्' से वलच् (वल) तथा 'वले' से दीर्घ। 'दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः' इत्यमरः। विघूर्णयन्–वि–+घूर्ण्+णिच्+शतृ । आयस्त·········बलेन–भुजगराजस्य मस्तकवलम्=भुजगराज-मस्तकवलम्; आयस्तं भुजगराजमस्तकवलं येन तेन (बहुव्रीहि) । भुजगानां

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा=भुजगराजः (षष्ठी तत्पुरुष) भुजगराजन्+टच्=भुजगराज। चतुरङ्ग बल–"हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुर्विधम्" इत्यमरः। आयस्त–आ+यस्+क्त (त)। संयुत–सम्+यु+क्त (त)। संग्रामाभिलाषेण–संग्रामस्य अभिलाषः संग्रामाभिलाषस्तेन (षष्ठी तत्पुरुष)। अभिलाषः–अभिलषणम् इति; अभि+लष्+घञ्। 'इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः। कामोऽभिलाषस्तर्षश्च' इत्यमरः। आविष्टः–आ+विश्+क्त (त)। निर्ययौ–'निर्+या' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व०।

यहाँ अनुप्रास, यमक एवं अतिशयोक्ति अलङ्कार हैं। भाषा सरस, सुन्दर एवं विषयानुकूल है।

मालवनाथोऽप्यनेकानेकपयूथसनाथो विग्रहः सविग्रह इव साग्रहोऽभिमुखीभूय भूयो निर्जगाम। तयोरथ रथतुरगखुरक्षुण्णक्षोणीसमुद्भूते करिघटाकटस्रवन्मद-धाराधौतमूले नव्यवल्लभवरणागतदिव्यकन्याजनजवनिकापटमण्डप इव वियत्तलव्याकुले धूलीपटले दिविषदध्वनि धिक्कृतान्यध्वनिपटहध्वानवधिरिता-शेषदिगन्तरालं शस्त्राशस्त्रि हस्ताहस्ति परस्पराभिहतसैन्यं जन्यमजनि।

हिन्दी-अनुवाद—मालवाधिपति भी असंख्य हाथियों के झुण्ड से सनाथ होकर युद्ध की उत्कट इच्छा से अभिमुख होकर पुनः (अपने नगर से इस प्रकार) निकल पड़ा कि मानो शरीरधारी साक्षात् समर ही हो। इसके पश्चात् उन दोनों (राजहंस और मानसार) में इतना भयंकर युद्ध हुआ कि रथ के पहियों और घोड़ों की टापों से खूँदी हुयी पृथ्वी से उड़ी हुयी धूलि का समूह हाथियों के समूह के गण्डस्थलों से बहने वाले मद की धारा से धुलता जाता था, (वह धूलि पटल) गगनतल में इस प्रकार व्याप्त हो गया कि मानो नवीन पतियों को वरण करने के लिए आयी हुयीं अप्सराओं के लिए परदायुक्त तम्बू (चाँदनी) हो, अन्य सभी ध्वनियों को दबाने वाले नगाड़े का शब्द आकाश में गूँज उठने से सभी दिशायें बहिरी सी हो गयी थीं। शस्त्रों तथा हाथों से किए गए परस्पर प्रहार के कारण दोनों पक्षों के सैनिक मारकाट करने लगे।

संस्कृत-व्याख्या—मालवनाथः=मालवेश्वरः, अनेकानेकपयूथसनाथः=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेकेषां बहूनाम् अनेकपानां द्विपानां यूथेन समूहेन सनाथः युक्तः, विग्रहः= सङ्ग्रामः, सविग्रह इव=मूर्तिमान् इव, 'शरीरं वर्ष्म विग्रहः' इत्यमरः, साग्रहः= साभिलाषः, भूयः=पुनः, अभिमुखीभूय=सम्मुखीभूय, निर्जगाम=निर्ययौ। अथ=अनन्तरम्, तयोः=राजहंसमानसारयोः, रथतुरगखुरक्षुण्णक्षोणीसमुद्भूते=रथाश्च स्यन्दनानि च तुरगाश्च अश्वाश्च तेषां खुरैः शफैः क्षुण्णा विदीर्णा या क्षोणी धरा तस्याः समुद्भूते समुत्थिते, करिघटाकटस्रवन्मदधाराधौतमूले= करिघटानां हस्तिसमूहानां कटेभ्यः गण्डेभ्यः स्रवन्त्यः क्षरन्त्यः याः मदधाराः दानजलधाराः ताभिः धौतं प्रक्षालितं मूलं मूलभागः यस्य तथाभूते, नव्यवल्लभवरणागतदिव्यकन्याजनजवनिकापटमण्डपे=नव्यवल्लभानां नवदयितानां वरणाय वरणार्थम् आगतानाम् आयातानां दिव्यकन्याजनानाम् अप्सरसां या जवनिका तया युक्तः पटमण्डपः वसनमण्डपः तस्मिन्, इव=यथा, वियत्तलव्याकुले= वियत्तले गगनतले व्याकुले आच्छादिते, धूलीपटले=पांशुसमूहे, दिविषदध्वनि =देवमार्गे, धिक्कृतान्यध्वनिपटहध्वानबधिरिताशेषदिगन्तरालं=धिक्कृतः तिरस्कृतः अन्येषां ध्वनिः ध्वानः यैः तथोक्तैः पटहध्वानैः ढक्कानिनादैः बधिरितं बधिरीकृतम् अशेषदिगन्तरालं समस्तदिग्मध्यभागः येन तत्, शस्त्राशस्त्रि= शस्त्रयुद्धम्, हस्ताहस्ति=हस्तयुद्धम्, परस्पराभिहतसैन्यम्=परस्परेण अभिहतम् आक्रान्तं सैन्यं यस्मिन् तत्, जन्यं=युद्धम्, 'युद्धमायोधनं जन्यम्' इत्यमरः, अजनि=जातम्।

टिप्पणी—अनेका ········सनाथः—अनेकानेकपानां यूथेन सनाथः (तृतीया तत्पुरुष)। अनेकप-अनेकेन करेण मुखेन च पिबति; अनेक+पा+क। 'दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः' इत्यमरः। विग्रहः—'विग्रहो युधि विस्तारे प्रविभागशरीरयोः' इति हैमः; विग्रहणमिति; वि+ग्रह्+अप्। निर्जगाम— निर्+गम्' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व०। अथ—अनन्तर, पश्चात्। 'मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथोऽथ' इत्यमरः। रथ··········समुद्भूते— रथाश्च तुरगखुराश्चेति रथतुरगखुराः तैः क्षुण्णा, सा च सा क्षोणी, तस्याः समुद्भूते (तत्पुरुष)। क्षुण्ण—क्षुद्+क्त (त)। क्षोणी—पृथ्वी; क्षौतीति क्षु+नि+ङीष्। 'धरा धरित्री धरणी क्षोणी ज्या काश्यपी क्षितिः' इत्यमरः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करि ··· मूले—करीणां घटा=करिघटाः तासां कटाः तेभ्यः स्रवन्ती सा चा मदधारा तया धौतं मूलं यस्य तस्मिन् (बहुव्रीहि)। करी—करोऽस्यास्ति कर+इनि (इन्)। 'मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी' इत्यमरः मद–हाथी का मदजल; 'मदो रेतसि कस्तूर्यां गर्वे हर्षेभदानयोः' इति मेदिनी स्रवन्—स्रु+शतृ। नव्य··· मण्डपः······नव्याश्च ते वल्लभाः तेषां वरण आगताः दिव्याश्च ताः कन्यकाः तासां जनः। नव्यवल्लभवरणागतश्चासौ दि कन्याजनः तस्य जवनिका तया युक्तः पटमण्डपः तस्मिन्। दिव्य–दिव+यत् वरण–वृ+ल्युट्। आगतः–आ+गम्+क्त (त)। कन्यका–कनति कन्यते व कन्+यक्+टाप्=कन्या; कन्या+कन् तथा ह्रस्व और टाप्। 'कन्याकु रिकानार्योरौषधिराशिप्रभेदयोः' इति मेदिनी। मण्डपः–मण्डं पातीति; मण्ड-पा+क। 'अथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः' इत्यमरः। दिविषदध्वनि—दि सीदन्तीति दिविषदः, तेषाम् अध्वनि (षष्ठी तत्पुरुष)। दिविषद्–दिवि-सद्+क्विप्। "आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः। आदित्या ऋभवे स्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः॥" धिक्कृतान्य······दिगन्तरालम्–धिक्कृतान्यध्वा श्चासौ पटहध्वानः, तेन बधिरितानि अशेषदिगन्तरालानि यस्मिन् तत् ब व्रीहि)। धिक्कृत–धिक्+कृ+क्त। ध्वान–ध्वन्+घञ्। शस्त्राशस्त्रि–शस्त्रै शस्त्रैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तमिति शस्त्राशस्त्रि (बहुव्रीहि)। हस्ताहस्ति हस्तैः हस्तैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तमिति हस्ताहस्ति (बहुव्रीहि)। परस्पर भिहतसैन्यम्–परस्परेण अभिहतं सैन्यं यस्मिन् तत् (बहुव्रीहि)। अभिहत अभि+हन्+क्त। जन्यम्=युद्ध।

'सविग्रह इव' यहाँ उत्प्रेक्षालङ्कार है। 'नव्यमण्डप इव में भी उत्प्रेक्षा है अनुप्रास की छटा तो अत्यन्त हृद्य है।

तत्र मगधराजः प्रक्षीणसकलसैन्यमण्डलं मालवराजं जीवग्राहमभिगृ कृपालुतया पुनरपि स्वराज्ये प्रतिष्ठापयामास। ततः स रत्नाकरमेखलामिला नन्यशासनां शासदनपत्यतया नारायणं सकललोकैककारणं निरन्तरमर्चयामास

हिन्दी-अनुवाद—उस संग्राम में मगधनरेश राजहंस ने मालवनरेश मा सार की समस्त सेना नष्ट कर उसे जीवित ही पकड़ लिया परन्तु फिर द

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लुता से उसे उसी के राज्य पर प्रतिष्ठित कर दिया । तत्पश्चात् मगधाधिपति राजहंस सागरपर्यन्त सम्पूर्ण पृथ्वी पर अकेले ही शासन करते हुए सन्तानरहित होने के कारण समस्त संसार के मूल कारण भगवान् नारायण के निरन्तर पूजन में लग गये ।

संस्कृत-व्याख्या—तत्र = तस्मिन् युद्धे, मगधराजः = मगधाधिपतिः, प्रक्षीणसकलसैन्यमण्डलम् = प्रक्षीणं निःशेपितं सकलं सम्पूर्णं सैन्यमण्डलं चमूसमूहः यस्य तम्, मालवराजं = मालवनरेशम्, जीवग्राहमभिगृह्य = जीवन्तमेव धृत्वा, कृपालुतया = दयालुतया, पुनरपि = भूयोऽपि, स्वराज्ये = स्वकीये राज्ये, प्रतिष्ठापयामास = स्थापयामास । ततः = तदनन्तरम्, सः = मगधराजः, रत्नाकरमेखलाम् = रत्नाकरः सागरः मेखला काञ्ची यस्याः सा ताम्, इलां = पृथ्वीम्, अनन्यशासनाम् = अन्यनृपस्य शासनरहिताम्, शासत् = परिपालयन्, सकललोकैककारणं = सम्पूर्णजगदादिभूतम्, नारायणं = विष्णुम्, निरन्तरं = सर्वदा, अर्चयामास – पूजयामास ।।

टिप्पणी—तत्र–तस्मिन् इति तद् + त्रल् । मगधराजः–मगधस्य राजा (षष्ठी तत्पुरुष) मगधराजन् + टच् । प्रक्षीणसकलसैन्यमण्डलम् = प्रक्षीणं सकलसैन्यमण्डलं यस्य तम् (बहुव्रीहि) । प्रक्षीण–प्र + क्षि + क्त, दीर्घ । मालवराजं–मालवस्य राजा तं (षष्ठी तत्पुरुष) । जीवग्राहम्–जीवस्य ग्राहः यस्मिन् तद् यथा स्यात्तथा । अभिगृह्य–अभि + गृह् + क्त्वा ल्यप् । कृपालुतया–कृपा + ला + डु + तल् + टाप् + कृपालुता तया कृपालुतया । 'स्याद्दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः' इत्यमरः । रत्नाकरमेखलां–रत्नाकरः मेखला यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि) । रत्नाकरः–रत्नानामाकरः । रत्नाकरो जलनिधिर्यादः पतिरपाम्पतिः' इत्यमरः । इला = पृथ्वी; 'विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा' इत्यमरः । शासत्–शास् + शतृ । नारायण–नराणां समूहः नारम (नर + अण्); नारम् अयनं यस्य सः । "विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः । दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः" इत्यमरः । सकललोकैककारणम् = सकललोकानाम् एककारणम् (षष्ठी तत्पुरुष) । कारणम्–कृ + णिच् + ल्युट्; 'हेतुर्ना कारणं बीजं निदानं त्वादिकारणम्' इत्यमरः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहाँ अनुप्रास नामक अलङ्कार है ।

राज्ञ्या गर्भधारणवर्णनम्

अथ कदाचित्तदग्रमहिषी 'देवि देवेन कल्पवल्लीफलमाप्नुहि' इति प्रभातसम सुस्वप्नमवलोकितवती । सा तदा दयितमनोरथपुष्पभूतं गर्भमधत्त । राजा सम्पन्न्यक्कृताखण्डलः सुहृन्नृपमण्डलः समाहूय निजसम्पन्मनोरथानुरूपं देव्याः सीमन्तोत्सवं व्यधत्त ।

हिन्दी-अनुवाद—इसके पश्चात् कालान्तर में एक दिन प्रातःकाल के सम मगधाधिपति की महारानी वसुमती ने एक सुन्दर स्वप्न देखा कि कोई व्यक्ति उनसे कह रहा है—"हे देवि ! तुम अपने पतिदेव से कल्पवृक्ष का फल प्राप्त करो ।" इसके वाद उस रानी ने पति के मनोरथ की प्राप्ति के लिए पुष्प गर्भ को धारण किया । अपनी सम्पत्ति से इन्द्र को तिरस्कृत कर देने वाले रा राजहंस ने मित्र राजाओं के समूह को बुलाकर अपनी सम्पत्ति तथा मनोरथ अनुरूप महारानी का सीमन्तोन्नयन संस्कार किया ।

संस्कृत-व्याख्या—अथ=अनन्तरम्, कदाचित्=जातु, तदग्रमहिषी=तस्य राज्ञः राजहंसस्य अग्रमहिषी पट्टराज्ञी, देवि=भद्रे, देवेन=राजहंसेन, कल्पवल्लीफलम्=कल्पवल्ल्याः कल्पलतायाः फलम्, आप्नुहि=अवाप्नुहि, इति=एवम्, प्रभातसमये=प्रातःकाले, सुस्वप्नं=सुन्दरं स्वप्नम्, अवलोकितवती=अपश्यत् । सा=वसुमती, तदा=तस्मिन् काले, दयितमनोरथपुष्पभूतं=दयितस्य वल्लभस्य यः मनोरथः कामः तस्य पुष्पभूतं कुसुमभूतं गर्भं=भ्रूण अधत्त=दधार । राजापि=भूपतिरपि, सम्पन्न्यक्कृताखण्डलः=सम्पदा वैभवे न्यक्कृतः तिरस्कृतः आखण्डलः मघवा येन स तथोक्तः । सुहृन्नृपमण्डलं=सुहृद मित्राणां नृपाणां राज्ञां च मण्डलं समूहम्, समाहूय=आकार्य, निजसम्पन्मनोरथानुरूपम्=निजस्य स्वकीयस्य सम्पदः लक्ष्म्याः मनोरथस्य कामस्य च अनुरू सदृशम्, देव्याः=वसुमत्याः, सीमन्तोत्सवं=सीमन्तोन्नयनसंस्कारविशेष व्यधत्त=चकार ।

टिप्पणी—तदग्रमहिषी–तस्य अग्रमहिषी (षष्ठी तत्पुरुष) । महिषी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पटरानी । मह्यते; 'मह् पूजायाम्' धातु से 'अविमह्योष्टिषच्' से टिषच् प्रत्यय तथा ङीष् । 'कृताभिषेका महिषी' इत्यमरः, 'महिषी नृपयोषिति । सैरिभ्यामौषधीभेदे' इति हेमचन्द्रः । देव–दिव्+अच् । आप्नुहि–आप् धातु लोट्लकार मध्यम पुरुष एकवचन । अवलोकितवती–अव+लोक्+क्तवतु+ङीप् । दयितभूतम्-दयितमनोरथस्य पुष्पभूतं (षष्ठी तत्पुरुष); अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम्' इत्यमरः । गर्भ–'गर्भो भ्रूण इमौ समौ' इत्यमरः । अधत्त–'धा' धातु लङ्लकार आत्मनेपद प्र० पु० ए० व० । सम्पन्न्यक्कृताखण्डलः–सम्पदा व्यक्कृतः आखण्डलः येन स तथोक्तः । 'संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः । आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षा' इत्यमरः । समाहूय–सम्+आ+ह्वेञ्+क्त्वा–ल्यप् । निजसम्पन्मनोरथानुरूपं–निजस्य सम्पदः मनोरथस्य च अनुरूपम् । 'इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः'इत्यमरः । व्यधत्त-'वि+धा' धातुलङ् लकार आत्मनेपद प्र० पु० ए० व० ।

एकदा हितैः सुहृन्मन्त्रिपुरोहितैः'सभायां सिंहासनासीनो गुणैरहीनो ललाटतटन्यस्ताञ्जलिना द्वारपालेन व्यज्ञापि–देव ! देवसन्दर्शनलालसमानसः कोऽपि देवेन विरच्यार्चनार्हो यतिर्द्वारदेशमध्यास्ते' इति तदनुज्ञातेन तेन स संयमी नृपसमीपमनायि । भूपतिरायान्तं तं विलोक्य सम्यग्ज्ञाततदीयगूढचारभावो निखिलमनुचरनिकरं विसृज्य मन्त्रिजनसमेतः प्रणतमेनं मन्दहासमभाषत–'ननु तापस ! देशं सापदेशं भ्रमन् भवांस्तत्र भवदभिज्ञातं कथयतु' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—एक समय हितकारी, सुहृद्, मन्त्री और पुरोहितों के साथ सभा में सिंहासन पर बैठे हुए अच्छे गुणों से युक्त (राजा राजहंस से) अपने मस्तक पर अञ्जलि रखते हुए अर्थात् हाथ जोड़कर द्वारपाल ने निवेदन किया–हे देव ! आपके द्वारा की जाने वाली पूजा के योग्य संन्यासी आपके दर्शनों की लालसा लेकर द्वारदेश पर बैठा हुआ है । राजा की आज्ञा पाकर द्वारपाल उस संन्यासी को राजा के समीप ले आया । महाराज राजहंस ने आते हुए उस संन्यासी को देखकर उसके गुप्तचर भाव को भलीभाँति समझकर समस्त अनुचरवर्ग को हटाकर मन्त्रिजनों के साथ नमस्कार करने वाले मुस्कराते हुए उस (संन्यासी) से कहा–हे तापस ! कपटवेष के साथ देश में भ्रमण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करते हुए आपने जो कुछ जाना हो उसे कहिये ।

संस्कृत-व्याख्या–एकदा = एकस्मिन् काले, हितैः = हितैषिभिः, सुहृन्मन्त्रिपु- हितैः, = मित्रमंत्रिपुरोहितगणैः, सभायां = समज्यायाम् सिंहासनासीनः = भद्रा- नोपविष्टः, गुणैः = दयादाक्षिण्यादिभिः, अहीनः = न रहितः, ललाटतटन्यस्ताञ्ज- लिना, = भालप्रदेशबद्धाञ्जलिना, द्वारपालेन = प्रतीहारेण, व्यज्ञापि = न्यवे- देव ! = महाराज !, देवसन्दर्शनलालसमानसः = देवस्य राज्ञः सन्दर्शने सम्य- अवलोकने लालसा उत्कटेच्छा यस्य तादृशं मानसं चित्तं यस्य स तादृशः, 'कामोऽभि- लाषः तर्षश्च सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः, इत्यमरः, देवेन = तत्रभवता, विरच्यार्चनार्हः विरच्या कर्तव्या या अर्चना पूजा ताम् अर्हतीति तादृशः, कोऽपि = कश्चि- यतिः = मुनिः संन्यासी वा, द्वारदेशं = द्वारप्रदेशं, अध्यास्ते = अधितिष्ठ- इति = एवम, तदनुज्ञातेन = राजहंसानुमतेन, तेन = द्वारपालेन, स संयमी= संन्यासी, नृपसमीपं = भूपतिनिकटम्, अनायि = प्रापितः, भूपतिः = नृपः आयान्तं = आगच्छन्तम, तं = यतिम्, विलोक्य = दृष्ट्वा, सम्यग्ज्ञाततदीयगूढचार- भावः = सम्यग्ज्ञातः सम्यगवगतः तदीयः गूढः गुप्तः चारभावः स्पशभावः ये- स तादृशः, निखिलं = समस्तम्, अनुचरनिकरं = भृत्यसमुदायम्, विसृज्य = मुक्त्वा मन्त्रिजनसमेतः = सचिवजनयुक्तः, प्रणतम् = विनम्रम्, एनं = संन्यासिनम्, मन्द- हासं = मन्दस्मितम, अभाषत = अवदत्–ननु = इति आमन्त्रणे, 'प्रश्नावधारणा- ज्ञानुनयामन्त्रणे ननु' इत्यमरः, तापस ! = संन्यासिन्, देशं = विविधदेशान् सापदेशं = छलसहितम् 'व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च' इत्यमरः, भ्रमन् = पर्यटन् तत्र = तेषु स्थानेषु, भवदभिज्ञातं = भवदवगतम्, कथयतु = वदतु ।

टिप्पणी–एकदा–एकस्मिन् काले, एक + दा । हितैः–धा (हि) + क्त- हितम्, हितमस्य अस्ति इति हित + अच् = हितः हितकारी; तृ० व० हितैः । सुहृन्मन्त्रिपुरोहितैः–सुहृदश्च मन्त्रिणश्च पुरोहिताश्च इति सुहृन्मन्त्रि- पुरोहिताः तैः (द्वन्द्व) । पुरस् + धा (हि) + क्त (त) । सिंहासनासीनः– सिंहासने आसीनः (सप्तमी तत्पुरुष) । आसीनः–आस + शानच् । ललाटतटन्य- स्ताञ्जलिना = ललाटतटे न्यस्तः अञ्जलिः येन स तेन (बहुव्रीहि) । ललाटम्– ललं विलासमीप्सां वा अटति लल + अट् + अण् । 'ललाटमलिकं गोधि-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्यमरः । अञ्जलिः–अज्यतेऽनेन इति, 'अञ्जू व्यक्त्यादौ' धातु से 'ऋतन्यञ्जि'-आदि सूत्र से अलि प्रत्यय । 'अञ्जलिस्तु पुमान् हस्तसंपुटे कुडवेऽपि च' इति मेदिनी, देवसन्दर्शनलालसमानसः=देवस्य सन्दर्शनमिति देवसन्दर्शनं तस्मिन् लालसा यस्य तत्, देवसन्दर्शनलालसं मानसं यस्य सः (बहुव्रीहि) । देवः–दिव्+अच्; दीव्यतीति देवः । 'अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः' इत्यमरः । लालसा–भृशं लसनमित्यर्थे 'लस् कान्तौ' यङन्ताद् 'अ' प्रत्ययः ततश्च टाप् । 'लालसौत्सुक्यतृष्णातिरेकयाच्ञासु' इति मेदिनी । मानसम्–मन्यतेऽनेन 'मन्+असुन्' ततश्च अण्=मानसम् । 'चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः' इत्यमरः । विरच्या–वि+रच्+यत्+टाप् । अर्चना–पूजा, अर्च्+ल्यु+टाप् । द्वारदेशम्–यहाँ 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' से कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया होती है । आयान्तम्–आ+या+शतृ । विलोक्य–वि+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । सम्यग्ज्ञाततदीयगूढचारभावः–सम्यक् ज्ञातः तदीयः गूढचारभावः येन सः (बहुव्रीहि) । ज्ञात–ज्ञा+क्त । गूढ–गुह्+क्त । अनुचर–अनु+चर्+ट । विसृज्य–वि+सृज्+क्त्वा→ल्यप् । मन्त्रिजनसमेतः=मन्त्रिजनैः समेतः (तृतीया तत्पुरुष) । प्रणतम्–प्र+नम्+क्त । अभाषत–भाष्' धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व० । भ्रमन्–भ्रम्+शतृ । कथयतु–कथ् धातु लोट् लकार प्र० पु० ए० व० ।

यहाँ यमक तथा अनुप्रास अलङ्कारों की छटा दर्शनीय है ।

संन्यासिनः सन्देशकथनम्

तेनाभाषि भूभ्रमणबलिना प्राञ्जलिना–'देव ! शिरसि देवस्याज्ञामादायैनं निर्दोषं वेषं स्वीकृत्य मालवेन्द्रनगरं प्रविश्य तत्र गूढतरं वर्तमानस्तस्य राज्ञः समस्तमुदन्तजातं विदित्वा प्रत्यागमम् ।

हिन्दी-अनुवाद–भूतल पर भ्रमण करने में समर्थ हाथ जोड़े हुए उस संन्यासी ने कहा–महाराज ! श्रीमान् जी की आज्ञा को शिरोधार्य कर इस निर्दोष वेष को स्वीकार करके मैंने मालवनरेश के नगर में प्रवेश किया । वहाँ प्रच्छन्न रूप से रहता हुआ मैं उस राजा के समस्त वृत्तान्त को जानकर वापस लौट आया हूँ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत-व्याख्या—भूभ्रमणवलिना=भुवः धरायाः भ्रमणे परिभ्रमणे यत् शक्तिः तदस्यास्तीति तेन, प्राञ्जलिना=वद्धाञ्जलिना, तेन=यतिना, अभाषि, उक्तम्, देव !=राजन् !, देवस्य=महाराजस्य, आज्ञां=आदेशम्, शिरसा आदाय=सादरं गृहीत्वा, एनं निर्दोषं=दोषरहितम्, वेषं=रूपम्, स्वीकृत्य=अङ्गीकृत्य, मालवेन्द्रनगरं=मालवनरेशपुरम्, प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा, तत्र=तस्मिन् नगरे, गूढ़तरं=गुप्ततरम्, वर्तमानः=तिष्ठन्, तस्य राज्ञः=मानसारस्य, समस्तं=सम्पूर्णम्, उदन्तजातं=प्रवृत्तिसमूहम्, विदित्वा=ज्ञात्वा, प्रत्यागमम्=प्रत्यायातः ।

टिप्पणी—भूभ्रमणवलिना-भुवः भ्रमणं भूभ्रमणं तस्मिन् वली तेन । भ्रमण-भ्रम्+ल्युट् । वली-वल+इनि । देव-दिव्+अच् । आज्ञाम्-आ+ज्ञा+अङ्+टाप् । आदाय-आ+दा+क्त्वा→ल्यप् । स्वीकृत्य-स्व+च्वि+कृ+क्त्वा→ल्यप् । मालवेन्द्रनगरं-मालवेन्द्रस्य नगरम् (षष्ठी तत्पुरुष) । प्रविश्य प्र+विश्+क्त्वा→ल्यप् । तत्र-तद्+त्रल् । गूढ़तरम् गुह्+क्त=गूढ़+तरप्=गूढ़तर । उदन्त=वृत्तान्त; 'वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यात्' इत्यमरः । विदित्वा-विद्+क्त्वा । यहाँ भी अनुप्रास नामक अलङ्कार है ।

मानी मानसारः स्वसैनिकायुष्यान्तराये सम्पराये भवतः पराजयमनुभूय वैलक्ष्यलक्ष्यहृदयो वीतदयो महाकालनिवासिनं कालीविलासिनमनश्वरं महेश्वरं समाराध्य तपः प्रभावसन्तुष्टादस्मादेकवीरारातिघ्नीं भयदां गदां लब्ध्वाऽऽत्मानमप्रतिभटं मन्यमानो महाभिमानो भवन्तमभियोक्तुमुद्युङ्क्ते । ततः परं देवः प्रमाणम्' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—अभिमानी मानसार अपने सैनिकों के जीवन को विनष्ट करने वाले युद्ध में आपसे पराजय को प्राप्त कर लज्जा से खिन्न हृदय दयारहित होकर महाकाल निवासी पार्वतीपति अविनाशी भगवान् शङ्कर की आराधना करके (अपने) तप के प्रभाव से संतुष्ट उन शिव जी से एक वीर (प्रधान सेनापति) को मारने वाली भयंकर गदा को प्राप्त कर (उसके फल-स्वरूप) अपने को अद्वितीय योद्धा मानता हुआ अत्यन्त अभिमान के साथ आपके ऊपर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है । इसके आगे महाराज ही प्रमाण हैं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत-व्याख्या—मानी=अभिमानी, मानसार:=मालवनरेश:, स्वसैनिकायुष्यान्तराये=स्वस्य ये सैनिका: भटा: तेषाम् आयुष्यस्य जीवनस्य अन्तराये विघ्नस्वरूपे, सम्पराये=युद्धे, भवत:=श्रीमत:, पराजयं=पराभवम्, अनुभूय=प्राप्य, वैलक्ष्यलक्ष्यहृदय:=वैलक्ष्यस्य त्रपाया: लक्ष्यं लक्ष्यभूतं हृदयं चित्तं यस्य स तादृश:, वीतदय:=निर्दय:, महाकालनिवासिनं=महाकालवासिनम्, कालीविलासिनं=पार्वतीप्रियम्, अनश्वरं=नाशरहितम्, महेश्वरं=महादेवम्, समाराध्य=समाराधनं कृत्वा, तप:प्रभावसन्तुष्टात्=तप:कार्यप्रीतात्, अस्मात्=शिवात्, एकवीरारातिघ्नीं=एकवीरशत्रुविनाशिनीम्, भयदां=भयङ्कराम्, गदां=अस्त्रविशेषम्, लब्ध्वा=प्राप्य, आत्मानं=स्वम्, अप्रतिभटं=अद्वितीयभटम्, मन्यमान:=जानन्, महाभिमान:=अत्यन्ताभिमानी, भवन्तं=श्रीमन्तम्, अभियोक्तुम्=समाक्रमितुम्, उद्युङ्क्ते=उद्यतो भवति चेष्टां कुरुते वा। तत: परं=एतच्छ्रुत्वा, देव:=महाराज:, एव=हि, प्रमाणम्=प्रमाणत्वेन वर्तते।

टिप्पणी—मानी–मान+इनि। सम्पराय–संग्राम, 'सम्पराय: समीके स्यादापदुत्तरकालयो:' इति मेदिनी। पराजय–परा+जि+अच्। अनुभूय–अनु+भू+क्त्वा→ल्यप्। वैलक्ष्य–लज्जा, विलक्ष+ष्यञ्। स्वसैनिकायुष्यान्तराये–स्वस्य सैनिका: स्वसैनिका: तेषाम् आयुष्यस्य अन्तराय: तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)। वैलक्ष्यलक्ष्यहृदय:–वैलक्ष्यस्य लक्ष्यं हृदयं यस्य स: (बहुव्रीहि)। वीतदय:–वीता दया यस्मात् स: (बहुव्रीहि); 'कृपा दयानुकम्पा च' इत्यमर:। कालीविलासिनम्=काल्या: विलासिनम् (षष्ठी तत्पुरुष) 'उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी' इत्यमर:। महेश्वरम्–महांश्चासौ ईश्वर: तम् (कर्मधारय)। समाराध्य–सम्+आङ्+राध्+क्त्वा→ल्यप्। तप:प्रभावसन्तुष्टात्–तपस: प्रभावेण सन्तुष्टात् तृतीया तत्पपुरुष; प्रभाव–प्र+भू+घञ्। सन्तुष्ट–सम्+तुष्+क्त। एकवीरारातिघ्नीम्—एकवीरारातिं हन्तीति ताम्। भयदां–भय+दा+क+टाप्। लब्ध्वा–लभ्+क्त्वा। अप्रतिभटम्–नास्ति प्रतिभट: यस्य स: तम्। मन्यमान:–मन+शानच्। अभियोक्तुम्–अभि+युज्+तुमुन्। प्रमाणम्–प्र+मा+ल्युट्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहाँ यमक नामक अलङ्कार है ।

अमात्यकृतनिश्चयः

तदालोच्य निश्चिततत्कृत्यैरमात्यै राजा विज्ञापितोऽभूत्—'देव, निरु येन देवसहायेन योद्‌धुमरातिरायाति । तस्मादस्माकं युद्धं साम्प्रतमसाम्प्रत सहसा दुर्गसंश्रयः कार्यः ।

हिन्दी अनुवाद—गुप्तचर के उस कथन को विचार कर कर्त्तव्य निश्चय करने वाले मन्त्रियों ने राजा से निवेदन किया—स्वामिन् ! निरु (जिसका कोई प्रतिकार न किया जा सके) दैवी सहायता के साथ शत्रु करने के लिए आ रहा है । इसलिये इस समय हम लोगों का युद्ध करना नहीं है । (अतः) शीघ्र ही दुर्ग का आश्रय लेना चाहिए ।

संस्कृत व्याख्या—तत्=पूर्वोक्तम्, आलोच्य=सम्यक् विचार्य, निश्चि तत्कृत्यैः=निर्णीतशत्रुविषयकरणीयैः, अमात्यैः=मन्त्रिभिः, राजा=भूपं विज्ञापितः=आवेदितः, अभूत्=अभवत्, देव !=महाराज !, निरुपायेन उपायरहितेन, देवसहायेन=शिवसहयोगेन, योद्धुं=प्रहर्तुम्, अरातिः=श आयाति=आगच्छति, तस्मात्=तस्मात् कारणात्, अस्माकं=मगधदेश काणाम्, युद्धं=आयोधनम्, साम्प्रतं=इदानीम्, असाम्प्रतम्=अनुचि सहसा=झटिति, दुर्गसंश्रयः=दुर्गावलम्बनम्, कार्यः=कर्त्तव्यः ।

टिप्पणी—आलोच्य-आङ्=लोच्+क्त्वा→ल्यप् । निश्चिततत्कृत्यैः- कृत्यमिति तत्कृत्यम्, निश्चितं तत्कृत्यं यैः तैः (बहुव्रीहि) । विज्ञापितः-वि ज्ञा+णिच्+क्त । अभूत्-भू धातु लुङ् लकार, प्र० पु० ए० व० । निरु येन-निः नास्ति उपायः यस्य स तथोक्तेन । योद्धुम्-युध्+तुमुन्, अराति शत्रुः; न राति सुखमिति इस अर्थ में 'रा दाने' धातु से क्तिच् प्रत्यय होता "द्विड्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः । अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थि पन्थिनः ॥" इत्यमरः । आयाति-'आङ्+या' धातु लट् लकार प्र० पु० व० । युद्धम्-योधनमिति इस अर्थ में युध्+क्त । "युद्धमायोधनं जन्यं प्र प्रविदारणम् ।" इत्यमरः । असाम्प्रतम्-न साम्प्रतमिति असाम्प्रतम् । का कृ+ण्यत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजहंसस्य युद्धे प्रवृत्तिः

तैर्बहुधा विज्ञापितोऽप्यखर्वेण गर्वेण विराजमानो राजा तद्वाक्यमकृत्यमित्यनादृत्य प्रतियोद्धुमना बभूव। शितिकण्ठदत्तशक्तिसारो मानसारो योद्धुमनसामग्रेभूय सामग्रीसमेतोऽक्लेशं मगधदेशं प्रविवेश। तदा तदाकर्ण्य मन्त्रिणो भूमहेन्द्रं मगधेन्द्रं कथञ्चिदनुनीय रिपुभिरसाध्ये विन्ध्याटवीमध्येऽवरोधान्मूलबलरक्षितान्निवेशयामासुः। राजहंसस्तु प्रशस्तवीतदैन्यसैन्यसमेतस्तीव्रगत्या निर्गत्याधिकरुषं द्विषं रुरोध। परस्परबद्धवैरयोरेतयोः शूरयोस्तदा तदालोकनकुतूहलागतगगनचराश्चर्यकारणे रणे वर्तमाने जयाकाङ्क्षी मालवदेशरक्षी विविधायुधस्थैर्यचर्याञ्चितसमरतुलितामरेश्वरस्य मगधेश्वरस्य तस्योपरि पुरारातिदत्तां गदां प्राहिणोत्। निशितशरनिकरशकलीकृतापि सा पशुपतिशासनस्यावन्ध्यतया सूतं निहत्य रथस्थं राजानं मूर्च्छितमकार्षीत्।

हिन्दी-अनुवाद—उन मन्त्रियों के द्वारा वारम्वार समझाये जाने पर भी राजा अत्यधिक गर्व से युक्त होकर उनके वाक्य को 'यह नहीं करने योग्य (मानने योग्य) है, इस प्रकार न मानकर (अनादृत कर) युद्ध में सामना करने के लिए तैयार हो गया। भगवान् शङ्कर जी के द्वारा प्रदत्त शक्ति के बल पर मानसार ने युद्ध के इच्छुक अपने सैनिकों के आगे होकर समस्त युद्ध की सामग्री के साथ विना किसी वाधा (रुकावट) के मगधदेश में प्रवेश किया। उस समय उसको (मानसार के मगध में प्रवेश को) सुनकर मन्त्रियों ने पृथ्वी के इन्द्र मगधाधिपति को किसी प्रकार समझा-वुझाकर अन्तःपुर की स्त्रियों (रानियों) को मुख्य सेना की संरक्षकता में शत्रुओं के लिए अगम्य विन्ध्य नामक वनी में भिजवा दिया। राजहंस ने (अपनी) प्रशंसनीय और दीनता से रहित सेना के सहित तीव्र गति से बाहर निकलकर अत्यन्त क्रुद्धित शत्रु को घेर लिया। परस्पर शत्रुता रखने वाले इन दोनों वीरों के इस प्रकार के युद्ध में प्रवृत्त होने पर जो कि उसे देखने के कौतूहल से आये हुए आकाशचारी देवताओं को भी आश्चर्यकारक था, विजय की इच्छा करने वाले मालवदेश के रक्षक ने विविध प्रकार के शस्त्रों के स्थिरतापूर्वक प्रयोग से युक्त युद्ध में इन्द्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की बराबरी करने वाले मगध नरेश राजहंस के ऊपर शंकर के द्वारा प्र
गदा का प्रहार किया। यद्यपि राजहंस ने अपने तीखे बाणों के समूह के द्वा
उस गदा के टुकड़े-टुकड़े कर दिये फिर भी शिवजी के शासन (आज्ञा)
अमोघ होने के कारण (उसने) सारथी को मारकर रथ पर बैठे हुए राजा
मूर्च्छित कर दिया।

संस्कृत-व्याख्या—तैः=मन्त्रिभिः, बहुधा=अनेकप्रकारेण, विज्ञा
तोऽपि=निवेदितोऽपि, अखर्वेण=महता, गर्वेण=अभिमानेन, विराजमान
सुशोभमानः, राजा=नृपतिः, तद्वाक्यं=तेषां वचनम्, अकृत्यं=अकरणी
इति=एवम्, अनादृत्य=तिरस्कृत्य, प्रतियोद्धुमनाः=युद्धाभिलाषी, बभूव
अभूत्। शितिकण्ठदत्तशक्तिसारः=शिवप्रदत्तशस्त्रविशेषः, मानसारः=माल
धिपतिः, योद्धुमनसां=युद्धार्थिनाम्, अग्रीभूय=अग्रसरो भूत्वा, सामग्रीसमेत
युद्धसामग्रीयुक्तः, अक्लेशं=अनायासं सुखपूर्वकं वा यथा स्यात्तथा, मगधदे
मगधाख्यं देशम्, प्रविवेश=प्राविशत्। तदा=तस्मिन्काले, तत्=आग
वृत्तम्, आकर्ण्य=श्रुत्वा, मन्त्रिणः=अमात्याः, भूमहेन्द्रं=भूपतिम्, मगधेन्द्रं
मगधाधिपतिम्, कथञ्चित्=येन केन प्रकारेण, अनुनीय=मानयि
रिपुभिः=अरिभिः, असाध्ये=दुष्प्रवेश्ये, विन्ध्याटवीमध्ये=विन्ध्यवन
भागे, अवरोधान्=शुद्धान्तान्, मूलबलरक्षितान्=प्रधानसैन्यसंरक्षि
निवेशयामासुः=प्रेषयामासुः। राजहंसस्तु=मगधाधिपतिस्तु, प्रशस्तवीतदैन्यसै
समेतः=उत्कटशौर्ययुक्तबलसमेतः, तीव्रगत्या=महता वेगेन, निर्गत्य=निः
अधिकरुषं=अत्यन्तक्रुद्धम्, द्विषं=अरिम्, रुरोध=अवारयत्। परस्पर
वैरयोः=अन्योन्यावद्धविरोधयोः, एतयोः=राजहंसमानसारयोः, शूरयो
वीरयोः, तदा=तस्मिन् काले, तदालोकनकुतूहलागतगगनचराश्चर्यकारणे
तस्य सङ्ग्रामस्य आलोकने दर्शने यत् कुतूहलं कौतुकं तेन आगतानां सम
तानां गगनचराणां देवानाम् आश्चर्यकारणे विस्मयजनके, रणे=युद्धे, वर्तमाने
अवस्थिते, जयाकाङ्क्षी=विजयाभिलाषी, मालवदेशरक्षी=मालवदेशर
विविधायुधस्थैर्यचर्याञ्चितसमरतुलितामरेश्वरस्य=विविधायुधानाम् अनेकप्र
शस्त्राणाम स्थैर्यचर्यया स्थिरप्रहरणपरम्परया अञ्चितः पूजितः यः स

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संग्रामः तेन तुलितः समीकृतः अमरेश्वरः मघवा येन स तस्य तादृशस्य। मगधेश्वरस्य=मगधाधीश्वरस्य, तस्योपरि, पुरा=आदौ, पुरारातिदत्तां=शङ्करप्रदत्ताम्, गदां=आयुधविशेषम्, प्राहिणोत्=प्राहरत् । निशितशरनिकरशकलीकृता=निशितशरनिकरेण तीक्ष्णबाणसमूहेन, शकलीकृता खण्डिता, अपि=समुच्चये, सा=पूर्वोक्ता गदा, पशुपतिशासनस्य=महादेवाज्ञायाः, अवन्ध्यतया=अव्यर्थतया, सूतं=सारथिम्, निहत्य=हननं कृत्वा, रथस्थं=स्यन्दनस्थितम्, राजानं=भूपतिम्, मूर्च्छितं=संज्ञारहितम्, अकार्षीत्=चकार ।

टिप्पणी—वहुधा -वहु+धा । विराजमानः–वि+राज्+शानच् । वाक्यम्–वच्+ण्यत् (चस्य कः) । अकृत्यम्–न कृत्यमिति अकृत्यम्; कृत्य–कृ+क्यप्, तुक् का आगम । प्रतियोद्धुमनाः-प्रतियोद्धुं मनाः यस्य सः। बभूव–भू धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एक वचन । शितिकण्ठदत्तशक्तिसारः–शितिकण्ठेन दत्ता या शक्तिः सा एव सारः यस्य स तादृशः (बहुव्रीहि) । शितिकण्ठ–शिव; शितिः कालः कण्ठोऽस्य सः । "उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत्" इत्यमरः । अग्रीभूय–अग्र+च्वि+भू+क्त्वा→ल्यप् । प्रविवेश–'प्र+विश्' धातु लिट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन । मन्त्री–मन्त्र+णिनि; 'मन्त्री धीसचिवोऽमात्यः' इत्यमरः । मगधेन्द्रम्–मगधस्य इन्द्रः मगधेन्द्रस्तम् । अनुनीय–अनु+नी+क्त्वा→ल्यप् । विन्ध्याटवीमध्ये–विन्ध्यस्य अटवी विन्ध्याटवी तस्याः मध्ये; 'अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्' इत्यमरः । मूलबलरक्षितान्–मूलबलैः रक्षितान् (तृतीया तत्पुरुष समास) । प्रशस्तवीतदैन्यसैन्यसमेतः–प्रशस्तैः वीतदैन्यैः (वीतं दैन्यं येषां तैः) सैन्यैः समेतः । तीव्रगत्या–तीव्रया गत्या । गति–गम्+क्तिन् । अधिकरुषम्—अधिका रुट् यस्य स तम्; 'रुट् क्रुधौ स्त्रियाम्' इत्यमरः । रुरोध–'रुध्' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व० । परस्परबद्धवैरयोः–परस्परं बद्धं वैरं याभ्यां तयोः । 'वैरं विरोधो विद्वेषः' इत्यमरः । बद्ध–बन्ध्+क्त । तदा·········कारणे–तस्य आलोकने कुतूहलं तेन आगताः, ते च ते गगनचराः, तेषाम् आश्चर्यकारणं तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष) । आलोकन–आ+लोक्+ल्युट् । कुतूहल—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम्" इत्यमरः । आगत–आ+गम्+ गगनचर–देवता, गगन+चर्+ट । जयाकाङ्क्षी–जय+आ+काङ्क्ष्+णि मालवदेशरक्षी–मालवदेशस्य रक्षी (षष्ठी तत्पुरुष) । विविधा ·····तु मरेश्वरस्य–विविधानि च तानि आयुधानि विविधायुधानि, तेषां स्थैर्यं चर्या, तया अञ्चितम्, तच्च तत् समरम्, तस्मिन् तुलितः अमरेश्वरः येन (बहुव्रीहि) । स्थैर्यं—स्थिर+ष्यञ् । चर्या–चर्+यत्+टाप् । अञ्चि अञ्च्+क्त । तुलित–तुल्+क्त । पुरारातिदत्ताम्–पुरारातिना दत्ता दत्ताम्–दा+क्त+टाप् । निशितशरनिकरशकलीकृता–निशितशर शकलीकृता (तृतीया तत्पुरुष) । शकलीकृता–शकल+च्वि+कृ+क्त+ पशुपतिशासनस्य–पशुपतेः शासनं पशुपतिशासनं तस्य । पशुपति पशूनां जीवानां पतिः=पशुपतिः "शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महे इत्यमरः । शासनम्–शास्+ल्युट् । निहत्य–नि+हन्+क्त्वा+ अकार्षीत्–'कृ' धातु लुङ् लकार प्र० पु० ए० व० । यहाँ यमक तथा प्रास का प्रयोग हुआ है । कवि का यमकालङ्कार प्रेम स्पष्ट परिलक्षित रहा है ।

राजहंसस्य पराजयो वनवासश्च

ततो वीतप्रग्रहा अक्षतविग्रहा वाहा रथमादाय दैवगत्यान्तःपुरशरण्यं रण्यं प्राविशन् । मालवनाथो जयलक्ष्मीसनाथो मगधराज्यं प्राज्यं सं पुष्पपुरमध्यतिष्ठत् ।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् लगाम रहित, अक्षत शरीर वाले घो को लेकर दैवयोग से उसी महावन में प्रविष्ट हुये, जहाँ रनिवास टि विजयलक्ष्मी से सनाथित मालवाधीश (मानसार) सुसम्पन्न मगधरा जीतकर पुष्पपुर में अधिष्ठित हुआ अर्थात् राजा बनकर शासनकार्य लगा ।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तदनन्तरम्, वीतप्रग्रहाः=अपगत अक्षतविग्रहाः=अक्षतः स्वस्थः विग्रहः शरीरं येषां ते, 'शरीरं वर्ष्म

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्यमरः, वाहाः=अश्वाः, रथं=स्यन्दनम्, आदाय=आनीय, दैवगत्या= दैवयोगेन, अन्तःपुरशरण्यं=अवरोधरक्षणस्थानम्, महारण्यं=महावनम्, प्राविशन्=प्रविष्टाः । मालवनाथः=मालवेश्वरः, जयलक्ष्मीसनाथः=जय-लक्ष्म्या विजयप्रिया सनाथः समुपेतः, मगधराज्यं=एतदाख्यं राज्यम्, प्राज्यं= प्रचुरधनधान्ययुक्तम्, समाक्रम्य=सम्यक् क्रान्त्वा, पुष्पपुरं=पाटलिपुत्रम्, अध्यतिष्ठत्=न्यवसत् ।

टिप्पणी--वीतप्रग्रहाः-वीताः प्रग्रहाः येषां ते (बहुव्रीहि) । "तुलासूत्रेऽश्वा-दिरश्मौ प्रग्राहः प्रगहोऽपि च" इत्यमरः, प्रग्रहस्तु तुलासूत्रे वन्द्यां नियमने भुजे । हयादिरश्मौ रश्मौ च सुवर्णहलिपादपे ॥" इति विश्वः । अक्षतविग्रहाः-न क्षतः अक्षतः अक्षतः विग्रहः येषां ते (बहुव्रीहि); 'शरीरं वर्ष्म विग्रहः' इत्यमरः, वाहाः-घोड़े, "वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः' इत्यमरः, आदाय-आ+दा+क्त्वा→ल्यप । गतिः-गम्+क्तिन् । महारण्यं-महच्च तद् अरण्यमिति महारण्यम्; 'अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्' इत्यमरः, प्राविशन्-'प्र+विश्' लङ् लकार प्र० पु० व० व० । जयलक्ष्मीसनाथः-जय-लक्ष्म्या सनाथः (तृतीया तत्पुरुष); जय-जि+अच् । प्राज्यं-प्रा+अज्+ ण्यत् । 'प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यम्' इत्यमरः । समाक्रम्य-सम्+आङ्+क्रम्+ क्त्वा→ल्यप् । पुष्पपुरमध्यतिष्ठत्-यहाँ 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' इस सूत्र से कर्मसंज्ञा होती है । यहाँ भी यमकालङ्कार है ।

तत्र हेतिततिहतिश्रान्ता अमात्या दैवगत्याऽनुत्क्रान्तजीविता निशान्त-वातलब्धसंज्ञाः कथञ्चिदाश्वास्य राजानं समन्तादन्वीक्ष्यानवलोकितवन्तो दैन्यवन्तो देवीमवापुः ।

हिन्दी-अनुवाद--वहाँ (उस युद्ध में) शस्त्रसमूह के प्रहार से मूच्छित परन्तु दैवयोग से जीवित रहने वाले मन्त्री लोग प्रातःकालीन वायु से चेतनता को प्राप्तकर जैसे-तैसे आश्वस्त होकर राजा को चारों ओर खोज करने पर भी न प्राप्तकर खिन्न होते हुए रानी (वसुमती) के पास पहुँचे ।

संस्कृत-व्याख्या--तत्र=तस्मिन् आयोधने, हेतिततिहतिश्रान्ताः=शस्त्र-सङ्घातप्रहारक्लान्ताः, अमात्याः=मन्त्रिणः, दैवगत्या=दैवयोगेन, अनुत्क्रान्त-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीविताः=अत्यक्तप्राणाः, निशान्तवातलब्धसंज्ञाः प्रातःकालिकपवनप्राप्तचैत॰ कथञ्चित्=येन केन प्रकारेण, आश्वास्य=आश्वस्ताः भूत्वा, राजा॰ भूपतिम्, समन्तात्=सर्वासु आशासु, अन्वीक्ष्य=विलोक्य, अनवलोकि॰ वन्तः=अदृष्टवन्तः, दैन्यवन्तः=अतिदुःखिताः, देवीं=वसुमतीम्, अवापुः प्रापुः ।

टिप्पणी---हेतिततिहतिश्रान्ताः–हेतीनां ततयः, ताभिः हतिः तया श्रा॰ (तृतीया तत्पुरुष) । हेति–हथियार, हन्ति हिनोति वा, हन्यतेऽनया वा ॰ हेतिः । 'रवेर्रचिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः" इत्यमरः "हेतिः स्यादायुधज्वाला सूर्यतेजःसु योषिति" इति मेदिनी तति–समूह; तन्+क्तिन् । हति–हन्+क्तिन् । श्रान्ताः–श्रम्+क्त अमात्याः–अमा सह भवाः अमात्या; यहाँ 'अमा' शब्द से 'अमेहक्वतसि॰ एव' के नियम से 'अव्ययात्त्यप्' सूत्र से 'त्यप्' प्रत्यय होता है। अमा॰ राज्याङ्ग का भेद कहलाता है---'स्वाम्यमात्यसुहृत्कोषराष्ट्रदुर्गबलानि ॰ राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च' ॥ इत्यमरः । अनुत्क्रान्तजीवित॰ अनुत्क्रान्तं जीवितं येषां ते (बहुव्रीहि) । निशान्तवातलब्धसंज्ञाः–निशा॰ अन्तः, तस्य वातः तेन लब्धा संज्ञा यैस्ते (बहुव्रीहि) । वात–पवन, वाति ॰ वा+तन् । 'नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः' इत्यमरः । लब्ध–लभ्+क्त अन्वीक्ष्य–अनु+ईक्ष्+क्त्वा→ल्यप् । अनवलोकितवन्तः–न अवलोकितव॰ अनवलोकितवन्तः । अव+लोक्+क्तवतु (तवत्) । दैन्यवन्तः–दैन्य+मतुप् देवी–महारानी, 'देवी कृताभिषेकायां तेजनीस्पृक्कयोरपि' इति हेमचन्द्रः । अ॰ प्रास अलङ्कार है ।

वसुमती तु तेभ्यो निखिलसैन्यक्षतिं राज्ञोऽदृश्यत्वं चाकर्ण्योद्विग्ना शो॰ सागरमग्ना रमणानुगमने मतिं व्यधत्त ।

हिन्दी-अनुवाद---देवी वसुमती उन (मन्त्रियों) से समस्त सेना का विन॰ और राजा के अदृश्य होने के समाचार को सुनकर खिन्न होती हुयी शो॰ सागर में निमग्न हो गयी और (उसने) अपने पति का अनुगमन करने (मरने) का निश्चय कर लिया ।

संस्कृत-व्याख्या---वसुमती=राजहंसमहिषी देवी वसुमती, तु तेभ्यः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्त्रिभ्यः, निखिलसैन्यक्षतिं=समस्तसैन्यविनाशम्, राज्ञः=राजहंसस्य, अदृश्यत्वं=अदृश्यताम्, च आकर्ण्य=श्रुत्वा, उद्विग्ना=व्याकुला सती, शोकसागरमग्ना=संतापसमुद्रनिमग्ना, रमणानुगमने=रमणस्य स्वामिनः अनुगमने अनुसरणे, मतिं=बुद्धिम्, अधत्त=अकरोत् ।

टिप्पणी—निखिलसैन्यक्षतिं=निखिलानि यानि सैन्यानि, तेषां क्षतिम् । क्षति–क्षण्+क्तिन् । अदृश्यत्वं–अदृश्य+त्वल् । शोकसागरमग्ना–शोकस्य सागरः, तस्मिन् मग्ना । 'उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान् सागरोऽर्णवः' इत्यमरः । रमणानुगमने–रमणस्य अनुगमने (षष्ठी तत्पुरुष) । रमण–रम्+णिच्+ल्युट् । अनुगमन–अनु+गम्+ल्युट् । मति–बुद्धि; मन्+क्तिन् । 'बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः' इत्यमरः । व्यधत्त–'वि+धा' धातु लुङ् लकार आत्मनेपद प्र० पु० ए० व० ।

१० 'कल्याणि, भूरमणमरणमनिश्चितम् । किञ्च दैवज्ञकथितो मथितोद्धतारातिः सार्वभौमोऽभिरामो भविता सुकुमारः कुमारस्त्वदुदरे वसति । तस्मादद्य तव मरणमनुचितम्' इति भूषितभाषितैरमात्यपुरोहितैरनुनीयमानया तया क्षणं क्षणहीनया तूष्णीमस्थायि ।

हिन्दी-अनुवाद—'हे कल्याणि ! राजा की मृत्यु अभी निश्चित नहीं है । एतदतिरिक्त ज्योतिषियों के द्वारा बतलाया गया, उद्दण्डशत्रुओं का विनाश करने वाला सार्वभौम (चक्रवर्ती), सुन्दर, भावी (भविष्य में होने वाला), सुकुमार राजकुमार तुम्हारे उदर में निवास कर रहा है । इसलिये इस समय तुम्हारा मरना उचित नहीं है ।' इस प्रकार सुन्दर वचनों के द्वारा मन्त्री तथा पुरोहितों से समझायी गयी रानी क्षण भर के लिए उदास होकर चुपचाप बैठ गयी ।

संस्कृत-व्याख्या—कल्याणि=भद्रे, भूरमणमरणम्=भूरमणस्य पृथिवीवल्लभस्य मरणं मृत्युः, अनिश्चितम्=अनिर्णीतम्, किञ्च=अन्यदपि, दैवज्ञकथितः=ज्योतिषाचार्योक्तः, मथितोद्धतारातिः=मथितः उन्मूलितः उद्धतः प्रचण्डः अरातिः शत्रुः येन स तादृशः, सार्वभौमः=चक्रवर्ती, अभिरामः=मनोहरः, भविता=भावी, सुकुमारः=सुकोमलः, कुमारः=राजकुमारः,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्वदुदरे=तव गर्भे, वसति=निवसति । तस्मात्=तस्मात् कारणात्, अद्यः इदानीम्, तव=भवत्याः, मरणम्=मृत्युः, अनुचितं=नौचित्यं वहति, इति एवम्, भूषितभाषितैः=मधुरभाषणैः, अमात्यपुरोहितैः=मन्त्रिपुरोहि अनुनीयमानया=विहितानुनयया, तया=देव्या, क्षणं=क्षणमात्रम्, क्ष हीनया=उत्सवरहितया, तूष्णीं=मौनम्, अस्थायि=अवस्थितम् ।

टिप्पणी--भूरमणमरणम्–भुवः रमणः=भूरमणः तस्य मरणम् (ष तत्पुरुष) । रमणः–रम्+ल्यु । मरणम्–मृ+ल्युट् । दैवकथितः–दैवेन कथि (तृतीया तत्पुरुष); "दैवं दिष्टं भागधेयम्' इत्यमरः । मथितोद्धतारा मथिताः उद्धताः अरातयः येन सः (बहुव्रीहि) । मथितः–मथ+क्त । उद्ध उत्+हन्+क्त । सार्वभौमः–सर्वभूमि+अण् । सर्वभूमेः ईश्वरः=सार्वभौ 'चक्रवर्ती सार्वभौमः' इत्यमरः । अभिरामः–अभि+रम्+घञ् । वसति 'वस्' धातु लट् लकार प्र० पु० ए० व० । अनुचितम्–न उचितमिति अ चितम् । भूषितभाषितैः–भूषितं भाषितं येषां तैः तादृशैः । भूषित–भूष क्त । भाषित–भाष्+क्त । अनुनीयमानया–अनु+नी+शानच्+टाप् । क्ष हीनया–क्षणेन हीना=क्षणहीना तया । क्षण–उत्सव; 'क्षण उद्धव उत्स इत्यमरः । यमक तथा अनुप्रास अलङ्कार ।

अथार्धरात्रे निद्रानिलीननेत्रे परिजने विजने शोकपारावारमपारमुत्त शक्नुवती सेनानिवेशदेशं निःशब्दलेशं शनैरतिक्रम्य यस्मिन् रथस्य संसक्त तदानयनपलायनश्रान्ता गन्तुमक्षमाः क्षमापतिरथ्याः पथ्याकुलाः पूर्वमति स्तस्य निकटवटतरोः शाखायां मृतिरेखायामिव क्वचिदुत्तरीयार्धेन ब मृतिसाधनं विरच्य मर्तुकामाभिरामा वाङ्माधुरीविरसीकृतकलकण्ठ साश्रुकण्ठा व्यलपत् । 'लावण्योपमितपुष्पसायक, भूनायक, भवानेव भावि जन्मनि वल्लभो भवतु' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—पश्चात् आधी रात के समय नौकरों के सो जाने एकान्त में अपार शोकसागर को पार करने में असमर्थ रानी (वसुमती) के पड़ाव स्थल (शिविर) को लेशमात्र भी शब्द किये बिना धीरे से पार वहाँ पहुँची जहाँ रथ के उलझ जाने के कारण रथ को लाते हुए दौड़

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिश्रान्त, चलने में असमर्थ राजा के घोड़े. मार्ग में व्याकुल होकर पहले से ही ठहरे हुए थे। उसी के समीप वट वृक्ष की मृत्यु के चिह्न के समान शाखा में अपने दुपट्टे के आधे भाग में मृत्यु के साधनभूत वन्धन अर्थात् फाँसी बाँध-कर मरने की इच्छा से सुन्दर तथा अपनी वाणी की मिठास से कोकिल के कण्ठ को भी तिरस्कृत करने वाली आँसुओं से गद्गद् कण्ठ होकर विलाप करने लगी—'सुन्दरता में कामदेव के सदृश, हे भूनायक ! आप ही अगले जन्म में भी मेरे पति होवें।

संस्कृत-व्याख्या—अथ=अनन्तरम्, 'मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथोऽथ' इत्यमरः, अर्धरात्रे=निशीथे, निद्रानिलीननेत्रे=स्वापालीढलोचने, परिजने=भृत्यवर्गे, विजने=जनशून्ये, शोकपारावारं=शोकसागरम्, अपारं=दुस्तरम्, उत्तर्तुं=उल्लङ्घयितुम्, अशक्नुवती=असमर्था सती, सेनानिवेशदेशं=सैन्य-शिविरप्रदेशम्, निःशब्दलेशं=ध्वनिलवशून्यम्, शनैः=मन्दम्, अतिक्रम्य=निर्गत्य, यस्मिन्=वटपादपे, रथस्य=स्यन्दनस्य, संसक्ततया=संलग्नतया, तदानयनपलायनश्रान्ताः=तस्य राज्ञः राजहंसस्य आनयने समानयने पलायने पलायनकर्मणि च श्रान्ताः खिन्नाः, गन्तुं=यातुम्, अक्षमाः=असमर्थाः, क्षमा-पतिरथ्याः=भूपतिरथवाहकाः वाहाः, पथ्याकुलाः=पथि मार्गे आकुलाः व्याकुलाः, पूर्वम्=आदौ, अतिष्ठन्=स्थिताः आसन्, तस्य=पूर्वोक्तस्य, निकट-वटतरोः=समीपस्थितवटपादपस्य, शाखायां=शिलायाम्, मृतिरेखायां=मरणचिह्नस्वरूपायाम्, इव=यथा, क्वचित्=कुत्रचित्, उत्तरीयार्धेन=अञ्च-लेन, वन्धनं=मरणबन्धनम्, मृतिसाधनं=मृत्युसाधनम्, विरच्य=निर्माणं कृत्वा, मर्तुकामा=मरणाकाङ्क्षा, अभिरामा=परमसुन्दरी, वाङ्माधुरीविरसी-कृतकलकण्ठा=वाचां वाणीनां माधुर्या रसेन विरसीकृतः तिरस्कृतकलकण्ठस्य कोकिलस्य कण्ठः ध्वनिः यस्याः सा तादृशी, साश्रुकण्ठा=अश्रुपूर्णकण्ठा, व्यलपत्=विललाप । लावण्योपमितपुष्पसायक=सौन्दर्योपमितकामदेव, भूनायक=नृप, भवानेव=श्रीमानेव, भाविनि=भविष्यति, अपि=समुच्चये, जन्मनि=जन्मलाभे, वल्लभः=पतिः, भवतु=अस्तु, इति=एवम-कथयत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी--अथ-इसके बाद, 'मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्येष्वथोऽ इत्यमरः, अर्धरात्र-'अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ समौ' इत्यमरः, निद्रानिलीननेत्रे-निद्रया निलीने नेत्रे यस्य तस्मिन् (बहुव्रीहि)। 'स्यान्निद्रा शयः स्वापः' इत्यमरः। निलीन-नि+ली+क्त। 'परिजने विजने'-यहाँ यमक अलङ्कार है। शोकपारावारम्-शोकस्य पारावारः तम् (षष्ठी तत्पुरुष)। 'समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः' इत्यमरः। उत्तर्तुं-उत्+तॄ+तुमुन्। अशक्नुवती-नञ्+शक्+श्नु+शतृ+ङीप्। सेनानिवेशदेशं-सेनायाः निवेशः तस्य देशस्तम् (तत्पुरुष)। निःशब्दलेशं-निर्गतः शब्दानां लेशः यस्मिन् तद् यथा स्यात्तथा। अतिक्रम्य-अति+क्रम्+क्त्वा--ल्यप्। संसक्ततया-सम्+सञ्ज्+क्त+तल्+टाप्। तदानयनपलायनश्रान्ताः तस्य आनयनम्, तस्य पलायनम्, तेन श्रान्ताः (तत्पुरुष)। आनयनम्-आ+नी+ल्युट्। पलायनम्-परा+अय्+ल्युट्। गन्तुम्-गम्+तुमुन्। क्षमापतिरथ्याः-क्षमापते रथ्याः (तत्पुरुष)। रथ्याः-रथ+यत्। मृति-मृ+क्तिन्। बन्धनम्-बन्ध्+ल्युट्। विरच्य-वि+रच्+क्त्वा→ल्यप्। मर्त्तुकामा-मृ+तुमुन्; मर्त्तुं कामो यस्याः सा। 'कामोऽभिलाषः तर्षश्च' इत्यमरः। वाङ्माधुरी……… कण्ठा-वाचः माधुरी=वाङ्माधुरी, तया विरसीकृतः, कलकण्ठस्य कण्ठः यया सा तादृशी (बहुव्रीहि)। विरसीकृत-विरस+च्वि+कृ+क्त। व्यलपत्-'वि+लप्' धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व०। लावण्योपमितपुष्पसायक-लावण्येन उपमितः पुष्पसायकः येन सः तत्सम्बुद्धौ (बहुव्रीहि)। लावण्य-लवण+ष्यञ्। उपमित-उप+मा+क्त। भूनायक-भुवः नायकः भूनायक तत्सम्बुद्धौ। "भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा" इत्यमरः। नायक-नी+ण्वुल्। भाविनि-भू+णिनि। भवतु-'भू' धातु लोट् लकार प्र० पु० ए० व०। अनुप्रास तथा यमक अलङ्कारों का प्रयोग हुआ है।

तदाकर्ण्य नीहारकरकिरणनिकरसंपर्कलब्धावबोधो मागधोऽगाधरुधिरविक्षरणनष्टचेष्टो देवीवाक्यमेव निश्चिन्वानस्तन्वानः प्रियवचनानि शनैस्तामाह्वयत्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी-अनुवाद—अत्यधिक रक्त के निकल जाने के कारण बेहोश परन्तु चन्द्रमा की शीतल किरणों के स्पर्श से चेतनता (होश) को प्राप्त हुए राजा राजहंस ने रानी के विलाप को सुनकर, यह रानी का ही स्वर है ऐसा निश्चय करते हुए मीठी आवाज से रानी को पुकारा।

संस्कृत-व्याख्या—तदाकर्ण्य=विलापं श्रुत्वा, नीहारकरकिरणनिकरसंपर्कलब्धावबोधः=नीहारकरस्य चन्द्रस्य किरणानां रश्मीनां यः निकरः समूहः तस्य यः सम्पर्कः सम्बन्धः तेन लब्धः प्राप्तः अवबोधः चैतन्यं येन स तादृशः, मागधः=मगधाधिपतिः, अगाधरुधिरविक्षरणनष्टचेष्टः=अत्यधिकरक्तनिःसरणापगतचेष्टः, देवीवाक्यमेव=वसुमतीवचनमेव, निश्चिन्वानः=निश्चयं कुर्वन्, प्रियवचनानि=मधुरवचनानि, तन्वानः=विस्तारयन्, शनैः=मन्दम्, ताम्=देवीम्, आह्वयत्=आकारयत्।

टिप्पणी—नीहार..............बोधः—नीहारकरस्य किरणानां यः निकरः तस्य यः सम्पर्कः तेन लब्धावबोधः येन स तादृशः (बहुव्रीहि)। "किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिघृष्णयः। भानः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम्" इत्यमरः। लब्ध—लभ्+क्त। अवबोध—अव+बुध्+घञ्। मागधः—मगध+अण्। अगाध.........चेष्टः—अगाधरुधिरस्य यत् विक्षरणं तेन नष्टा चेष्टा यस्य स तादृशः (बहुव्रीहि)। विक्षरण—वि+क्षर्+ल्युट्। नष्टा—नश्+क्त+टाप्। चेष्टा—चेष्ट्+अङ्+टाप्। देवीवाक्यम्—देव्याः वाक्यम् (तत्पुरुष)। निश्चिन्वानः—निस्+चि+शानच्। तन्वानः—तन्+शानच्। यहाँ अनुप्रास की शोभा दर्शनीय है।

२। सा ससंभ्रमागत्यामन्दहृदयानन्दसंफुल्लवदनारविन्दा तनुपोषिताभ्यामिवानिमिषिताभ्यां लोचनाभ्यां पिबन्ती विकस्वरेण स्वरेण पुरोहितामात्यजनमुच्चैराहूय तेभ्यस्तमदर्शयत्।

हिन्दी-अनुवाद—उस रानी वसुमती ने (राजा के शब्द को सुनने के पश्चात्) हड़बड़ाकर तत्काल ही राजा के पास आकर अत्यधिक हृदयानन्द से विकसित मुखकमल हो उस राजा को निर्निमेष उत्कण्ठित नेत्रों से देखा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और स्पष्ट एवं उच्च स्वर से पुरोहित तथा मन्त्रियों को बुलाकर उन्हे राजा का दर्शन कराया।

संस्कृत-व्याख्या—सा=देवी वसुमती, ससम्भ्रमं=सत्वरम्, आगत्य=आगमनं कृत्वा, अमन्दहृदयानन्दसंफुल्लवदनारविन्दा=अमन्दहृदयानन्देन अत्यधिकमानसानन्देन सम्फुल्लं विकसितं वदनारविन्दं मुखकमलं यस्याः सा तादृशी, तम्=नृपतिं राजहंसम्, उपोषिताभ्याम्=उत्कण्ठिताभ्याम्, इव अनिमिषिताभ्याम्=निमेषरहिताभ्याम्, लोचनाभ्यां=नयनाभ्याम्, पिबन्ती=सस्पृहमवलोकयन्ती, विकस्वरेण=विकासशीलेन, स्वरेण=कण्ठेन, पुरोहितामात्यजनं=पुरोहितमन्त्रिवर्गम्, उच्चैः=तारस्वरेण, आहूय=आकार्य, तेभ्यः=मन्त्रिपुरोहितेभ्यः, तम्=भूपतिम्, अदर्शयत्=दर्शनमकारयत्।

टिप्पणी—आगत्य-आ+गम्+क्त्वा→ल्यप्। अमन्द······वदनारविन्दा-हृदयस्य आनन्दः हृदयानन्दः, अमन्दश्चासौ हृदयानन्दः अमन्दहृदयानन्दः तेन सम्फुल्लं मुखकमलं यस्याः सा तादृशी (बहुव्रीहि)। "चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः" इत्यमरः। आनन्दः-आ+नन्द्+घञ्। प्रफुल्ल-प्र+फुल्+क्त। 'आननं लपनं मुखम्' इत्यमरः। "वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम्। सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम्॥" इत्यमरः। उपोषिताभ्याम्-उप+वस्+क्त+टाप् पिबन्ती-पिब्+शतृ+ङीप्। विकस्वर-विकाशशील; 'विकासी तु विकस्वरः' इत्यमरः। आहूय-आ+ह्वे+क्त्वा-ल्यप्। अदर्शयत्-'दृश्+णिच्' लङ् लकार प्र० पु० ए० व०। 'उपोषिताभ्यामिव' में उत्प्रेक्षा, 'विकस्वरेण स्वरेण' में यमक तथा अनुप्रास अलङ्कार है।

राजा निटिलतटचुम्बितनिजचरणाम्बुजैः प्रशंसितदैवमाहात्म्यैरमात्यैरभाणि-'देव, रथ्यचयः सारथ्यदगमे रथं रभसादरण्यमनयत्' इति।

हिन्दी-अनुवाद—मन्त्रियों ने राजा के चरणारविन्दों का अपने मस्तक से स्पर्श कर और दैव के माहात्म्य की प्रशंसा करते हुए निवेदन किया—हे राजन्! सारथी के मर जाने पर घोड़े रथ को बड़ी तेजी से वन में ले आये ऐसा प्रतीत हो रहा है।

संस्कृत-व्याख्या—राजा=नृपतिः राजहंसः, निटिलतटचुम्बितनिजचरणा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म्बुजैः=निटिलतटेन ललाटस्थलेन चुम्बितं संस्पृष्टं निजचरणाम्बुजम् स्वचरण-कमलम् यैः तैः, प्रशंसितदैवमाहात्म्यैः=प्रशंसितभाग्यमहत्त्वनिचयैः, अमात्यैः=मन्त्रिभिः, अभाणि=अवादि, देव=राजन्, रथ्यचयः=अश्वसमूहः, सारथ्यपगमे=सूतविनाशे, रथं=स्यन्दनम्, रभसात्=वेगात्, अरण्यं=विपिनम्, अनयत्=नीतवान् ।

टिप्पणी—निटिलतटचुम्बितनिजचरणाम्बुजैः–निटिलतटेन चुम्बितं निज-चरणाम्बुजं यैस्तैः तादृशैः (बहुव्रीहि) । चुम्बित–चुवि (चुम्ब)+क्त । प्रशंसितदैवमाहात्म्यैः–प्रशंसितं दैवमाहात्म्यं यैस्तैः तादृशैः (बहुव्रीहि) । "दैवं दिष्ट भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः" इत्यमरः । रथ्यचयः–रथ्यानां चयः (तत्पुरुष) । रथ्य–रथ+यत् । चय–चि+अच् । अरण्य–वन; 'अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्' इत्यमरः । अनयत्–'नी' धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व० । अनुप्रास तथा यमक अलङ्कार ।

'तत्र निहतसैनिकग्रामे मालवपतिनाऽऽराधितपुरारातिना प्रहितया गदया दयाहीनेन ताडितो मूर्च्छामागत्यात्र वने निशान्तपवनेन बोधितोऽभवम्' इति महीपतिरकथयत् । ततो विरचितमहेन मन्त्रिनिवहेन विरचितदैवानुकूल्येन कालेन शिविरमानीयापनीताशेषशल्यो विकसितनिजाननारविन्दो राजा सहसा विरोपितव्रणोऽकारि ।

हिन्दी-अनुवाद—राजा ने कहा—वहाँ युद्ध में सैनिकों के मारे जाने पर शङ्कर जी की आराधना करने वाले मालवाधिपति के द्वारा निर्दयता के साथ चलायी गयी गदा से आहत हो मूर्च्छित होकर यहाँ वन में प्रातःकालीन पवन से चेतना युक्त हो गया हूँ । तत्पश्चात् उत्सव मनाते हुए मन्त्रियों ने अनु-ष्ठानों से अनुकूल किये गये शुभ मुहूर्त्त में राजा को शिविर में लाकर उनके शरीर से बाण की नोकों को निकाला और चिकित्सा के द्वारा घावों को कुछ ही दिनों में ठीक कर दिया परिणामतः राजा का मुख-कमल खिल उठा ।

संस्कृत-व्याख्या—तत्र=युद्धे, निहतसैनिकग्रामे=विनाशितभटसमूहे, आराधितपुरारातिना=पूजितशिवेन, दयाहीनेन=कृपाशून्येन, मालवपतिना=मालवेश्वरेण, प्रहितया=प्रक्षिप्तया, गदया=एतदाख्यायुधेन, ताडितः=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आहतः, मूर्च्छां=मोहम्, आगत्य=प्राप्य, अत्र=अस्मिन्, वने=विपि निशान्तपवनेन=प्रातःकालिकवायुना, बोधितः=जागरितः, अभवम्= अभूवम्, इति=एवम्, महीपतिः=नृपतिः, अकथयत्=अभणत् । ततः= तदनन्तरम्, विरचितमहेन=विरचितः कृतः महः क्षणः तेन तथाभूतेन मंन्त्रिनिवहेन=अमात्यसमूहेन, विरचितदैवानुकूल्येन=सम्पादितभाग्य साहाय्येन, कालेन=समयेन, शिविरं=सेना-निवासदेशम्, आनीय=आनय कृत्वा, अपनीताशेषशल्यः-अपनीतं दूरीकृतम् अशेषशल्यं समग्रशङ्कुः यस्य तादृशः, विकसितनिजाननारविन्दः=विकसितं प्रफुल्लं निजाननारविंदं स्वमुख कमलं यस्य स तादृशः, राजा=भूपतिः, सहसा=झटिति, विरोपितव्रणः= विरोपितः संशोषितः व्रणः क्षतस्थानं यस्य स तादृशः, आकारि=कृतः ।

टिप्पणी--निहतसैनिकग्रामे-निहतः सैनिकग्रामः यस्मिन् तस्मिन् (बहु व्रीहि) । निहतः-नि+हन्+क्त । सैनिक-योद्धा; 'भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः' इत्यमरः । आराधितपुरारातिना-आराधितः पुरारातिः येन तेन तथाभूतेन (बहुव्रीहि) आराधित-आ+राध्+क्त । पुरारातिः- शिव; पुरस्य अरातिः । दयाहीनेन-दयया हीनेन (तत्पुरुष) । 'कृपा दयानु कम्पा च' इत्यमरः । मूर्छा-मोह 'मूर्छा तु कश्मलं मोहः,' इत्यमरः । आगत्य- आ+गम्+क्त्वा→ल्यप् । निशान्तपवेन-निशान्तस्य पवनेन; 'नभस्वद्वात पवनपवमानप्रभञ्जनाः' इत्यमरः । अकथयत्-'कथ्' धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व० । विरचितमहेन-विरचितः महः येन तेन तथाभूतेन (बहुव्रीहि) मह-उत्सव; 'मह उद्धव उत्सवः' इत्यमरः । विरचितदैवानुकूल्येन-विरचि दैवानुकूल्यं येन तेन तादृशेन । विरचित-वि+रच्+क्त । आनीय-आ+ नी+क्त्वा→ल्यप् । अपनीताशेषशल्यः-अपनीतम् अशेषं शल्यं यस्य सः; ' पुंसि शल्यं शङ्कुर्ना' इत्यमरः । विकसितनिजाननारविन्दः-विकसितं निजा ननारविन्दं यस्य सः । 'वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम्' इत्यमरः विरोपितव्रणः-विरोपितः व्रणः यस्य सः (बहुव्रीहि) । यमक तथा अनुप्रास अलङ्कार ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विरोधिदैवधिक्कृतपुरुषकारो दैन्यव्याप्ताकारो मगधाधिपतिरधिकाधिरमात्यसम्मत्या मृदुभाषितया तया वसुमत्या मत्या कलितया च समबोधि ।

हिन्दी-अनुवाद—प्रतिकूल भाग्य के कारण जिसका पुरुषार्थ तिरस्कृत हो गया है, जिसका आकार दीनता से व्याप्त हो गया है, और अधिक मानसिक व्यथा से युक्त ऐसे मगधाधिपति राजहंस को बुद्धिमती रानी वसुमती मन्त्रियों की सम्मति से कोमल वाणी के द्वारा समझाने लगी ।

संस्कृत-व्याख्या—विरोधिदैवधिक्कृतपुरुषकार:=विरोधिदैवेन प्रतिकूलविधिना धिक्कृत: तिरस्कृत: पुरुषकार: पराक्रम: यस्य स: । "दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधि:" इत्यमर: । दैन्यव्याप्ताकार:=दैन्येन पराजयदु:खेन व्याप्त: आक्रान्त: आकार: आकृति: यस्य स तादृश:, मगधाधिपति:=मगधाधीश:, अधिकाधि:=अधिक: आधि: व्यथा यस्य स:, अमात्यसम्मत्या=मन्त्रिविचारेण, मृदुभाषितया=कोमलभाषितया, मत्या=बुद्धया, कलितया=प्रेरितया, तया वसुमत्या=तया देव्या, समबोधि=विज्ञापित: ।

टिप्पणी—विरोधिदैवधिक्कृतपुरुषकार:–विरोधिदैवेन धिक्कृत: पुरुषकार: यस्य स: । 'दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधि:' इत्यमर: । धिक्कृत:–धिक् + कृ + क्त । दैन्यव्याप्ताकार:-दैन्येन व्याप्त: आकार: यस्य स तादृश: । अधिकाधि:–अधिक: आधि: यस्य: स:; 'पुंस्याधिर्मानासी व्यथा' इत्यमर: । मृदुभाषितया–मृदु भाषितं यस्या: तथाभूताया: (बहुव्रीहि) । समबोधि–सम् उपसर्ग पूर्वक बुध् धातु से कर्म में लुङ् । यमक तथा अनुप्रास अलङ्कार ।

'देव, सकलस्य भूपालकुलस्य मध्ये तेजोवरिष्ठो गरिष्ठो भवानद्य विन्ध्यवनमध्यं निवसतीति जलबुद्बुदसमाना विराजमाना सम्पत्तडिल्लतेव सहसैवोदेति नश्यति च । तन्निखिलं दैवायत्तमेवावधार्य कार्यम् । किञ्च, पुरा हरिश्चन्द्ररामचन्द्रमुख्या असंख्या महीन्द्रा ऐश्वर्योपमितमहेन्द्रा दैवतन्त्रं दु:खयन्त्रं सम्यगनुभूय पश्चादनेककालं निजराज्यमकुर्वन् । तद्वदेव भवान् भविष्यति । कञ्चन कालं विरचितदैवसमाधिर्गलिताधिस्तिष्ठतु तावत्' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—हे देव ! समस्त नृपमण्डल के मध्य में अपने तेज से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वरिष्ठ और गौरवशाली आप आज विन्ध्यवन के मध्य में निवास कर रहे हैं इससे ज्ञात होता है कि जल के बुद्बुदों के समान विराजमान सम्पत्ति विद्युल्लता (विजली) सहसा ही उदित हो जाती है और लुप्त हो जाती है इसलिए सब कुछ दैवाधीन ही समझकर करना चाहिए। एतदतिरिक्त प्राचीन काल में हरिश्चन्द्र, रामचन्द्र आदि ऐसे अगणित राजा लोगों ने जो कि अपने ऐश्वर्य से इन्द्र की समता करते थे, दैवाधीन यातनाओं का अच्छी प्रकार अनुभव करके, बाद में बहुत समय तक अपना राज्य किया। उसी प्रकार आप भी होंगे अर्थात् उन्हीं की तरह आप भी दुःखानुभव करने के पश्चात् सुखपूर्वक राज्य करेंगे। अतएव कुछ समय तक देवपूजन करते हुए निश्चिन्तता पूर्वक ऐसे ही बने रहें।

संस्कृत व्याख्या—देव=महाराज, सकलस्य=समग्रस्य, भूपालकुलस्य=नृपतिसमूहस्य, मध्ये=मध्यभागे, तेजोवरिष्ठः=प्रतापश्रेष्ठः, गरिष्ठः=गौरवशाली, भवान्=श्रीमान्, अद्य=सम्प्रति, विन्ध्यवनमध्यं=विन्ध्यारण्यमध्यं निवसति=निवासं करोतीति, जलबुद्बुदसमाना=सलिलबुद्बुदतुल्या, विराजमाना=सुशोभमाना, सम्पत्तडिल्लतेव=राजलक्ष्मीविद्युल्लतेव, सहसैव=झटित्येव, उदेति=आविर्भवति, नश्यति च=विनाशं च गच्छति। तत्=तस्मात् कारणात्, निखिलं=समग्रम्, दैवायत्तं=दैवाधीनम्, एव=हि अवधार्य=विचार्य, कार्यं=कर्त्तव्यम्। किञ्च=अन्यच्च, पुरा=प्राचीनकाले हरिश्चन्द्ररामचन्द्रमुख्याः=हरिश्चन्द्ररामचन्द्रप्रमुखाः, असंख्याः=गणनातीताः महीन्द्राः=राजानः, ऐश्वर्योपमितमहेन्द्राः=वैभवतुलितसुनासीराः, दैवतन्त्रं=दैवायत्तम्, दुःखयन्त्रं=वेदनासमूहम्, सम्यक्=सत्यम्, अनुभूय=अनुभवं कृत्वा, पश्चात्=अनन्तरम्, अनेककालं=बहुकालम्, निजराज्यं=स्वकीयं राज्यम्, अकुर्वन्=कृतवन्तः, तद्वदेव=पूर्वोक्तरामचन्द्रादिवदेव, भवान्=श्रीमान्, भविष्यति=राज्यं प्राप्स्यति। कञ्चन कालं=कञ्चन समयं विरचितदैवसमाधिः=विहितदेवध्यानम् गलिताधिः=विनष्टमनोव्यथः तावत्=अवधौ, तिष्ठतु=प्रतीक्षताम्।

टिप्पणी—भूपालकुलस्य-भूपालानां कुलस्य (तत्पुरुष)। तेजोवरिष्ठ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेजसा वरिष्ठः (तत्पुरुष)। वरिष्ठः–वर+इष्ठन् (इष्ठ)। गरिष्ठः–गुरु+इष्ठन् (इष्ठ)। विन्ध्यवनमध्यं–विन्ध्यवनस्य मध्यम्। 'अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्' इत्यमरः। निवसति–'नि+वस्' धातु लट् लकार प्र० पु० ए० व०। जलवुद्वुदसमाना=जलस्य वुद्बुदेन समाना (तत्पुरुष); 'सलिलं कमलं जलम्' इत्यमरः। विराजमाना–वि+राज्+शानच्। सम्पत्तडिल्लता–तडितः लता तडिल्लता, सम्पत् तडिल्लता इव; "तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि" इत्यमरः। दैवायत्तम्–दैवस्य आयत्तम् (तत्पुरुष)। कार्यम्–कृ+ण्यत्। हरिश्चन्द्ररामचन्द्रमुख्याः–हरिश्चन्द्रश्च रामचन्द्रश्चेति तौ मुख्यौ येषां ते (वहुव्रीहि)। ऐश्वर्योपमितमहेन्द्राः–ऐश्वर्येण उपमितः महेन्द्रः यैस्ते (वहुव्रीहि)। ऐश्वर्य–ईश्वर+ष्यञ्। उपमित–उप+मा+क्त। अनुभूय–अनु+भू+क्त्वा→ल्यप्। विरचितदैवसमाधिः–विरचितः दैवस्य समाधिः येन सः। विरचित–वि+रच्+क्त। समाधिः–सम्+आ+धा+कि। गलित–गल्+क्त। आधिः–आ+धा+कि। यहाँ अनुप्रास नामक अलङ्कार है।

वामदेवस्य साक्षात्कारः

ततः सकलसैन्यसमन्वितो राजहंसस्तपोविभ्राजमानं वामदेवनामानं तपोधनं निजाभिलाषावाप्तिसाधनं जगाम।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् महाराज राजहंस समस्त सेना के साथ तप से देदीप्यमान वामदेव नामक मुनि के समीप, अपने मनोरथ की प्राप्ति के उद्देश्य से गये।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तदनन्तरम्, सकलसैन्यसमन्वितः=समस्तभटयुक्तः, राजहंसः=मगधाधिपतिः, तपोविभ्राजमानं=तपसा विशेषेण भ्राजमानं शोभमानम्, तपोधनं=मुनिम्, वामदेवनामानं=वामदेव इति नाम संज्ञा यस्य तम्, निजाभिलाषावाप्तिसाधनं=निजस्य स्वकीयस्य अभिलाषस्य कामस्य अवाप्तेः प्राप्तेः साधनं उपायरूपम्, जगाम=ययौ।

टिप्पणी—सकलसैन्यसमन्वितः–सकलसैन्यैः समन्वितः (तत्पुरुष)। तपो-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विभ्राजमानं–तपसा विभ्राजमानम् (तत्पुरुष)। विभ्राजमानं–वि+भ्राज्+शानच्। तपोधनम्–तप एव धनं यस्य सः, तम् (बहुव्रीहि)। वामदेवनामानं–वामदेव इति नाम यस्य तम् (बहुव्रीहि)। निजाभिलाषावाप्तिसाधनं–निजाभिलाषस्य अवाप्तेः साधनम् (तत्पुरुष)। 'कामोऽभिलाषस्तर्षश्च' इत्यमरः। अवाप्तिः–अव+आप्+क्तिन्। साधनम्–सिध्+णिच्+ल्युट् तथा साधादेश। जगाम–'गम्' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व०।

तं प्रणम्य तेन कृतातिथ्यस्तस्मै कथितकथ्यस्तदाश्रमे दूरीकृतश्रमे कञ्चन कालमुषित्वा निजराज्याभिलाषी मितभाषी सोमकुलावतंसो राजहंसो मुनिमभाषत—

हिन्दी-अनुवाद—उन (वामदेव मुनि) को प्रणाम कर, उनके द्वारा सत्कृत हो और उनसे अपना समस्त वृत्तान्त कहने के पश्चात् थकान को दूर करने वाले उनके आश्रम में कुछ समय तक निवास करके अपने राज्य का इच्छुक तथा मितभाषी (कम बोलने वाला) चन्द्रकुल का आभूषण राजा राजहंस मुनि से बोला—

संस्कृत-व्याख्या—तं=वामदेवं मुनिम्, प्रणम्य=नमस्कृत्य, तेन=मुनिना कृतातिथ्यः=विहितातिथ्यः, तस्मै=वामदेवाय, कथितकथ्यः=भणितवक्तव्यः तदाश्रमे=वामदेवाश्रमे, दूरीकृतश्रमे=अपनीतपरिश्रमे, कञ्चन कालं=कञ्चन समयम्, उषित्वा=निवासं कृत्वा, निजराजाभिलाषी=स्वराज्येच्छुकः मितभाषी=अल्पवक्ता, सोमकुलावतंसः=चन्द्रवंशाभूषणः, राजहंसः=एतदाख्यः भूपतिः, मुनिं=वामदेवम् अभाषत=अवदत्।

टिप्पणी—प्रणम्य–प्र+नम्+क्त्वा→ल्यप्। कृतातिथ्यः–कृतम् आतिथ्यं यस्य स तादृशः (बहुव्रीहि)। आतिथ्यम्–अतिथि+ष्यञ्। कथितकथ्यः–कथितं कथ्यं येन सः (बहुव्रीहि)। कथ्यम्–कथ्+यत्। दूरीकृतश्रमे–दूरीकृतः श्रमः येन तस्मिन् (बहुव्रीहि)। दूरीकृत–दूर+च्वि+कृ+क्त। उषित्वा–वस्+क्त्वा। निजराज्याभिलाषी–निजस्य राज्यस्य अभिलाषी (तत्पुरुष) अभिलाषी–अभि+लष्+णिनि। मितभाषी–मितं भाषितुं शीलमस्यास्तीति मित+भाष्+णिनि। सोमकुलावतंसः–सोमकुलस्य अवतंसः (तत्पुरुष)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभाषत—'भाष्' धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व० ।

'भगवन्, मानसारः प्रबलेन दैवबलेन मां निर्जित्य मद्भोग्यं राज्यमनुभवति । तद्वदहमप्युग्रं तपो विरच्य तमरातिमुन्मूलयिष्यामि लोकशरण्येन भवत्कारुण्येनेति नियमवन्तं भवन्तं प्राप्नवम्' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—हे भगवन् ! मानसार प्रबल दैवीय शक्ति से मुझे जीतकर मेरे द्वारा भोगने योग्य राज्य को भोग रहा है। उसी की तरह मैं भी उग्र तप करके उस शत्रु को उखाड़ फेकूँगा। इस कारण से लोकरक्षणशील आपकी कृपा से संयमपूर्वक रहने वाले आपके पास आया हूँ।

संस्कृत-व्याख्या—भगवन्=श्रीमन्, मानसारः=एतदाख्यः, प्रबलेन=प्रकृष्टेन, दैवबलेन=दैवशक्त्या, मां=राजहंसम्, निर्जित्य=विजित्य, मद्भोग्यं=मदोपभोगयोग्यम्, राज्यं=राज्यवैभवम्, अनुभवति=भुनक्ति । तद्वत्=तेन मानसारेण तुल्यम्, अहमपि=अहं राजहंसोऽपि, उग्रं=कठोरम्, तपः=आराधनम्, विरच्य=विधाय, तम्=मालवेन्द्रम्, अरातिं=शत्रुम्, उन्मूलयिष्यामि=उच्छेदनं करिष्यामि, लोकशरण्येन=जनसंरक्षणतत्परेण, भवत्कारुण्येन=श्रीमत्कृपया, इति=हेतोः, नियमवन्तं=तपस्विनम्, भवन्तं=श्रीमन्तम्, प्राप्नवम्=अवाप्नवम् इति=एवम् ।

टिप्पणी—दैवबलेन–दैवस्य बलेन (तत्पुरुष) । निर्जित्य—+निर्+जि+क्त्वा→ल्यप् । भोग्यम्–भुज्+ण्यत् । अनुभवति–'अनु+भू' धातु लट् लकार प्र० पु० ए० व० । विरच्य–वि+रच्+क्त्वा→ल्यप् । लोकशरण्येन–लोकानां शरण्यं तेन (तत्पुरुष) । 'लोकस्तु भुवने जने' इत्यमरः । भवत्कारुण्येन–भवतः कारुण्यं तेन (तत्पुरुष) । "कारुण्यं करुणा घृणा । कृपा दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽपि" इत्यमरः । नियमवन्तम्–नियम+मतुप् । यहाँ अनुप्रास नामक अलङ्कार है ।

ततस्त्रिकालज्ञस्तपोधनो राजानमवोचत्—'सखे ! शरीरकार्श्यकारिणा तपसालम् । वसुमतीगर्भस्थः सकलरिपुकुलमर्दनो राजनन्दनो नूनं संभविष्यति, कञ्चन कालं तूष्णीमास्स्व ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् त्रिकालज्ञ तपोधन (वामदेव) ने राजा से कहा—मित्र ! शरीर को दुर्बल करने वाले तप को मत करो। महारानी वसुमती के गर्भ में स्थित राजपुत्र निश्चय ही समस्त शत्रु-समुदाय का विनाश करने वाला होगा, अतः कुछ समय तक चुप रहें अर्थात् किसी प्रकार का उद्योग न करें।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तदनन्तरम्, त्रिकालज्ञः=त्रिकालवेत्ता, तपोधनः=तपस्वी वामदेवः, राजानं=भूपतिम्, अवोचत्=उवाच, सखे !=मित्र !, शरीरकार्श्यकारिणा=देहदुर्बलकारिणा, तपसा=आराधनया, अलं=व्यर्थम्। वसुमतीगर्भस्थः=देवीगर्भावस्थितः, सकलरिपुकुलमर्दनः=सम्पूर्णशत्रुकुलविध्वंसकः, राजनन्दनः=नृपसुतः, नूनं=निश्चितमेव, सम्भविष्यति=उत्पत्स्यते, कञ्चन कालं=कञ्चन समयं यावत्, तूष्णीं=मौनम् आस्स्व=तिष्ठ, इति=एवम्।

टिप्पणी—त्रिकालज्ञः–त्रिकालं जानातीति त्रिकालज्ञः–त्रिकाल+ज्ञा+क। तपोधनः-तप एव धनं यस्य सः (बहुव्रीहि) शरीरकार्श्यकारिणा-शरीरस्य कार्श्यं, शरीरकार्श्यं करोतीति तेन। शरीरकार्श्य+कृ+णिनि। 'तपसा अलम्'–यहाँ 'अलम्' के योग में तृतीया होती है। वसुमतीगर्भस्थः-वसुमत्याः गर्भः, वसुमतीगर्भे तिष्ठतीति–वसुमतीगर्भ+स्था+क। सकलरिपुकुलमर्दनः–सकलाश्च ते रिपवः सकलरिपवः, तेषां कुलम्, तत् मर्दयतीति=सकलरिपुकुलमर्दनः। मर्दनः-मर्द+ल्यु। नन्दनः–नन्दयतीति-नन्द्+णिच्+ल्यु।

गगनचारिण्यापि वाण्या 'सत्यमेतत्' इति तदेवावाचि। राजापि मुनिवाक्यमङ्गीकृत्यातिष्ठत्।

हिन्दी-अनुवाद—आकाशवाणी ने भी 'यह सत्य है' ऐसा कहकर उस मुनि के वाक्य को ही कहा। राजा भी मुनि के वाक्य को स्वीकार कर वहीं रहने लगे।

संस्कृत-व्याख्या—गगनचारिण्या=आकाशचारिण्या, वाण्यापि=भारत्यापि, 'सत्यमेतत्=एतत् कथनं तथ्यं भजते' इति=एवम्, तदेव=वाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वोक्तमपि, अवाचि=उक्तम् । राजापि=भूपतिरपि, मुनिवाक्यं=मुनिवचनम्, अङ्गीकृत्य=स्वीकृत्य, अतिष्ठत्=तस्थौ ।

टिप्पणी—गगनचारिण्या–गगने चरितुं शीलं यस्याः सा तया–गगन+चर्+णिनि+ङीप् । 'गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम्' इत्यमरः । अतिष्ठत्–'स्था' धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व० ।

राजवाहनजन्म

ततः सम्पूर्णगर्भदिवसा वसुमती सुमुहूर्ते सकललक्षणलक्षितं सुतमसूत । ब्रह्मवर्चसेन तुलितवेधसं पुरोधसं पुरस्कृत्य कृत्यविन्महीपतिः कुमारं सुकुमारं जातसंस्कारेण बालालङ्कारेण च विराजमानं राजवाहननामानं व्यधत्त ।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् गर्भ के दिन पूरे होने पर देवी वसुमती ने शुभ मुहूर्त्त में समस्त शुभलक्षणों से युक्त पुत्र को उत्पन्न किया । (तब) विविध कृत्यों के ज्ञाता राजा राजहंस ने ब्रह्मतेज से ब्रह्मा की समता करने वाले अपने पुरोहित को आगे करके अर्थात् पुरोहित की आज्ञा के अनुसार उस नवजात शिशु का जातकर्म संस्कार और बालोचित आभूषणों से अलङ्कृत कर 'राजवाहन' नाम रक्खा ।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तदनन्तरम्, सम्पूर्णगर्भदिवसा=परिपूर्णगर्भवासरा, वसुमती=देवी, सुमुहूर्ते=शुभे मुहूर्ते, सकललक्षणलक्षितं=सम्पूर्णशुभचिह्नोपेतम्, सुतं=तनयम्, असूत=उत्पादितवती । ब्रह्मवर्चसेन=ब्रह्मतेजसा, तुलितवेधसं=समीकृतकमलयोनिम् पुरोधसं=पुरोहितम्, पुरस्कृत्य=अग्रे कृत्वा, कृत्यवित्=कार्यवेत्ता, महीपतिः=भूपतिः, सुकुमारं=सुकोमलं सुन्दरं वा, कुमारं=पुत्रम्, जातसंस्कारेण=जातकर्मसंस्कारविशेषेण, बालालङ्कारेण=शिशुजनोचिताभूषणेन, च=समुच्चये, विराजमानं=सुशोभमानम्, राजवाहननामानं=राजवाहनः इति नाम नामधेयं यस्य तम् । व्यधत्त=कृतवान् ।

टिप्पणी—सम्पूर्णगर्भदिवसा–गर्भस्य दिवसाः गर्भदिवसाः, सम्पूर्णाः गर्भदिवसाः यस्याः सा (बहुव्रीहि) । 'घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्यमरः । सकललक्षणलक्षितम्–सकलानि च तानि लक्षणानि सकललक्षणानि तैः लक्षितम् (तत्पुरुष) । लक्षित–लक्ष्+क्त । ब्रह्मवर्चसेन-ब्रह्मणः वर्चः ते (तत्पुरुष) । 'तेजःपुरीषयोः वर्चः' इत्यमरः । तुलितवेधसं–तुलितः वेधा ये तम् (बहुव्रीहि) । 'स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड् विधिः' इत्यमरः पुरस्कृत्य–पुरस्+कृ+क्त्वा→ल्यप् । कृत्यवित्–कृत्यं वेत्तीति–कृत्य+विद्+क्विप् । महीपतिः–राजा, मह्याः पतिः (तत्पुरुष) । जातसंस्कारेण जातस्य संस्कारस्तेन । जातः–जन्+क्त । जातकर्म तथा नामकरण संस्कार के विषय में मनुस्मृति में कहा गया है––'प्राङ्नाभिवर्धनात्पुंसो जातकर्म विधीयते । मन्त्रवत्प्राशनं चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम् ।।' अर्थात् नाभिच्छेदन से पूर्व पुरुष का 'जातकर्म' संस्कार किया जाता है तथा सोना, घृत एवं मधु मन्त्रों से इन बच्चों को प्राशन कराया जाता है । तथा–नामधेयं दशम्यां द्वादश्यां वाऽस्य कारयेत् । पुण्ये तिथौ मुहूर्त्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते ।। अर्थात् जन्म से दशवें या बारहवें दिन उस बालक का 'नामकरण' संस्कार किया जाता है अथवा ज्योतिःशास्त्र में कहे गये शुभ तिथि, मुहूर्त और गुणयुक्त नक्षत्र में किया जाता है । बालालङ्कारेण–बालस्य अलङ्कारः तेन (तत्पुरुष) संस्कार–सम्+कृ+घञ् । अलंकार–अलं+कृ+घञ् । विराजमानं–वि+राज्+शानच् । राजवाहननामानं–'राजवाहनः' इति नाम यस्य तम् (बहुव्रीहि) । 'आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च' इत्यमरः ।

मन्त्रिपुत्राणामुत्पत्तिः

तस्मिन्नेव काले सुमतिसुमित्रसुमन्त्रसुश्रुतानां मन्त्रिणां प्रमतिमित्रगुप्तमन्त्रगुप्तविश्रुताख्या महाभिख्याः सूनवो नवोद्यदिन्दुरुचश्चिरायुषः समजायन्त । राजवाहनो मन्त्रिपुत्रैरात्ममित्रैः सह बालकेलीरनुभवन्नवर्धत ।

हिन्दी-अनुवाद––उसी समय सुमति, सुमित्र, सुमन्त्र और सुश्रुत नामक मन्त्रियों के नवोदित चन्द्रमा की द्युति के तुल्य द्युति वाले, दीर्घायु, अत्यन्त शोभा से युक्त क्रमशः प्रमति, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त और विश्रुत नाम के पुत्र उत्पन्न हुए । राजवाहन अपने मित्र इन मन्त्रिपुत्रों के साथ बालक्रीड़ा का अनुभव करता हुआ बढ़ने लगा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत-व्याख्या——तस्मिन्नेव काले=तस्मिन्नेव समये, सुमतिसुमित्रसुमन्त्र-सुश्रुतानां=सुमतिसुमित्रसुमन्त्रसुश्रुताख्यानाम्, मन्त्रिणां=अमात्यानाम्, प्रमतिमित्रगुप्तमन्त्रगुप्तविश्रुताख्याः = प्रमतिमित्रगुप्तमन्त्रगुप्तविश्रुतनामानः, महाभिख्याः=महती अत्यधिका अभिख्या शोभा येषां ते, सूनवः=सुताः, नवोद्यदिन्दुरुचः=नवीनोद्यच्चन्द्रत्विषः, चिरायुषः=दीर्घजीविनः: समजायन्त=प्रादुरभूवन् । राजवाहनः=एतदाख्यः, आत्ममित्रैः=स्वमित्रभूतैः, मन्त्रिपुत्रैः=अमात्यसुतैः, सह=समम्, वालकेलीः=शिशुजनोचितक्रीडाः, अनुभवन्=अनुभवं कुर्वन्: अवर्धत=पुपोष ।

टिप्पणी——सुमति·········सुश्रुतानां——सुमतिश्च सुमित्रश्च सुमन्त्रश्च सुश्रुतश्चेति तेषाम् (द्वन्द्व) । मन्त्री——मन्त्रयत्तीति——मन्त्र् + णिनि । प्रमति·········श्रुताख्याः——प्रमतिश्च मित्रगुप्तश्च मन्त्रगुप्तश्च विश्रुतश्च इति आख्या येषां ते । 'आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च' इत्यमरः । महाभिख्याः——महती अभिख्या येषां ते (बहुव्रीहि) । अभिख्या-शोभा; 'अभिख्या नाम-शोभयोः' इत्यमरः । सूनवः-पुत्र; 'आत्मजस्तनयः सूनुः' इत्यमरः । नवोद्यदिन्दुरुचः-नवश्चासौ उद्यन् य इन्दुः, एक इव एक येषां ते (बहुव्रीहि) । इन्दुः-चन्द्रमा; उनत्ति इति 'उन्दी क्लेदने' धातु से 'उ' प्रत्यय तथा उकार को इकार । 'हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः' इत्यमरः । रुक्-प्रभा; 'स्युः प्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः । रोचिः शोचिरुभे क्लीबे' इत्यमरः । समजायन्त-'सम्+जन्' धातु लङ् लकार प्र० पु० ब० व० । वालकेलीः-वालानां केलयः ताः (तत्पुरुष) । मन्त्रिपुत्रैः-मन्त्रिणः पुत्राः तैः (तत्पुरुष) । आत्ममित्रैः-आत्मनः मित्राणि तैः (तत्पुरुष) । यहाँ 'सहयुक्तेऽप्रधाने' से तृतीया होती है । अनुभवन्-अनु+भू+शतृ । अवर्धत-'वर्ध्' धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व० । 'नवोद्यत्······' इत्यादि में उपमा तथा अन्यत्र अनुप्रास ।

उपहारवर्मोत्पत्तिकथा

अथ कदाचिदेकेन तापसेन रसेन राजलक्षणविराजितं कञ्चिन्नयना-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नन्दकरं सुकुमारं कुमारं राज्ञे समर्प्यावोचि—भूवल्लभ, कुशसमिदानयनाय गतेन मया काचिदशरण्या व्यक्तकार्पण्याश्रु मुञ्चन्ती वनिता विलोकिता।

हिन्दी-अनुवाद—कुछ समय के बाद एक तपस्वी ने अत्यन्त प्रेम के राजोचित लक्षणों से युक्त, नेत्रों को आनन्द प्रदान करने वाले किसी सुकु बालक को राजा को समर्पित कर कहा—हे पृथ्वीवल्लभ ! कुश तथा स के लाने के लिए वन में गये हुए मैंने दैन्य प्रकट करने वाली तथा आँसू ब हुयी एक असहाय स्त्री को देखा।

संस्कृत-व्याख्या—अथ=अनन्तरम्, कदाचित्=जातु, एकेन=केनचि तापसेन=तपोधनेन, रसेन=प्रेम्णा, राजलक्षणविराजितं=राजचिह्नशु भितम्, कञ्चित्=एकम्, नयनानन्दकरं=नेत्रप्रीत्युत्पादकम्, सुकुमारं सुकोमलम्, कुमारं=बालकम्, राज्ञे=राजहंसाय, समर्प्य=समर्पणं कृ अवोचि=उक्तः। भूवल्लभ !=राजन् !, कुशसमिदानयनाय=कुशका हरणाय, वनं=विपिनम्, गतेन=यातेन, मया=तापसेन, काचित्=अज्ञा अशरण्या=निराश्रया, व्यक्तकार्पण्याश्रु=प्रकटितदैन्यनेत्राम्बु, मुञ्चन्ती= परित्यजन्ती वनिता=रमणी, विलोकिता=अवलोकिता।

टिप्पणी—रसः–प्रेम; रस्यते इति–'रस आस्वादने' धातु से घञ् प्रत्य 'शृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः' इत्यमरः। 'रसो गन्धरसे स तिक्तादौ विषयरागयोः। शृङ्गारादौ द्रवे वीर्ये देहधात्वम्बुपारदे। रसा तु क कीपाठाजिह्वाधरणिकंगुषु' इति विश्वः। राजलक्षणविराजितं–राज्ञः लक्ष विराजितम् (तत्पुरुष)। विराजितं–वि+राज्+क्त। नयनानन्दकरम्–न नयोः आनन्दः, तं करोतीति तम् नयनानन्द+कृ+ट। समर्प्य–सम्+अर्प् क्त्वा→ल्यप्। भूवल्लभ–भुवः वल्लभः तत्सम्बुद्धौ। कुशसमिदानयनाय कुशाश्च समिधश्चेति कुशसमित् तस्य आनयनाय (तत्पुरुष)। अशरण्या नास्ति शरण्यं यस्याः सा (बहुव्रीहि)। व्यक्तकार्पण्या–व्यक्तं कार्पण्यं यया (बहुव्रीहि)। अश्रु–आँसू 'अस्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च' इत्यमरः मुञ्चन्ती–मुच्+शतृ+ङीप्। विलोकिता–वि+लोक्+क्त+टाप्। यमक तथा अनुप्रास नामक अलङ्कार हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'निर्जने वने किं निमित्तं रुद्यते त्वया' इति पृष्टा सा करसरोरुहैरश्रु प्रमृज्य सगद्गदं मामवोचत् ।—

हिन्दी-अनुवाद—'निर्जन वन में तुम क्यों रो रही है ?' ऐसा पूँछे जाने पर वह अपने करकमलों से आँसू पोंछ कर गद्गद स्वर में मुझसे बोली—

संस्कृत-व्याख्या—निर्जने=जनशून्ये, वने=विपिने, किं निमित्तं=कस्मात् कारणात्, त्वया=भवत्या, रुद्यते=रोदनं क्रियते, इति=एवम्, पृष्टा=कथिता, सा=रमणी, करसरोरुहैः=करकमलैः, अश्रु=नेत्रजलम्, प्रमृज्य=प्रोञ्छ्य, सगद्गदं=सगदगदस्वरं यथा स्यात्तथा, माम्=तपोधनम्, अवोचत्=उक्तवती ।

टिप्पणी—निर्जने—निर्गताः जनाः यस्मात् तत् तस्मिन् । प्रष्टा—प्रच्छ्+क्त+टाप् । करसरोरुहैः-करा एव सरोरुहाणि तैः (कर्मधारय) । सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् । पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम्' इत्यमरः । प्रमृज्य—प्र+मृज्+क्त्वा→ल्यप् ।

'मुने, लावण्यजितपुष्पसायके मिथिलानायके कीर्तिव्याप्तसुधर्मणि निजसुहृदो मगधराजस्य सीमन्तिनीसीमन्तमहोत्सवाय पुत्रदारसमन्विते पुष्पपुरमुपेत्य कञ्चन कालमधिवसति समाराधितगिरीशो मालवाधीशो मगधराजं योद्धुमभ्यगात् ।

हिन्दी-अनुवाद—हे मुने ! अपने सोन्दर्य से कामदेव को जीत लेने वाले और कीर्ति के द्वारा देवताओं की सभा सुधर्मा को अभिव्याप्त कर लेने वाले मिथिलादेश के राजा के, अपने मित्र मगधनरेश की पत्नी के सीमन्त महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए, पुत्र स्त्रियों के समेत पुष्पपुर में जाकर कुछ समय तक वहाँ रहने पर मालवाधीश जिसने भगवान् शङ्कर की आराधना कर ली थी, मगधराज से युद्ध करने के लिए पहुँचा ।

संस्कृत-व्याख्या—मुने=तापस, लावण्यजितपुष्पसायके=सौन्दर्यपराजितमदने, मिथिलानायके=मिथिलाराजे, कीर्तिव्याप्तसुधर्मणि=कीर्त्या यशसा व्याप्ता परिपूर्णा सुधर्मा देवसभा येन तस्मिन्, निजसुहृदः=स्वमित्रस्य, मगधराजस्य=राजहंसस्य, सीमन्तिनीसीमन्तमहोत्सवाय=वधूसीमन्तसंस्कार-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महोत्सवाय, पुत्रदारसमन्विते=सुतस्त्रीयुक्ते, पुष्पपुरं=पाटलिपुत्रम्, उपेत्य=प्राप्य, कञ्चनकालं=कञ्चन समयम्, अधिवसति=निवसति, समाराधित-गिरीशः=संसेवितमहेश्वरः, मालवाधीशः=मालवाधिपतिः, मगधराजं=राजहंसम्, योद्धुं=युद्धं कर्तुम्, अभ्यगात्=समायातः ।

टिप्पणी—लावण्यजितपुष्पसायके–लावण्येन जितः पुष्पसायकः येन तस्मिन् (बहुव्रीहि) । लावण्य–लवण+ष्यञ् । मिथिलानायके–मिथिलायाः नायकः तस्मिन् (तत्पुरुष) । नायकः–नी+ण्वुल् । कीर्तिव्याप्तसुधर्मणि–कीर्त्या व्याप्ता सुधर्मा येन तस्मिन् (बहुव्रीहि) । 'यशः कीर्तिः समज्ञा च' इत्यमरः, 'स्यात् सुधर्मा देवसभा' इति चामरः । व्याप्त–वि+आप्+क्त । सीमन्तिनीसीमन्त-महोत्सवाय–सीमन्तस्य महोत्सवः सीमन्तमहोत्सवः, सीमन्तिन्याः सीमन्त-महोत्सवः तस्मै (तत्पुरुष) । 'स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः' इत्यमरः । पुत्रदारसमन्विते–पुत्राश्च दाराश्च तैः समन्वितः तस्मिन् (तत्पुरुष) । समन्वित–सम्+अनु+इण्+क्त । उपेत्य–उप+इण्+क्त्वा→ल्यप् । अधि-वसति–अधि+वस्+शतृ स० ए० व० । समाराधितगिरीशः–समाराधितः गिरीशः येन सः (बहुव्रीहि) । समाराधित–सम्+आ+राध्+क्त । 'गिरीशो गिरिशो मृडः' इत्यमरः । योद्धुम्–युध्+तुमुन् । यमक तथा अनुप्रास अलङ्कार ।

तत्र प्रख्यातयोरेतयोरसंख्ये संख्ये वर्तमाने सुहृत्साहाय्यकं कुर्वाणो निज-बले सति विदेहे विदेहेश्वरः प्रहारवर्मा जयवता रिपुणाभिगृह्य कारुण्येन पुण्येन विसृष्टो हतावशेषेण शून्येन सैन्येन सह स्वपुरगमनमकरोत् ।

हिन्दी अनुवाद—उस पुष्पपुर में इन दोनों प्रख्यात योद्धाओं में भयङ्कर युद्ध के छिड़ जाने पर अपने मित्र की सहायता करने वाले मिथिलाधीश प्रहार-वर्मा अपनी सेना के नष्ट हो जाने के उपरान्त विजयशील शत्रु (मालवाधीश) के द्वारा निगृहीत होकर तथा (शत्रु की) कृपा और अपने पुण्य के कारण छूटकर मरने से अवशिष्ट, शून्य (शस्त्रादि से रहित) अपनी सेना के साथ अपने नगर को चला गया ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत-व्याख्या--तत्र=सङ्ग्रामे, प्रख्यातयोः=प्रसिद्धयोः, एतयोः=पूर्वोक्तयोः नृपयोः, असंख्ये=संख्यातीते, संख्ये=युद्धे, वर्तमाने=अवस्थिते, सुहृत्साहाय्यकं=मित्रसाहाय्यकम्, कुर्वाणः=विदधानः, निजबले=स्वसैन्ये, विदेहे=मृते सति, विदेहेश्वरः=मिथिलाधिपतिः, प्रहारवर्मा=एतदाख्यः, जयवता=विजयवता, रिपुणा=शत्रुणा, अभिगृह्य=निगृह्य, कारुण्येन=कृपया, पुण्येन=शुभकर्मणा, विसृष्टः=विमुक्तः, हतावशेषेण=जीवितेन, शून्येन=शस्त्रादिरहितेन, सैन्येन=सैनिकेन, सह=साकम्, स्वपुरगमनं=निजनगरगमनम्, अकरोत्=चकार।

टिप्पणी--प्रख्यात-प्र+ख्या+क्त। संख्य-युद्ध, 'संख्यं समीकं साम्परायिकम्' इत्यमरः। वर्तमान-वृत्+शानच्। सुहृत्साहाय्यकं-सुहृदः साहाय्यकमिति (तत्पुरुष); 'अथ मित्रं सखा सुहृद्' इत्यमरः। साहाय्यकम्-सहाय+ष्यञ्+क। कुर्वाणः--कृ+शानच्। जयवता-जय+मतुप्। अभिगृह्य-अभि+ग्रह्+क्त्वा→ल्यप्। कारुण्य-करुणा+ष्यञ्। विसृष्टः-वि+सृज्+क्त। हतावशेषेण-हतेभ्यः अवशेषः तेन (तत्पुरुष)। स्वपुरगमनम्-स्वपुरस्य गमनमिति (तत्पुरुष)। गमनम्-गम्+ल्युट्। अकरोत्-'कृ' धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व०। यहाँ यमक तथा अनुप्रास नामक अलङ्कार हैं।

ततो वनमार्गेण दुर्गेण गच्छन्नधिकबलेन शबरबलेन रभसादभिहन्यमानो मूलबलाभिरक्षितावरोधः स महानिरोधः पलायिष्ट। तदीयार्भकयोर्यमजयोर्धात्रीभावेन परिक्लृप्ताहं मद्दुहितापि तीव्रगतिं भूपतिमनुगन्तुमक्षमे अभूव।

हिन्दी-अनुवाद---तत्पश्चात् अत्यधिक दुर्गम वनमार्ग से जाते हुए अत्यन्त शक्तिसम्पन्न शबरसेन के द्वारा सहसा ही आहत होता हुआ मूलबल (प्रधान सेना) के द्वारा अन्तःपुर और अपने को अत्यधिक सुरक्षित रखकर वही (वहाँ से) भाग निकला। उसके जुड़वें दोनों लड़कों की धाय (उपमाता) के रूप में नियुक्त मैं और मेरी पुत्री भी तीव्रगति वाले राजा का अनुगमन करने में असमर्थ रहीं।

संस्कृत-व्याख्या---ततः=तदनन्तरम्, दुर्गेण=दुर्गमेन, वनमार्गेण=विपिन-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मार्गेण, गच्छन्=व्रजन्, अधिकबलेन=प्रबलसैन्यबलेन, शबरबलेन=किरात-सैन्येन, रभसात्=वेगात्, अभिहन्यमानः=प्रताड्यमानः, मूलबलाभिरक्षिता-वरोधः=प्रधानसैन्यसुरक्षितशुद्धान्तः, सः=प्रहारवर्मा, महाविरोधः=महान् अतिशयः निरोधः रक्षणं यस्य सः, पलायिष्ट=दुद्राव । तदीयार्भकयोः=तदी-सुतयोः, यमजयोः=युग्मजातयोः, धात्रीभावेन=उपमातृरूपेण, परिकल्पिता=नियुक्ता, अहं=पूर्वोक्ता स्त्री, मद्दुहितापि=मत्सुतापि, तीव्रगतिं=द्रुतगतिम्, भूपतिम्=नृपं प्रहारवर्माणम्, अनुगन्तुं=अनुयातुम्, अक्षमे=असमर्थे, अभूव=बभूविव ।

टिप्पणी—वनमार्गेण–वनस्य मार्गेण (तत्पुरुष) । 'अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्' इत्यमरः । गच्छन्–गम्+शतृ । अधिकबलेन–अधिकं बलं यस्य तेन (बहुव्रीहि) । शबरबलेन–शबराणां बलेन (तत्पुरुष) । अभिहन्यमानः–अभि+हन्+शानच् । मूलबलाभिरक्षितावरोधः-मूलबलेन अभिरक्षितः अवरोधः येन सः (बहुव्रीहि) । अभिरक्षित–अभि+रक्ष्+क्त । अवरोधः-अव+रुध्+घञ् । महान्निरोधः–महान् निरोधः यस्य सः (बहुव्रीहि) । निरोधः–रक्षणः; नि+रुध्+घञ् । पलायिष्ट–'परा+अय्' धातु लुङ् लकार प्र० पु० ए० व० । तदीयार्भकयोः–तस्य इमौ तदीयौ यौ अर्भकौ, तयोः (कर्म-धारय) । 'पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः' इत्यमरः । तदीय-तत्+छ । परिकल्पिता–परि+कल्प्+क्त+टाप् । तीव्रगतिम्–तीव्रा गतिः यस्य तम् (बहुव्रीहि) । गतिः–गम्+क्तिन् । अनुगन्तुम्–अनु+गम्+तुमुन् । अक्षमे–न क्षमे (नञ् तत्पुरुष) । अभूव–'भू' धातु लुङ् लकार उ० पु० द्वि० व० । यमक तथा अनुप्रास नामक अलङ्कार ।

तत्र विवृतवदनः कोऽपि रूपी कोप इव व्याघ्रः शीघ्रं मामाघ्रातुमागत-वान् । भीताहमुदग्रग्राणि स्खलन्ती पर्यपतम् । मदीयपाणिभ्रष्टो बालकः कस्यापि कपिलाशवस्य क्रोडमभ्यलीयत ।

हिन्दी-अनुवाद—वहाँ (उस वन में) मुख को फाड़े हुए, शरीरधारी कोप के समान कोई व्याघ्र मुझे सूँघने के लिए (खाने के लिए) आ गया । भय के कारण मैं फिसलती हुयी उन्नत प्रस्तर खण्ड पर गिर पड़ी । मेरे हाथ से गिरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ बालक किसी मृत कपिला गाय की गोद में छिप गया ।

संस्कृत-व्याख्या——तत्र=तस्मिन् वने, विवृतवदन:=व्यात्तानन:, कोऽपि=कश्चिदपि, व्याघ्र:=जन्तुविशेष:, शीघ्रं=क्षिप्रम्, माम्=अबलाम्, आघ्रातुं=आहन्तुम्, आगतवान्=उपस्थितोऽभूत् । भीता=परित्रस्ता, अहं=अबला, उदग्रग्राणि=कठोरप्रस्तरे, स्खलन्ती=रिङ्गन्ती, पर्यपतम्=पर्यस्खलम् । मदीयपाणिभ्रष्ट:=मदीयकरच्युत:, बालक:=बाल:, कस्यापि=अज्ञातस्यापि, कपिलाशवस्य=गोमृतशरीरस्य, क्रोडं=अङ्कम्, अभ्यलीयत=अन्त:प्राविशत् ।

टिप्पणी——विवृतवदन:-विवृतं वदनं येन स: (बहुव्रीहि) । रूपी–रूप+इनि । आघ्रातुं–आ+घ्रा+तुमुन् । आगतवान्–आ+गम्+क्तवतु । उदग्रग्राणि–उदग्रश्चासौ ग्रावा तस्मिन् (कर्मधारय) । 'पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मान: शिला दृषत्' इत्यमर: । स्खलन्ती–स्खल्+शतृ+ङीप् । पर्यपतम्–'परि+पत्' लुङ् लकार उ० पु० ए० व० । मदीयपाणिभ्रष्ट:–मम अयं मदीय:, मदीयो य: पाणि: तस्माद् भ्रष्ट: (तत्पुरुष) । भ्रष्ट:–भ्रस्ज्+क्त । कपिलाशवस्य–कपिलाया: शवस्य (तत्पुरुष) ।

तच्छवाकर्षिणोऽमर्षिणो व्याघ्रस्य प्राणान्बाणो बाणासनयन्त्रमुक्तोऽपाहरत् । लोलालको बालकोऽपि शबरैरादाय कुत्रचिदुपानीयत । कुमारमपरमुद्वहन्ती मद्दुहिता कुत्र गता न जाने ।

हिन्दी-अनुवाद——उस कपिला गाय के मृत शरीर को खींचने वाले क्रुद्ध व्याघ्र के प्राणों का धनुष से छूटे हुए बाण ने अपहरण कर लिया । चञ्चल घुँघराले बालों वाले बालक को भी शबर लोग उठाकर कहीं ले गये । दूसरे कुमार को लिये हुए मेरी पुत्री कहाँ गयी ? यह मैं नहीं जानती ।

संस्कृत-व्याख्या——तच्छवाकर्षिण:=पूर्वोक्तमृतगोदेहाकर्षिण:, अमर्षिण:=क्रुद्धस्य, व्याघ्रस्य=जन्तुविशेषस्य, प्राणान्=असून्, बाणासनयन्त्रमुक्त:=शरासनविमुक्त:, बाण:=शर:, अपाहरत्=अपहरणमकरोत्, लोलालक:=लोला: चञ्चला:, अलका: चूर्णकुन्तला: यस्य स: । बालकोऽपि=शिशुरपि, शबरै:=किरातै:, आदाय=गृहीत्वा, कुत्रचित्=अज्ञातस्थले, उपानीयत=प्रापित: ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपरं=अन्यम्, कुमारं=वालकम्, उद्वहन्ती=उद्वहनं कुर्वती, मद्दुहिता= मम पुत्री, कुत्र=अज्ञातस्थाने, गता=याता, न जाने=इति नाः गच्छामि ।

टिप्पणी—तच्छवाकर्षिण:-तस्याः शवः, तम् आकर्षतीति तस्य । अ र्षिणः-अमर्ष+इनि । वाणासनयन्त्रमुक्तः-वाणासनमेव यन्त्रम्, तस्मान्मु (तत्पुरुष) । यन्त्रम्-यन्त्र्+अच् । अपहरत्-'अप+आ+हृ' धातु ल लकार प्र० पु० ए० व० । लोलालकः-लोलाः अलकाः यस्य सः (वहुव्रीहि) 'अलकाश्चूर्णकुन्तलाः' इत्यमरः । आदाय-आ+दा+क्त्वा→ल्यप् । उप नीयत-'उप+आ+नी' धातु कर्मणि लङ् लकार प्र० पु० ए० व० । उद्व हन्ती-उत्+वह्+शतृ+ङीप् । मद्दुहिता=मम दुहिता (तत्पुरुष) दुहिता-दुह्+तृच् । आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः स्त्रियां त्वमी । आहुर्दु हितरं सर्वे' इत्यमरः । गता-गम्+क्त+टाप् । यहाँ अनुप्रास तथा यमः अलङ्कार हैं ।

साहं मोहं गता केनापि कृपालुना वृष्णिपालेन स्वकुटीरमावेश्य विरोपित व्रणाऽभवम् । ततः स्वस्थीभूय भूयः क्ष्माभर्तुरन्तिकमुपतिष्ठासुरसहायतः दुहितुरनभिज्ञाततया च व्याकुलीभवामि । इत्यभिदधाना 'एकाकिन्यपि स्वामि गमिष्यामि' इति सा तदैव निरगात् ।

हिन्दी-अनुवाद—मूर्च्छित हुयी मैं किसी दयालु गड़रिये के द्वा अपनी कुटी में प्रवेश करायी जाकर घावों से रहित कर दी गयी अर्थात् कि गड़रिये ने अपनी कुटी में ले जाकर मेरे घावों को अच्छा कर दिया । तत्पश्चा स्वस्थ होकर पुनः राजा के समीप उपस्थित होने की इच्छुक (मैं) असहायत तथा अपनी पुत्री के अज्ञात होने के कारण व्याकुल हो रही हूँ । इस प्रका कहती हुयी (वह) मैं अकेली भी राजा के पास जाऊँगी' ऐसा विचारकर व उसी समय चली गयी ।

संस्कृत-व्याख्या—साहं=अवला सती अहम्, मोहं=मूर्च्छाम्, गता= प्राप्ता, केनापि=अज्ञातेन, कृपालुना=दयालुना, वृष्णिपालेन=मेषपालेन स्वकुटीरं=निजकुटीरम्, आवेश्य=प्रवेश्य, विरोपितव्रणा=व्रणरहित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभवम्=अभूवम् । ततः=तदनन्तरम्, स्वस्थीभूय=नीरुजा भूत्वा, भूयः=पुनः, क्ष्माभर्तुः=राज्ञः, अन्तिकं=समीपम्, उपतिष्ठासुः=उपस्थातुमिच्छुः, असहायतया=सहायरहितया, दुहितुः=तनयायाः, अनभिज्ञाततया=अज्ञानतया, च=समुच्चये, व्याकुलीभवामि=दुःखीभवामि, इति=एवम्, अभिदधाना=कथयन्ती, एकाकिनी=असहाया, अपि=च, स्वामिनं=पालकम्, गमिष्यामि=व्रजिष्यामि, इति=एवम्, सा=पूर्वोक्ता, तदैव=तस्मिन्नेव काले, निरगात्=निरगच्छत् ।

टिप्पणी––कृपालुना–कृपां लाति इति कृपा+ला+डु । 'कृपा दयानुकम्पा च' इत्यमरः । वृष्णिपालेन=वृष्णीनां पालः वृष्णिपालस्तेन । 'मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके' इत्यमरः । विरोपितव्रणा–विरोपिताः व्रणाः यस्याः सा (बहुव्रीहि) । स्वस्थीभूय–स्वस्थ+च्वि+भू+क्त्वा→ल्यप् । उपतिष्ठासुः–उपस्थातुमिच्छुः–उप+सन्नन्त स्थ (तिष्ठास्)+उ । असहायतया–असहायस्य भावः तत्ता तया । अनभिज्ञाततया–न अभिज्ञाता अनभिज्ञाता तस्याः भावः तया । अभिज्ञात–अभि+ज्ञा+क्त । व्याकुलीभवामि–अव्याकुला व्याकुला भवामि–व्याकुल+च्वि+भू धातु लट् लकार उ० पु० ए० व० । अभिदधाना–अभि+धा+शानच् । गमिष्यामि 'गम्' धातु लृट् लकार प्र० पु० ए० व० ।

अहमपि भवन्मित्रस्य विदेहनाथस्य विपन्निमित्तं विषादमनुभवंस्तदन्वयाङ्कुरं कुमारमन्विष्यंस्तदैकं चण्डिकामन्दिरं सुन्दरं प्रागाम् ।

हिन्दी-अनुवाद––मैं भी आपके मित्र मिथिलाधिपति प्रहारवर्मा की विपत्ति के कारण दुःख का अनुभव करता हुआ और उनके कुल के अङ्कुर भूत राजकुमार को खोजता हुआ, उस समय चण्डिका देवी के एक सुन्दर मन्दिर में पहुँचा ।

संस्कृत-व्याख्या–अहमपि=तापसोऽपि, भवन्मित्रस्य=तव सुहृदः, विदेहनाथस्य=मिथिलाधीशस्य, विपन्निमित्तं=आपत्कारणम्, विषादं=दुःखम्, अनुभवन्=अनुभवं कुर्वन्, तदन्वयाङ्कुरम्=मिथिलाधीशवंशप्ररोहभूतम्, कुमारं=बालकम्, अन्विष्यन्=अन्वेषणं कुर्वन्, तदा=तस्मिन् समये, एकं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुन्दरं=एकं मनोहरम्, चण्डिकामन्दिरं=दुर्गाभवनम्, प्रागाम्=अगच्छम् ।

टिप्पणी--भवन्मित्रस्य-भवतः मित्रस्य (तत्पुरुष); 'अथ मित्रं सखा सुहृत्' इत्यमरः। विपन्निमित्तं-विपत् निमित्तं यस्य तम् (बहुव्रीहि)। अनुभवन्-अनु+भू+शतृ । तदन्वयाङ्कुरम्-तस्य अन्वयः तदन्वयः, तस्य अङ्कुरम् (तत्पुरुष)। 'कुलान्यभिजनान्वयौ' इत्यमरः। चण्डिकामन्दिरं-चण्डिकायाः मन्दिरम् (तत्पुरुष)। चण्डिका-पार्वती; 'अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाऽम्बिका' इत्यमरः।

तत्र संततमेवंविधविजयसिद्धये कुमारं देवतोपहारं करिष्यन्तः किराताः 'महीरुहशाखावलम्बितमेनमसिलतया वा, सैकततले खननिक्षिप्तचरणं लक्ष्यीकृत्य शितशरनिकरेण वा, अनेकचरणैः पलायमानं कुक्कुरबालकैर्वा दंशयित्वा संहनिष्यामः' इति भाषमाणा मया समभ्यभाष्यन्त--

हिन्दी-अनुवाद--वहाँ (उस चण्डिका के मन्दिर में) निरन्तर इसी प्रकार की विजयों की सिद्धि के लिए कुमार को देवता की बलि के रूप में देने वाले किरातों से, जो कि 'वृक्ष की शाखा में लटकाकर इस वालक को तलवार से, अथवा वालुकामय प्रदेश में गड्ढे में पैरों तक गाड़कर तीक्ष्ण वाणों के द्वारा, अथवा अनेक चरणों (तेजी) से भागते हुए कुत्तों के वच्चों के द्वारा कटवाकर मरवा डालेंगे", इस प्रकार कह रहे थे; मैंने कहा--

संस्कृत-व्याख्या--तत्र=चण्डिकामन्दिरे, सन्ततं=अनिशम्, एवंविधविजयसिद्धये=एवंविधजयप्राप्तये, कुमारं=वालकम्, देवतोपहारं=चण्डिकाबलिम्, करिष्यन्तः=विधास्यन्तः, किराताः=शबराः, महीरुहशाखावलम्बितं=वृक्षशाखावद्धम्, एनं=वालकम्, असिलतया=खड्गेन, वा=अथवा, सैकततले=वालुकामयप्रदेशे, खननिक्षिप्तचरणं=गर्तविन्यस्तपादम्, लक्ष्यीकृत्य=उद्दिश्य, शितशरनिकरेण=तीक्ष्णवाणसमूहेन, वा=अथवा, अनेकचरणैः=अनेकपादविन्यासैः, पलायमानं=पलायनं कुर्वाणम्, कुक्कुरबालकैः=कुक्कुरसुतैः, वा=अथवा, दंशयित्वा=दंशं कारयित्वा, संहनिष्यामः=मारयिष्यामः,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इति=एवम्, भाषमाणा=कथयन्तः, मया=मुनिना, समभ्यभाष्यन्त=कथिताः ।

टिप्पणी--एवंविधविजयसिद्धये–एवंविधा ये विजयाः, तेषां सिद्धिः तस्यै । सिद्धिः–सिध्+क्तिन् । देवतोपहारम्–देवताया उपहारम् (तत्पुरुष) । देवता–दिव्+अच्+तल्+टाप्; 'वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्' इत्यमरः । करिष्यन्तः–कृ+स्य+शतृ । उपहार-उप+हृ+घञ्, 'उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा' इत्यमरः । महीरुहशाखावलम्बितं–महीरुहस्य शाखायाम् अवलम्बितम् (तत्पुरुष) । अवलम्बित–अव+लम्ब्+क्त । महीरुह–वृक्ष; 'वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः । अनोकहः कुटः सालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ।' इत्यमरः । खननिक्षिप्तचरणम्–खन्+ल्युट् । निक्षिप्त–नि+क्षिप्+क्त । सैकत–सिकता+अण् । लक्ष्यीकृत्य–लक्ष्य+च्वि+कृ+क्त्वा→ल्यप् । शितशरनिकरेण–शिताश्च ते शराः, तेषां निकरः तेन (तत्पुरुष) । अनेकचरणैः–अनेके चरणा येषां ते तैः (बहुव्रीहि) । पलायमानम्-परा+अय्+शानच् । कुक्कुरवालकैः–कुक्कुराणां बालकास्तैः (तत्पुरुष) । दंशयित्वा–दंश+णिच्+क्त्वा । संहनिष्यामः–सम्+हन्+लृट् उ० पु० ब० व० । भाषमाणाः–भाष्+शानच् । समभ्यभाषन्त–सम्+अभि+भाष्+यक्+लुङ् लकार प्र० पु० ब० व० । यहाँ अनुप्रास नामक अलङ्कार है ।

'ननु किरातोत्तमाः घोरप्रचारे कान्तारे स्खलितपथः स्थविरभूसुरोऽहं मम पुत्रकं क्वचिच्छायायां निक्षिप्य मार्गान्वेषणाय किञ्चिदन्तरमगच्छम् । स कुत्र गतः, केन वा गृहीतः, परीक्ष्यापि न वीक्ष्यते । तन्मुखावलोकनेन विनानेकान्यहान्यतीतानि किं करोमि, क्व यामि, भवद्भिर्न किमदर्शि ?' इति ।

हिन्दी-अनुवाद--हे श्रेष्ठ किरातों ! इस भयङ्कर दुर्गम मार्ग में अपने (गन्तव्य) मार्ग से भटका हुआ वृद्ध ब्राह्मण मैं अपने पुत्र को कहीं छाया में रखकर मार्ग को खोजने के लिए कुछ दूर पर चला गया था। वह कहाँ गया ? उसे कौन उठा ले गया ? अन्वेषण करने पर भी वह (बालक) नहीं दिखाई पड़ रहा है । उसके मुख को देखे बिना अनेक दिन बीत गये हैं । क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? क्या आप लोगों ने उसे नहीं देखा है ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत-व्याख्या--ननु=आमन्त्रणे, 'अनुनयामन्त्रणे ननु' इत्यमरः किरातोत्तमाः=शवरश्रेष्ठाः, घोरप्रचारे=भयङ्करसञ्चारे, कान्तारे=दुर्गमे मार्गे, स्खलितपथः=मार्गच्युतः, स्थविरभूसुरः=वृद्धविप्रः, अहं=पूर्वोक्तः मम=मे, पुत्रकं=बालकम्, क्वचित्=कुत्रचित्, छायायां=अनातपे निक्षिप्य=संस्थाप्य, मार्गान्वेषणाय=मार्गमन्वेष्टुम्, किञ्चिदन्तरं=किञ्चित्समीपम्, अगच्छम्=अगमम् । सः=बालकः, कुत्र=कस्मिन् प्रदेशे, गतः=यातः, केन=जन्तुविशेषेण, वा=अथवा, गृहीतः=नीतः, परीक्ष्य=परीक्षां कृत्वा अपि, न वीक्ष्यते=नावलोक्यते, तन्मुखावलोकनेन=तदाननसंदर्शनेन विना=अन्तरा, अनेकानि=बहूनि, अहानि=दिनानि, अतीतानि=व्यतीतानि । किं करोमि=किं कार्यं सम्पादयामि, क्व यामि=कुत्र गच्छामि भवद्भिः=श्रीमद्भिः, न=नहि, किमदर्शि=किं दृष्टः, इति=एवम् ।

टिप्पणी--किरातोत्तमाः=किरातेषु उत्तमाः तत्सम्बुद्धौ (तत्पुरुष) घोरप्रचारे-घोरः प्रचारः यस्य तस्मिन् (बहुव्रीहि) । कान्तार=दुर्गम मार्ग 'कान्तारं वर्त्म दुर्गमम्' इत्यमरः । स्खलितपथः-स्खलितः पन्था यस्य असौ (बहुव्रीहि) । स्थविरभूसुरः-स्थविरश्चासौ भुसुरः (कर्मधारय) । निक्षिप्य-नि+क्षिप्+क्त्वा→ल्यप् । मार्गान्वेषणाय--मार्गस्य अन्वेषणं तस्मै (तत्पुरुष) गतः-गम्+क्त । परीक्ष्य-परि+ईक्ष्+क्त्वा→ल्यप् । तन्मुखावलोकनेन-तस्य मुखं तन्मुखम्, तस्य अवलोकनेन (तत्पुरुष) । 'आननं लपनं मुखम्' इत्यमरः । अवलोकनम्-अव+लोक्+ल्युट् । 'अवलोकनेन विना 'यहाँ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्' से विना के योग में तृतीया ।

द्विजोत्तम, कश्चिदत्र तिष्ठति । किमेष तव नन्दनः सत्यमेव, तदेनं गृहाण इत्युक्त्वा दैवानुकूल्येन मह्यं तं व्यतरन् ।

हिन्दी-अनुवाद--'हे विप्रवर ! कोई (एक बालक) यहाँ है । क्या सचमुच ही यह तुम्हारा पुत्र है ? तो इसे लो ।' यह कहकर भाग्य के अनुकूल होने के कारण उन लोगों ने उस (बालक) को मुझे दे दिया ।

संस्कृत-व्याख्या--द्विजोत्तम=विप्रवर, कश्चित्=बालकः, अत्र=अस्मिन् स्थाने, तिष्ठति=वर्तते । किमेष=किमयम्, तव=ते, नन्दनः=सुतः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्यमेव=वास्तविकरूपेण, तत्=तस्मात्कारणात्, एनं=बालकम्, गृहाण=स्वीकुरु, इति=एवम्, उक्त्वा=कथयित्वा, दैवानुकूल्येन=भाग्यसाहाय्येन, मह्यं=पूर्वोक्ताय जनाय, तं=वालकम्, व्यतरन्=दत्तवन्तः ।

टिप्पणी—द्विजोत्तम–द्विजेषु उत्तमः तत्सम्बुद्धौ (तत्पुरुष)। 'दन्तविप्राण्डजाः द्विजाः' इत्यमरः । नन्दनः–नन्दयतीति–नन्द्+णिच्+ल्युट् । दैवानुकूल्येन–दैवस्य आनुकूल्येन (तत्पुरुष)। दैव–भाग्य; 'दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः' इत्यमरः । आनुकूल्यम्–अनुकूल+ष्यञ् ।

तेभ्यो दत्ताशीरहं बालकमङ्गीकृत्य शिशिरोदकादिनोपचारेणाश्वास्य निःशङ्कं भवदङ्कं समानीतवानस्मि । एनमायुष्मन्तं पितृरूपो भवानभिरक्षतात् । इति ।

हिन्दी-अनुवाद—उन किरातों को आशीर्वाद देकर मैंने उस बालक को ग्रहण किया तथा शीतल जल आदि के उपचार से उसे आश्वस्त कर बिना किसी शङ्का के आपके समीप ले आया हूँ। पिता के सदृश आप इस आयुष्मान् की रक्षा करें ।

संस्कृत-व्याख्या—तेभ्यः=पूर्वोक्तेभ्यः शवरेभ्यः, दत्ताशीः=प्रदत्ताशीः, अहं=तपस्वी, बालकं=पुत्रम्, अङ्गीकृत्य=स्वीकृत्य, शिशिरोदकादिना=शीतलजलादिना, उपचारेण=सेवया, आश्वास्य=आश्वासनं कृत्वा, निःशङ्कं=शङ्कारहितम्, भवदङ्कं=भवत्समीपम्, समानीतवानस्मि=उपस्थितवानस्मि । आयुष्मन्तं=चिरजीविनम्, एनं=पूर्वोक्तम्, पितृरूपः=पितृतुल्यः, भवान्=श्रीमान् राजहंसः, अभिरक्षतात्=परिपालयतु ।

टिप्पणी—दत्ताः आशिषः येन तथाविधः (बहुव्रीहि)। भवदङ्कं–भवतः अङ्कम् (तत्पुरुष)। समानीतवान्–सम्+आ+नी+क्तवतु । अभिरक्षतात्–'अभि+रक्ष्' धातु लोट् लकार प्र० पु० ए० व०; यहाँ 'तु' को तातङ् आदेश होता है ।

राजा सुहृदापन्निमित्तं शोकं तन्नन्दनविलोकनसुखेन किञ्चिदपनीय तमुपहारवर्मनाम्नाहूय राजवाहनमिव पुपोष ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी-अनुवाद—राजा मित्र की विपत्ति से आविर्भूत शोक को उसके पुत्र के अवलोकन सुख से कुछ कम कर, उसे 'उपहारवर्मा' नाम से बुलाकर अर्थात् उसका नाम 'उपहारवर्मा' रखकर राजवाहन के समान पालने लगे।

संस्कृत-व्याख्या—राजा=नृपतिः, सुहृदापन्निमित्तं=विपत्तिकारणम् शोकं=मन्युम्, तन्नन्दनविलोकनसुखेन=तत्सुतावलोकनानन्देन, किञ्चित् अधरीकृत्य=किञ्चित् न्यूनीकृत्य, तं=पूर्वोक्तं बालकम्, उपहारवर्मनाम्ना=उपहारवर्माभिधानेन, आहूय=आकार्य, राजवाहनमिव=स्वसुतवत्, पुपोष=पालनमकरोत्।

टिप्पणी—सुहृदः आपत् निमित्तं यस्य तम् (बहुव्रीहि)। 'अथ मित्रं सखा सुहृत्' इत्यमरः। 'हेतुर्ना कारणं वीजं निदानं त्वादिकारणम्' इति चामरः। तनन्दन ....सुखेन–तस्य नन्दनः, तस्य विलोकनम्, तस्मात् यत् सुखं तेन। 'मन्युशोकौ तु शुक्स्त्रियाम्' इत्यमरः। पुपोष–'पुष्' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व०।

अपहारवर्मोत्पत्तिकथा

जनपतिरेकस्मिन्पुण्यदिवसे तीर्थस्नानाय पक्वणनिकटमार्गेण गच्छन्नबलया कयाचिदुपलालितमनुपमशरीरं कुमारं कञ्चिदवलोक्य कुतूहलाकुलस्तामपृच्छत्। 'भामिनि! रुचिरमूर्तिः सराजगुणसंपूर्तिरसावर्भको भवदन्वयसम्भवो न भवति। कस्य नयनानन्दनः, निमित्तेन केन भवदधीनो जातः, कथ्यतां याथातथ्येन त्वया' इति।

हिन्दी-अनुवाद—एक शुभ दिन, तीर्थ में स्नान करने के लिए शवरालय के निकट मार्ग से जाते हुए राजा ने किसी स्त्री के द्वारा लालित एवं अनुपम शरीर वाले किसी बालक को देखकर उत्कण्ठा से आकुल होकर उससे पूछा—हे भामिनि! समस्त राजगुणसम्पन्न, सुन्दर शरीरवाला यह बालक आपके कुल में तो उत्पन्न है नहीं, यह किसके नेत्रों को आनन्दित करने वाला है अर्थात् किसका पुत्र है? किस कारण से आपके अधीन हो गया है? आप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुझसे ठीक-ठीक बतलावें ।

संस्कृत-व्याख्या—जनपतिः=नृपतिः, एकस्मिन्=एकदा, पुण्यदिवसे=पवित्रवासरे, तीर्थस्नानाय=पवित्रतीर्थे स्नातुम्, पक्वणनिकटमार्गेण=शबरालयसमीपपथा, गच्छन्=व्रजन्, कयाचिदवलया=कयाचित् स्त्रिया, उपलालितं=प्रेम्णा पालितम्, अनुपमशरीरं=अप्रतिमसुन्दरशरीरम्, कञ्चित्=एकम्, कुमारं=बालकम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा, कुतूहलाकुलः=औत्सुक्याकुलः, ताम्=स्त्रियम्, अपृच्छत्=पृष्टवान् । भामिनि=सुन्दरि, रुचिरमूर्तिः=सुन्दरशरीरः, सराजगुणसम्पूर्तिः=समस्तराजगुणसम्पन्नः, असौ=एषः, अर्भकः=पोतः, भवदन्वयसम्भवः=भवत्कुलोत्पन्नः, न भवति=न भवितुमर्हति, (तदा अयम्) कस्य=पुरुषस्य, नयनानन्दनः=नेत्रानन्दजनकः, केन निमित्तेन=केन कारणेन, भवदधीनः=त्वदायत्तः, जातः=अभवत्, इति=एवम्, त्वया=भवत्या, याथातथ्येन=यथार्थरूपेण, कथ्यताम्=भण्यताम् ।

टिप्पणी—जनपतिः–जनानां पतिः (तत्पुरुष) । 'स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता । अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः' इत्यमरः । पाति रक्षतीति–पा+डति=पतिः । पुण्यदिवसे–पुण्यश्चासौ दिवसः तस्मिन् (कर्मधारय) । पक्वणनिकटमार्गेण–पक्वणस्य निकटमार्गस्तेन (तत्पुरुष) । 'पक्वणः शबरालयः' इत्यमरः । गच्छन्–गम्+शतृ । पक्वण–शबरों या भीलों का घर । अनुपमशरीरम्–अनुपमं शरीरं यस्य तम् (बहुव्रीहि); 'शरीरं वर्ष्म विग्रहः' इत्यमरः । अवलोक्य–अव+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । कुतूहलाकुलः–कुतूहलेन आकुलः (तत्पुरुष); 'कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम्' इत्यमरः । रुचिरमूर्तिः–रुचिरा मूर्तिः यस्य सः (बहुव्रीहि) । रुचिर–सुन्दर, 'सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् । कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥' सराजगुणसम्पूर्तिः–राजगुणानां सम्पूर्तिः राजगुणसम्पूर्तिः, तया सह वर्तते इति (बहुव्रीहि) । सम्पूर्तिः–सम्+पृ+क्तिन् । भवदन्वयसम्भवः–भवत्या अन्वयः, तस्मिन् सम्भवो यस्य सः (बहुव्रीहि); 'सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ । वंशोऽन्ववायः सन्तानः' इत्यमरः' । सम्भवः–सम्+भू+अप् । अर्भकः–शिशु; अर्भ+कन् । 'पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः' इत्यमरः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नयनानन्दनः–नयने आनन्दयतीति नयनानन्दनः । भवदधीनः–भवत्या अधीनः (तत्पुरुष) । याथातथ्येन–यथातथस्य भावः तेनः, यथातथ+ष्यञ् । अनुप्रास अलङ्कार है ।

प्रणतया तया शवर्या सलीलमलापि––'राजन् ! आत्मपल्लीसमीपे पदव्यां वर्तमानस्य शक्रसमानस्य मिथिलेश्वरस्य सर्वस्वमपहरति शबरसैन्ये मद्दयितेनापहृत्य कुमार एष मह्यमर्पितो व्यवर्धत' । इति ।

हिंदी-अनुवाद––उस शवरी ने प्रणाम करते हुए लीलापूर्वक कहा––अपने गाँव के पास के मार्ग से जाते हुए इन्द्र के समान मिथिलाधीश के सर्वस्व का शबरसेना के द्वारा अपहरण किये जाने पर, मेरे प्रियतम के द्वारा अपहरण करके लाया गया यह कुमार मुझे सौंपा गया (इस प्रकार यह मेरे पास) बढ़ा है ।

संस्कृत-व्याख्या––प्रणतया=विहितप्रणामया, तया शवर्या=पूर्वोक्तया किरातपत्न्या, सलीलं=लीलया सहितम्, अलापि=अभाषि, राजन् !=महाराज !, आत्मपल्लीसमीपे=स्वग्रामनिकटे, पदव्यां=मार्गे, वर्तमानस्य=अवस्थितस्य, शक्रसमानस्य=इन्द्रतुल्यस्य, मिथिलेश्वरस्य=मिथिलाधीशस्य, सर्वस्वं=सम्पूर्णं धनम्, अपहरति=अपहरणं कुर्वति सति, शबरसैन्ये=किरातसैन्ये, मद्दयितेन=मम वल्लभेन, अपहृत्य=अपहरणं कृत्वा, एषः कुमारः=अयं बालकः, मह्यं=शवर्यै, अर्पितः=समर्पितः. सोऽयमिदानीं व्यवर्धत=वृद्धिं प्राप्तः ।

टिप्पणी––प्रणतया–प्र+नम्+क्त+टाप् । सलीलम्–लीलया सह इति (अव्ययीभाव) 'सह' को 'स' आदेश । आत्मपल्लीसमीपे–आत्मनः पल्ली, तस्याः समीपे (तत्पुरुष) । पदव्यां मार्ग में, अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः । सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकपदीति च ॥" इत्यमरः । शक्रः-इन्द्र 'जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः' इत्यमरः । दयित–प्रिय, दयितं वल्लभं प्रियम्' इत्यमरः । अपहृत्य–अप+हृ+क्त्वा→ल्यप् ।

तदवधार्य कार्यज्ञो राजा मुनिकथितं द्वितीयं राजकुमारमेव निश्चित्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामदानाभ्यां तामनुनीयापहारवर्मेत्याख्याय देव्यै 'वर्धय' इति समर्पितवान् ।

हिन्दी-अनुवाद--कार्यों को जानने वाले राजा ने उस वृद्धा के वचनों को समझकर, मुनि के द्वारा कहे गये दूसरे राजकुमार को ही उसे निश्चित कर, उस शबरी को साम तथा दान के द्वारा मनाकर, उस बालक को 'अपहारवर्मा' इस नाम से पुकार कर, 'इसका पालन-पोषण करो' यह कहकर महारानी को समर्पित कर दिया ।

संस्कृत-व्याख्या--तत् = पूर्वोक्तम्, अवधार्य = निशम्य, कार्यज्ञः = कार्यवेत्ता, राजा = नृपतिः, मुनिकथितं = तापसोदितम्, द्वितीयं = अपरम्, राजकुमारमेव = राजसूनुमेव, निश्चित्य = निर्णीय, सामदानाभ्यां = सामदानोपायाभ्याम्, ताम् = शवरपत्नीम्. अनुनीय = अनुनयं कृत्वा, अपहारवर्मेत्याख्याय = 'अपहारवर्मा' इति अभिधानं कृत्वा, देव्यै = वसुमत्यै, वर्धय = परिपालय, इति = एवं कथयित्वा, समर्पितवान् = दत्तवान् ।

टिप्पणी--कार्यज्ञः--कार्यं जानातीति--कार्य + ज्ञा + क । कार्यम्--कृ + ण्यत् । मुनिकथितम्--मुनिना कथितम् (तत्पुरुष) । कथितम्--कथ् + क्त । राजकुमारम्--राज्ञः कुमारम् (तत्पुरुष) । निश्चित्य--निस् + चि + क्त्वा → ल्यप् । सामदानाभ्याम्--साम और दान । साम, दान, दण्ड और भेद--इन चार उपायों में से दो । आख्या--नाम; 'आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च' इत्यमरः । समर्पितवान्--सम् + अर्प + क्तवतु ।

51

पुष्पोद्भवोत्पत्तिकथा

कदाचिद्वामदेवशिष्यः सोमदेवशर्मा नाम कञ्चिदेकं बालकं राज्ञः पुरो निक्षिप्याभाषत--'देव रामतीर्थे स्नात्वा प्रत्यागच्छता मया काननावनौ वनितया कयापि धार्यमाणमेनमुज्ज्वलाकारं कुमारं विलोक्य सादरमभाणि 'स्थविरे ! का त्वम् ? एतस्मिन्नटवीमध्ये बालकमुद्वहन्ती किमर्थमायासेन भ्रमसि' इति ।

हिन्दी-अनुवाद--किसी दिन वामदेव ऋषि के शिष्य ने, जिसका नाम सोमदेव शर्मा था, किसी एक बालक को राजा के समक्ष रखकर कहा--हे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजन् ! रामतीर्थ में स्नान करके लौटते हुए मैंने वनभूमि में किसी रमणी के द्वारा धारण किये गये इस उज्ज्वल आकार वाले कुमार को देखकर उससे सादर कहा–हे वृद्धे ! तुम कौन हो ? इस वन के मध्य में इस बालक को ढोती हुयी कष्ट के साथ क्यों घूम रही हो ?

संस्कृत-व्याख्या—कदाचित्=जातु, वामदेवशिष्यः=महर्षिवामदेवच्छात्रः, सोमदेवशर्मा नाम='सोमदेवशर्मा' इति संज्ञा, कञ्चिदेकं बालकं=कञ्चिदेकं कुमारम्, राज्ञः=राजहंसस्य नृपस्य, पुरः=अग्रे, निक्षिप्य=संस्थाप्य, अभाषत =अवदत्, देव=राजन् ! रामतीर्थे=रामनामकपवित्रतीर्थस्थाने, स्नात्वा= स्नानं विधाय, प्रत्यागच्छता=परावर्तमानेन, मया=सोमदेवेन, काननावनौ= वनप्रदेशे, कयापि वनितया=एकया रमण्या, धार्यमाणम्=ऊह्यमानम्, उज्ज्वलाकारं=सुन्दरम्, एनं=समक्षस्थितम्, कुमारं=बालकम्, विलोक्य=वीक्ष्य, सादरं=आदरसहितम्, अभाणि=अभाषि, स्थविरे:,=वृद्धे !, का त्वम्=त्वं कासि ?, एतस्मिन्=अस्मिन्, अटवीमध्ये=विपिनमध्ये, बालकं=कुमारम्, उद्वहन्ती=धारयन्ती, किमर्थं=केन कारणेन, आयासेन=दुःखेन, भ्रमसि= भ्रमणं करोषि ?

टिप्पणी—वामदेवशिष्यः–वामदेवस्य शिष्यः (तत्पुरुष) । शिष्यः–शास्+क्यप् । निक्षिप्य–नि+क्षिप्+क्त्वा→ल्यप् । स्नात्वा–स्ना+क्त्वा । प्रत्यागच्छता–प्रति+आ+गम्+शतृ, तृ० ए० व० । काननावनौ–काननस्य अवनिः तस्याम् (तत्पुरुष); 'अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्' इत्यमरः, 'गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्माऽवनिर्मेदिनी मही' इति चामरः । धार्यमाणम्–धृ+णिच् +यक्+शानच् । उज्ज्वलाकारम्–उज्ज्वलः आकारः यस्य तम् (बहुव्रीहि) । विलोक्य–वि+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । अटवीमध्ये–अटव्याः मध्ये तस्मिन् (तत्पुरुष) । उद्वहन्ती–उत्+वह्+शतृ+ङीप् ।

वृद्धयाप्यभाषि–'मुनिवर ! कालयवननाम्नि द्वीपे कालगुप्तो नाम धनाढ्यो वैश्यवरः कश्चिदस्ति । तन्नन्दिनीं नयनानन्दकारिणीं सुवृत्तां नामैतस्माद् द्वीपादागतो मगधनाथमन्त्रिसम्भवो रत्नोद्भवो नाम रमणीयगुणालयो भ्रान्तभूवलयो मनोहारी व्यवहार्युपयम्य सुवस्तुसम्पदा श्वशुरेण सम्मानितोऽभूत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालक्रमेण नताङ्गी गर्भिणी जाता ।

हिन्दी-अनुवाद—वृद्धा ने भी कहा—हे मुनीश्वर ! कालयवन नामक द्वीप में कोई कालगुप्त नामक धनाढ्य वैश्यवर रहता है। नेत्रों को आनन्द देने वाली उसकी सुवृत्ता नाम की लड़की से, इस (भारतीय) द्वीप से आये हुए, मगधाधिपति के मन्त्री के रत्नोद्भव नामक पुत्र ने जो कि अनेक रमणीय गुणों का भवन, मनोहर, व्यवहारकुशल तथा सम्पूर्ण भूमण्डल–परिभ्रमणशील है, विवाह कर, श्वशुर के द्वारा दी गयीं सुन्दर वस्तुओं की सम्पत्ति के द्वारा सम्मान प्राप्त किया। काल क्रम से (कुछ दिनों के पश्चात्) वह नताङ्गी सुवृत्ता गर्भिणी हुयी।

संस्कृत-व्याख्या—वृद्धयापि=वृद्धया स्त्रियापि, अभाषि=अवादि, मुनिवर! =मुनिश्रेष्ठ!, कालयवननाम्नि=कालयवननामके, द्वीपे=अन्तरीपे, कालगुप्तो नाम=एतदाख्यः, धनाढ्यः=धनसमृद्धः, वैश्यवरः=वैश्यश्रेष्ठः, कश्चित्=एकः, अस्ति=वर्तते। तन्नन्दिनीम्=तस्य सुताम्, नयनानन्दकारिणीं=नेत्रानन्दकारिणीम्, सुवृत्तां नाम=सुवृत्ताख्याम्, एतस्मात् द्वीपात्=एतस्मादन्तरीपात्, आगतः=प्राप्तः, मगधनाथमन्त्रिसम्भवः=मगधाधीशामात्योत्पत्तिः, रत्नोद्भवः नाम=एतदाख्यः, रमणीयगुणालयः=रम्यगुणभवनः, भ्रान्तभूवलयः=पर्यटितभूमण्डलः, मनोहारी=चित्तापहारी, व्यवहारी=व्यवहारकुशलः, उपयम्य=विवाहं कृत्वा, सुवस्तुसम्पदा=सुन्दरवस्तुसमृद्ध्या, श्वशुरेण=कालगुप्तेन, सम्मानितोऽभूत्=सम्मानितोऽभवत्। कालक्रमेण=समुचितसमयेन, नताङ्गी=कृशाङ्गी सा सुवृत्ता, गर्भिणी जाता=गर्भं दधार।

टिप्पणी—मुनिवर!—मुनिषु वरः तत्सम्बुद्धौ। कालयवननाम्नि—कालयवन इति नाम यस्य तस्मिन् (बहुव्रीहि)। धनाढ्यः—धनेन आढ्यः (तत्पुरुष)। वैश्यवरः—वैश्येषु वरः (तत्पुरुष)। नन्दिनीं—नन्दयतीति नन्द्+णिच्+ल्यु+ङीप्। नयनानन्दकारिणीं—नयनयोः आनन्दः, तं करोतीति ताम्—नयनानन्द+कृ+णिनि+ङीप्। 'मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसम्मदाः। स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि च॥' इत्यमरः। मगधनाथमन्त्रिसम्भवः—मगधनाथस्य मन्त्री, तस्मात् सम्भवः यस्य सः (बहुव्रीहि)। आगतः—आ+गम्+क्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रमणीयगुणालयः–रमणीयाः ये गुणाः, तेषामालयः (तत्पुरुष)। रमणीय-रम्+अनीयर्। भ्रान्तभूवलयः–भ्रान्तं भूवलयं येन सः (बहुव्रीहि)। मनोहारी-मनस्+हृ+णिनि। उपयम्य–उप+यम्+क्त्वा→ल्यप्। सुवस्तुसम्पदा-सुवस्तूनां सम्पत्, तया (तत्पुरुष)। नताङ्गी–नतानि अङ्गानि यस्याः सा (बहुव्रीहि)। जाता–जन्+क्त+टाप्।

ततः सोदरविलोकनकौतूहलेन रत्नोद्भवः कथञ्चिच्छ्वशुरमनुनीय चपल-लोचनया सह प्रवहणमारुह्य पुष्पपुरमभिप्रतस्थे। कल्लोलमालिकाभिहतः पोतः समुद्राम्भस्यमज्जत्।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् रत्नोद्भव ने अपने भाइयों को देखने की उत्कण्ठा से किसी प्रकार अपने श्वशुर को मनाकर चंचल नयनों वाली सुवृत्ता के साथ जहाज पर चढ़ कर पुष्पपुर (पटना) को प्रस्थान किया। (समुद्र की) तरङ्ग समूह से अभिहत (प्रताडित) जहाज समुद्र के जल में डूब गया।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तदनन्तरम्, सोदरविलोकन कौतूहलेन=सहोदरावलोकनकौतुकेन, रत्नोद्भवः=एतदाख्यः, कथञ्चित्=येन केन प्रकारेण, श्वशुरमनुनीय=श्वशुरं प्रसन्नं कृत्वा, चपललोचनया=चञ्चललोचनया, सह=साकम्, प्रवहणं=डयनम्, आरुह्य=आरोहणं कृत्वा पुष्पपुरं=एतदाख्यं नगरम्, अभिप्रतस्थे=चचाल, कल्लोलमालिकाभिहतः=महातरङ्गसमूहताडितः, पोतः=नौका, समुद्राम्भसि=सागरसलिले, अमज्जत्=निमग्नः।

टिप्पणी–सोदरविलोकनकौतूहलेन–सोदराणां विलोकनं, तत्र यत् कौतूहलं तेन; 'कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम्' इत्यमरः। विलोकनम्–वि+लोक्+ल्युट्। अनुनीय–अनु+नी+क्त्वा→ल्यप्। चपललोचनया–चपले लोचने यस्याः सा तथाभूतया। 'चपललोचनया' यहाँ 'सहयुक्तेऽप्रधाने' से तृतीया हुयी है। आरुह्य–आ+रुह्+क्त्वा→ल्यप्। कल्लोलमालिकाभिहतः–कल्लोलानां मालिका, ताभिः अभिहतः (तत्पुरुष); कल्लोल–महातरङ्ग। 'महत्सूल्लोलकल्लोलौ' इत्यमरः। अभिहतः–अभि+हन्+क्त। पोतः–नौका 'यानपात्रे शिशौ पोतः' इत्यमरः। यहाँ अनुप्रास नामक अलंकार है।

गर्भभरालसां तां ललनां धात्रीभावेन कल्पिताहं कराभ्यामुद्वहन्ती फलक-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धिरुह्य दैवगत्या तीरभूमिमगमम् । सुहृज्जनपरिवृतो रत्नोद्भवस्तत्र निमग्नो वा केनोपायेन तीरमगमद्वा न जानामि । क्लेशस्य परां काष्ठामधिगता सुवृत्ता-स्मिन्नटवीमध्येऽद्य सुतमसूत । प्रसववेदनया विचेतना सा प्रच्छायशीतले तरुतले निवसति । विजने वने स्थातुमशक्यतया जनपदगामिनं मार्गमन्वेष्टुमुद्युक्तया मया विवशायास्तस्याः समीपे बालकं निक्षिप्य गन्तुमनुचितमिति कुमारोऽप्यनायि इति ।

हिन्दी-अनुवाद - धात्री के रूप में नियुक्त मैं, गर्भ के भार से अलसायी हुयी उस रमणी (सुवृत्ता) को अपने दोनों हाथों से उठाती हुयी, (उस जहाज के) फलक (तख्ते) पर आरूढ़ होकर भाग्यवश तटभूमि पर जा पहुँची । अपने मित्रजनों से घिरा हुआ रत्नोद्भव वहाँ डूब गया या किसी उपाय से किनारे पर जा लगा, इसका मुझे कुछ पता नहीं । कष्ट की अन्तिम सीमा को प्राप्त हुयी सुवृत्ता ने इसी वन के मध्य में आज पुत्र को उत्पन्न किया है । प्रसववेदना के कारण चेतनाशून्य वह (सुवृत्ता) सघनच्छाया से शीतल एक वृक्ष के नीचे निवास कर रही हैं । निर्जन वन में न रह सकने के कारण जनपद की ओर जाने वाले मार्ग के अन्वेषण में लगी हुयी मैं, उस व्याकुल सुवृत्ता के समीप बालक को छोड़कर जाना अनुचित है, ऐसा सोचकर कुमार को भी साथ ले आयी हूँ ।

संस्कृत-व्याख्या—गर्भभरालसां=गर्भभारालस्ययुक्ताम्, तां=सुवृत्ताम्, ललनां=रमणीम्, धात्रीभावेन=धात्रीरूपेण, कल्पिता=नियुक्ता, अहं=वृद्धा, कराभ्यां=हस्ताभ्याम्, उद्वहन्ती=धारयन्ती, फलकं=काष्ठखण्डम्. अधिरुह्य= आरुह्य, दैवगत्या=दैवयोगेन, तीरभूमिं=तटप्रदेशम्, अगमम्=अगच्छम्, सुहृज्जनपरिवृतः=मित्रजनावृतः, रत्नोद्भवः=एतदाख्यः, तत्र=सागरे, निमग्नः=अमज्जत्, वा=अथवा, केनोपायेन=केनोद्योगेन, तीरं=तटम्, अगमत=अगच्छत्, वा, न जानामि=नावगच्छामि । क्लेशस्य=दुःखस्य, परां=उत्कटाम्, काष्ठां=दिशम् अतिशयमिति भावः । अधिगता=प्राप्ता, सुवृत्ता=एतदाख्या, अस्मिन्नटवीमध्ये=अस्मिन्वनमध्यभागे, अद्य=अस्मिन् दिवसे, सुतं=पुत्रम्, असूत=जनयामास, प्रसववेदनया=प्रसवपीडया, विचे-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तना=अचेतना, सा=सुवृत्ता, प्रच्छायशीतले=सघनच्छायशीतले, तरुतले=वृक्षमूले, निवसति=निवासं करोति । विजने=निर्जने, वने=विपिने, स्थातुम् =प्रतीक्षितुम्, अशक्यतया=असमर्थतया, जनपदगामिनं=ग्रामप्रापकम्, मार्गं=पन्थानम्, अन्वेष्टुं=अन्वेषणं कर्तुम्, उद्युक्तया=प्रवृत्तया, मया=वृद्धया, विवशायाः=विचेतनायाः, तस्याः=सुवृत्तायाः, समीपे=निकटे, बालकं =शिशुम्, निक्षिप्य=संस्थाप्य, गन्तुं=व्रजितुम्, अनुचितं=अयोग्यम् इति=एवं विचार्य, कुमारः=बालकः, अपि, अनायि=नीतः ।

टिप्पणी—गर्भभरालसाम्–गर्भस्य भरः, तेन अलसाम् (तत्पुरुष) । ललना =स्त्री; 'प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी । सुन्दरी रमणी रामा' इत्यमरः । उद्वहन्ती–उत्+वह्+शतृ+ङीप् । अधिरुह्य–अधि+रुह्+क्त्वा→ल्यप् । अगमम्–'गम्' धातु लुङ् लकार उ० पु० ए० व० । सुहृज्जन-परिवृतः–सुहृदः ये जनाः, तैः परिवृतः (तत्पुरुष) । परिवृतः–परि+वृ+क्त। निमग्नः–नि+मस्ज्+क्त । काष्ठा–वृद्धि या अतिशय; 'काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि' इत्यमरः । अधिगता–अधि+गम्+क्त+टाप् । अटवी–वन 'अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्' इत्यमरः । प्रसववेदनया–प्रसवस्य वेदना तया (तत्पुरुष) । प्रच्छायशीतले–प्रकृष्टा छाया प्रच्छायम्, तेन शीतलम्, तस्मिन् (तत्पुरुष) । स्थातुम्–ष्ठा (स्था)+तुमुन् । जनपदगामिनं–जनपदं गच्छतीति तम्–जनपद+गम्+णिनि । अशक्यतया–शक्+यत्+तल्+टाप्=शक्यता न शक्यता अशक्यता तया । निक्षिप्य–नि+क्षिप्+क्त्वा→ल्यप् । अन्वेष्टुम्-अनु+इष्+तुमुन् । गन्तुं–गम्+तुमुन् ।

तस्मिन्नेव क्षणे वन्यो वारणः कश्चिददृश्यत । तं विलोक्य भीता सा बालकं निपात्य प्राद्रवत् । अहं समीपलतागुल्मके प्रविश्य परीक्षमाणोऽतिष्ठम्, निपतितं बालकं पल्लवकवलमिवाददति गजपतौ कण्ठीरवो भीमरवो महाग्रहेण न्यपतत् । चिरायुष्मत्तया स चोन्नततरुशाखासमासीनेन वानरेण केनचित्पक्वफलबुद्ध्या परिगृह्य फलेतरतया विततस्कन्धमूले निक्षिप्तोऽभूत् । सोऽपि मर्कटः क्वचिदगात् ।

हिन्दी-अनुवाद—उसी समय कोई वनैला (वन्य) हाथी दिखलायी पड़ा। उसे देखकर भययुक्त वह वृद्धा बालक को गिराकर भाग गयी । मैं समीपवर्ती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लताकुञ्ज में छिपकर, देखता हुआ खड़ा रहा। गिरे हुए बालक को पल्लव के ग्रास के समान ग्रहण करने (खाने) को प्रस्तुत गजराज पर भयंकर गर्जन करता हुआ एक सिंह बड़े वेग से झपट पड़ा। भय से व्याकुल उस हाथी के द्वारा सहसा आकाश में उछाला गया वह बालक (पृथ्वी पर) गिर पड़ा। दीर्घायु होने के कारण उस बालक को ऊँचे वृक्ष की शाखा पर बैठे हुए एक बन्दर ने पका फल समझकर उठा लिया, परन्तु फल न होने के कारण उसे विस्तृत स्कन्ध (तने) के मूल में डाल दिया। वह बन्दर भी कहीं चला गया।

संस्कृत-व्याख्या--तस्मिन्नेव क्षणे=तस्मिन्नेव काले, वन्यः=आरण्यकः, वारणः=करी, कश्चित्=एकः, अदृश्यत=विलोकितः, तं=वारणम्, विलोक्य =दृष्ट्वा, भीता=भययुक्ता, सा=वृद्धा, बालकं=कुमारम्, निपात्य= निक्षिप्य, प्राद्रवत्=अधावत्। अहं=सोमदेवशर्मा, समीपलतागुल्मके=निकट-लतास्तम्बके, प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा, परीक्षमाणः=निरीक्षमाणः, अतिष्ठम्= स्थितः, निपतितं=परिच्युतम्, बालकं=कुमारम्, पल्लवकवलमिव=किसलय-ग्रासमिव, आददति=गृह्णति सति गजपतौ=वारणे, कण्ठीरवः=सिंहः, भीमरवः=भयानकध्वनिः, महाग्रहेण=महायत्नेन, न्यपतत्=अपतत्। भया-कुलेन=भीतिव्याकुलेन, दन्तावलेन=करिणा, झटिति=सहसा, वियति= गगने, समुत्पात्यमानः=समुत्क्षिप्यमाणः, बालकः=कुमारः, न्यपतत्=अपतत्। चिरायुष्मत्तया=दीर्घजीवितया, सः=शिशुः, च उन्नततरुशाखासमासीनेन= समुन्नतवृक्षशाखासीनेन, वानरेण=कपिना, केनचित्=अज्ञातेन, पक्वफलबुद्ध्या =परिपक्वफलज्ञानेन, परिगृह्य=समादाय, फलेतरतया=फलभिन्नतया, विततस्कन्धमूले=सुविस्तृतकाण्डतलप्रदेशे, निक्षिप्तोऽभूत्=स्थापितोऽभवत्। सोऽपि मर्कटः=पूर्वोक्तः वानरः, क्वचित्=कुत्रचित्, अगात्=जगाम।

टिप्पणी--वन्यः-वने भवः-वन+यत्। वारणः=हाथी; 'दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः। मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी॥ इभः स्तम्बेरमः पद्मी इत्यमरः। निपात्य-नि+पत्+णिच्+क्त्वा→ल्यप। समीप-लतागुल्मके-समीपे वर्तमानं यत् लतागुल्मकं तस्मिन्। परीक्षमाणः-परि+ ईक्ष्+शानच्। पल्लवकवलम्-पल्लवस्य कवलम् (तत्पुरुष)। आददति-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आ + दा + शतृ, स० ए० व० । कण्ठीरवः—सिंह; 'कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः' इत्यमरः । भयाकुलेन—भयेन आकुलः तेन (तत्पुरुष) । दन्तावलेन= हाथी के द्वारा; अतिशायितौ दन्तौ यस्य सः—दन्त + वलच्; दीर्घ । समुत्पात्यमानः—सम् + उत् + पत् + णिच् + यक् + शानच् । चिरायुष्मत्तया—चिरमायुरस्यास्तीति, तस्य भावस्तत्ता तया—चिर + आयुष् + मतुप् + तल् + टाप् तृ० ए० व० । उन्नततरुशाखासमासीनेन—उन्नता चासौ तरुशाखा, तस्यां समासीनः तेन (तत्पुरुष) । समासीन—सम् + आस् + शानच् । पक्वफलवुद्धया—पक्वफलानां बुद्धया (तत्पुरुष) ; 'बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः' इत्यमरः। विततस्कन्धमूले—स्कन्धस्य मूलम्, विततं यत् स्कन्धमूलं तस्मिन् (कर्मधारय)। निक्षिप्तः—नि + क्षिप् + क्त । 'पल्लवकवलमिव' में उपमा अलङ्कार है ।

बालकेन सत्त्वसम्पन्नतया सकलक्लेशसहेनाभावि । केसरिणा करिणं निहत्य कुत्रचिदगामि । लतागृहान्निर्गतोऽहमपि तेजः पुञ्जं बालकं शनैरवनीरुहादवतार्य वनान्तरे वनितामन्विष्याविलोक्यैनमानीय गुरवे निवेद्य तन्निदेशेन भवन्निकटमानीतवानस्मि, इति ।

हिन्दी-अनुवाद—शक्तिशाली होने के कारण बालक ने सभी क्लेशों को सहन कर लिया । सिंह हाथी को मारकर कहीं चला गया । लतागृह से निकलकर मैंने भी तेजस्वी बालक को धीरे-धीरे वृक्ष से उतारकर, वन के भीतर उस स्त्री को खोजा, परन्तु उसे न पाकर, इस (बालक) को लाकर गुरु को समर्पित किया और उनके आदेश से इसे आपके निकट लाया हूँ ।

संस्कृत-व्याख्या—बालकेन = शिशुना, सत्त्वसम्पन्नतया = बलयुक्ततया, सकलक्लेशसहेन = समस्तदुःखसहेन, अभावि = जातम्, केसरिणा = हरिणा, निहत्य = हत्वा, कुत्रचित् = अज्ञातस्थाने, अगामि = गतम् । लतागृहात् = वल्लीभवनात्, निर्गतोऽपि = निर्यातोऽपि, अहमपि = सोमदेवशर्मापि, तेजःपुञ्जं = तेजस्विनम्, बालकं = कुमारम्, शनैः = मन्दम्, अवनीरुहात् = वृक्षात्, अवतार्य = अधःकृत्वा, वनान्तरे = वनमध्यभागे, वनितां = रमणीम्, अन्विष्य = अन्वेषणं कृत्वा, अविलोक्य = अप्राप्य, एनं = बालकम्, आनीय = आदाय, गुरवे = वामदेवाय, निवेद्य = निवेदनं कृत्वा, तन्निदेशेन = तदादेशेन, भवन्निकटं =

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीमत्समीपम्, आनीतवानस्मि = प्रापितवानस्मि, इति = एवम् ।

टिप्पणी—सत्त्वसम्पन्नतया–सत्त्वेन सम्पन्नः, तस्य भावः तत्ता तया–सत्त्वसम्पन्न + तल् + टाप् । सकलक्लेशसहेन–सकलाश्च ते क्लेशाः, तान् सहते इति तेन । निहत्य–नि + हन् + क्त्वा → ल्यप् । लतागृहात्–लतानां गृहं तस्मात् (तत्पुरुष); 'वल्ली व्रततिर्लता' इत्यमरः, 'गृहं गेहोद्वसितं वेश्म सद्म निकेतनम्' इति चामरः । अवतार्य–अव + तृ + णिच् + क्त्वा → ल्यप् । अन्विष्य–अनु + इष् + क्त्वा → ल्यप् । आनीय–आ + नी + क्त्वा → ल्यप् । निवेद्य–नि + विद् + णिच् + क्त्वा → ल्यप् । आनीतवान्–आ + नी + क्तवतु ।

सर्वेषां सुहृदामेकदैवानुकुलदैवाभावेन महदाश्चर्यं बिभ्राणो राजा रत्नोद्भवः 'कथमभवत' इति चिन्तयंस्तन्नन्दनं पुष्पोद्भवनामधेयं विधाय तदुदन्तं व्याख्याय सुश्रुताय विषादसंतोषावनुभवंस्तदनुजतनयं समर्पितवान् ।

हिन्दी-अनुवाद—सभी मित्रों पर एक साथ ही अनुकूल दैव के अभाव से अत्यन्त आश्चर्य करते हुए राजा ने 'रत्नोद्भव का क्या हुआ ?' ऐसा विचार करते हुए उस (रत्नोद्भव) के पुत्र का नाम पुष्पोद्भव रखकर और उसके वृत्तान्त को कहकर (रत्नोद्भव के प्राप्त न होने से) विषाद और (उसके पुत्र के मिल जाने से) सन्तोष का अनुभव करते हुए, सुश्रुत को उसके छोटे भाई का पुत्र सौंप दिया ।

संस्कृत-व्याख्या—सर्वेषां = समेषाम्, सुहृदां = मित्राणां, एकदैव = युगपदेव, अनुकूलदैवाभावेन = प्रतिकूलदैवेन, महदाश्चर्यं = अतिविस्मयम्, बिभ्राणः = दधानः, राजा = नृपतिः, रत्नोद्भवः = एतदाख्यः, कथमभवत् = कीदृशी दशा तस्य जाता, इति = एवम्, चिन्तयन् = विचारयन्, तन्नन्दनं = तत्सुतम्, पुष्पोद्भवनामधेयं = पुष्पोद्भवाख्यम्, विधाय = कृत्वा, तदुदन्तं = तस्य वृत्तान्तम्, व्याख्याय = व्याख्यां कृत्वा, सुश्रुताय = रत्नोद्भवज्येष्ठभ्रात्रे, विषादसन्तोषौ = दुःखहर्षौ, अनुभवन् = अनुभवं कुर्वन्, तदनुजतनयं = तदनुजसुतम्, समर्पितवान् = प्रदत्तवान् ।

टिप्पणी—अनुकूलदैवाभावेन–अनुकूलदैवस्य अभावेन (तत्पुरुष) । 'दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः' इत्यमरः । बिभ्राणः–भृ + शानच् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विधाय–वि+धा+क्त्वा→ल्यप् । चिन्तयन्–चिन्त् (चिति)+शतृ । उदन्त–वृत्तान्त; उद्गतोऽन्तो यस्य, 'वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यात्' इत्यमरः। अनुभवन्–अनु+भू+शतृ । तदनुजतनयम्–अनुजस्य तनयम्, तस्य अनुजतनयम् (तत्पुरुष) । 'आत्मजस्तनयः सूनुः' इत्यमरः । समर्पितवान्–सम्+अर्प्+क्तवतु ।

अर्थपालोत्पत्तिकथा

अन्येद्युः कञ्चन बालकमुरसि दधती वसुमती वल्लभमभिगता । तेन 'कुतोऽसाविति पृष्टा समभाषत–'राजन् ! अतीतायां रात्रौ काचन दिव्यवनिता मत्पुरतः कुमारमेनं संस्थाप्य निद्रामुद्रितां मां विबोध्य विनीताब्रवीत्–'देवि त्वन्मन्त्रिणो धर्मपालनन्दनस्य कामपालस्य वल्लभा यक्षकन्याहं तारावली नाम, नन्दिनी मणिभद्रस्य ।

हिन्दी-अनुवाद—दूसरे दिन किसी बालक को गोद में धारण किये हुए देवी वसुमती अपने स्वामी के पास गयी । राजा के द्वारा–'यह कहाँ से आया ?' ऐसा पूछे जाने पर उसने कहा–हे राजन् ! गत रात्रि को किसी दिव्य स्त्री ने इस कुमार को मेरे आगे रखकर निद्रा के कारण बन्द आँखों वाली मुझे जगाकर विनम्रता के साथ कहा–हे देवि ! मैं धर्मपाल के पुत्र, तुम्हारे मन्त्री कामपाल की दयिता (पत्नी) यक्षकन्या तारावली हूँ । मणिभद्र की लड़की हूँ।

संस्कृत-व्याख्या—अन्येद्युः–अन्यस्मिन् दिने, कञ्चन बालकं=एकं कुमारम्, उरसि=वक्षसि, दधती=धारयन्ती, वसुमती=देवी, वल्लभं=दयितम्, अभिगता=प्राप्ता । तेन=दयितेन, असौ=अयं कुमारः, कुतः=कस्मात् (आगतः), इति=एवम्, पृष्टा=उक्ता, समभाषत्=समवोचत्, राजन्=नृप, अतीतायां=गतायाम्, रात्रौ=क्षपायाम्, काचन=अज्ञाता, दिव्यवनिता=दिव्याङ्गना, मत्पुरतः=मम समक्षम्, एनम्=इमम्, कुमारं=बालकम्, संस्थाप्य=निधाय, निद्रामुद्रितां=स्वापनिमीलिताम्, मां=वसुमतीम् विबोध्य =विबोधं कृत्वा, विनीता=विनम्रा, अब्रवीत्=उवाच, देवि=वसुमति, त्वन्मन्त्रिणः=तवामात्यस्य, धर्मपालनन्दनस्य=धर्मपालसुतस्य, कामपालस्य=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एतदाख्यस्य, वल्लभा=प्रिया, अहं यक्षकन्या=गुह्यकदुहिताहम्, तारावली नाम=तारावलीति संज्ञा, मणिभद्रस्य=मणिभद्राख्यस्य यक्षस्य, नन्दिनी =पुत्री ।

टिप्पणी—दधती—धा+शतृ+ङीप् । वल्लभ—प्रिय;—वल्ल्+अभच् 'दयितं वल्लभं प्रियम्' इत्यमरः । अभिगता—अभि+गम्+क्त+टाप् । कुत्रत्यः—कुत्र+त्यप् । कुत्र भवः—कुत्रत्यः । पृष्टा—प्रच्छ्+क्त+टाप् । संस्थाप्य—सम्+स्था+क्त्वा→ल्यप् । निद्रामुद्रिताम्—निद्रया मुद्रिता ताम् (तत्पुरुष); 'स्यान्निद्रा शयनं स्वापः' इत्यमरः । धर्मपालनन्दनस्य—धर्मपालस्य नन्दनः तस्य (तत्पुरुष)। यक्षकन्या—यक्षस्य कन्या (तत्पुरुष) । 59

यक्षेश्वरानुमत्या मदात्मजमेतं भवत्तनूजस्याम्भोनिधिवलयवेष्टितक्षोणीमण्डलेश्वरस्य भाविनो विशुद्धयशोनिधे राजवाहनस्य परिचर्याकरणायानीतवत्यस्मि । त्वमेनं मनोजसन्निभमभिवर्धय' इति विस्मयविकसितनयनया मया सविनयं सत्कृता स्वक्षी यक्षी साप्यदृश्यतामयासीत्' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—यक्षेश्वर (कुवेर) की अनुमति से अपने इस पुत्र को भविष्य में समुद्रों से आवेष्टित इस भूमण्डल के अधिपति और विशुद्ध यश वाले आपके पुत्र राजवाहन की सेवा करने के लिए लाई हूँ । अतएव आप कामदेव के समान सुन्दर इस बालक का पालन-पोषण करें । यह कहकर, विस्मय से विकसित नेत्रों वाली मेरे द्वारा विनयपूर्वक सत्कृत सुन्दर नेत्रों वाली वह यक्षी भी अदृश्य हो गयी ।

संस्कृत-व्याख्या—यक्षेश्वरानुमत्या=कुबेराज्ञया, एतं=अमुम्, मदात्मजं=मदीयं पुत्रम्, अम्भोनिधिवलयवेष्टितक्षोणीमण्डलेश्वरस्य=सागरकटकावेष्टितभूमण्डलाधिपतेः, भाविनः=भविष्यतः, विशुद्धयशोनिधेः=निर्मलकीर्तिनिधेः, भवत्तनूजस्य=वसुमतीपुत्रस्य, राजवाहनस्य=एतदाख्यस्य, परिचर्याकरणाय=सेवाकरणाय, आनीतवत्यस्मि=उपहृतवत्यस्मि । त्वं=भवती वसुमती, मनोजसन्निभं=कामदेवतुल्यम्, एनं=बालकम्, अभिवर्धय=परिपालय, इति=एवम्, विस्मयविकसितनयनया=आश्चर्योत्फुल्लनयनया, मया=वसुमत्या, सविनयं=विनयसहितम्, सत्कृता=सम्मानिता, स्वक्षी=सुष्ठु शोभने अक्षिणी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेत्रे यस्याः सा तथाभूता, यक्षी=यक्षकन्या, साऽपि=प्रसिद्धापि, अदृश्यतां=अलक्ष्यताम्, अयासीत्=याता, इति=एवम् ।

टिप्पणी—यक्षेश्वरानुमत्या–यक्षेश्वरस्य अनुमतिः तया (तत्पुरुष)। अम्भो……मण्डलेश्वरस्य–अम्भोनिधीनां वलयम्, तेन वेष्टितम् यत् क्षोणीमण्डलम्, तस्येश्वरस्तस्य (तत्पुरुष); 'क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः' इत्यमरः। विशुद्धयशोनिधेः-विशुद्धं यद् यशः, तस्य निधिः तस्य (तत्पुरुष); निधिः-नि+धा+कि। 'यशः कीर्तिः समज्ञा च' इत्यमरः। आनीतवती–आ+नी+क्तवतु+ङीप्। मनोजसन्निभम्–मनोजस्य सन्निभम् (तत्पुरुष)। विस्मयविकसितनयनया–विस्मयेन विकसिते नयने यस्याः तया (बहुव्रीहि)। विकसित-वि+कस्+क्त। सत्कृता–सत्+कृ+क्त+टाप्। स्वक्षी–सु=शोभने अक्षिणी यस्याः सा (बहुव्रीहि)। यहाँ अनुप्रास नामक अलङ्कार है।

कामपालस्य यक्षकन्यासङ्गमे विस्मयमानमानसो राजहंसो रञ्जितमित्रं सुमित्रं मन्त्रिणमाहूय तदीयभ्रातृपुत्रमर्थपालं विधाय तस्मै सर्वं वार्तादिकं व्याख्यायादात्।

हिन्दी-अनुवाद—कामपाल के यक्षकन्या के साथ हुए सम्पर्क के विषय में विस्मित हृदयवाले राजा राजहंस ने अपने मित्रों को आनन्दित करने वाले सुमित्र नामक मन्त्री को बुलाकर उसके भाई के पुत्र का नाम अर्थपाल रखकर और उससे सब बातें कहकर उसे (वह बालक) दे दिया।

संस्कृत-व्याख्या—कामपालस्य=एतदाख्यस्य, यक्षकन्यासङ्गमे=यक्षपुत्रीसङ्गमने, विस्मयमानमानसः=आश्चर्ययुक्तचेतः, राजहंसः=एतदाख्यो नृपः, रञ्जितमित्रं=तोषितमित्रम्, सुमित्रं=एतदाख्यम्, मन्त्रिणं=अमात्यम्, आहूय=आकार्य, तदीयभ्रातृपुत्रम्=तस्यानुजसुतम्, अर्थपालं=अर्थपालसंज्ञम्, विधाय=कृत्वा, तस्मै=सुमित्राय, सर्ववार्तादिकं=समस्तम् उदन्तजातम्, व्याख्याय=कथयित्वा, अदात्=दत्तवान्।

टिप्पणी—यक्षस्य कन्या, तस्याः सङ्गमे (तत्पुरुष)। विस्मयमानमानसः-विस्मयमानं मानसं यस्य स तादृशः (बहुव्रीहि); 'चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः' इत्यमरः। रञ्जितमित्रम्–रञ्जितानि मित्राणि येन तम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(बहुव्रीहि) ; 'अथ मित्रं सखा सुहृत्' इत्यमरः । विधाय–वि + धा + क्त्वा → ल्यप् ।

सोमदत्तोत्पत्तिकथा

ततः परस्मिन्दिवसे वामदेवान्तेवासी तदाश्रमवासी समाराधितदेवकीर्ति निर्भर्त्सितमारमूर्ति कुसुमसुकुमारं कुमारमेकमवगमय्य नरपतिमवादीत्–देव तीर्थयात्राभिलाषेण कावेरीतीरमागतोऽहं तत्र विलोलालकं बालकं निजोत्सङ्गतले निधाय रुदतीं स्थविरामेकां विलोक्यावोचम्–'स्थविरे ! का त्वम् अयमर्भकः कस्य नयनानन्दकरः कान्तारं किमर्थमागता, शोककारणं किम् ?' इति ।

हिन्दी-अनुवाद––तत्पश्चात् दूसरे दिन वामदेव के एक शिष्य ने, जो कि उनके आश्रम में रहता था, देवताओं की कीर्ति की आराधना करने वाले अर्थात् देवताओं के समान कीर्तिशाली, कामदेव की मूर्ति (शारीरिक सुषमा) को तिरस्कृत करने वाले और कुसुम के समान सुकुमार एक कुमार को लाकर राजा से कहा—हे राजन् ! मैं तीर्थयात्रा की इच्छा से कावेरी नदी के तट पर गया । वहाँ चञ्चल घुंघराले बालों वाले इस बालक को अपनी गोद में रखकर रोती हुयी एक वृद्धा को देखकर मैंने उससे कहा-वृद्धे ! तुम कौन हो ? यह बालक किसके नेत्रों को आनन्दित करने वाला है अर्थात् किसका पुत्र है ? तुम इस दुर्गम मार्ग में क्यों आयी हो ? तुम्हारे शोक का क्या कारण है ?

संस्कृत-व्याख्या––ततः=तदनन्तरम्, परस्मिन्=अन्यस्मिन्, दिवसे=वासरे, वामदेवान्तेवासी=वामदेवच्छात्रः, तदाश्रमवासी=तस्याश्रमनिवासी, समाराधितदेवकीर्ति=संसेवितामरकीर्तिम्, निर्भर्त्सितमारमूर्ति=तिरस्कृतकामशरीरम्, कुसुमसुकुमारं=पुष्पसदृशकोमलम्, कुमारं=बालकम्, एकं=केवलम्, अवगमय्य=उपस्थाप्य, नरपतिं=राजानम्, अवादीत्=उवाच, देव=राजन्, तीर्थयात्राभिलाषेण=पवित्रप्रदेशपरिभ्रमणमनोरथेन, कावेरीतीरं=कावेरीतटम्, अहं=शिष्यः, आगतः=प्राप्तः तत्र=तटे, विलोलालकं=चञ्चलचूर्णकुन्तलम्, बालकं=कुमारम्, निजोत्सङ्गतले=निजक्रोडमध्यभागे, निधाय=संस्थाप्य, रुदतीं=विलपन्तीम्, स्थविरां=वृद्धाम्, एकां=काञ्चित्, विलोक्य=दृष्ट्वा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवोचम्=अवदम्, स्थविरे=वृद्धे, का त्वम्=त्वं कासि, नयनानन्दकरः=नेत्रानन्दजनकः, अयं=एषः, अर्भकः=शिशुः, कस्य=कस्य पुंसः, कान्तारं=दुर्गमं मार्गम्, किमर्थं=केन प्रयोजनेन, आगता=आयाता, शोककारणं=दुःखकारणम्, किम्=किं वर्तते, इति=एवम् ।

टिप्पणी—वामदेवान्तेवासी–वामदेवस्य अन्तेवासी (तत्पुरुष); 'छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये' इत्यमरः । तदाश्रमवासी–तस्य आश्रमे वसतीति–तदाश्रमवासी । समाराधितदेवकीर्तिम्–देवानां कीर्तिः देवकीर्तिः, समाराधिता देवकीर्तिः येन तम् (बहुव्रीहि) । समाराधित–सम्+आ+राध्+क्त । निर्भर्त्सितमारमूर्तिं–मारस्य मूर्तिः–मारमूर्तिः, निर्भर्त्सिता मारमूर्तिः येन तम् (बहुव्रीहि) । मारः–कामदेव; मृ+घञ्; 'मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः' इत्यमरः । कुसुमसुकुमारम्–कुसुमानि इव सुकुमारः तम्; 'प्रसूनं कुसुमं सुमम्' इत्यमरः । अवगमय्य–अव+गम्+णिच्+क्त्वा→ल्यप् । अवादीत्–वद् धातु लुङ् लकार प्र० पु० ए० व० । तीर्थयात्राभिलाषेण–तीर्थयात्रायाः अभिलाषः तेन (तत्पुरुष); 'कामोऽभिलाषः तर्षश्च' इत्यमरः । कावेरीतीरम्–कावेर्याः तीरम् (तत्पुरुष) । आगतः–आ+गम्+क्त । विलोलालकम्–विलोलाः अलकाः यस्य तम् (बहुव्रीहि); 'अलकाश्चूर्णकुन्तलाः' इत्यमरः । रुदतीम्–रुद्+शतृ+ङीप् । विलोक्य–वि+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । नयनानन्दकरः–करोतीति करः, आनन्दस्य करः–आनन्दकरः नयनयोः आनन्दकरः (तत्पुरुष) । अर्भकः–बालक; 'पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः' इत्यमरः । कान्तार–दुर्गम मार्ग; 'कान्तारं वर्त्म दुर्गमम्' इत्यमरः । शोककारणम्–शोकस्य कारणम् (तत्पुरुष) ।

सा करयुगेन वाष्पजलमुन्मृज्य निजशोकशङ्कूत्पाटनक्षममिव मामवलोक्य शोकहेतुमवोचत्–'द्विजात्मज ! राजहंसमन्त्रिणः सितवर्मणः कनीयानात्मजः सत्यवर्मा तीर्थयात्रामिषेण देशमेनमागच्छत् । स कस्मिंश्चिदग्रहारे कालीं नाम कस्यचिद् भूसुरस्य नन्दिनीं विवाह्य तस्य अनपत्यतया गौरीं नाम तद्भगिनीं काञ्चनकान्तिं परिणीय तस्यामेकं तनयमलभत । काली सासूयमेकदा धात्र्या मया सह बालमेनमेकेन मिषेणानीय तटिन्यामेतस्यामक्षिपत् । करेणैकेन बाल-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुद्धृत्यापरेण प्लवमाना नदीवेगागतस्य कस्यचित्तरोः शाखामवलम्ब्य तत्र शिशुं निधाय नदीवेगेनोह्यमाना केनचित्तरुलग्नेन कालभोगिनाहमदंशि। मदवलम्बीभूतो भूरुहोऽयमस्मिन्देशे तीरमगमत्। गरलस्योद्दीपनतया मयि मृतायामरण्ये कश्चन शरण्यो नास्तीति मया शोच्यते' इति।

हिन्दी-अनुवाद—उसने अपने दोनों हाथों से अश्रुजल को पोंछकर मुझे मानों अपने शोकरूपी शंकु (कील) को उखाड़ने (निवारण करने) में समर्थ समझ कर अपने दुःख का कारण कहा—हे ब्राह्मणपुत्र ! महाराज राजहंस के मन्त्री सितवर्मा का छोटा पुत्र सत्यवर्मा तीर्थयात्रा के बहाने से इस देश में आया। उसने किसी अग्रहार (ब्राह्मणों को दान के रूप में दिये गए ग्राम) में किसी ब्राह्मण की काली नाम की लड़की से विवाह कर, उसके निःसन्तान होने के कारण स्वर्ण के सदृश कान्तिवाली उसकी गौरी नाम की बहन के साथ विवाह कर, उससे एक पुत्र प्राप्त किया। एक दिन काली ने ईर्ष्या के कारण मुझ दायी के साथ इस बालक को किसी बहाने से यहाँ लाकर इस नदी में डाल दिया। एक हाथ से बालक को ऊपर उठाकर तथा दूसरे से तैरती हुयी मैं, नदी के वेग से बहकर आये हुए किसी वृक्ष की शाखा का सहारा लेकर और उस पर बालक को रखकर नदी के वेग के द्वारा बहती हुयी आ रही थी कि उस वृक्ष में लिपटे हुए काले सर्प ने मुझे डस लिया। मेरा आश्रय-भूत यह वृक्ष इस देश में किनारे पर आ गया। विष की प्रचण्डता के कारण मेरे मर जाने पर इस जंगल में (इस बालक का) कोई रक्षक नहीं है, मेरे द्वारा यही सोचा जा रहा है अर्थात् मेरे शोक का यही कारण है।

संस्कृत-व्याख्या—सा=वृद्धा, करयुगलेन=पाणियुगलेन, बाष्पजलं=बाष्पसलिलम्, उन्मृज्य=प्रोञ्छ्य, निजशोकशङ्कूत्पाटनक्षमम्=स्वदुःखकील-निष्कासनसमर्थम्, इव, माम्=वामदेवशिष्यम्, अवलोक्य=विलोक्य, शोक-हेतुं=दुःखकारणम्, अवोचत्=अवदत्। द्विजात्मज=विप्रसुत, राजहंस-मन्त्रिणः=राजहंसाख्यामात्यस्य, सितमन्त्रिणः=सितवर्माख्यस्य, कनीयान्=कनिष्ठः, आत्मजः=तनयः, सत्यवर्मा=एतदाख्यः, तीर्थयात्रामिषेण=तीर्थ-यात्राव्याजेन, एनं देशं=अमुं प्रदेशम्, आगच्छत्=आव्रजत्। सः=सत्यवर्मा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कस्मिंश्चित्=एकस्मिन्, अग्रहारे=स्थानविशेषे, कस्यचित् एकस्य, भूसुरस्य=विप्रस्य, नन्दिनीं=पुत्रीं, कालीं नाम=कालीनामधेयाम्, विवाह्य=परिणीय, तस्याः=काल्याः, अनपत्यतया=निःसंतानतया, काञ्चनकान्ति=सुवर्णप्रभाम्, तद्भगिनीं=तस्याः सहोदरीम्, गौरीं नाम=गौरीनामधेयाम्, परिणीय=विवाह्य, तस्यां=गौर्याम्, एकं तनयं=एकं सुतम्, अलभत=लेभे। एकदा=एकस्मिन् समये, काली=एतदाख्या, सासूयं=असूयासहितम्, धात्र्या=उपमात्रा, मया सह=वृद्धया सह, एनं बालम्=अमुं बालकम्, एकेन=केनचित्, मिषेण=व्याजेन, एतस्यां=अस्याम्, तटिन्यां=नद्याम्, आनीय=नीत्वा, अक्षिपत्=चिक्षेप। एकेन करेण=एकेन हस्तेन, बालं=शिशुम्, उद्धृत्य=उपरि धारयित्वा, अपरेण=अन्येन पाणिना, प्लवमाना=तरन्ती, नदीवेगागतस्य=नदीप्रवाहप्राप्तस्य, कस्यचित्=एकस्य, तरोः=वृक्षस्य, शाखां=काण्डम्, अवलम्ब्य=आश्रित्य, नदीवेगेन=नदीप्रवाहेण, ऊह्यमाना=नीयमाना, केनचित्=एकेन, तरुलग्नेन=वृक्षलग्नेन, कालभोगिना=कालसर्पेण, अहं=वृद्धा, अदंशि=दष्टा। मदवलम्बीभूतः=मदाश्रयीभूतः, भूरुहः=वृक्षः, अयं=एषः, अस्मिन् देशे=एतस्मिन् प्रदेशे, तीरं=तटम्, अगमत्=अगच्छत्। गरलस्य=विषस्य, उद्दीपनतया=प्रवृद्धया, मयि=वृद्धायाम्, मृतायां=पञ्चत्वं गतायाम्, कश्चन=कोऽपि, शरण्यः=रक्षकः, नास्ति=न वर्तते, इति=हेतोः, मया=वृद्धया, शोच्यते=विचार्यते।

टिप्पणी—उन्मृज्य-उत्+मृज्+क्त्वा→ल्यप्। निजशोकशङ्कूत्पाटनक्षमम्-निजस्य शोकः, स एव शङ्कुः, तस्य उत्पाटने क्षमम् (तत्पुरुष)। 'शङ्कावपि द्वयोः कीलः, इत्यमरः। राजहंसमन्त्रिणः-राजहंसस्य मन्त्रिणः (तत्पुरुष)। तीर्थयात्रामिषेण-तीर्थस्य यात्रा, तस्याः मिषेण (तत्पुरुष)। अग्रहारे=राजा के द्वारा ब्राह्मण को दान के रूप में दिये गए ग्राम में। विवाह्य-वि+वह्+णिच्+क्त्वा→ल्यप्। अनपत्यतया-अविद्यमानमपत्यं यस्यः सः, तस्य भावस्तत्ता तया-अनपत्य+तल्+टाप्। काञ्चनकान्ति-काञ्चनस्य कान्तिरिव कान्तिर्यस्यस्ताम् (बहुव्रीहि)। परिणीय-परि+नी+क्त्वा→ल्यप्। 'मया सह' यहाँ 'सह' के योग में तृतीया हुयी है। उद्धृत्य-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्+धृ+क्त्वा→ल्यप् । प्लवमाना–प्लव्+शानच्+टाप् । नदीवेगागतस्य–नद्याः वेगः, तेनागतस्तस्य (तत्पुरुष) । निधाय–नि+धा+क्त्वा→ल्यप् । उह्यमाना–वह्+यक्+शानच् । मदवलम्बीभूतः–मम अवलम्बीभूतः (तत्पुरुष) । अवलम्बीभूतः–अवलम्ब+च्वि+भू+क्त । उद्दीपनतया–उत्+दीप्+ल्युट्+तल्+टाप् तृ० ए० व० । शरण्यः–शरण+यत् । 'निज……क्षममिव' में रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलङ्कार हैं ।

ततो विषमविषोल्बणज्वालावलीढावयवा सा धरणीतले न्यपतत् । दयाविष्टहृदयोऽहं मन्त्रबलेन विषव्यथामपनेतुमक्षमः समीपकुञ्जेष्वौषधिविशेषमन्विष्य प्रत्यागतो व्युत्क्रान्तजीवितां तां व्यलोकयम् ।

हिन्दी-अनुवाद––तत्पश्चात् भयङ्कर विष की ज्वाला से व्याप्त शरीरावयववाली वह (वृद्धा) पृथ्वी पर गिर पड़ी । दया की भावना से आक्रान्त हृदय वाले मैंने मन्त्र के बल से उसकी विष पीड़ा को दूर करने में असमर्थ होकर सपीप के कुञ्जों में औषधि विशेष का अन्वेषण कर लौटे हुए (मैंने) प्राणों से रहित उस वृद्धा को देखा ।

संस्कृत-व्याख्या––ततः=तदनन्तरम्, विषमविषोल्बणज्वालावलीढावयवा=असमगरलप्रव्यक्तज्वालाभिव्याप्तावयवा, सा=वृद्धा, धरणीतले=भूतले, न्यपतत्=अपतत् । दयाविष्टहृदयः=कृपाक्रान्तचेतः, अहं=वामदेवशिष्यः, मन्त्रबलेन=मन्त्रशक्त्या, विषव्यथां=विषपीड़ाम्, अपनेतुं=दूरीकर्तुम्, अक्षमः=असमर्थः, समीपकुञ्जेषु=सन्निकटनिकुञ्जेषु, औषधिविशेषं=सर्पविषविनाशकौषधम्, अन्विष्य=अन्वेषणं कृत्वा, प्रत्यागतः=प्राप्तः, व्युत्क्रान्तजीवितां=पञ्चत्वं गताम्, तां=वृद्धाम्, व्यलोकयम्=अपश्यम् ।

टिप्पणी––विषम……अवयवा–विषस्य उल्बणज्वाला विषोल्बणज्वाला, विषमा चासौ विषोल्बणज्वाला, तया अवलीढाः अवयवाः यस्याः सा तथाभूता (बहुव्रीहि) । उल्बण–स्पष्ट, 'स्फुटं प्रव्यक्तमुल्बणम्' इत्यमरः । अवलीढ–अव+लिह्+क्त । दयाविष्टहृदयः–दयया आविष्टं हृदयं यस्य सः (बहुव्रीहि); 'कृपा दयानुकम्पा च' इत्यमरः । अपनेतुं–अप+नी+तुमुन् । प्रत्यागतः–

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रति+आ+गम्+क्त । व्युत्क्रान्तजीविताम्-व्युत्क्रान्तं जीवितं यस्याः सा ताम् ((बहुव्रीहि) ।

तदनु तस्याः पावकसंस्कारं विरच्य शोकाकलचेता बालमेनमगतिमादाय सत्यवर्मवृत्तान्तश्रवणवेलायां तन्निवासाग्रहारनामधेयस्याश्रुततया तदन्वेषणमशक्यमित्यालोच्य भवदमात्यतनयस्य भवानेवाभिरक्षितेति भवन्तमेनमनयम् इति ।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् उसका अग्निसंस्कार करके, शोक से व्याकुल चित्तवाला मैं इस असहाय बालक को लेकर सत्यवर्मा के वृत्तान्त के सुनने के अवसर पर उसके निवासस्थान अग्रहार (ग्राम) के न सुन पाने के कारण, उसका अन्वेषण असम्भव है, ऐसा विचारकर 'अपने मन्त्री के पुत्र के आप ही रक्षक हैं, इस कारण से इसे आपके पास ले आया हूँ ।

संस्कृत-व्याख्या—तदनु=तत्पश्चात्, तस्याः=वृद्धायाः, पावकसंस्कारं=दाहकर्म, विरच्य=रचयित्वा, शोकाकुलचेता=दुःखाभिभूतचित्ता, एनं बालं=अमु शिशुम्, अगतिं=अनाथमिति कृत्वा, आदाय=गृहीत्वा, सत्यवर्मवृत्तान्तश्रवणवेलायां=सत्यवर्मवार्ताश्रवणसमये, तन्निवासाग्रहारनामधेयस्य=तन्निवासाग्रहाराभिधानस्य, अश्रुततया=अनाकर्णितया, तदन्वेषणं=तन्मार्गणम्, अशक्यं=असाध्यम्, इति=एवम्, आलोच्य=विचार्य, भवदमात्यतनयस्य=भवन्मन्त्रिपुत्रस्य, भवान्=श्रीमान् एव, अभिरक्षिता=परिपालकः, इति=इत्थम्, भवन्तं=श्रीमन्तम्, प्रति, एनं=शिशुम्, अनयम्=आनीतवान्, इति=एवम् ।

टिप्पणी—पावकसंस्कारम्—पावकेन संस्कारम् (तत्पुरुष); 'आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः' इत्यमरः । विरच्य—वि+रच्+क्त्वा→ल्यप् । शोकाकुलचेता—शोकेन आकुलं चेतः यस्य सः (बहुव्रीहि) । अगतिम्—नास्ति गतिः यस्य तम्—(नञ्) अ+गम्+क्तिन् । सत्य·········वेलायां—सत्यवर्मणः वृत्तान्तः—सत्यवर्मवृत्तान्तः, तस्य वेला, तस्याम् (तत्पुरुष) । तन्नि·········धेयस्य—तस्य निवासः, स एवाग्रहारः, तस्य नामधेयं तस्य (तत्पुरुष); 'आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च' इत्यमरः । आलोच्य— आ+लोच्+क्त्वा→

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ल्यप् । भवदमात्यतनयस्य—भवतः अमात्यः, तस्य तनयः तस्य (तत्पुरुष) । अभिरक्षिता—अभि+रक्ष्+तृच् प्र० ए० व० ।

तन्निशम्य सत्यवर्मस्थितेः सम्यगनिश्चिततया खिन्नमानसो नरपतिः सुमतये मन्त्रिणे सोमदत्तं नाम तदनुजतनयमर्पितवान् । सोऽपि सोदरमागतमिव मन्यमानो विशेषेण पुपोष ।

हिन्द-अनुवाद—ऐसा सुनकर सत्यवर्मा की स्थिति सम्यक् रूप से निश्चित न होने के कारण खिन्न चित्तवाले राजा राजहंस ने अपने सुमति नामक मन्त्री को उसके छोटे भाई के सोमदत्त नामक पुत्र को सौंप दिया । सुमति ने भी आये हुए सहोदर के समान मानते हुए उसका विशेष रूप से पालन-पोषण किया ।

संस्कृत-व्याख्या—तत्=पूर्वोक्तम्, निशम्य=श्रुत्वा, सत्यवर्मस्थितेः= सत्यवर्मावस्थानस्य, सम्यक्=साधु, अनिश्चिततया=अनिर्णीततया, खिन्नमानसः=पीडितचेतः, नरपतिः=भूपतिः, सुमतये=एतदाख्याय, मन्त्रिणे= अमात्याय, सोमदत्तं नाम=सोमदत्ताख्यम्, तदनुजतनयं=तदनुजसुतम्, अर्पितवान्=दत्तवान् । सोऽपि=सुमतिरपि, आगतं=प्राप्तम्, सोदरमिव= अनुजमिव, मन्यमानः = अनुभवन्, विशेषेण = अतिशयेन, पुपोष = अपुषत् ।

टिप्पणी—निशम्य—नि+शम्+क्त्वा→ल्यप् । सत्यवर्मस्थितेः—सत्यवर्मणः स्थितेः (तत्पुरुष) । खिन्नमानसः—खिन्नं मानसं यस्य सः (बहुव्रीहि) । तदनुजतनयं—तस्य अनुजस्य तनयम् (तत्पुरुष) । मन्यमानः—मन्+शानच् । पुपोष— 'पुष्' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व० । 'सोदरमागतमिव' में उत्प्रेक्षालङ्कार ।

एवं मिलितेन कुमारमण्डलेन सह बालकेलीरनुभवन्नधिरूढानेकवाहनो राजवाहनोऽनुक्रमेण चौलोपनयनादिसंस्कारजातमलभत ।

हिन्दी-अनुवाद—इस प्रकार (पूर्वोक्त प्रकार) से मिले हुए कुमारमण्डल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के साथ बालक्रीड़ा का अनुभव करते हुए, अनेक वाहनों पर आरूढ़ हो चुकने वाले राजवाहन ने क्रमशः चूड़ाकर्म और उपनयन आदि संस्कारों को प्राप्त किया ।

संस्कृत-व्याख्या—एवं=पूर्वोक्तप्रकारेण, मिलितेन=सम्मिलितेन, कुमारमण्डलेन=कुमारसमूहेन, सह=समम्, बालकेलीः=शिशुजनोचितक्रीडाः, अनुभवन्=अनुभवं कुर्वन्, अधिरूढानेकवाहनः=आरूढविविधवाहनः, राजवाहनः=एतदाख्यः, अनुक्रमेण=यथाक्रमम्, चौलोपनयनादिसंस्कारजातं=चूडाकरणयज्ञोपवीतादिसंस्कारसमूहम्, अलभत=अविन्दत ।

टिप्पणी—मिलित–मिल्+क्त । बालकेलीः–बालानां केलीः (तत्पुरुष) । 'द्रवकेलिपरीहासाः क्रीड़ा लीला च नर्म च' इत्यमरः । अधिरूढानेकवाहनः–अनेकानि च तानि वाहनानि–अनेकवाहनानि, अधिरूढानि अनेकवाहनानि येन सः (बहुव्रीहि) । अधिरूढ–अधि+रुह्+क्त । चौलो..........जातम्–चौलोपनयनादीनां संस्काराणां जातम् (तत्पुरुष) । चूडाकरण, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन आदि संस्कार । संस्कार–भारतीय जनजीवन में संस्कारों का विशेष महत्त्व है । संस्कारों की उपयोगिता बतलाते हुए आचार्य मनु कहते हैं कि 'गर्भ शुद्धिकारक हवन, चूडाकरण (मुण्डन) तथा मौञ्जीबन्धन (यज्ञोपवीत) संस्कारों से द्विजों के वीर्य एवं गर्भ से उत्पन्न दोष नष्ट हो जाते हैं–"गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौलमौञ्जीनिबन्धनैः । बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते ॥" चूडाकरण–चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः । प्रथमेऽब्दे तृतीये वा कर्त्तव्यं श्रुतिचोदनात् ॥ उपनयन–गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम् । गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः ॥

ततः सकललिपिज्ञानं निखिलदेशीयभाषापाण्डित्यं षडङ्गसहितवेदसमुदायकोविदत्वं काव्यनाटकाख्यानकाख्यायिकेतिहासचित्रकथासहितपुराणगणनैपुण्यं धर्मशब्दज्योतिस्तर्कमीमांसादिसमस्तशास्त्रनिकरचातुर्यं कौटिल्यकामन्दकीयादिनीतिपटलकौशलं वीणाद्यशेषवाद्यदाक्ष्यं संगीतसाहित्यहारित्वं मणिमन्त्रौषधादिमायाप्रपञ्चचुञ्चुत्वं मातङ्गतुरङ्गादिवाहनारोहणपाटवं विविधायुधप्रयोगचणत्वं चौर्यदुरोदरादिकपटकलाप्रौढत्वं च तत्तदाचार्येभ्यः सम्यग्लब्ध्वा यौवनेन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलसन्तं कृत्येषु अनलसं तं कुमारनिकरं निरीक्ष्य महीवल्लभः सः 'अहं शत्रुजनदुर्लभः' इति परमानन्दमनन्दमविन्दत ।

हिन्दी-अनुवाद--तत्पश्चात् समस्त लिपियों का ज्ञान, सभी देशों की भाषाओं का पाण्डित्य, छः अङ्गों के सहित वेदों के समुदाय में कोविदत्व (विद्वत्ता), काव्य, नाटक, आख्यानक, आख्यायिका, इतिहास और चित्रकथा के साथ पुराणों में निपुणता, धर्मशास्त्र, शब्दशास्त्र (व्याकरण), ज्योतिःशास्त्र, तर्कशास्त्र और मीमांसा आदि सभी शास्त्रों में चतुरता, कौटिल्य और कामन्दक आदि आचार्यों के द्वारा रचित नीतिशास्त्रों के समूह में कौशल, वीणा आदि समस्त वाद्यों में दक्षता, संगीत तथा साहित्यशास्त्र में मनोहरता, मणि, मन्त्र, और औषध आदि के द्वारा विहित माया के प्रपञ्च में पटुता, हाथी, घोड़ा आदि वाहनों के आरोहण में निपुणता, विविध प्रकार के आयुधों के प्रयोग में कुशलता और चोरी तथा जुआ आदि कपटपूर्ण कलाओं में प्रौढ़ता को उन-उन आचार्यों से भलीभाँति प्राप्तकर चुकने वाले, युवावस्था से सुशोभित एवं कार्यों में आलस्यरहित उस कुमारमण्डल को देखकर उन महाराज राजहंस ने 'मैं सब शत्रुओं के लिए दुर्लभ (अजेय) हूँ' यह विचारकर अत्यधिक आनन्द प्राप्त किया ।

संस्कृत-व्याख्या---ततः=तत्पश्चात्, सकललिपिज्ञानं=समस्तलिपिपरिचयः, निखिलदेशीयभाषापाण्डित्यं=सकलदेशीयभाषावैदग्ध्यम्, षडङ्गसहितवेदसमुदायकोविदत्वं=षडङ्गसहितवेदसमूहपाण्डित्यम्, काव्यनाटकाख्यानकाख्यायिकेतिहासचित्रकथासहितपुराणगणनैपुण्यं= विविधकाव्यरूपककथानकाख्यायिकापुरावृत्तचित्रकथायुक्तपुराणगणपाटवम्, धर्मशब्दज्योतिस्तर्कमीमांसादिसमस्तशास्त्रनिकरचातुर्यं = धर्मशास्त्रव्याकरणज्योतिस्तर्कमीमांसादिनिखिलशास्त्रसमहनैपुण्यम्, कौटिल्यकामन्दकीयादिनीतिपटलकौशलं=चाणक्यकामन्दकीयादिनीतिशास्त्रसमूहचातुर्यम्, वीणाद्यशेषवाद्यदाक्ष्यं=वल्लक्यादिसमस्तवाद्यनैपुण्यम्, संगीतसाहित्यहारित्वं=गायनादिसंगीतसाहित्यमनोहारित्वम्, मणिमन्त्रौषधादिमायाप्रपञ्चचुञ्चुत्वं = मणिमन्त्रौषधादिमायाप्रयोगप्रख्यातत्वम्, मातङ्गतुरङ्गादिवाहनारोहणपाटवं=गजाश्वादियानपटुत्वम्, विविधा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युधप्रयोगचणत्वं=बहुप्रकारास्त्रपरिचालनप्रख्याततत्वम्, चौर्यदुरोदरादिकपट-कलाप्रौढ़त्वं=चौर्यद्यूतक्रीडादिकपटकलानैपुण्यम्, च=अपि, तत्तदाचार्येभ्यः=तत्तत्शास्त्रकुशलेभ्यः गुरुभ्यः, सम्यक्=साधु, लब्ध्वा=प्राप्य, यौवनेन=तारुण्येन, विलसन्तं=सुशोभमानम्, कृत्येषु=कार्येषु, अनलसं=आलस्यरहि-तम्, तं=पूर्वोक्तम्, कुमारनिकरं=शिशुसमूहम्, निरीक्ष्य=वीक्ष्य, महीवल्लभः=भूपतिः, सः=राजहंसः, अहं=प्रसिद्धः, शत्रुजनदुर्लभः=अरिसमूहाजेयः, इति=एवम्, परमानन्दम्=अविर्चनीयं सुखम्, अलभत=लेभे ।

टिप्पणी—सकललिपिज्ञानम्–सकलाश्च ताः लिपयः, तासां ज्ञानम् (तत्पुरुष) । निखिलदेशीयभाषापाण्डित्यं–निखिलदेशीयाश्च ताः भाषाः, तासां पाण्डित्यम् (तत्पुरुष) ; पण्डित+ष्यञ्=पाण्डित्यम् ; 'धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पण्डितः कविः, इत्यमरः । षडङ्ग······कोविदत्वम्–वेदानां समुदायः-वेदसमुदायः, षडङ्गैः सहितः यः वेदसमुदायः, तस्य कोविदत्वम् (तत्पुरुष); वेदसमुदाय–वेद चार हैं–१. ऋग्वेद, २. यजुर्वेद, ३. सामवेद और २. अथर्ववेद । कोविदत्वम्–कोविद+त्वल् ; 'विद्वान् विपश्चिद् दोषज्ञः सन् सुधी कोविदो बुधः' इत्यमरः । षडङ्ग–वेद के छः अङ्ग । छः अङ्ग इस प्रकार हैं–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष । काव्य··· ··नैपुण्यम्–काव्यानि च नाटकानि च आख्यानकानि च आख्यायिकाश्च इतिहासाश्च चित्र कथाश्च तः सहितः यः पुराणगणः, तस्मिन् नैपुण्यम् (तत्पुरुष) । काव्य–'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' रसात्मक वाक्य को 'काव्य' कहते हैं । नाटक–'नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम् । विलासर्द्ध्यादिगुणवद्युक्तं नानाविभूतिभिः ॥ पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्तिताः । प्रख्यातवंशो राजर्षिर्धीरोदात्तः प्रतापवान् ॥ दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान् नायको मतः एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा ॥ अङ्गमन्ये रसाः सर्वे कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः । आख्यानक–एक विशेष प्रकार का गद्यकाव्य । आख्यायिका–ऐतिहासिक कथात्मक गद्यकाव्य । लक्षण इस प्रकार है–'आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशानुकीर्तनम् । अस्यामन्यकवीनाञ्च वृत्तं पद्यं क्वचित् क्वचित् ॥ कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते । आर्या वक्त्रापवक्त्रणां छन्दसा येन केनचित् ॥ अन्यापदेशेनाश्वास-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुखे भाव्यर्थसूचनम् ।' इतिहास–पूर्वकाल में बीती हुयी कथा को इतिहास कहते हैं। 'इतिहासः पुरावृत्तम् ।' इत्यमरः। चित्रकथा–अद्‌भुत कथा । पुराण–'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चव पुराणं पञ्च-लक्षम् ॥' नैपुण्यं–निपुण + ष्यञ् । धर्म.....चातुर्यम्–धर्मश्च शब्दश्च ज्योतिश्च-तर्कश्च मीमांसा च ताः आदयो येषां ते समस्तशास्त्रनिकराः, तेषु चातुर्यम् । चातुर्यम्–चतुर + ष्यञ् । धर्म–धर्मशास्त्र । शब्द–व्याकरण । कौटिल्य...कौश-लम्–कौटिल्यं च कामन्दकीयं च, ते आदिनी येपां नीतिपटलानां, तेषु कौश-लम् (तत्पुरुष) । कौशलं–कुशल + अण् । वीणा...दाक्ष्यम्–वीणादीनि यानि अशेषाणि वाद्यानि तेषु दाक्ष्यम् (तत्पुरुष); दक्ष + ष्यञ् । संगीत.....-हारित्वम्–संगीतञ्च साहित्यञ्च, तयोः हारित्वम् (तत्पुरुष) । मणि......चुञ्चुत्वं–मणिश्च मन्त्रश्च औषधञ्च इति, मणिमन्त्रौषधानि आदीनि यस्य ताभिर्यो मायाप्रपञ्चः, तेन वित्तः तस्य भावः । मातङ्ग.....पाटवम्–मातङ्ग-तुरङ्गादीनि यानि वाहनानि, तेषामरोहणम्, तस्मिन् पाटवम् (तत्पुरुष) । पाटवम्–पटु + अण् । विविधा.....चणत्वम्–विविधानि यानि आयुधानि, तेषां प्रयोगः, तेन वित्तः, तस्य भावः । प्रयोगचणत्वं–प्रयोग + चणप् + त्वल् । प्रपञ्चचुञ्चुत्वं–प्रपञ्च + चुञ्चुप् + त्वल् । चौर्य...प्रौढत्वम्–चौर्यदुरोदरादयः याः कपटकलाः, तासु प्रौढत्वम् (तत्पुरुष) । प्रौढत्वम्–प्रौढ़ + त्वल् । लब्ध्वा–लभ् + क्त्वा । विलसन्तं–वि + लस् + शतृ । निरीक्ष्य–निर् + ईक्ष् + क्त्वा → ल्यप् । परमानन्दम्–परमश्चासौ आनन्दः तम् (कर्मधारय) । अविन्दत–विन्द् (विद्‌लृ) धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व० । यहाँ कुमारों की सर्वशास्त्रा-भिज्ञता बतलायी गयी है । अनुप्रास अलङ्कार की छटा विलोकनीय है ।

प्रथमोच्छ्‌वास समाप्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वितीयोच्छ्वासः

वामदेवस्य सम्मतिः

अथैकदा वामदेवः सकलकलाकुशलेन कुसुमसायकसंशयितसौन्दर्येण कल्पितसोदर्येण साहसापहसितकुमारेण सुकुमारेण जयध्वजातपवारणकुलिशाङ्कितकरेण कुमारनिकरेण परिवेष्टितं राजानमानतशिरसं समभिगम्य तेन तां कृतां परिचर्यामङ्गीकृत्य निजचरणकमलयुगलमिलन्मधुकरायमाणकाकपक्षं विदलिष्यमाणविपक्षं कुमारचयं गाढमालिङ्ग्य मितसत्यवाक्येन विहिताशीरभ्यभाषत—

हिन्दी-अनुवाद—इसके अनन्तर एक दिन वामदेव सभी कलाओं में कुशल, सौन्दर्य के द्वारा कामदेव को सन्देह में डाल देने वाले, परस्पर भ्रातृभाव को रखने वाले, शौर्य के द्वारा कार्तिकेय का उपहास करने वाले, जयध्वज, छत्र, वज्र के चिह्न से चिह्नित हाथों वाले, सुकुमार कुमारों से घिरे हुए, (प्रणाम के लिए) शिर झुकाये हुए राजा राजहंस के समीप गये। उनके द्वारा की गयी सेवा को स्वीकार कर अपने चरण-कमलों पर गिरते हुए भौरों के समान काले लम्वे वालों वाले और भविष्य में शत्रुओं के विनाश करने की इच्छा रखने वाले कुमारसमूह को अत्यधिक प्रेम से आलिङ्गन कर परिमित और सत्य-वचनों के द्वारा आशीर्वाद देकर वोले—

संस्कृत-व्याख्या—अथ=अनन्तरम्, एकदा=एकस्मिन् दिने, वामदेवः=एतदाख्यो महर्षिः, सकलकलाकुशलेन=समस्तकलानिपुणेन, कुसुमसायकसंशयितसौन्दर्येण=कामदेवसंदिग्धसुन्दरशरीरेण, कल्पितसोदर्येण=विरचितभ्रातृभावेन, सहसापहसितकुमारेण=साहसावहेलितपार्वतीनन्दनेन, सुकुमारेण=कोमलेन, जयध्वजातपवारणकुलिशाङ्कितकरेण=विजयपताकातपत्रवज्रविभूषितपाणिना, कुमारनिकरेण=कुमारसंघेन, परिवेष्टितं=परितः व्याप्तम्, आनत-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिरसं=प्रणतमस्तकम्, राजानं=नृपतिम्, समभिगम्य=उपसृत्य, तेन=नृपतिना, कृतां=विहिताम्, तां परिचर्यां=सेवाम्, अङ्गीकृत्य=स्वीकृत्य, निजचरणकमलयुगलमिलन्मधुकरायमाणकाकपक्षं=स्वकीयपादपद्मयुगलसंगच्छद्भ्रमरायमाणशिखण्डकम्, विदलिष्यमाणविपक्षं=विदलिष्यमाणशत्रुपक्षम्, कुमारचयं=शिशुसंघम्, गाढ़ं=दृढम्, आलिङ्ग्य=आश्लिष्य, मितसत्यवाक्येन=परिमिततथ्यवचसा, विहिताशीः=दत्ताशीः, अभ्यभाषत=अवदत् ।

टिप्पणी—एकदा–एकस्मिन् काले–एक+दा । सकलकलाकुशलेन–सकलाश्च ताः कलाः, तासु कुशलेन (तत्पुरुष) । कुसुमसायकसंशयितसौन्दर्येण–कुसुमसायकेन संशयितं सौन्दर्यं यस्य तेन (बहुव्रीहि) । कल्पितसोदर्येण–कल्पितं सोदर्यं येन तादृशेन (बहुव्रीहि); सोदर्य–सोदर+यत् । साहसापहसितकुमारेण–साहसेन अपहसितः कुमारः येन तथाभूतेन (बहुव्रीहि); 'षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः' इत्यमरः । जय·· ··करेण–जयध्वजश्च आतपवारणञ्च कुलिशञ्चेति, तैः अङ्कितौ करौ यस्य तथोक्तेन (बहुव्रीहि); 'स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः' इत्यमरः । परिवेष्टितं–परि+वेष्ट्+क्त । आनतशिरसं–आनतं शिरः यस्य तम् (बहुव्रीहि) । समभिगम्य–सम्+अभि+गम्+क्त्वा→ल्यप् । निज ·····पक्षम्–निजं यत् चरणकमलयगलम्, तस्मिन् मिलन्तः मधुकरायमाणाः (मधुकराः इव आचरन्तः) काकपक्षाः यस्य तम् (बहुव्रीहि) । 'वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् । सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥' इत्यमरः । मधुकरायमाण–मधुकर+क्यङ्+शानच् । काकपक्ष–शिखण्डक, काले-काले लम्बे बालों वाला बालकों का जूड़ा । 'बालानान्तु शिखा प्रोक्ता काकपक्षः शिखण्डकः' इत्यमरः । विदलिष्यमाणविपक्षं–विदलिष्यमाणाः विपक्षाः येन तम् (बहुव्रीहि) । कुमारचयम्–कुमाराणां चयमिति (तत्पुरुष) । आलिङ्ग्य–आ+लिङ्ग्+क्त्वा→ल्यप् । मितसत्यवाक्येन–मितं सत्यं च यत् वाक्यं तेन (कर्मधारय); 'सत्यं तथ्यमृतं सम्यक्' इत्यमरः । अभ्यभाषत–'अभि+भाष्' लङ् लकार प्र० पु० ए० व० । यहाँ यमक तथा अनुप्रास का सौन्दर्य दर्शनीय है ।

'भूवल्लभ भवदीयमनोरथफलमिव समृद्धलावण्यं तारुण्यं नुतमित्रो भवत्पुत्रोऽनुभवति । सहचरसमेतस्य नूनमेतस्य दिग्विजयारम्भसमय एषः । तदस्य सकल-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्लेशसहस्य राजवाहनस्य दिग्विजयप्रयाणं क्रियताम्' इति ।

हिन्दी-अनवाद–हे राजन् ! प्रशंसित मित्रों वाला आपका पुत्र (राजवाहन) आपके मनोरथ के फल के समान बढ़े हुए सौन्दर्य से युक्त युवावस्था का अनुभव कर रहा है। मित्रों के सहित इसका यह दिग्विजय के प्रारम्भ का समय है। इसलिये सभी क्लेशों को सहन करने में सक्षम राजवाहन को दिग्विजय यात्रा के लिए भेजें।

संस्कृत-व्याख्या–भूवल्लभ=राजन्, भवदीयमनोरथफलमिव=श्रीमत्कामफलमिव, समृद्धलावण्यं=सुसम्पन्नसौन्दर्यम्, तारुण्यं=यौवनम्, नुतमित्रः=स्तुतमित्रः, भवत्पुत्रः=तव सुतः, अनुभवति=अनुभवं करोति। सहचरसमेतस्य=मित्रयुक्तस्य, एतस्य=राजवाहनस्य, नूनं=निश्चयेन, एकः=अयम्, दिग्विजयारम्भसमयः=आशाजयारम्भकालः। तत्=तस्मात् कारणात्, अस्य=एतस्य, सकलक्लेशसहस्य=समस्तदुःखसहनसक्षमस्य, राजवाहनस्य=एतदाख्यस्य, दिग्विजयप्रयाणं=दिग्विजयप्रस्थानम्, क्रियताम्=विधीयताम् इति।

टिप्पणी–भूवल्लभ–भुवः वल्लभः तत्सम्बद्धौ–भूवल्लभ। भवदीयमनोरथफलम्–भवदीयमनोरथस्य फलम् (तत्पुरुष)। समृद्धलावण्यं–समृद्धं लावण्यं यस्मिन् तत् (बहुव्रीहि); लावण्यं–लवण+ष्यञ्। लावण्य की परिभाषा–'मुक्ताफलेषु छायायास्तरलत्वमिवान्तरा। प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते॥ तारुण्यं–तरुण+ष्यञ्। नुतमित्रः–नुतानि मित्राणि यस्य सः (बहुव्रीहि)। भवत्पुत्र भवतः पुत्रः (तत्पुरुष)। सहचरसमेतस्य–सहचरैः समेतस्य (तत्पुरु[illegible]। दिग्विजयारम्भः–दिशां विजयः, तस्य आरम्भः (तत्पुरुष)। 'दिश[illegible]ुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः' इत्यमरः। दिग्विजयप्रयाणं–दिग्वि[illegible] प्रयाणम् (तत्पुरुष)। प्रयाणम्–प्र+या+ल्युट्।

कुमाराणां दिग्विजयप्रस्थानम्

कुमारा माराभिरामा रामाद्यपौरुषा रुषा भस्मीकृतारयो रयोपहसितसमीरणा रणाभियानेन यानेनाभ्युदयाशंसं राजानमकार्षुः। तत्साचिव्यमितरेषां विधाय समुचितां बुद्धिमुपदिश्य शुभे मुहूर्ते सपरिवारं कुमारं विजयाय विससर्ज।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी-अनुवाद—कामदेव के सदृश मनोहर, रामादि के समान पराक्रमी, क्रोध से शत्रुओं को भस्म करने वाले, अपने वेग से वायुवेग का उपहास करने वाले कुमारों ने अपनी रणाभिमुख यात्रा के द्वारा महाराज राजहंस को उन्नति की कामना वाला बनाया। राजा राजहंस ने राजवाहन की सहायता में अन्य कुमारों को लगाकर समुचित शिक्षा देकर शुभ मुहूर्त में सपरिवार कुमार (राजवाहन) को विजय के लिए विदा किया (भेज दिया)।

संस्कृत-व्याख्या—कुमाराः=बालकाः, माराभिरामा=कामदेववत् सुन्दराः, रामाद्यपौरुषाः=रामाद्यसामर्थ्यशालिनः, रुषा=क्रोधेन, भस्मीकृतारयः=विनाशितशत्रवः, रयोपहसितसमीरणाः=वेगोपहसितपवनाः, रणाभियानेन=युद्धाभियानेन, यानेन=यात्रया, अभ्युदयाशंसं=समुन्नत्याशसम्, राजानं=नृपम्, अकार्षुः=अकुर्वन्। तत्साचिव्यं=तत्साहाय्यम्, इतरेषां=अन्येषां कुमाराणाम्, विधाय=कृत्वा, समचितां=सुयोग्याम्, वुद्धि=ज्ञानम्, उपदिश्य=कथयित्वा, शुभे मुहूर्ते=मङ्गलमये काले, सपरिवारं=सपरिकरम्, कुमारं=राजवाहनम्, विजयाय=विजेतुम्, विससर्ज=प्रेषयामास।

टिप्पणी—माराभिरामाः=मारः इव अभिरामा; 'मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः' इत्यमरः। रामाद्यपौरुषाः=रामः आद्यः येषाम्, तेषां पौरुषम् इव पौरुषं येषां ते (बहुव्रीहि)। भस्मीकृतारयः—भस्मीकृताः अरयः यैः ते (बहुव्रीहि)। भस्मीकृतः—भस्म+च्वि+कृ+क्त। रयोपहसितसमीरणाः—रयेण उपहसितः समीरणः यैस्ते (बहुव्रीहि)। रय—वेग; 'रहस्तरसी तु रयः स्यदः। जवः' इत्यमरः। समीरण—पवन, 'समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः' इत्यमरः। रणाभियानेन—रणे यद् अभियानं तेन तादृशेन; अभियानं—अभि+या+ल्युट्। अभ्युदयाशसं—अभ्युदये आशंसा यस्य तादृशम् (बहुव्रीहि)। विधाय—वि+धा+क्त्वा→ल्यप्। उपदिश्य—उप+दिश्+क्त्वा→ल्यप्। विससर्ज—'वि+सृज' लिट् लकार प्र० पु० ए० व०।

मातङ्गसाक्षात्कारः

राजवाहनो मङ्गलसूचकं शुभशकुनं विलोकयन् देशं कञ्चिदतिक्रम्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विन्ध्याटवीमध्यमविशत् । तत्र हेतिहतिकिणाङ्कं कालायसकर्कशकायं यज्ञोपवीते-नानुमेयविप्रभावं व्यक्तकिरातप्रभावं लोचनपरुषं कमपि पुरुषं ददर्श ।

हिन्दी-अनुवाद--मङ्गलसूचक शुभशकुनों को देखता हुआ राजवाहन कुछ भूभाग को पारकर विन्ध्याटवी के मध्य में प्रविष्ट हुआ । वहाँ अस्त्रों के प्रहार से व्रण (घाव) के चिह्नों से युक्त, लोहे के समान कठोर शरीर वाले, यज्ञोपवीत के द्वारा अनुमित विप्रत्व वाले, अभिव्यक्त हो रहे किरात के प्रभाव वाले और डरावने नेत्रों वाले एक पुरुष को देखा ।

संस्कृत-व्याख्या--राजवाहनः=एतदाख्यः, मङ्गलसूचकं=शुभसंसूचकम्, शुभशकुनं=मङ्गललक्षणम्, विलोकयन=अवलोकयन् पश्यन्निति यावत्, कञ्चित् देशं=भूभागम्, अतिक्रम्य=उल्लंघ्य, विन्ध्याटवीमध्यं=विन्ध्याटवी-मध्यभागम्, अविशत्=प्राविशत् । तत्र=तस्मिन् प्रदेशे, हेतिहतिकिणाङ्कं=अस्त्रप्रहारव्रणाङ्कम्, कालायसकर्कशकायं=कृष्णलौहसदृशकठोरशरीरम्, यज्ञो-पवीतेन=यज्ञसूत्रेण, अनुमेयविप्रभावं=अनुमेयब्राह्मणत्वम्, व्यक्तकिरातप्रभावं=प्रकटितशवरप्रभावम्, लोचनपरुषं=नयनभयङ्करम्, कमपि पुरुषं=एकं पुरुषम्, ददर्श=अवलोकयामास ।

टिप्पणी--मङ्गलसूचकं-मङ्गलस्य सूचकम् (तत्पुरुष) । 'श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम्' इत्यमरः । विलोकयन्-वि+लोक्+शतृ । अतिक्रम्य-अति+क्रम्+क्त्वा→ल्यप् । हेतिहतिकिणाङ्कं-हेतीनां हत्या ये किणाः तेषाम् अङ्काः यस्य तम् (बहुव्रीहि) । हेति-अस्त्र; 'रवेर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः' इत्यमरः । हतिः-हन्+क्तिन् । कालायसकर्कशकायं-कालायसम् इव कर्कशं कायः यस्य तम् (बहुव्रीहि) । कालायसम्-लोहा; 'लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी । अश्मसारः' इत्यमरः । अनुमेयविप्रभावं-अनुमातुं योग्यः अनुमेयः, विप्रस्य भावः विप्रभावः, अनुमेयः विप्रभावः यस्य तम् (बहुव्रीहि) । व्यक्तकिरातप्रभावम्-व्यक्तः किरातप्रभावः येन तम् (बहुव्रीहि) । लोचनपरुषम्-लोचनाभ्यां परुषम् (तत्पुरुष) । ददर्श-'दृश्' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेन विहितपूजनो राजवाहनोऽभाषत–'ननु मानव, जनसङ्गरहिते मृगहिते घोरप्रचारे कान्तारे विन्ध्याटवीमध्ये भवानेकाकी किमिति निवसति ? भवदंसोपनीतं यज्ञोपवीतं भूसुरभावं द्योतयति। हेतिहतिभिः किरातरीतिरनुमीयते। कथय किमेतत्' इति।

हिन्दी-अनुवाद—उस पुरुष से पूजित राजवाहन बोला–हे मानव ! लोगों के सम्पर्क से रहित (निर्जन), पशुओं के लिए हितकर और भयङ्कर तथा दुर्गम मार्ग वाले इस विन्ध्यवन के मध्य में आप अकेले क्यों रह रहे हैं ? आपके कन्धे पर पड़ा हुआ यज्ञोपवीत (आपके) ब्रह्मणत्व को सूचित कर रहा है अर्थात् यज्ञोपवीत के द्वारा आप ब्राह्मण जान पड़ रहे हैं। आयुधों के प्रहार-चिह्नों से किरातों के सदृश व्यवहार दिखायी पड़ रहा है। बतलाइये यह क्या बात है ?

संस्कृत-व्याख्या—तेन=पूर्वोक्तपुरुषेण, विहितपूजनः=कृतसत्कारः, राजवाहनः=एतदाख्यः, अभाषत=अवदत्, ननु मानव=ननु पुरुष, जनसङ्गरहिते =लोकसम्पर्कशून्ये, मृगहिते=पशुहितकरे, घोरप्रचारे=भयङ्करसञ्चारे, कान्तारे=दुर्गममार्गे, विन्ध्याटवीमध्ये=विन्ध्यवनमध्यभागे, भवान्=त्वम्, एकाकी=एककः, किमिति=किमर्थम्, निवसति=निवासं करोति। भवदंसोपनीतं=तव स्कन्धेन धृतम्, यज्ञोपवीतं=यज्ञसूत्रम्, भूसुरभावं=विप्रत्वम्, द्योतयति=प्रकटयति। हेतिहतिभिः=अस्त्रप्रहारचिह्नैः, किरातरीतिः=शबरव्यवहारः, अनुमीयते=तर्क्यते। कथय=भण त्वमिति शेषः, एतत् किम्= किमिदम् ?

टिप्पणी—विहितपूजनः–विहितं पूजनं यस्य सः (बहुव्रीहि)। पूजनम्–पूज्+ल्युट्। जनसङ्गरहिते–जनानां सङ्गरहिते (तत्पुरुष)। मृगहिते–मृगाणां हिते (तत्पुरुष)। मृग–पशु; 'मृगः पशौ कुरङ्गे च करिनक्षत्रभेदयोः। अन्वेषणायां याच्ञायां मृगी तु वनितान्तरे॥' इति मेदिनी। मृग्यते इति–मृग्+घञ्=मृगः। घोरप्रचारे–घोरः प्रचारः यत्र तस्मिन् (बहुव्रीहि)। प्रचारः–प्र+चर्+घञ्। कान्तार–दुर्गम मार्ग; 'कान्तारं वर्त्म दुर्गमम्' इत्यमरः। भवदंसोपनीतम्–भवतः अंशेन उपनीतम् (तत्पुरुष)। अंस–कन्धा; 'स्कन्धो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भुजशिरोंसोऽस्त्री' इत्यमरः । यज्ञोपवीत–जनेऊ । यद्यपि यज्ञोपवीत ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को विहित माना गया है तथापि भिन्न-भिन्न उपादानों से निर्मित यज्ञोपवीत के द्वारा ब्राह्मणत्व आदि की पृथक् प्रतीति सम्भव है । तभी तो राजवाहन कहता है कि आपके कन्धे पर पड़ा हुआ यज्ञोपवीत ब्राह्मणत्व को प्रकट कर रहा है । मनुस्मृति में लिखा है कि ब्राह्मण का यज्ञोपवीत कपास का, क्षत्रिय का यज्ञोपवीत सन का और वैश्य का यज्ञोपवीत ऊन का होना चाहिए– कार्पासमुपवीतं स्याद्विप्रस्योर्ध्ववृतं त्रिवृत् । शणसूत्रमयं राज्ञो वैश्यस्याविकसौत्रिकम् ।। हेतिहतिभिः–हेतीनां हतिभिः (तत्पुरुष) । किरातरीतिः–किरातस्य रीतिः (तत्पुरुष) ।

'तेजोमयोऽयं मानुषमात्रपौरुषो नूनं न भवति' इति मत्वा स पुरुषस्तद्वयस्यमुखान्नामजनने विज्ञाय तस्मै निजवृत्तान्तमकथयत् 'राजनन्दन, केचिदस्यामटव्यां वेदादिविद्याभ्यासमपहाय निजकुलाचारं दूरीकृत्य सत्यशौचादिधर्मव्रातं परिहृत्य किल्बिषमन्विष्यन्तः पुलिन्दपुरोगमास्तदन्नमुपभुञ्जाना बहवो ब्राह्मणब्रुवा निवसन्ति, तेषु कस्यचित्पुत्रो निन्द्यापात्रचारित्रो मातङ्गो नामाहं सह किरातबलेन जनपदं प्रविश्य ग्रामेषु धनिनः स्त्रीबालसहितानानीयाटव्यां बन्धने निधाय तेषां सकलधनमपहरन्नुद्धत्य वीतदयो व्यचरम् ।

हिन्दी-अनुवाद—'निश्चय ही यह तेजस्वी साधारण मनुष्य जैसा नहीं हो सकता है' ऐसा सोचकर उस पुरुष ने उसके (राजवाहन के) मित्रों के मुख से उसके नाम और जन्म को जानकर, उससे अपने वृत्तान्त को कहा–हे राजपुत्र! इस वन में वेदादि विद्याभ्यास को छोड़कर, अपने कुल के आचरण को त्यागकर, सत्य, शौच आदि धर्म-समूह को छोड़कर केवल पापकर्म में लगे हुए, किरातों के अधीन रहने वाले और उन्हीं (किरातों) के अन्न को खाने वाले अपने को ब्राह्मण कहने वाले (कुत्सित ब्राह्मण) इस प्रकार के अनेक (अधम ब्राह्मण) निवास करते हैं । उन्हीं में से अत्यन्त निन्दनीय चरित्र वाला मैं किसी कुत्सित ब्राह्मण का पुत्र हूँ । मेरा नाम मातङ्ग है । मैं किरातों की सेना के साथ जनपदों में प्रवेशकर, स्त्री बालबच्चों के सहित धनिकों को गाँवों से इस वन में लाकर, उन्हें बन्धन में रखकर और उनके समस्त धन को छीनकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उद्धत और दयारहित होकर विचरण किया करता था।

संस्कृत-व्याख्या—तेजोमयः=तेजस्वी, अयं=एषः, मानुषमात्रपौरुषः=मनुष्यमात्रपराक्रमः, नूनं न भवति=निश्चयेन न भवति, इति=एवम्, मत्वा=विचार्य, स पुरुषः=पूर्वोक्तो मनुष्यः, तद्वयस्यमुखात्=तन्मित्रलपानात्, नामजनने=अभिधानोत्पत्ती, विज्ञाय=ज्ञात्वा, तस्मै=राजवाहनाय, निजवृत्तान्तं=स्वकीयं जीवनवृत्तम्, अकथयत्=अगदत्, राजनन्दन=राजपुत्र, केचित्=प्रसिद्धाः, अस्यामटव्यां=अस्मिन् विपिने, वेदादिविद्याभ्यासं=वेदादिविषयकविद्यावृत्तिम्, अपहाय=परित्यज्य, निजकुलाचारं=स्ववंशाचरणम्, दूरीकृत्य=अपहाय, सत्यशौचादिधर्मव्रातं=सत्यसम्भाषणपवित्रतादिधर्मसमूहम्, परिहृत्य त्यक्त्वा, किल्बिषं=पापम्, अन्विष्यन्तः=मार्गमाणाः, पुलिन्दपुरोगमः=किरातनेतारः, तदन्नमुपभुञ्जानाः=शबरान्नोपभोक्तारः, बहवः=अनेके, ब्राह्मणाब्रुवाः=ब्राह्मणाधमाः, निवसन्ति=निवासं कुर्वन्ति। तेषु=ब्राह्मणाधमेषु, कस्यचित्=एकस्य, सुतः=पुत्रः, निन्दापात्रचरित्रः=निन्दनीयचरित्रः, मातङ्गोनाम=मातङ्गाख्यः, अहं=पूर्वोक्तः, किरातबलेन=शबरसैन्येन, सह=साकम्, जनपदं=नगरम्, प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा, ग्रामेषु=साधारणजनपदेषु, धनिनः=धनिकान्, स्त्रीबालसहितान्=अबलाशिशुयुक्तान्, आनीय=नीत्वा, बन्धने=कारागारे, निधाय=संस्थाप्य, तेषां=आनीतानाम्, सकलधनं=समस्तमर्थजातम्, अपहरन्=आत्मसात्कुर्वन्, उद्धत्य=उद्धतो भूत्वा, वीतदयः=दयारहितः, व्यचरम्=विचरणमकरवम्।

टिप्पणी—तेजोमयः—तेजस्+मयट्। मानुषमात्रपौरुषः—मानुषमात्रं पौरुषं यस्य सः (बहुव्रीहि); मानुषमात्रम् मानुषः प्रमाणमस्येति—मानुष+मात्रच्। 'मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः। इत्यमरः। मत्वा—मन्+क्त्वा। नामजनने—नाम च जननं च इति (द्वन्द्व)। जनन-वंश; 'सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ।' इत्यमरः। विज्ञाय—वि+ज्ञा+क्त्वा→ल्यप्। राजनन्दन—नन्दयतीति नन्दनः, राज्ञः नन्दनः=राजनन्दनः तत्सम्बुद्धौ। अटव्यां=वन में; 'अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्' इत्यमरः। वेदादिविद्याभ्यासं—वेदः आदिः यासां विद्यानां तासाम् अभ्यासः तम् (तत्पुरुष)। अपहाय—अप+हा+क्त्वा→

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ल्यप्। निजकुलाचारम्–निजस्य कुलस्य यः आचारः तम्=निजकुलाचारम्। दूरीकृत्य–दूर+च्वि+कृ+क्त्वा→ल्यप्। सत्यसौचादिधर्मव्रातम्–सत्यं च शौचं च इति सत्यशौचे ते आदिनी यस्य धर्मव्रातस्य तम्; व्रात–समूह; 'समूहो निवहव्यूहसंदोहविसरव्रजाः । स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसञ्चयाः ॥ समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः। स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम्॥ इत्यमरः । परिहृत्य–परि+हृ+क्त्वा→ल्यप् । पुलिन्दपुरोगमाः–पुलिन्दा पुरोगमाः येषां ते (बहुव्रीहि)। उपभुञ्जानाः–उप+भुञ्ज्+शानच्। ब्राह्मणब्रुवाः–अपने को ब्राह्मण कहने वाले। जो ब्राह्मणों के कर्मों को नहीं करते हैं और अपने को ब्राह्मण कहते हैं, उन्हें 'ब्राह्मणबुवाः' कहते हैं। निन्दापात्रचारित्रः निन्दापात्रं चरित्रं यस्य स तथोक्तः (बहुव्रीहि)। प्रविश्य–प्र+विश्+क्त्वा→ल्यप्। स्त्रीवालसहितान्–स्त्रीभिः बालैश्च सहितान् (तत्पुरुष)। आनीय–आ+नी+क्त्वा→ल्यप्। निधाय–नि+धा+क्त्वा→ल्यप्। अपहरन्–अप+हृ+शतृ। वीतदया–वीता दया यस्य सः (बहुव्रीहि)। व्यचरम्–'वि+चर्' धातु लङ् लकार उ० प्र० ए० व०।

कदाचिदेकस्मिन्कान्तारे मदीयसहचरगणेन जिघांस्यमानं भूसुरमेकमवलोक्य दयायत्तचित्तोऽब्रवम् 'ननु पापाः, न हन्तव्यो ब्राह्मणः' इति ते रोषारुणनयना मां बहुधा निरभर्त्सयन्। तेषां भाषणपारुष्यमसहिष्णुरहमवनिसुररक्षणाय चिरं प्रयुध्य तैरभिहतो गतजीवितोऽभवम्।

हिंदी-अनुवाद—एक दिन किसी दुर्गम वन मार्ग में एक ब्राह्मण को मारने के लिए उद्यत अपने सहचरों को देखकर दयायुक्त चित्त होकर मैंने कहा–'अरे पापियों! ब्राह्मण वध के योग्य नहीं होता है अर्थात् ब्राह्मण का वध नहीं करना चाहिए। क्रोध से लाल-लाल नेत्रों वाले उन लोगों ने मुझे अनेक प्रकार से फटकारा। उनके भाषण की कठोरता (डाँट फटकार) को न सहन करने वाला मैं ब्राह्मण की रक्षा के लिए बहुत देर तक युद्ध कर उनके द्वारा प्रताडित हो जीवनरहित हो गया अर्थात् मर गया।

संस्कृत-व्याख्या—कदाचित्=एकदा, एकस्मिन् कान्तारे=एकस्मिन् दुर्गमे मार्गे, मदीयसहचरगणेन=मम मित्रसमूहेन, जिघांस्यमानं=हन्तुमिष्यमाणम्,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकं भूसुरं=एकं विप्रम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा, दयायत्तचित्तः=कृपाविष्टचेताः, अब्रवम्=अवदम्, ननु=आमन्त्रणे, पापाः=पापिनः, ब्राह्मणः=विप्रः, न हन्तव्यः=नहि मारणीयः, इति=एवम् । रोषारुणनयनाः=क्रोधरक्तवर्णनेत्राः, ते=पूर्वोक्ताः जनाः, माम्=मातङ्गम्, बहुधा=अनेकप्रकारेण, निरभर्त्संयन्=अतर्जयन् । तेषां=वनेचराणाम्, भाषणपारुष्यं=सम्भाषणकाठिन्यम्, असहिष्णुः=असहनशीलः, अहं=मातङ्गः, अवनिसुररक्षणाय=भूसुरत्राणाय, चिरं=चिरकालं यावत्, प्रयुध्य=युद्धं कृत्वा, तैः=पूर्वोक्तैः किरातगणैः, अभिहतः=प्रताडितः, गतजीवितः=जीवनरहितः, अभवम्=अभूवम् ।

टिप्पणी—कान्तर–दुर्गम वन मार्ग; 'कान्तरं वर्त्म दुर्गमम्' इत्यमरः । जिघांस्यमानम्–सन्नन्त हन् धातु से यक् तथा शानच् । भूसुर=ब्राह्मण; 'द्विजात्यग्रजन्म भूदेववाडवाः । विप्रश्च ब्राह्मणः' इत्यमरः । अवलोक्य–अव+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । दयायत्तचित्तः–दयया आयत्तं चित्तं यस्य सः (बहुव्रीहि) । आयत्त–अधीन, 'अधीनो निघ्न आयत्तः' इत्यमरः । 'न हन्तव्यो ब्राह्मणः'–शास्त्रों में ब्राह्मण को अवध्य बतलाया गया है । महाभारत में लिखा है कि केवल ब्राह्मण ही सभी वर्गों का गुरु एवं पूज्य होने के कारण सभी पापों में पड़ा होने पर भी अवध्य है–"अन्यत्र ब्राह्मणात्तात सर्वपापेष्ववस्थितात् । गुरुर्हि सर्ववर्णानां ब्राह्मणः प्रसृताग्र्यभुक् ॥" रोषारुणनयना–रोषेण अरुणानि नयनानि येषां ते (बहुव्रीहि) । बहुधा–बहु+धा । भाषणपारुष्यं–भाषणस्य पारुष्यम् (तत्पुरुष) ; परुष+ष्यञ् । असहिष्णुः–सह्+इष्णुच्=सहिष्णुः, न सहिष्णुः=असहिष्णुः । अवनिसुररक्षणाय–अवनिसुरस्य रक्षणाय (तत्पुरुष) । प्रयुध्य–प्र+युध्+क्त्वा→ल्यप् । अभिहतः–अभि+हन्+क्त । गतजीवितः–गतं जीवितं यस्य सः (बहुव्रीहि) ।

ततः प्रेतपुरीमुपेत्य तत्र देहधारिभिः पुरुषैः परिवेष्टितं सभामध्ये रत्नखचितसिंहासनासीनं शमनं विलोक्य तस्मै दण्डप्रणाममकरवम् । सोऽपि मामवेक्ष्य चित्रगुप्तं नाम निजामात्यमाहूय तमवोचत् । 'सचिव, नैषोऽमुष्य मृत्युसमयः । निन्दितचरितोऽप्ययं महीसुरनिमित्तं गतजीवितोऽभूत् । इतः प्रभृति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विगलितकल्मषस्यास्य पुण्यकर्मकरणे रुचिरुदेष्यति । पापिष्ठैरनुभूयमानमत्र यातनाविशेषं विलोक्य पुनरपि पूर्वशरीरमनेन गम्यताम् इति ।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् (मृत्यु के बाद) यमलोक में पहुँचकर वहाँ शरीरधारी पुरुषों से घिरे, सभा के मध्य में रत्नजटित सिंहासन पर बैठे हुए यमराज को देखकर उन्हें दण्डवत् प्रणाम किया। उन्होंने भी मुझे देखकर चित्रगुप्त नामक अपने मन्त्री को बुलाकर उससे कहा—सचिव ! यह इसके मरने का समय नहीं है। निन्दित्त चरित्र वाला होता हुआ भी यह पृथ्वी के देवता (ब्राह्मण) के लिए जीवनरहित हुआ है अर्थात् मरा है। आज से पापों से रहित इसकी पुण्य कर्मों के करने में रुचि उदित होगी अर्थात् यह पुण्यकर्मों में लगेगा। यहाँ पापी लोगों के द्वारा अनुभव की जाने वाली यातनाओं को देखकर यह पुनः अपने पूर्वशरीर में ही चला जाये।'

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तदनन्तरम्, प्रेतपुरीं=यमनगरीम्, उपेत्य=प्राप्य, तत्र=यमसद्मनि, देहधारिभिः=शरीरधारिभिः, पुरुषैः=भृत्यैः, परिवेष्टितं=परिवृतम्, सभामध्ये=समज्यामध्ये, रत्नखचितसिंहासनासीनं=मणिजटितभद्रासनोपविष्टम्, शमनं=यमम्, विलोक्य=दृष्ट्वा, तस्मै=यमाय, दण्डप्रणामं=दण्डवत् नमस्कारम्, अकरवम्=कृतवान्, सोऽपि=यमोऽपि, माम्=मातङ्गम्, अवेक्ष्य=दृष्ट्वा, चित्रगुप्तं नाम=चित्रगुप्ताख्यम्, निजामात्यं=निजसचिवम्, आहूय=आकार्य, तम्=सचिवम्, अवोचत्=अवदत्, सचिव=मन्त्रिन्, अमुष्य=अस्य, एषः=अयम्, मृत्युसमयः=मरणकालः, न=नहि वर्तते । निन्दितचरितः=गर्हिताचरणः, अपि=च, अयं=एषः, महीसुर-निमित्तं=भूसुरकारणम्, गतजीवितः=जीवनरहितः, अभूत्=अभवत् । इतः प्रभृति=अद्यारभ्य, विगलितकल्मषस्य=अपगतपापस्य, अस्य=एतस्य, पुण्य-कर्मकरणे=पवित्रकर्मसम्पादने, रुचिः=प्रीतिः, उदेष्यति=उत्पत्स्यते । अत्र=अस्मिन् स्थाने, पापिष्ठैः=पापैः, अनुभूयमानं=अनुभवं क्रियमाणम्, यातना-विशेषं=पीडाविशेषम्, विलोक्य=दृष्ट्वा, पुनरपि=भूयोऽपि, अनेन=एतेन पुरुषेण, गम्यताम्=गमनं क्रियाताम्, इति=एवम् ।

टिप्पणी—प्रेतपुरीम्–प्रेतस्य पुरीम् (तत्पुरुष) । उपेत्य—उप+इण्+

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्त्वा→ल्यप् । सभामध्ये–सभायाः मध्ये (तत्पुरुष) । रत्न··· ·········सीनम्–रत्नैः खचितं यत् सिंहासनं तत्र आसीनम् (तत्पुरुष)। 'नृपासनं यत्तद् भद्रासनं सिंहासनन्तु तत्' इत्यमरः। शमनं=यमराज को; 'कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड् यमः' इत्यमरः । विलोक्य–वि+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । अवेक्ष्य–अव+ईक्ष्+क्त्वा→ल्यप् । निन्दितचरितः–निन्दितं चरितं यस्य स तादृशः (बहुव्रीहि) । विगलितकल्मषस्य–विगलितं कल्मषं यस्य तस्य (बहुव्रीहि) : पुण्यकर्मकरणे—पुण्यकर्मणां करणे (तत्पुरुष) । पापिष्ठैः–अयम् एषामतिशयेन पापः-पाप+इष्ठन्=पापिष्ठः तैः । अनुभूयमानम्-अनु+भू+यक्+शानच् ।

चित्रगुप्तोऽपि तत्र तत्र संतप्तेष्वायसस्तम्भेषु बध्यमानान्, अत्युष्णीकृते विततशरावे तैले निक्षिप्यमाणान्, लगुडैर्जर्जरीकृतावयवान्, निशितटंकैः परिवक्ष्यमाणानपि दर्शयित्वा पुण्यबुद्धिमुपदिश्य माममुञ्चत् । तदेव पूर्वशरीरमहं प्राप्तो महाटवीमध्ये शीतलोपचारं रचयता महीसुरेण परीक्ष्यमाणः शिलायां शयितः क्षणमतिष्ठम् ।

हिन्दी-अनुवाद––चित्रगुप्त ने भी उन-उन स्थानों पर संतप्त (तपाये गये) लौहस्तम्भों में बाँधे जाने वाले, बड़े कड़ाहों के खौलते तेल में फेंके जाने वाले, डण्डों की मार से जर्जरित अवयवों वाले और पैंने आरों के द्वारा चीरे जाने वाले पापियों को दिखलाकर तथा पुण्यबुद्धि का उपदेश देकर मुझे छोड़ दिया। उसी पुराने शरीर को प्राप्त मैं महाटवी (बड़े जङ्गल) के मध्य में ठण्डा उपचार करते हुए उस ब्राह्मण के द्वारा परीक्षित (यह जीता है या मर गया है––इसकी परीक्षा किया गया मैं) शिला पर क्षण भर के लिए स्थित रहा।

संस्कृत-व्याख्या––चित्रगुप्तोऽपि=एतदाख्योऽपि, तत्र तत्र=तेषु तेषु स्थानेषु, संतप्तेषु=उष्णीकृतेषु, आयसस्तम्भेषु=लौहस्तम्भेषु, बध्यमानान्=बध्यन्ते इति बध्यमानाः तान्, अत्युष्णीकृते=सन्तप्ते, विततशरावे=विस्तृतलौहकटाहे, तैले=स्नेहे, निक्षिप्यमाणान्=निपात्यमानान, लगुडैः=करण्डैः, जर्जरीकृतावयवान्=प्रशिथिलीकृतावयवान्, निशितटङ्कैः=तीक्ष्णपाषाण-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दारणैः, परितक्ष्यमाणान्=प्रताड्यमानान् अपि दर्शयित्वा=अपि प्रदर्श्य, पुण्य-वुद्धि=धर्ममतिम्, उपदिश्य=कथयित्वा, माम्=मातङ्गम्, अमुञ्चत्=अत्यजत् । तत्=प्रसिद्धम्, पूर्वशरीरमेव=पुरातनकायमेव, प्राप्तः=लब्धः, अहं=प्रसिद्धः, महाटवीमध्ये=महारण्यमध्यभागे, शीतलोपचारं=शिशिरोप-चारम्, रचयता=कुर्वता, महीसुरेण=ब्राह्मणेन, परीक्ष्यमाणः=अवलोक्य-मानः, शिलायां=प्रस्तरखण्डे, शयितः=सुप्तः, क्षणं=मुहूर्तं यावत्, अतिष्ठम् स्थितोऽभवम् ।

टिप्पणी--संतप्तेषु-सम्+तप्+क्त; स० ब० व० । वध्यमानान्-हन् (वध्)+यक्+शानच् । अत्युष्णीकृते-अति+उष्ण+च्वि+कृ+क्त; स० ए० व० । निक्षिप्यमाणान्-नि+क्षिप्+यक्+शानच् । जर्जरीकृतावयवान्-जर्जरीकृताः अवयवाः येषां तान् (बहुव्रीहि) । निशितटङ्कैः निशिताश्च ते टङ्काश्च तैः (कर्मधारय); 'वृक्षादनी वृक्षभेदी टङ्कः पाषाणदारणः' इत्यमरः । परितक्ष्यमाणान्-परि+तक्ष्+यक्+शानच् । दर्शयित्वा-दृश्+णिच्+क्त्वा । उपदिश्य-उप+दिश्+क्त्वा→ल्यप् । महातटवीमध्ये-महती चासौ अटवी चेति, तस्याः मध्ये (तत्पुरुष) । परीक्ष्यमाणः-परि+ईक्ष्+यक्+शानच् ।

तदनु विदितोदन्तो मदीयवंशबन्धुगणः सहसागत्य मन्दिरमानीय माममक्रान्तव्रणमकरोत् । द्विजन्मा कृतज्ञो मह्यमक्षरशिक्षां विधाय विविधागमतन्त्रमाख्याय कल्मषक्षयकारणं सदाचारमुपदिश्य ज्ञानेक्षणगम्यमानस्य शशिखण्डशेखरस्य पूजाविधानमभिधाय पूजां मत्कृतामङ्गीकृत्य निरगात् ।

हिन्दी-अनुवाद--इसके पश्चात् वृत्तान्त को जानकर मेरे वंश के बन्धु लोगों ने सहसा ही आकर मुझे मन्दिर (घर) में लाकर (मरहम पट्टी के द्वारा) मेरे घावों को अच्छा कर दिया । उस कृतज्ञ ब्राह्मण ने मुझे अक्षरों का ज्ञान कराया और अनेक आगम तथा तन्त्र पढ़ाये । पापविनाशक सदाचार का उपदेश देकर ज्ञानचक्षु से जानने योग्य भगवान् शङ्कर के पूजनविधान को कहकर और मेरे द्वारा की गयी पूजा को स्वीकार कर (वह विप्र) चला गया ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत-व्याख्या—तदनु=तत्पश्चात्, विदितोदन्तः=ज्ञातवृत्तान्तः, मदीयवंशवन्धुगणः=मम कुलवन्धुसमूहः, सहसा=झटिति, आगत्य=आगमनं कृत्वा, मन्दिरं=भवनम्, आनीय=नीत्वा, माम्=मातङ्गम्, अपक्रान्तव्रणं=व्रणरहितम्, अकरोत्=कृतवान् । कृतज्ञः=उपकारज्ञाता, द्विजन्मा=विप्रः, मह्यं=मातङ्गाय, अक्षरशिक्षां=वर्णमालाज्ञानम्, विधाय=कृत्वा, विविधागमतन्त्रम्=विविधशास्त्रसिद्धान्तम्, आख्याय=कथयित्वा, कल्मषक्षयकारणं=पापविनाशकारणभूतम्, सदाचारं=सदाचरणम्, उपदिश्य=कथयित्वा, ज्ञानेक्षणगम्यमानस्य=ज्ञाननेत्रावबुध्यमानस्य, शशिखण्डशेखरस्य=भगवतः शिवस्य, पूजाविधानं=अर्चाविधिम्, अभिधाय=प्रशिक्ष्य, मत्कृतां=मया विहिताम्, पूजां=अर्चाम्, अङ्गीकृत्य=स्वीकृत्य, निरगात्=निरगच्छत् ।

टिप्पणी—विदितोदन्तः—विदितः उदन्तः येन सः (वहुव्रीहि) । उदन्त—वृत्तान्त; 'वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यात्' इत्यमरः । मदीयवंशवन्धुगणः—मम वंशे ये वन्धवः तेषां गणः (तत्पुरुष) । आगत्य—आ+गम्+क्त्वा→ल्यप् । आनीय—आ+नी+क्त्वा→ल्यप् । अपक्रान्तव्रणम्—अपक्रान्तः व्रणः यस्य स तथाभूतम् (वहुव्रीहि) । कृतज्ञः—कृतं जानातीति—कृत+ज्ञा+क । अक्षरशिक्षां—अक्षराणां शिक्षाम् (तत्पुरुष) । विविधागमतन्त्रम्—विविधागमानां तन्त्रम् (तत्पुरुष) । आख्याय—आ+ख्या+क्त्वा→ल्यप् । कल्मषक्षय—कारणम्—कल्मषस्य यः क्षयः तस्य कारणम् (तत्पुरुष); 'हेतुर्ना कारणं वीजं निदानं त्वादिकारणम्' इत्यमरः । उपदिश्य—उप+दिश्+क्त्वा→ल्यप् । ज्ञानेक्षणगम्यमानस्य—ज्ञानमेव ईक्षणमिति, तेन गम्यमानस्य (तत्पुरुष) । गम्यमान—गम्+यक्+शानच् । शशिखण्डशेखरस्य—शशिनः खण्डं शेखरे यस्य तस्य (वहुव्रीहि) । भगवान् शङ्कर के मस्तक पर द्वितीया का चन्द्रमा विराजमान रहता है । अतः उन्हें शशिशेखर या चन्द्रशेखर के नाम से अभिहित किया जाता है । पूजाविधानम्—पूजायाः विधानम् (तत्पुरुष) । कल्मषक्षय… ………' 'सदाचरण से ही पापों का विनाश होता है' ऐसा सिद्धान्त है । महा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत में वृत्त की प्रशंसा के विषय में कहा गया है—'वृत्तेन हि भवत्यार्यो न धनेन न विद्यया ।'

तदारभ्याहं किरातकृतसंसर्गं बन्धुवर्गमुत्सृज्य सकललोकैकगुरुमिन्दुकलावतंसं चेतसि स्मरन्नस्मिन्कानने दूरीकृतकलङ्को वसामि । 'देव, भवते विज्ञापनीयं रहस्यं किंचिदस्ति । आगम्यताम् ।' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—तभी से मैं किरातों के साथ सम्बन्ध रखने वाले अपने बन्धुवर्ग को छोड़कर समस्त संसार के एकमात्र गुरु भगवान् शंकर का हृदय से स्मरण करता हुआ सभी कलङ्कों से रहित हो इस वन में निवास कर रहा हूँ। हे राजन् ! आपसे एकान्त में कुछ गोपनीय बातें कहनी हैं। इसलिए (आप मेरे साथ) आइये ।

संस्कृत-व्याख्या—तदारभ्य=तत्प्रभृति, अहं=मातङ्गः, किरातकृतसंसर्गं=शबरविहितसम्पर्कम्, बन्धुवर्गं=बन्धुसमूहम्, उत्सृज्य=त्यक्त्वा, सकललोकैकगुरुं=समस्तजनैकगुरुम्, इन्दुकलावतंसं=चन्द्रकलाशिरोभूषणम्, चेतसि=हृदये, स्मरन्=स्मरणं कुर्वन्, अस्मिन् कानने=अस्मिन् विपिने, दूरीकृतकलङ्कः=प्रक्षालितपापः, वसामि=निवसामि । देव !=भगवन् !, भवते=राजवाहनाय, रहस्यं=गोप्यम्, किञ्चित्=ईषत्, विज्ञापनीयं=कथनीयम्, अस्ति=वर्तते । आगम्यताम् मया सहेति शेषः ।

टिप्पणी—किरातकृतसंसर्गम्—किरातैः कृतः संसर्गः येन तम् (बहुव्रीहि)। उत्सृज्य—उत्+सृज्+क्त्वा→ल्यप् । सकललोकैकगुरुम्—सकललोकानाम् एकगुरुम् (तत्पुरुष) । इन्दुकलावतंसम्—इन्दोः कला अवतंसः यस्य तम्—इन्दुकलावतंसम्=भगवान् शिव को । स्मरन्—स्मृ+शतृ । दूरीकृतकलङ्कः—दूरीकृतः कलङ्कः येन सः (बहुव्रीहि) । दूरीकृत—दूर+च्वि+कृ+क्त । रहस्यम्—रहस्+यत् ।

स वयस्यगणादपनीय रहसि पुनरेनमभाषत 'राजन् ! अतीते निशान्ते गौरीपतिः स्वप्नसन्निहितो निद्रामुद्रितलोचनं विबोध्य प्रसन्नवदनकान्तिः प्रश्रयानतं मामवोचत् मातङ्ग ! दण्डकारण्यान्तरालगामिन्यास्तटिन्यास्तीरभूमौ सिद्धसाध्याराध्यमानस्य स्फटिकलिङ्गस्य पश्चादद्रिपतिकन्यापदपंक्तिचिह्नि-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्याश्मनः सविधे विधेराननमिव किमपि बिलं विद्यते । तत्प्रविश्य तत्र निक्षिप्तं ताम्रशासनं शासनं विधातुरिव समादाय विधिं तदुपदिष्टं दिष्टविजयमिव विधाय पाताललोकाधीश्वरेण भवता भवितव्यम् । भवत्साहाय्यकरो राजकुमारोऽद्य श्वो वा समागमिष्यति' इति । 'तदादेशानुगुणमेव भवदागमनमभूत् । साधनाभिलाषिणो मम तोषिणो रचय साहाय्यम्' इति ।' 'तथा' इति राजवाहनः साकं मातङ्गेन नमितोत्तमाङ्गेन विहायार्धरात्रे निद्रापरतन्त्रं मित्रगणं वनान्तरमवाप ।

हिन्दी-अनुवाद--मित्रमण्डल से अलग ले जाकर एकांत में उसने राजवाहन से कहा—हे राजन् ! गत रात्रि के अन्त में स्वप्न में समीप आये हुए प्रसन्न मुख कान्ति वाले भगवान् शङ्कर ने निद्रा से निमीलित (बन्द किये हुए) नेत्रों वाले मुझे जगाकर प्रेम से आनत (झुके हुए) या विनम्र मेरे से कहा—'मातङ्ग, दण्डकारण्य के मध्य बहती हुयी नदी के तटपर सिद्ध और साध्यों के द्वारा आरधित एक स्फटिक शिला का शिवलिङ्ग है । उसके पीछे पार्वती के चरणों के चिह्नों से चिह्नित एक प्रस्तर (पत्थर-शिला) के समीप में ब्रह्मा के मुख के शासन (की आज्ञा) के समान वहाँ संस्थापित ताम्रपत्र को लेकर उसमें लिखी गयी लिपि को भाग्योदय लिपि मानकर कार्य करो । आप पाताल लोक के राजा बन जायेंगे । तुम्हारी सहायता करने वाला राजकुमार आज या कल आ जायेगा । उनके आदेश के अनुसार ही आपका आगमन हुआ है । आप साधनों के इच्छुक मुझ संतुष्ट की सहायता करें । 'वैसा ही किया जाये' ऐसा कहकर राजवाहन अर्धरात्रि में सोते हुए मित्रों को छोड़कर नतमस्तक मातङ्ग के साथ दूसरे वन को चला गया ।

संस्कृत-व्याख्या—सः = मातङ्गः, वयस्यगणात् = मित्रवर्गात्, अपनीय = दूरीकृत्य, रहसि = एकान्ते, पुनः = भूयः, एनं = राजवाहनम्, अभाषत = अवदत्, राजन् = नृप, अतीते = व्यतीते, निशान्ते = उषसि = गौरीपतिः = शिवः, स्वप्नसन्निहितः = निद्राकाले निकटागतः, निद्रामुद्रितलोचनं = निद्रानिमीलितनयनम्, (माम्), विबोध्य = उद्बोध्य, प्रसन्नवदनकान्तिः = प्रफुल्लितमुखच्छविः, प्रश्रयानतं = प्रणयविनम्रम्, माम् = मातङ्गम्, अवोचत् =

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवदत्, मातङ्ग=विप्र, दण्डकारण्यान्तरालगामिन्याः=दण्डकवनमध्यसञ्चरणशीलायाः, तटिन्याः=नद्यः, तीरभूमौ=तटप्रदेशे, सिद्धसाध्याराध्यमानस्य=गुह्यकगणदेवतासेव्यमानस्य, स्फटिकलिङ्गस्य=स्फटिकमणिविनिर्मितशिवलिङ्गस्य, पश्चात्=पश्चिमे प्रदेशे, अद्रिपतिकन्यापदपङ्क्तिचिह्नितस्य=पार्वतीचरणलेखाङ्कितस्य, अश्मनः=प्रस्तरस्य, सविधे=समीपे, विधेः=ब्रह्मणः, आननमिव=मुखमिव, किमपि=एकम्, बिलं=छिद्रम्, विद्यते=वर्तते। तत्=बिलम्, प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा, तत्र=बिले, निक्षिप्तं=संस्थापितम्, ताम्रशासनं=ताम्रपात्रम्, विधातुः=कमलयोनेः, शासनमिव=आज्ञापत्रमिव, समादाय=गृहीत्वा, तदुपदिष्टं=तत्कथितम्, दिष्टविजयमिव=दैवजयमिव, विधिं=व्यापारम्, विधाय=कृत्वा, पातालोकाधीश्वरेण=रसातलस्वामिना, भवता=त्वया, भवितव्यमिति । भवत्साहाय्यकरः=तव सहायकः, राजकुमार=राजपुत्रः, अद्य=अस्मिन्दिवसे, श्वः=आगामिनि दिवसे वा, समागमिष्यति=आयास्यति, इति । तदादेशानुगुणमेव=तन्नियोगानुरूपमेव, भवदागमनं=श्रीमदागमनम्, अभूत् अभवत् । साधनाभिलाषिणः=साधनेच्छुकस्य, मम=मातङ्गस्य, तोषिणः=सन्तुष्टस्य, साहाय्यं=सहायताम्' रचय=विधेहि, इति। तथा=तथैवास्तु, इति=एवम्, राजवाहनः=एतदाख्यः, मातङ्गेन=एतदाख्येन, नमितोत्तमाङ्गेन=नम्रीभूतमस्तकेन, साकं=सह, अर्धरात्रे=निशीथे, निद्रापरतन्त्रं=संवेशायत्तम्, मित्रगणं=मित्रसमूहम्, विहाय=परित्यज्य, वनान्तरं=अन्यद्विपिनम्, अवाप=प्राप ।

टिप्पणी–वयस्य–मित्र; वयसा तुल्यः–वयस्+यत् । अपनीय–अप+नी+क्त्वा→ल्यप् । गौरीपतिः–गौर्य्याः पतिः (तत्पुरुष); 'उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी' इत्यमरः । स्वप्नसन्निहितः–स्वप्ने सन्निहितः (तत्पुरुष)। निद्रामुद्रितलोचनम्–निद्रया मुद्रिते लोचने यस्य तम् (बहुव्रीहि); 'स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि' इत्यमरः । विबोध्य–वि+बुध्+क्त्वा→ल्यप् । प्रसन्नवदनकान्तिः–प्रसन्ना वदनस्य कान्तिः यस्य सः (बहुव्रीहि); प्रसन्न–प्र । सद्+क्त । वदनं–मुख; वदन्ति अनेन, वद्+ल्युट् । 'वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम्' इत्यमरः । प्रश्रयानतम्–प्रश्रयेण आनतं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(तत्पुरुष); आनतम्–आ + नम् + क्त। दण्डका······गामिन्याः–दण्डकारण्यस्य अन्तरालगामिन्याः (तत्पुरुष)। तटिन्याः–नदी के; 'अथ नदी सरित्। तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी।' इत्यमरः। सिद्धसाध्याराध्यमानस्य–सिद्धैः साध्यैश्च आराध्यमानस्य (तत्पुरुष)। सिद्ध–देवयोनि के अन्तर्गत आते हैं। 'सिद्धो व्यासादिके देवयोनौ निष्पन्नमुक्तयोः। नित्ये प्रसिद्धे' इति हैमः। अमरकोषकार ने भी लिखा है–'विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः। पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः॥' इत्यमरः। साध्य–गणदेवताओं के अन्तर्गत आते हैं–'आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः। महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः।' इत्यमरः। साध्य बारह हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं–'मनो मन्ता तथा प्राणो नरोऽपानश्च वीर्यवान्। निर्भयो नरकश्चैव दंशो नारायणो वृषः। प्रभुश्चेति समाख्याताः साध्या द्वादश देवताः।'–वाचस्पत्यम् ५२७९ पृष्ठ। अद्रिपतिकन्यापदपङ्क्तिचिह्नितस्य–अद्रिपतेः कन्या, तस्याः पदपङ्क्त्या चिह्नितस्य (तत्पुरुष)। निक्षिप्तं–नि + क्षिप् + क्त। शासनं–शास् + ल्युट्। समादाय–सम् + आ + दा + क्त्वा→ल्यप्। दिष्टविजयम्–दिष्टस्य विजयम् (तत्पुरुष); दिष्ट–भाग्य; 'दैवं दिष्टं भागधेयम्' इत्यमरः। पाताललोकाधीश्वरेण–पाताललोकस्य अधीश्वरेण (तत्पुरुष)। 'अधोभवनपातालं बलिसद्म रसातलम्' इत्यमरः। तदादेशानुगुणम्–तस्य आदेशस्य अनुगुणम् (तत्पुरुष)। नमितोत्तमाङ्गेन–नमितम् उत्तमाङ्गं यस्य तेन (बहुव्रीहि)। 'उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षम्' इत्यमरः। यहाँ यमक तथा उपमा अलङ्कारों की स्थिति है।

राजवाहनान्वेषणे कुमाराणां निर्गमनम्

तदनु तदनुचराः कल्ये साकल्येन राजकुमारमनवलोकयन्तो विषण्णहृदयास्तेषु तेषु वनेषु सम्यगन्विष्यानवेक्षमाणा एतदन्वेषणमनीषया देशान्तरं चरिष्णवोऽतिसहिष्णवो निश्चितपुनःसंगमसंकेतस्थानाः परस्परं वियुज्य ययुः।

हिन्दी-अनुवाद–तत्पश्चात् प्रातःकाल राजकुमार के अनुचरों ने राजवाहन (राजकुमार) को आसपास कहीं न देखते हुए खिन्नचित्त हो समीपवर्ती वनों में भलीभाँति खोजकर (कहीं भी) न देखते हुए, उसे खोजने की इच्छा से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्य देशों में जाने के लिए उद्यत, अत्यन्त सहयशील (वे) पुनः मिलने के सङ्केत स्थान को निश्चित कर एक दूसरे से अलग होकर चल दिये।

संस्कृत-व्याख्या—तदनु=तत्पश्चात्, तदनुचराः=तस्य सेवकाः, कल्ये=प्रत्यूषे, साकल्येन=सामग्र्येण, राजकुमारं=राजसुतम्, अनवलोकयन्तः=अनवेक्षमाणाः, विषण्णहृदयाः=खिन्नचित्ताः, तेषु तेषु वनेषु=तेषु तेषु विपिनेषु, सम्यक्=साधु, अन्विष्य=अन्वेषणं कृत्वा, अनवेक्षमाणाः=अनवलोकयन्तः, एतदन्वेषणमनीषया=राजकुमारगवेषणधिषणया, देशान्तरं=अन्यं देशम्, चरिष्णवः=गन्तुकामाः, अतिसहिष्णवः=अत्यधिकसहनशीलाः, निश्चितपुनःसङ्गमसङ्केतस्थानाः=निर्णीतपुनःसम्मिलनसङ्केतस्थानाः, परस्परं=अन्योन्यम्, वियुज्य=पृथग् भूत्वा, ययुः=अगच्छन्।

टिप्पणी—तदनुचराः–तस्य अनुचराः (तत्पुरुष)। कल्ये–प्रातःकाल में; 'प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यम्' इत्यमरः। साकल्येन–सकल+ष्यञ्। अनवलोकयन्तः–न अवलोकयन्तः। विषण्णहृदयाः–विषण्णं हृदयं येषां ते (बहुव्रीहि)। विषण्ण–खिन्न; वि+सद्+क्त। अन्विष्य–अनु+इष्+क्त्वा→ल्यप्। एतदन्वेषणमनीषया–एतस्य अन्वेषणमनीषया (तत्पुरुष)। मनीषा–बुद्धि; 'बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः' इत्यमरः। निश्चितपुनःसङ्गमसंकेतस्थानाः–निश्चितं पुनःसङ्गमस्य यः सङ्केतः तस्य स्थानं यैस्तैः (बहुव्रीहि)। वियुज्य–वि+युज्+क्त्वा→ल्यप्। ययुः–या धातु लिट् लकार प्र० पु० ब० व०।

राजवाहनमातङ्गयोर्यात्रा

लोकैकवीरेण कुमारेण रक्ष्यमाणः संतुष्टान्तरङ्गो मातङ्गोऽपि बिलं शशिशेखरकथिताभिज्ञानपरिज्ञातं निःशङ्कं प्रविश्य गृहीतताम्रशासनो रसातलं पथा तेनैवोपेत्य तत्र कस्यचित्पत्तनस्य निकटे केलिकाननकासारस्य विततसारसस्य समीपे नानाविधेनेशशासनविधानोपपादितेन हविषा होमं विरच्य प्रत्यूहपरिहारिणि सविस्मयं विलोकयति राजवाहने समिदाज्यसमुज्ज्वलिते ज्वलने पुण्यगेहं देहं मन्त्रपूर्वकमाहुतीकृत्य तडित्समानकान्तिं दिव्यां तनुमलभत।

हिन्दी-अनुवाद—संसार के अद्वितीय पराक्रमी राजकुमार से संरक्षित संतुष्ट-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्त मातङ्ग भी शङ्कर के द्वारा बतलाये गये चिह्न से परिज्ञात उस बिल में निःशङ्क होकर प्रविष्ट हो गया और ताम्रपात्र को लेकर उसी मार्ग के द्वारा पाताल लोक में चला गया। वहाँ एक नगर के निकट सारस पक्षियों से युक्त क्रीडोद्यान के सरोवर के समीप भगवान् शङ्कर की आज्ञा के अनुसार एकत्रित की गयी सामग्री के द्वारा अनेक प्रकार से होम करके उसने विघ्नों के विनाशक राजवाहन के आश्चर्यपूर्वक देखते ही देखते समिधा एवं घृत से प्रज्वलित अग्नि में अपनी पुण्याधार देह की मन्त्रपूर्वक आहुति देकर बिजली के समान प्रभा से युक्त दिव्य शरीर को प्राप्त कर लिया।

संस्कृत-व्याख्या—लोकैकवीरेण=त्रिभुवनैकशूरेण, कुमारेण=राजवाहनेन, रक्ष्यमाणः=गोप्यमानः, संतुष्टान्तरङ्गः=परितुष्टमानसः, मातङ्गोऽपि=एतदाख्योऽपि, विलं=विवरम्, शशिशेखरकथिताभिज्ञानपरिज्ञातं=चन्द्रशेखर-भणितचिह्नावगतम्, निःशङ्कं=निर्भयम्, प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा, गृहीतताम्रशा-सनः=गृहीतं धृतं ताम्रशासनं ताम्रपात्रं येन सः, तेनैव=पूर्वोक्तेनैव, यथा=मार्गेण, रसातलं=पातालम्, उपेत्य=प्राप्य, तत्र=रसातले, कस्यचित्=एकस्य, पत्तनस्य=पुरः, निकटे=समीपे, विततसारसस्य=प्रसृतसारसस्य, केलिकाननकासारस्य=क्रीडोद्यानसरोवरस्य, समीपे=सन्निकटे, नानाविधेन=विविधप्रकारेण, ईशशासनविधानोपपादितेन=शिवानुशासनविधानसम्पादितेन, हविषा=शाकल्येन, होमं=होमकर्म, विरच्य=कृत्वा, प्रत्यूहपरिहारिणि=विघ्नविनाशके, सविस्मयं=साश्चर्यम्, विलोकयति=पश्यति, राजवाहने=एतदाख्ये, समिदाज्यसमुज्ज्वलिते=काष्ठाज्यप्रज्ज्वलिते, ज्वलने=अग्नौ, पुण्यगेहं=सुकृताधारम्, देहं=शरीरम्, मन्त्रपूर्वकं=समन्त्रम्, आहुतीकृत्य=ज्वलने प्रक्षिप्य, तडित्समानकान्ति=विद्युत्तुल्यकान्तिम्, दिव्यां=दैवीम्, तनुं=शरीरम्, अलभत=अविन्दत्।

टिप्पणी—लोकैकवीरेण—एकश्चासौ वीरश्चेति—एकवीरः, लोकेषु एकवीरः तेन (तत्पुरुष)। रक्ष्यमाणः—रक्ष्+यक्+शानच्। संतुष्टान्तरङ्गः—संतुष्टं अन्तरङ्गं यस्य सः (बहुव्रीहि)। शशि··· जातम्—शशिशेखरेण कथितं यत्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिज्ञानं तेन परिज्ञातम् (तत्पुरुष)। अभिज्ञानम्–पहचान; अभि+ज्ञा+ल्युट्। गृहीतताम्रशासनः–गृहीतं ताम्रशासनं येन सः (बहुव्रीहि)। रसातलं–पाताल; रसायाः तलम् (तत्पुरुष)। उपेत्य–उप+इण्+क्त्वा→ल्यप्। पत्तन–नगर; 'पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम्' इत्यमरः। केलिकानन-कासारस्य–केल्याः यत् काननं तस्मिन् यः कासारः तस्य; 'कासारः सरसी सरः' इत्यमरः। विततसारसस्य–वितताः सारसाः यत्र तस्य (बहुव्रीहि)। ईशशासन-विधानोपपादितेन–ईशस्य यत् शासनं तदेव विधानं तेन उपपादितं तेन (तत्पुरुष); 'शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः' इत्यमरः। विरच्य-वि+रच्+क्त्वा→ल्यप्। समिदाज्यसमुज्ज्वलिते–समिद्भिः आज्यैः च समुज्ज्वलिते (तत्पुरुष)। ज्वलने–अग्नि में। आहुतीकृत्य–आहुत+च्वि+कृ+क्त्वा→ल्यप्। तडित्समानकान्तिम्–तडित्समाना कान्तिः यस्याः ताम् (बहुव्रीहि); 'तडित् सौदामिनी विद्युत् चञ्चला चपला अपि' इत्यमरः। दिव्याम्–दिव+यत्+टाप्।

तदनु मणिमयमण्डलमण्डिता सकललोकललनाकुलललामभूता कन्यका काचन विनीतानेकसखीजनानुगम्यमाना कलहंसगत्या शनैरागत्यावनिसुरोत्तमाय मणिमेकमुज्ज्वलाकारमुपायनीकृत्य तेन 'का त्वम्' इति पृष्टा सोत्कण्ठस्वनेन मन्दं मन्दमुदञ्जलिरभाषत––

हिन्दी-अनुवाद––तत्पश्चात् मणिमय आभूषण समूह से भूषित, समस्त लोकों की ललनाओं में ललाम (सर्वाङ्ग सुन्दरी), अनेक सखियों से अनुगमित (अर्थात् अनेक सखियाँ जिसके पीछे-पीछे चल रही थीं) एक विनीत कन्या ने राजहंस की गति से (चाल से) धीरे से आकर उस दिव्य पुरुष को एक उज्ज्वल मणि भेंट की। उस पुरुष के द्वारा 'तुम कौन हो?' ऐसा पूछे जाने पर उस सुन्दरी ने उत्सुकतापूर्ण होकर कोयल के समान मधुर स्वर में हाथ जोड़कर धीरे-धीरे कहना प्रारम्भ किया––

संस्कृत-व्याख्या––तदनु=तदनन्तरम्, मणिमयमण्डनमण्डलमण्डिता=रत्नरचिताभूषणसमूहभूपिता, सकललोकललनाकुलललामभूता=समस्तभुवन-रमणीसमूहरत्नभूता, काचन=एका, विनीता=नम्रा, कन्यका=कुमारी,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेकसखीजनानगम्यमाना=अनेकसहचरीलोकानुगम्यमाना, कलहंसगत्या=राजहंसगत्या, शनैः=मन्दं मन्दम्, आगत्य=आगम्य, अवनिसुरोत्तमाय=भूसुरश्रेष्ठाय, उज्ज्वलाकारं=दीप्यमानम्, एकं मणिम्=रत्नविशेषम्, उपायनीकृत्य=उपहारीकृत्य, तेन=राजवाहनेन, का त्वम् ?=त्वं कासि ?, इति=एवम्, पृष्टा=कथिता, सोत्कण्ठा=उत्कलिकया सहिता, कलकण्ठस्वनेन=कोकिलस्वरेण, मन्दं मन्दं=शनैः शनैः, उदञ्जलिः=ऊर्ध्वाञ्जलिः, अभाषत=अवदत् ।

टिप्पणी–मणि······मण्डिता–मणिमयभूषणानां मण्डलैः मण्डिता (तत्पुरुष)। मणिमय–मणि+मयट् । सकल··· भूता–सकललोकेषु यत् ललनाकुलं (ललनानां कुलम्) तत्र ललामभूता (तत्पुरुष) । ललना–सुन्दरी स्त्री; 'प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी' इत्यमरः । अनेकसखीजनानुगम्यमाना–अनेकैः सखीजनैः अनुगम्यमाना (तत्पुरुष) । अनुगम्यमाना–अनु+गम्+यक्+शानच् । उपायनीकृत्य–उपायन+च्वि+कृ+क्त्वा→ल्यप् । 'उपायन–मुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा' इत्यमरः । कलकण्ठस्वनेन–कलकण्ठस्य स्वनेन (तत्पुरुष); कलकण्ठ–कोयल । उदञ्जलिः–उत् ऊर्ध्वं अञ्जलिः यस्याः सा (बहुव्रीहि) । यहाँ अनुप्रास की शोभा अवलोकनीय है ।

'भूसुरोत्तम ! अहमसुरोत्तमनन्दिनी कालिन्दी नाम । मम पितास्य लोकस्य शासिता महानुभावो निजपराक्रमासहिष्णुना विष्णुना दूरीकृतामरे समरे यमनगरातिथिरकारि ।

हिन्दी-अनुवाद—हे द्विजश्रेष्ठ ! मैं असुरराज की पुत्री कालिन्दी हूँ । मेरे परम प्रतापी पिता इस लोक के शासक थे । अपने जन के पराक्रम को न सहने वाले भगवान् विष्णु ने देवताओं के परास्त होने वाले समर में (उन्हें) यम नगर का अतिथि बना दिया अर्थात् मार डाला ।

संस्कृत-व्याख्या—भूसुरोत्तम=द्विजवर । अहं=प्रसिद्धा, असुरोत्तमनन्दिनी=असुरराजकन्या, कालिन्दी नाम=कालिन्दीसंज्ञया प्रसिद्धा । मम=मे, महानुभावः=महाप्रभावः, पिता=जनकः, अस्य लोकस्य=पाताललोकस्य, शासिता=शासकः, निजपराक्रमासहिष्णुना=स्वप्रभावसहनासमर्थेन, विष्णुना=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नारायणेन, दूरीकृतामरे= विजितदेवे, समरे=आहवे, यमनगरातिथिः= यमलोकाभ्यागतः, अकारि = कृतः ।

टिप्पणी—असुरोत्तमनन्दिनी—असुरेषु उत्तमः=असुरोत्तमः, तस्य नन्दिनी। 'असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः' इत्यमरः । शासिता—शास्+तृच् । महानुभावः—महान् अनुभावः यस्य सः (बहुव्रीहि); 'अनुभावः प्रभावे च' इत्यमरः। निजपराक्रमासहिष्णुना—निजपराक्रमस्य असहिष्णुना (तत्पुरुष) । दूरीकृतामरे—दूरीकृताः अमराः यस्मिन् तस्मिन् (बहुव्रीहि) । यमनगरातिथिः—यमनगरस्य अतिथिः (तत्पुरुष) ।

तद्वियोगशोकसागरमग्नां मामवेक्ष्य कोऽपि कारुणिकः सिद्धतापसोऽभाषत—

हिन्दी-अनुवाद—उनके वियोगरूपी शोक-सागर में निमग्न मुझे देखकर एक दयालु सिद्ध तपस्वी ने कहा—

संस्कृत-व्याख्या—तद्वियोगशोकसागरमग्नां—तद्विरहशोकसमुद्रनिमग्नाम्, माम्=कालिन्दीम्, अवेक्ष्य=विलोक्य, कोऽपि=कश्चित्, कारुणिकः= दयालुः, सिद्धतापसः=ज्ञानवान् योगी, अभाषत=अवदत् ।

टिप्पणी—तद्·········मग्नाम्—तस्य वियोगात् यः शोकः स एव सागरः, तस्मिन् मग्नाम् (तत्पुरुष) । अवेक्ष्य—अव+ईक्ष्+क्त्वा→ल्यप् । सिद्धतापसः—सिद्धश्चासौ तापसश्चेति (कर्मधारय) ।

'बाले, कश्चिद्दिव्यदेहधारी मानवो नवो वल्लभस्तव भूत्वा सकलं रसातलं पालयिष्यति' । तदादेशं निशम्य घनशब्दोन्मुखी चातकी वर्षागमनमिव तदालोकनकाङ्क्षिणी चिरमतिष्ठम् । मन्मनोरथफलायमानं भवदागमनमवगम्य मद्राज्यावलम्बभूतामात्यानुमत्या मदनकृतसारथ्येन मनसा भवन्तमागच्छम् । लोकस्यास्य राजलक्ष्मीमङ्गीकृत्य मां तत्सपत्नीं करोतु भवान् इति । मातङ्गोऽपि राजवाहनानुमत्या तां तरुणीं परिणीय दिव्याङ्गनालाभेन हृष्टतरो रसातलराज्यमुररीकृत्य परमानन्दमाससाद ।

हिन्दी-अनुवाद—'हे बाले ! कोई दिव्य शरीर को धारण करने वाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरुष तुम्हारा नवीन पति बनकर सम्पूर्ण पाताल लोक का पालन करेगा।' उन मुनि के आदेश को सुनकर मेघ के शब्द को सुनने के लिए उन्मुख वर्षा-गमन के लिए (उत्सुक) चातकी के समान तुम्हारे दर्शन के लिए इच्छुक मैं बहुत दिनों से बैठी थी। आपके आगमन को अपने मनोरथ का फल समझ-कर अपने राज्य का सञ्चालन करने वाले मन्त्रियों की अनुमति से, काम-वासना से युक्त मन से आपके पास आई हूँ। (अतः) आप इस (रसातल) लोक की राज्यलक्ष्मी को स्वीकार कर मुझे उसकी सौत बना लें। मातङ्ग ने श्री राजवाहन की आज्ञा से उस युवती के साथ विवाह कर, दिव्य ललना की प्राप्ति से प्रसन्नचित्त हो रसातल के राज्य को स्वीकार कर परमानन्द को प्राप्त किया।

संस्कृत-व्याख्या—बाले = कन्यके, कश्चित् = एकः, दिव्यदेहधारी = अलौकिकशरीरधारी, मानवः = पुरुषः, तव = ते, नवः = नवीनः, वल्लभः = प्रियः, भूत्वा, सकलं = समस्तम्, रसातलं = पातालम्, पालयिष्यति = रक्षिष्यति। तदादेशं = तद्वाक्यम्, निशम्य = श्रुत्वा, घनशब्दोन्मुखी = मेघध्वानोन्मुखी, चातकी = सारङ्गी, वर्षागमनमिव = वर्षर्तुकालागमनमिव, तवालोकनकाङ्क्षिणी = भवद्दर्शनाकाङ्क्षिणी, चिरं = चिरकालम्, अतिष्ठम् = स्थिता। मन्मनोरथफलायमानं = मदभिलाषफलभूतम्, भवदागमनं = श्रीमदागमनम्, अवगम्य = ज्ञात्वा, मद्राज्यावलम्बभूतामात्यानुमत्या = मद्राज्याश्रितभूतसचिवाज्ञया, मदनकृतसारथ्येन = कामदेवप्रेरितेन, मनसा = चेतसा, भवन्तं = श्रीमन्तम्, आगच्छम् = आगतास्मि। अस्य लोकस्य = पाताललोकस्य, राजलक्ष्मीं = राजश्रियम्, अङ्गीकृत्य = स्वीकृत्य, तत्सपत्नीं = राजलक्ष्म्याः सपत्नीम्, भवान् = श्रीमान्, माम् = कालिन्दीम्, करोतु = विदधातु। मातङ्गोऽपि = एतदाख्योऽपि, राजवाहनानुमत्या = राजवाहननिदेशेन, तां = पूर्वोक्ताम्, तरुणीं = युवतीम्, परिणीय = विवाह्य, दिव्याङ्गनालाभेन = ललनाललामलाभेन, हृष्टतरः = प्रसन्नतरः, रसातलराज्यं = पातालराज्यम्, उररीकृत्य = स्वीकृत्य, परमानन्दं = परमसुखम्, आससाद = प्राप।

टिप्पणी—दिव्यदेहधारी—दिव्यदेहं धरतीति तच्छीलः। दिव्य—दिव +

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यत् । तदादेशं–तस्य आदेशम् (तत्पुरुष) । निशम्य–नि + शम् + क्त्वा→ ल्यप् । घनशब्दोन्मुखी–घनशब्देन उन्मुखी (तत्पुरुष) । आगमनम्–आ + गम् + ल्युट् । तवालोकनकाङ्क्षिणी–तव आलोकनस्य काङ्क्षा यस्याः सा (बहुव्रीहि); 'इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः' इत्यमरः। मन्मनोरथफलायमानं–मम मनोरथस्य फलायमानम् (तत्पुरुष) । अवगम्य–अव + गम् + क्त्वा→ल्यप् । मद्राज्या········ मत्या–मम राज्यस्य अवलम्बभूताः ये अमात्या तेषाम् अनुमत्या (तत्पुरुष) । मदनकृतसारथ्येन–मदनेन कृतं यत् सारथ्यं यस्य तेन (बहुव्रीहि) । सारथ्यम्–सारथेरिदं–सारथि + ष्यञ्; 'सूतः क्षत्ता च सारथिः' इत्यमरः, परिणीय–परि + नी + क्त्वा→ल्यप् । दिव्याङ्गनालाभेन–दिव्याङ्गनायाः लाभेन (तत्पुरुष) ।

85

राजवाहनस्य प्रत्यावर्तनं भ्रमणं च

वञ्चयित्वा वयस्यगणं समागतो राजवाहनस्तदवलोकनकौतूहलेन भुवं गमिष्णुः कालिन्दीदत्तं क्षुत्पिपासादिक्लेशनाशनं मणिं साहाय्यकरणसंतुष्टान्मातङ्गाल्लब्ध्वा कंचनाध्वानमनुवर्तमानं तं विसृज्य बिलपथेन तेन निर्ययौ । तत्र च मित्रगणमनवलोक्य भुवं बभ्राम ।

हिन्दी-अनुवाद—मित्रों को धोखा देकर (उनसे बिना ही कहे हुए) आये हुए राजवाहन ने उनको (मित्रों को) देखने की उत्कण्ठा से पृथ्वी पर लौटना चाहा। कालिन्दी के द्वारा प्रदत्त भूख-प्यास आदि क्लेशों को नष्ट करने वाली मणि को, सहायता करने से संतुष्ट मातङ्ग से प्राप्तकर, कुछ दूर तक पहुँचाने के लिए आये हुए उस (मातङ्ग) को लौटाकर राजवाहन उस बिल मार्ग से निकल आया। वहाँ (जहाँ मित्रों को छोड़ गया था) मित्रों को न देखकर पृथ्वी पर घूमने लगा।

संस्कृत-व्याख्या—वयस्यगणं=मित्रसमूहम्, वञ्चयित्व=प्रतार्य, समागतः=समायातः, राजवाहनः=एतदाख्यः, तदवलोकनकौतूहलेन=वयस्यगणावलोकनकौतुकेन, भुवं=पृथ्वीम्, गमिष्णुः=चरिष्णुः, कालिन्दीदत्तं=कालिन्दीप्रदत्तम्, क्षुत्पिपासादिक्लेशनाशनं=क्षुत्पिपासादिकष्टनाशकरम्,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

णि=रत्नम्, साहाय्यकरणसंतुष्टात्=सहायताविधानहृष्टात्, मातङ्गात्=मातङ्गनामकपुरुषात्, लब्ध्वा=प्राप्य, कञ्चन=कमपि, अध्वानं=मार्गम्, अनुवर्तमानं=आगच्छन्तम्, तं=मातङ्गम्, विसृज्य=परित्यज्य, तेन=उक्तेन, बिलपथेन=रन्ध्रमार्गेण, निर्ययौ=निर्जगाम । तत्र च=तस्मिन् स्थाने, मित्रगणं=सुहृद्गणम्, अनवलोक्य=न दृष्ट्वा, भुवं=धराम् बभ्राम=भ्रमति स्म ।

टिप्पणी—वयस्य–मित्र; वयस्+यत्; 'वयस्यः स्निग्धः सवया अथ मित्रं सखा सुहृत्' इत्यमरः । समागतः–सम्+आ+गम्+क्त । तदवलोकनकौतूहलेन–तस्य (वयस्यगणस्य) अवलोकनाय यत कौतूहलम्, तेन; 'कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम्' इत्यमरः । गमिष्णुः–गम्+इष्णिच् । क्षुत्पिपासादिक्लेशनाशनम्–क्षुत् च पिपासा च, ते आदी येषां क्लेशानाम्, तेषां नाशनम् (तत्पुरुष) । साहाय्यकरणसंतुष्टात्–साहाय्यकरणेन संतुष्टात् (तत्पुरुष) । लब्ध्वा–लभ्+क्त्वा । अनुवर्तमानं-अनु+वृत्+शानच् । विसृज्य–वि+सृज्+क्त्वा→ल्यप् । अनवलोक्य–न अवलोक्य=अनवलोक्य ।

सोमदत्तस्य साक्षात्कारः

भ्रमंश्च विशालोपशल्ये कमप्याक्रीडमासाद्य तत्र विश्रमिषुरान्दोलिकारूढं रमणीसहितमाप्तजनपरिवृतमुद्याने समागतमेकं पुरुषमपश्यत् । सोऽपि सानन्देन पल्लवितचेता विकसितवदनारविन्दः 'मम स्वामी सोमकुलावतंसो विशुद्धयशोनिधी राजवाहन एषः । महाभाग्यतयाकाण्ड एवास्य पादमूलं गतवानस्मि । सम्प्रति महान्नयनोत्सवो जातः' इति ससम्भ्रममान्दोलिकाया अवतीर्य सरभसपदविन्यासविलासिहर्षोत्कर्षचरितस्त्रिचतुरपदान्युद्गतस्य चरणकमलयुगलं गलदुल्लसन्मल्लिकावलंयेन मौलिना पस्पर्श ।

हिन्दी-अनुवाद—परिभ्रमण करते हुए (एक दिन) किसी विशाल ग्राम के समीप एक उद्यान को पाकर वहाँ विश्राम करने के इच्छुक उसने रमणी (सुन्दरी स्त्री) के सहित पालकी पर आरूढ़ और नौकरों से घिरे हुए उद्यान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में आये हुए एक पुरुष को देखा। परमानन्द से प्रसन्नचित्त और खिले हुए मुखकमल वाले उस पुरुष ने भी (कहा–) ये तो चन्द्रकुलभूषण विशुद्ध यश के निधान मेरे स्वामी राजवाहन हैं। बड़े भाग्य से अनवसर में (सहसा) ही इनके चरणों में पहुँच गया हूँ। इस समय नेत्रों को अत्यन्त आनन्द हो रहा है। ऐसा कहते हुए शीघ्रतापूर्वक पालकी से उतरकर वेगपूर्वक पैरों को पृथ्वी पर रखने से विलसित हर्षातिरेक चरित वाले उस पुरुष ने तीन-चार पग बढ़े हुए राजवाहन के चरणकमलों को, झुकने के कारण खिसकती हुयी विकसित मल्लिकाप्रसून की मालाओं से युक्त मस्तक के द्वारा स्पर्श किया।

संस्कृत-व्याख्या––भ्रमंश्च = अटंश्च, विशालोपशल्ये = विशालग्रामन्त-भागे, कमपि = एकम्, आक्रीडम् = उद्यानम्, आसाद्य = प्राप्य, तत्र = तस्मिन् उद्याने, विशश्रमिषुः = विश्रमितमिच्छुः, आन्दोलिकारूढं = शिविकारूढम्, रमणी-सहितं = ललनासंयुतम्, आप्तजनपरिवृतं = इष्टजनावृतम्, उद्याने = आक्रीडे, समागतं = समायातम्, एकं पुरुषं = कञ्चित् मनुष्यम्, अपश्यत् = आलोकयत् । सोऽपि = पुरुषोऽपि, परमानन्देन = अत्यानन्देन, पल्लवितचेताः = प्रफुल्लितचेताः, विकसितवदनारविन्दः = पल्लवितमुखकमलः, मम = मे, स्वामी = महाराजः, सोमकुलावतंसः = चन्द्रवंशावतंसः, विशुद्धयशोनिधिः = पवित्रकीर्तिनिधिः, एषः = अयम्, राजवाहनः = एतदाख्यः । महाभाग्यतया = अत्यन्तसौभाग्येन, अकाण्ड एव = अनवसर एव, अस्य = एतस्य, पादमूलं = चरणमूलम्, गतवानस्मि = प्राप्तवानस्मि । सम्प्रति = अधुना, महान् = अतिशयः, नयनोत्सवः = नेत्रानन्दः, जातः = प्राप्तः, इति = एवम्, ससम्भ्रमं = सत्वरम्, आन्दोलिकायाः = शिविकातः, अवतीर्य = अवतरणं कृत्वा, सरभस-पदविन्यासविलासिहर्षोत्कर्षचरितः = सत्वरचरणविक्षेपप्रकाशमानहर्षाधिक्य-भावः, त्रिचतुरपदानि = त्रीणि चत्वारि वा चरणानि, उद्गतस्य = प्रचलितस्य, (राजवाहनस्य), चरणकमलयुगलं = पादपद्मद्वयम्, गलदुल्लसन्मल्लिका-वलयेन = स्खलद्विकसन्मल्लिकाख्यकुसुमवलयेन, मौलिना = शिरसा, पस्पर्श = सादरं स्पृष्टवान् ।

टिप्पणी––भ्रमन्–भ्रम् + शतृ । विशालोपशल्ये–विशालं यत् उपशल्यं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्मिन् (कर्मधारय); 'ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्' इत्यमरः। आक्रीड–उद्यान; आक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम्' इत्यमरः। आप्तजनपरिवृतम्=आप्त-जनैः परिवृतम् (तत्पुरुष)। परिवृतम्-परि+वृ+क्त। परमानन्देन–परमश्चासौ आनन्दश्चेति (कर्मधारय)। पल्लवितचेताः–पल्लवितं चेतः यस्य सः (बहुव्रीहि)। विकसितवदनारविन्दः–विकसितं वदनारविन्दं यस्य सः। सोमकुलावतंसः–सोमकुलस्य अवतंसः (तत्पुरुष)। विशुद्धयशोनिधिः–विशुद्धानि तानि यशांसि विशुद्धयशांसि, तेषां निधिः (तत्पुरुष)। 'यशः कीर्तिः समज्ञा च' इत्यमरः। नयनोत्सवः--नयनयोः उत्सवः (तत्पुरुष)। आन्दोलिकायाः–पालकी से, अवतीर्य–अव+तॄ+क्त्वा→ल्यप्। सरभस·········चरितः–सरभसपदविन्यासेन विलासि हर्षोत्कर्षस्य चरितम् यस्य सः (बहुव्रीहि)। गलद्···लयेन–गलत् उल्लसत् मल्लिकावलयं यस्मात् एवं भूतेन (बहुव्रीहि)। अनुप्रास की शोभा अवलोकनीय है।

प्रमोदाश्रुपूर्णो राजा पुलकिताङ्गं तं गाढमालिङ्ग्य 'अये सौम्य सोमदत्त!' इति व्याजहार। ततः कस्यापि पुन्नागभूरुहस्य छायाशीतले तले उपविष्टेन मनुजनाथेन सप्रणयमभाणि––'सखे! कालमेतावन्तं, देशे कस्मिन्, प्रकारेण केनास्थायि भवता, संप्रति कुत्र गम्यते, तरुणी केयम्, एष परिजनः सम्पादितः कथम्, कथय' इति।

हिन्दी-अनुवाद––आनन्दाश्रुओं से परिपूर्ण नेत्रों वाले राजा राजवाहन ने भी पुलकित अङ्गों वाले उस पुरुष का गाढ़ आलिङ्गन कर 'अरे सौम्य सोमदत्त!' ऐसा कहा। तत्पश्चात् किसी एक नागकेशर वृक्ष की शीतल छाया के नीचे बैठे हुए राजा राजवाहन ने नम्रतापूर्वक कहा–'मित्र, इतने समय तक किस देश में और किस प्रकार आप रहे हैं? इस समय कहाँ जा रहे हो? यह युवती कौन है। यह परिजन कैसे मिला? बतलाइये।

संस्कृत-व्याख्या––प्रमोदाश्रुपूर्णः=आनन्दाश्रुपरिपूर्णः, राजा=भूपतिः, पुलकिताङ्गं=रोमाञ्चितशरीरम्, तं=पूर्वोक्तम्, गाढं=दृढम्, आलिङ्ग्य=आश्लिष्य, अये=सम्बोधने, सौम्य=सुन्दर, सोमदत्त=सोमदत्ताख्य, इति=एवम्, व्याजहार=उक्तवान्। ततः=तदनन्तरम्, कस्यापि=एकस्य, पुन्नाग-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूरुहस्य=एतदाख्यवृक्षस्य, छायाशीतले=अनातपशीते, तले=अधोभागे, संविष्टेन=उपविष्टेन, मनुजनाथेन=भूपतिना राजवाहनेन, सप्रणयं=सविनयम्, अभाषि=अभाषि, सखे=मित्र, एतावन्तं कालं=एतावन्तं समयम्, कस्मिन् देशे=कस्मिन् प्रदेशे, केन प्रकारेण=केन रूपेण, भवता=त्वया, अस्थायि=स्थितम्, सम्प्रति=अधुना, कुत्र गम्यते=कस्मिन् स्थाने गम्यते, इयं तरुणी=एषा युवती, का ? एषः परिजनः=अयं भृत्यवर्गः, कथं=केन प्रकारेण, सम्पादितः=कृतः, कथय=वद, इति ।

टिप्पणी—प्रमोदाश्रुपुर्णः—प्रमोदस्य अश्रुभिः पूर्णः (तत्पुरुष); 'मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसम्मदाः' इत्यमरः । पुलकिताङ्गम्—पुलकितम् अङ्गं यस्य तम् (बहुव्रीहि) । आलिङ्ग्य—आ+लिङ्ग्+क्त्वा→ल्यप् ।

सोऽपि मित्रसंदर्शनव्यतिकरापगतचिन्ताज्वरातिशयो मुकुलितकरकमलः सविनयमात्मीयप्रचारप्रकारमवोचत् ।

हिन्दी-अनुवाद—उस सोमदत्त ने भी मित्र के दर्शन से चिन्तारूपी ज्वराधिकता से मुक्त हो अपने करकमलों की अञ्जलि बांधकर नम्रतापूर्वक अपने परिभ्रमण वृत्तान्त को कहना प्रारम्भ किया ।

संस्कृत-व्याख्या—सोऽपि=सोमदत्तोऽपि, मित्रसंदर्शनव्यतिकरापगतचिन्ताज्वरातिशयः=मित्रावलोकनव्यापारदूरीभूतचिन्तासन्तापातिशयः, मुकुलितकरकमलः=बद्धाञ्जलिः, सविनयं=नम्रतापूर्वकम्, आत्मीयप्रचारप्रकारं=स्वपरिभ्रमणभेदम्, अवोचत्=अवदत् ।

टिप्पणी—मित्र··· ·······अतिशयः—मित्रसंदर्शनस्य यः व्यतिकरः तेन अपगतः चिन्ताज्वरातिशयः यस्मात् सः (बहुव्रीहि) । मुकुलितकरकमलः—मुकुलितं करकमलं येन सः (बहुव्रीहि) । आत्मीयप्रचारप्रकारं—आत्मीयः यः प्रचारः तस्य प्रकारः तम् (तत्पुरुष); 'प्रकारो भेदसादृश्ये' इत्यमरः ।

द्वितीयोच्छ्वास समाप्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीयोच्छ्वासः

सोमदत्तस्य चरितम्

'भवच्चरणकमलसेवाभिलाषीभूतोऽहं भ्रमन्नेकस्यां वनावनौ पिपासाकुलो लतापरिवृतं शीतलं नदसलिलं पिबन्नुज्ज्वलाकारं रत्नं तत्रैकमद्राक्षम् । तदादाय गत्वा कंचनाध्वानमम्बरमणेरत्युष्णतया गन्तुमक्षमो वनेऽस्मिन्नेव किमपि देवतायतनं प्रविष्टो दीनाननं बहुतनयसमेतं स्थविरमहीसुरमेकमवलोक्य कुशलमुदितदयोऽहमपृच्छम् ।

हिन्दी-अनुवाद—हे राजन् ! आपके चरण-कमलों की सेवा का इच्छुक किसी वन-भूमि में घूमता हुआ प्यास से व्याकुल हो लताओं से घिरे हुए शीतल नद-जल को पीते हुए मैंने वहाँ एक चमकीले रत्न को देखा । उसे लेकर कुछ दूर तक चला परन्तु भगवान् सूर्य की अत्यधिक गर्मी से चलने में असमर्थ उसी वन में किसी देवमन्दिर में प्रविष्ट हो, अनेक पुत्रों के सहित दीन मुख वाले एक वृद्ध ब्राह्मण को देखकर दया से युक्त मैंने (उसके) कुशल को पूछा ।

संस्कृत-व्याख्या—देव=स्वामिन्, भवच्चरणकमलसेवाभिलाषीभूतः=तव पादपद्मपरिचर्यामनोरथवान्, अहं=सोमदत्तः, भ्रमन्=विचरन्, एकस्यां=कस्याञ्चित्, वनावनौ=विपिनप्रदेशे, पिपासाकुलः=पिपासया व्याकुलः, लतापरिवृतं=लतावेष्टितम्, शीतलं=शीतम्, नदसलिलं=अर्णवजलम्, पिबन्=धयन्, तत्र=तस्मिन् स्थाने, उज्ज्वलाकारं=देदीप्यमानम्, एकं रत्नं=मणिम्, अद्राक्षम्=अपश्यम् । तद्=रत्नम्, आदाय=गृहीत्वा, कञ्चन=किमपि, अध्वानं=मार्गम्, गत्वा=अतिक्रम्य, अम्बरमणेः=सूर्यस्य, अत्युष्णतया=अधिकोष्णतया, गन्तुं=यातुम्, अक्षमः=असमर्थः, अस्मिन्नेव वने=अस्मिन्नेव विपिने, किमपि=एकम्, देवतायतनं=देवमन्दिरम्, प्रविष्टः, दीनाननं=दुर्गतमुखम्, बहुतनयसमेतं=अनेकसुतयुक्तम्, एकं=कमपि,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थविरमहीसुरं=वृद्धविप्रम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा, उदितदयः=समुत्पन्नकृपः, अहं=सोमदत्तः, कुशलं=क्षेमम्, अपृच्छम्=पृष्टवान् ।

टिप्पणी—भव······भूतः-भवतः चरणकमलयोः सेवायाम् अभिलाषीभूतः (तत्पुरुष) । अभिलाषीभूत–अभिलाष+च्वि+भू+क्त । भ्रमन्–भ्रम्+शतृ । वनावनौ–वनस्य अवनौ (तत्पुरुष); 'क्ष्माऽवनिर्मेदिनी मही' इत्यमरः। पिपासाकुलः–पातुमिच्छा पिपासा, तया आकुलः (तत्पुरुष)। लतापरिवृतं–लतया परिवृतम् (तत्पुरुष); 'वल्ली तु व्रततिर्लता' इत्यमरः । परिवृतं–परि+वृ+क्त । नदसलिलं–नदस्य सलिलमिति (तत्पुरुष) 'सरस्वन्तौ नदार्णवौ' इत्यमरः, 'सलिलं कमल जलम्' इति चामरः। पिबन्–पिब्+शतृ । उज्ज्वलाकारं-उज्ज्वलः आकारः यस्य तत् (बहुव्रीहि) । आदाय–आ+दा+क्त्वा→ल्यप् । अम्बरमणेः–अम्बरस्य मणिः तस्य=सूर्य; 'द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः' इत्यमरः । देवतायतनं–देवतायाः आयतनम् (तत्पुरुष) । प्रविष्टः–प्र+विश्+क्त । बहुतनयसमेतं–बहुभिः तनयैः समेतम् (तत्पुरुष); 'आत्मजस्तनयः सूनुः' इत्यमरः । स्थविर=वृद्ध, 'प्रवयाः स्थविरो वृद्धः' इत्यमरः । अवलोक्य–अव+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । उदितदयः–उदिता दया यस्मिन् सः (बहुव्रीहि)। कुशलं–कुशल । ब्राह्मण से कुशलवृत्तान्त पूछना चाहिए–ऐसा शास्त्रों का विधान है । मनुस्मृति में कहा गया है–'ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत् ।' यहाँ अनुप्रास नामक अलंकार है ।

कार्पण्यविवर्णवदनो महदाशापूर्णमानसोऽवोचदग्रजन्मा–महाभाग, सुतानेतान्मातृहीनाननेकैरुपायै रक्षन्निदानीमस्मिन्कुदेशे भैक्ष्यं संपाद्य ददेतेभ्यो वसामि शिवालयेस्मिन्' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—कृपणता के कारण खिन्न मुख वाला वह ब्राह्मण मन में बड़ी आशा रखकर कहने लगा–महाभाग, मैं अनेक उपायों से इन मातृहीन बच्चों की रक्षा करता हुआ इस समय कुदेश में भिक्षा को माँगकर उसे इन (बच्चों) को देता हुआ इस शिवालय में निवास कर रहा हूँ ।

संस्कृत-व्याख्या—कार्पण्यविवर्णवदनः=कार्पण्यमलिनमुखः, महदाशापूर्णमानसः=अत्यधिकाशाभिव्याप्तमानसः, अग्रजन्मा=विप्रः, अवोचत्=अवदत्,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाभाग=भगवन्, एतान्=इमान्, सुतान्=पुत्रान्, मातृहीनान्=जननी-रहितान्, अनेकैः=वहुभिः, उपायैः=प्रयत्नैः, रक्षन्=परिपालयन्, इदानीं=सम्प्रति, अस्मिन्=एतस्मिन्, कुदेशे=कुत्सिते देशे, भैक्ष्यं=भिक्षावृत्तिम्, सम्पाद्य=अर्जयित्वा, एतेभ्यः=शावकेभ्यः,ददत्=प्रयच्छत्,अस्मिन्=एतस्मिन्, शिवालये=शिवमन्दिरे, वसामि=वासं करोमि इति ।

टिप्पणी--कार्पण्यविवर्णवदनः--कार्पण्येन विवर्णं वदनं यस्य सः; कार्पण्य-कृपण+ष्यञ् । महदाशापूर्णमानसः--महदाशया पूर्णं मानसं यस्य सः (बहुव्रीहि)। अग्रजन्मा--अग्रे जन्म यस्य सः (बहुव्रीहि) । अग्रजन्मा--ब्राह्मण । महाभाग-महान् भागः यस्य सः, तत्सम्बुद्धौ । रक्षन्--रक्ष्+शतृ । ददत्--दा+शतृ ।

'भूदेव, एतत्कटकाधिपती राजा कस्य देशस्य, किंनामधेयः, किमत्रागमन-कारणमस्य' इति पृष्टोऽभाषत महीसुरः । 'सौम्य, मत्तकालो नाम लाटेश्वरो देशस्यास्य पालयितुर्वीरकेतोस्तनयां वामलोचनां नाम तरुणीरत्नमसमानलावण्यं श्रावं श्रावमवधूतदुहितृप्रार्थनस्य तस्य नगरीमरौत्सीत् । वीरकेतुरपि भीतो मह-दुपायनमिव तनयां मत्तकालायादात् ।

हिन्दी-अनुवाद--हे पृथ्वी के देवता ! इस सेना के स्वामी किस देश का राजा है ? इसका क्या नाम है ? इसके यहाँ आगमन का प्रयोजन क्या है ? ऐसा पूछे जाने पर वह ब्राह्मण बोला--सौम्य ! मत्तकाल नामक लाटेश्वर ने इस देश के पालक वीरकेतु की अद्वितीय सौन्दर्य से युक्त और तरुणियों में रत्न वामलोचना नामक पुत्री को सुनकर (उसके गुण तथा सौन्दर्य के विषय में सुनकर) कन्या (वामलोचना) की प्रार्थना को ठुकरा देने वाले (मत्तकाल ने वामलोचना नामक कन्या के साथ विवाह का प्रस्ताव उसके पिता वीरकेतु के पास भेजा, जिसे उसने अस्वीकार कर दिया ।) उस वीरकेतु की नगरी को घेर लिया । भयभीत वीरकेतु ने भी बड़ी भेंट के समान अपनी पुत्री (वामलोचना) को मत्तकाल के लिए समर्पित कर दिया ।

संस्कृत-व्याख्या--भूदेव=भूसुर !, एतत्कटकाधिपतिः=एतत्सेनास्वामी, कस्य देशस्य, राजा=नृपः, किं नामधेयः=किं नाम, अत्र=अस्मिन् स्थाने, आगमनकारणं=आगमनप्रयोजनम्, किम् अस्तीति शेषः । इति=एवम्,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पृष्टः=कथितः, महीसुरः=नृपतिः, अभाषत=अभणत्, सौम्य=सुभग, मत्तकालो नाम=एतदाख्यः, लाटेश्वरः=लाटाधीशः, अस्य=देशस्य, तनयां=पुत्रीम्, वामलोचनां नाम=एतदाख्याम्, तरुणीरत्नं=युवतीरत्नम्, असमानलावण्यं=अनुपमसौन्दर्यम्, श्रावं श्रावम्=पुनः-पुनः श्रुत्वा, अवधूतदुहितृप्रार्थनस्य=अवधूता तिरस्कृता दुहितुः कन्यायाः प्रार्थना येन तस्य, तस्य=वीरकेतोः, नगरीं=पुरीम्, अरौत्सीत्=रुरोध । भीतः=भययुक्तः, वीरकेतुरपि=एतदाख्योऽपि, महदुपायनमिव=महोपहारमिव, तनयां=कन्यकाम्, मत्तकालाय=एतदाख्याय, अदात्=दत्तवान् ।

टिप्पणी—एतत्कटकाधिपतिः–एतस्य कटकस्य अधिपतिः (तत्पुरुष)। 'एतत्कटकाधिपती राजा' यहाँ 'रोरि' से रेफ का लोप तथा 'ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' से दीर्घ । तरुणीरत्नं–तरुणीषु रत्नमिति (तत्पुरुष) । असमानलावण्यं–असमानं लावण्यं यस्य तत् (बहुव्रीहि) । लावण्यं–लवण+ष्यञ् । अवधूतदुहितृप्रार्थनस्य–अवधूता दुहितुः प्रार्थना येन तस्य (बहुव्रीहि) ।

तरुणीलाभहृष्टचेता लाटपतिः 'परिणेया निजपुर एव' इति निश्चित्य गच्छन्निजदेशं प्रति सम्प्रति मृगयादरेणात्र वने सैन्यावासमकारयत् । कन्यासारेण नियुक्तो मानपालो नाम वीरकेतुमन्त्री मानधनश्चतुरंगबलसमन्वितोऽन्यत्र रचितशिबिरस्तं निजनाथावमानखिन्नमानसोऽन्तर्बिभेद' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—तरुणी की प्राप्ति से प्रसन्नचित्त लाटेश्वर ने 'अपने नगर में ही (ले जाकर) विवाह करूँगा' ऐसा निश्चयकर अपने देश को जाता हुआ वह इस समय शिकार खेलने की इच्छा से इस वन में पड़ाव डाले पड़ा है। कन्यारूपी धनवाले वीरकेतु के द्वारा नियुक्त अभिमानी वीरकेतु के मन्त्री मानपाल ने चतुरङ्गिणी सेना से समन्वित अन्यत्र पड़ाव को डालकर अपने स्वामी के अपमान से खिन्न मन हो मत्तकाल की सेना में फूट डाल दी अर्थात् भेद डाल दिया ।

संस्कृत-व्याख्या–तरुणीलाभहृष्टचेताः=युवतीप्राप्तिप्रसन्नचेताः, लाटपतिः=लाटेश्वरः, निजपुरे=स्वकीये नगरे, एव=हि, परिणेया=विवाहनीया, इति=एवम्, निश्चित्य=निर्णीय, निजदेशं=स्वदेशं, प्रति, गच्छन्=व्रजन्, सम्प्रति=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधुना, मृगयादरेण=आखेटेच्छया, अत्र वने=अस्मिन् विपिने, सैन्यावासं=कटकम्, अकारयत्=कारितवान् । कन्यासारेण=कन्या बाला एव सारं धनं यस्य तेन, नियुक्तः, मानपालः नाम=एतदाख्यः, वीरकेतुमन्त्री=वीरकेतुसचिवः, मानधनः=एतदाख्यः, चतुरङ्गबलसमन्वितः=हस्त्यश्वरथपदातिरूपसैन्यसंयुक्तः, अन्यत्र=अन्यस्मिन् स्थाने, रचितशिबिरः=विहितसैन्यनिवेशः, निजनाथावमानखिन्नमानसः=स्वनाथापमानदुःखितचित्तः, तं=लाटेश्वरम्, अन्तर्बिभेद=अन्तर्भेदमकरोत् ।

टिप्पणी–तरुणी······चेताः–तरुण्याः लाभेन हृष्टं चेतः यस्य सः (बहुव्रीहि) । परिणेया–परि+नी+यत+टाप् । 'निजदेशं प्रति' यहाँ 'अभितः परितः समया निकषा हा प्रति योगेऽपि' से द्वितीया विभक्ति होती है । मृगयादरेण–मृगयायाः आदरेण (तत्पुरुष); 'आखेटो मृगया स्त्रियाम्' इत्यमरः । कन्यासारेण–कन्या एव सारः यस्य तेन (बहुव्रीहि) । नियुक्तः–नि+युज्+क्त । वीरकेतुमन्त्री=वीरकेतोः मन्त्री (तत्पुरुष) । चतुरङ्गबलसमन्वितः–चतुरङ्गं बलं यस्य तेन समन्वितः (तत्पुरुष) । रचितशिबिरः–रचितं शिबिरं येन सः (बहुव्रीहि) । निजनाथावमानखिन्नमानसः–निजनाथस्य अवमानेन खिन्नं मानसं यस्य सः (बहुव्रीहि); 'चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः' इत्यमरः ।

विप्रोऽसौ बहुतनयो विद्वान्निर्धनः स्थविरश्च दानयोग्य इति तस्मै करुणापूर्णमना रत्नमदाम् । परमाह्लादविकसिताननोऽभिहितानेकाशीः कुत्रचिदग्रजन्मा जगाम । अध्वश्रमखिन्नेन मया तत्र निरवेशि निद्रासुखम् । तदनु पश्चान्निगडितबाहुयुगलः स भूसुरः कशाघातचिह्नितगात्रोऽनेकनैस्त्रिंशिकानुयातोऽभ्येत्य माम् 'असौ दस्युः' इत्यदर्शयत् ।

हिन्दी-अनुवाद––यह ब्राह्मण वृद्ध, निर्धन, विद्वान् तथा बहुत सी सन्तानों से युक्त है अतएव दान के योग्य है, इस कारणा से करुण से परिपूर्ण चित्त होकर उसे वह रत्न दे दिया । अत्यन्त आह्लाद से प्रसन्न मुख वाला वह ब्राह्मण अनेक आशीर्वाद देकर कहीं चला गया । रास्ता चलने के कारण थका हुआ मैं वहीं गाढ़ निद्रा में निमग्न हो गया अर्थात् गहरी नींद में सो गया । इसके थोड़ी देर बाद बँधे हुए बाहुयुगल वाला, चाबुक के प्रहार से चिह्नित शरीर वाला और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेक खड्गधारी पुरुषों के द्वारा अनुगत उस ब्राह्मण ने मेरे समीप आकर 'यह चोर है' इस प्रकार (मुझे) दिखलाया।

संस्कृत-व्याख्या—असौ=अयम्, विप्रः=ब्राह्मणः, वहुतनयः=बहुसुतः, विद्वान्=कोविदः, निर्धनः=दरिद्रः, स्थविरश्च=वृद्धश्च, (अतः) दानयोग्यः =दानपात्रम्, इति=एवम्, करुणापूर्णमनाः=दयापरिपूर्णचेताः, तस्मै= वृद्धविप्राय, रत्नं=मणिम्, अदाम्=दत्तवान्। परमाह्लादविकसिताननः= परमानन्दप्रफुल्लवदनः, अभिहितानेकाशीः=अभिहिता उक्ता अनेकाः आशिषः आशीर्वचनानि येन सः, अग्रजन्मा=विप्रः, कुत्रचित्, जगाम=ययौ। अध्वश्रम-खिन्नेन=मार्गपरिश्रमश्रान्तेन, मया=सोमदत्तेन, तत्र=देवायतने, निद्रासुखं= शयनानन्दम्, निरवेशि=अन्वभावि। तदनु=तदनन्तरम्, पश्चात्, निगडित-बाहुयुगलः=आबद्धभुजयुगलः, कशाघातचिह्नितगात्रः=कशाप्रहारचिह्नित-शरीरः, अनेकनैस्त्रिंशिकानुयातः=अनेकैः बहुभिः नैस्त्रिंशिकैः खड्गधारिभिः पुरुषैः अनुयातः अनुगतः, स भूसुरः=स विप्रः, माम्=सोमदत्तम्, अभ्येत्य=समागत्य, असौ दस्युः=असौ चौरः, इति अदर्शयत्=दर्शयति स्म।

टिप्पणी—बहुतनयः–बहवः तनयाः यस्य सः (बहुव्रीहि)। विद्वान्–बुध, 'विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः सन् सुधी कोविदो बुधः' इत्यमरः। निर्धनः–निर्= नास्ति धनं यस्य सः। करुणापूर्णमनाः–करुणया पूर्णं मनः यस्य सः (बहुव्रीहि)। परमाह्लादविकसिताननः–परमाह्लादेन विकसितम् आननं यस्यसः (बहुव्रीहि); 'आननं लपनं मुखम्' इत्यमरः। अभिहितानेकाशीः–अभिहिताः अनेकाः आशिषः येन सः (बहुव्रीहि)। अग्रजन्मा–ब्राह्मण; 'द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः। विप्रश्च ब्राह्मणः' इत्यमरः। अध्वश्रमखिन्नेन–अध्वनि यः श्रमः, तेन खिन्नेन (तत्पुरुष)। निद्रासुखं-निद्रायाः सुखमिति (तत्पुरुष); 'स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि' इत्यमरः। निगडितबाहुयुगलः–निगडितं बाहुयुगलं यस्य सः (बहुव्रीहि)। कशाघातचिह्नितगात्रः–कशया यः आघातः तेन चिह्नितं गात्रं यस्य सः (बहुव्रीहि)। गात्र–शरीर, 'गात्रं संहननं वपुः' इत्यमरः। अनेकनैस्त्रिं-शिकानुयातः–अनेकैः नैस्त्रिंशिकैः अनुयातः (तत्पुरुष)। नैस्त्रिंशिक–खड्ग धारण करने वाले पुरुष। अभ्येत्य–अभि+इण्+क्त्वा→ल्यप्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परित्यक्तभूसुरा राजभटा रत्नावाप्तिप्रकारं मदुक्तमनाकर्ण्य भयरहितं मां गाढं नियम्य रज्जुभिरानीय कारागारं 'एते तव सखायः' इति निगडितान्कांश्चिन्निर्दिष्टवन्तो मामपि निगडितचरणयुगलमकार्षुः। किङ्कर्तव्यतामूढेन निराशक्लेशानुभवेनावोचि मया – 'ननु पुरुषा वीर्यपरुषाः, निमित्तेन केन निर्विशथ कारावासदुःखं दुस्तरम्। यूयं वयस्या इति निर्दिष्टमेतैः, किमिदम्' इति।

हिन्दी-अनुवाद--उस ब्राह्मण को छोड़ देने वाले उन राजपुरुषों ने मेरे द्वारा कहे गये रत्न-प्राप्ति के प्रकार को न सुनकर भय से रहित मुझे रस्सों से मजबूती के साथ बाँधकर और जेल में ले जाकर 'ये तुम्हारे मित्र हैं' ऐसा कहकर कुछ बँधे हुए कैदियों को दिखलाते हुए मुझे भी आबद्ध चरणयुगल वाला कर दिया अर्थात् मेरे भी दोनों पैरों में बेड़ी डाल दी। 'सम्प्रति क्या करना चाहिए' इस बात को न जानते हुए तथा निराशा और क्लेश के अनुभव से मैंने कहा–'हे कठोर पराक्रम करने वाले वीरों, तुम लोग इस अपार (दुस्तर) कारावास में दुःख क्यों भुगत रहे हो ? इन लोगों ने (इन सिपाहियों ने) तुम लोगों की ओर इंगित कर कहा कि 'ये तुम्हारे मित्र हैं' इसका क्या आशय है ?

संस्कृत-व्याख्या–परित्यक्तभूसुराः = परित्यक्तविप्राः, राजभटाः = राजपुरुषाः, मदुक्तं = मन्निवेदितम्, रत्नावाप्तिप्रकारं = मणिप्राप्तिविधिम्, अनाकर्ण्य = न श्रुत्वा, भयरहितं = भीतिरहितम्, माम् = सोमदत्तम्, गाढं = दृढम्, नियम्य = बद्ध्वा, रज्जुभिः = दामभिः, कारागारं = बन्धनालयम्, आनीय, एते = इमे, तव = ते, सखायः = मित्राणि, इति = एवम्, कांश्चित्, निगडितान् = संयमितान्, निर्दिष्टवन्तः = दर्शितवन्तः, मामपि = सोमदत्तमपि, निगडितचरणयुगलं = संयमितपादद्वयम्, अकार्षुः = कृतवन्तः। किङ्कर्तव्यतामूढेन = किंकर्तव्यताविषये मूढेन, निराशाक्लेशानुभवेन = अप्रतीकारखेदानुभवेन, मया = सोमदत्तेन, अवोचि–ननु = प्रश्ने, वीर्यपरुषाः = कठोरपराक्रमशालिनः, पुरुषाः = मनुष्याः, केन निमित्तेन = केन कारणेन, दुस्तरं = अपारम्, कारावासदुःखं = वन्दिगृहयन्त्रणाम्, निर्विशथ = अनुभवथ, यूयं = भवन्तः, वयस्याः = सखायः, इति = एवम्, एतैः = राजभटैः, निर्दिष्टम् = दर्शितम्, किमिदं = अस्य क आशयः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी—परित्यक्तभूसुराः—परित्यक्तः भूसुरः यैः ते (बहुव्रीहि)। रत्नाप्तिप्रकारं—रत्नस्य अवाप्तेः प्रकारम् (तत्पुरुष)। अवाप्ति—अव+आप्+क्तिन्। नियम्य—नि+यम्+क्त्वा→ल्यप्। आनीय—आ+नी+क्त्वा→ल्यप्। निर्दिष्टवन्तः—निर्+दिश्+क्तवतु। निगडितचरणयुगलं—निगडितं चरणयुगलं यस्य तम् (बहुव्रीहि)। किंकर्तव्यतामूढेन—किंकर्तव्यस्य भावः किंकर्तव्यता, तस्यां मूढः तेन (तत्पुरुष)। ननु—यहाँ 'ननु' शब्द प्रश्नवाचक है। 'प्रश्नावधारणानुज्ञा ननु' इत्यमरः।

तथाविधं मामवेक्ष्य, भूसुरान्मया श्रुतं लाटपतिवृत्तान्तं व्याख्याय चोरवीराः पुनरवोचन्—'महाभाग! वीरकेतुमन्त्रिणो मानपालकिङ्कराः वयम्। तदाज्ञया लाटेश्वरमारणाय रात्रौ सुरंगद्वारेण तदगारं प्रविश्य तत्र राजाभावेन विषण्णा बहुधनमाहृत्य महाटवीं प्राविशाम।

हिन्दी-अनुवाद—इस प्रकार मुझे वन्दी एवं दुःखित देखकर लाटपति के वृत्तान्त को ब्राह्मण के मुख से जैसा मैंने सुना था वैसा ही सुनाकर वे चोरवीर फिर कहने लगे— हे महाभाग!, हम लोग वीरकेतु के मन्त्री मानपाल के भृत्य हैं। उनकी (मन्त्री की) आज्ञा से रात्रि में लाटदेशाधिप के वध के लिए हम लोग सुरङ्गमार्ग से उसके भवन में प्रवेशकर, परन्तु वहाँ राजा के अभाव से अत्यन्त खिन्न हो (वहाँ से) बहुत धन को चुराकर एक बहुत बड़े वन में चले गये।

संस्कृत-व्याख्या—तथाविधं=तथाभूतम्, माम्=सोमदत्तम्, अवेक्ष्य=विलोक्य, लाटपतिवृत्तान्तं=लाटेश्वरोदन्तम्, भूसुरात्=विप्रात्, (यथा) श्रुतं=आकर्णितम्, मया=सोमदत्तेन, (तथा) व्याख्याय=कथयित्वा, चौरवीराः=पूर्वोक्ताः पुरुषाः, पुनः=भूयः, अवोचन्=उक्तवन्तः; महाभाग=ऐश्वर्यशालिन्, वयं, वीरकेतुमन्त्रिणः=वीरकेतोः एतदाख्यस्य मन्त्रिणः सचिवस्य, मानपालकिङ्कराः=मानपालभृत्याः, तदाज्ञया=तदादेशेन, लाटेश्वरमारणाय=लाटेश्वरहननाय, रात्रौ=क्षपायाम्, सुरङ्गद्वारेण=बिलमार्गेण, तदगारं=तस्य भवनम्, प्रविश्य, तत्र=गृहे, राजाभावेन=नृपानुपस्थित्या, विषण्णाः=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म्लानाः, (वयम्) बहुधनं=प्रचुरं द्रव्यम्, आहृत्य=समादाय, महाटवीं=महारण्यम्, प्राविशाम=प्रविष्टाः ।

टिप्पणी—अवेक्ष्य–अव+ईक्ष्+क्त्वा→ल्यप् । लाटपतिवृत्तान्तम्–लाटपतेः वृत्तान्तमिति (तत्पुरुष) । श्रुतम्–श्रु+क्त । वीरकेतुमन्त्रिणः–वीरकेतोः मन्त्रिणः (तत्पुरुष) । लाटेश्वरमारणाय–लाटेश्वरस्य मारणाय (तत्पुरुष); मारणं–मारना, मार्यंते इस अर्थ में ल्युट् प्रत्यय होता है । सुरङ्गद्वारेण–सुरङ्गस्य द्वारेण (तत्पुरुष) । राजाभावेन–राज्ञः अभावेन (तत्पुरुष) । विषण्णः–वि+सद्+क्त । आहृत्य-आ+हृ+क्त्वा→ल्यप् ।

अपरेद्युश्च पदान्वेषिणो राजानुचरा बहवोऽभ्येत्य धृतधनचयानस्मान्परितः परिवृत्य दृढतरं बद्ध्वा निकटमानीय समस्तवस्तुशोधनवेलायामेकस्यानर्घ्यरत्नस्याभावेनास्मद्वधाय माणिक्यादानायास्मान्किलाशृंखलयन्' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—दूसरे दिन चरणचिह्नों के द्वारा अन्वेषण करने वाले बहुत से राजभृत्यों ने आकर धन समूह को धारण करने वाले हम लोगों को चारों ओर से घेरकर मजबूती से बाँधकर राजा के पास ले जाकर समस्त वस्तुओं के शोधन-समय पर (देखाभाली किये जाने पर) एक बहुमूल्य रत्न के अभाव के कारण हम लोगों के वध के लिए निर्देश मिला । साथ ही मणि के लौटाने तक (हम लोग कारावास में) बाँधकर रक्खे गये ।

संस्कृत-व्याख्या—अपरेद्युश्च=अन्यस्मिन् दिवसे, पदान्वेषिणः=चरणान्वेषिणः, बहवः=अनेके, राजानुचराः=राजभृत्याः, अभ्येत्य=समागत्य, धृतधनचयान्=धृतवित्तसमूहान्, अस्मान् परितः=अस्मान् समन्तात्, परिवृत्य=परिवेष्ट्य, दृढतरं=अत्यन्तगाढम्, बद्ध्वा=संयम्य, निकटं=समीपम्, आनीय, समस्तवस्तुशोधनवेलायां=अखिलवस्तुमार्गणकाले, एकस्य अनर्घ्यरत्नस्य=बहुमूल्यरत्नस्य, अभावेन=अप्राप्त्या, अस्मद्वधाय=अस्माकं वधहेतवे, माणिक्यादानाय=मणिग्रहणार्थम्, अस्मान्=चौरवीरान्, अशृङ्खलयन्=निगडितान् अकुर्वन्, इति ।

टिप्पणी—पदान्वेषिणः–अन्वेष्टुं शीलं येषां ते, पदानि अन्वेषिणः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(तत्पुरुष)। राजानुचराः—राज्ञः अनुचराः (तत्पुरुष)। अभ्युपेत्य—अभि+उप+इण्+क्त्वा→ल्यप्। धृतधनचयान्—धृतः धनचयः यैः तान् (बहुव्रीहि)। 'अस्मान् परितः' यहाँ 'अभितः परितः समयानिकषाहा प्रतियोगेऽपि' से द्वितीया होती है। परिवृत्य—परि+वृ+क्त्वा→ल्यप्। दृढ़तरं—दृढ़+तरप्। समस्त-वस्तुशोधनवेलायां—शोधनस्य वेला=शोधनवेला, समस्तवस्तूनां शोधनवेला, तस्याम् (तत्पुरुष)। अनर्घ्यरत्नस्य न अर्घ्यम् अनर्घ्यं च तद्रत्नं च तस्य।

श्रुतरत्नरत्नावलोकनस्थानोऽहम् 'इदं तदेव माणिक्यम्' इति निश्चित्य भूदेवदाननिमित्तां दुरवस्थामात्मनो जन्म नामधेयं युष्मदन्वेषणपर्यटनप्रकारं चाभाष्य समयोचितैः संलापैर्मैत्रीमकार्षम्। ततोऽर्धरात्रे तेषां मम च शृंखला-बन्धनं निर्भिद्य तैरनुगम्यमानो निद्रितस्य द्वाःस्थगणस्यायुधजालमादाय पुर-रक्षान्पुरतोऽभिमुखागतान्पटुपराक्रमलीलयाभिद्राव्य मानपालशिबिरं प्राविशम्। मानपालो निजकिंकरेभ्यो मम कुलाभिमानवृत्तातं तत्कालीनं विक्रमं च निशम्य मामार्चयत्।

हिन्दी-अनुवाद—उस श्रेष्ठरत्न को जानने वाले और उसे प्राप्त करने वाले मैंने विचार किया कि 'यह वही माणिक्य (रत्न) है' ऐसा निश्चय कर ब्राह्मण को दान देने के कारण हुयी दुरवस्था, अपनी जन्मकथा, अपना नाम और आपकी खोज के कारण पर्यटन आदि को बतलाकर समयोचित वार्तालाप के द्वारा (उन लोगों के साथ) मित्रता कर ली। तत्पश्चात् अर्धरात्रि में (मैंने) उनके और (उन्होंने) मेरे शृङ्खलाबन्धन को तोड़कर, उनके द्वारा अनुगमित, सोये हुए द्वारपालों के हथियारों को लेकर आगे बढ़ने पर सामने आये हुए नगररक्षकों को अपने प्रबल पराक्रम के द्वारा भगाकर मानपाल के शिविर में प्रविष्ट हुआ। मानपाल ने अपने नौकरों के द्वारा मेरे कुल और अभिमान के वृत्तान्त को और उस समय मेरे द्वारा पराक्रम को सुनकर मेरा स्वागत-सत्कार किया।

संस्कृत-व्याख्या—श्रुतरत्नरत्नावलोकनस्थानः = आकर्णितश्रेष्ठरत्नदर्शन-स्थानः, अहं=सोमदत्तः, इदं=एतत्, तदेव=चौरेणापहृतम्, माणिक्यं=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रेष्ठरत्नम्, इति=एवम्, निश्चित्य=निर्णीय, भूदेवदाननिमित्तां=भूसुरदान-कारणम्, दुरवस्थां=दुर्दशाम्, आत्मनः=स्वस्य, जन्म=उत्पत्तिः, नामधेयं=नाम, युष्मदन्वेषणपर्यटनप्रकारं=भवदन्वेषणपरिभ्रमणविधिम् च, आभाष्य=कथयित्वा, समयोचितैः=कालोचितैः, संलापैः=वार्तालापैः मैत्रीं=मित्रताम्, अकार्षम्=कृतवान् । ततः=तत्पश्चात्, अर्धरात्रे=निशीथे, तेषां=चौरवीराणाम्, मम च=अतमनश्च, शृङ्खलाबन्धनं=निगडबन्धनम्, निर्भिद्य=भङ्क्त्वा, तैः=चोरवीरैः, अनुगम्यमानः=अनुव्रज्यमानः, निद्रितस्य=सुप्तस्य, द्वास्थगणस्य=प्रतिहारसमूहस्य, आयुधजालं=अस्त्रसमूहम्, आदाय=गृहीत्वा, पुरतः=अग्रतः, अभिमुखागतान्=सम्मुखागतान्, पुररक्षान्=नगररक्षकान्, पटुपराक्रमलीलया=चतुरपराक्रमसामर्थ्येन, अभिद्राव्य=विद्राव्य, मानपालशिबिरं=मानपालकटकम्, प्राविशम्=अविशम् । मानपालः=एतदाख्यः, निजकिंकरेभ्यः=स्वानुचरेभ्यः, मम=मे, कुलाभिमानवृत्तान्तं=वंशाहङ्कारोदन्तम्, तत्कालीनं=तस्मिन् काले भवम्, विक्रमं=पराक्रमम्, च, निशम्य=श्रुत्वा, माम्, आर्चयत्=अपूजयत् ।

टिप्पणी—श्रुत ···· स्थानः—श्रुतं रत्नरत्नस्य अवलोकनस्थानं येन स तादृशः । रत्नरत्न—श्रेष्ठरत्न । भूदेवदाननिमित्तां—भूदेवाय यद् दानं तदेव निमित्तं यस्याः ताम् । नामधेय—नाम; 'आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च' इत्यमरः । युष्मदन्वेषणपर्यटनप्रकारं—युष्माकम् अन्वेषणे यत् पर्यटनं तस्य प्रकारम् (तत्पुरुष) । आभाष्य—आ+भाष्+क्त्वा→ल्यप् । संलापैः—सम्+लप्+घञ् तृ० व० व० । निर्भिद्य—निर्+भिद्+क्त्वा→ल्यप् । अनुगम्यमानः—अनु+गम्+यक्+शानच् । आयुधजालम्—आयुधानां जालम् (तत्पुरुष) । आदाय—आ+दा+क्त्वा→ल्यप् । पटुपराक्रमलीलया—पराक्रमस्य लीला, पटुः या पराक्रमलीला तया (कर्मधारय); अभिद्राव्य—अभि+द्रु+णिच्+क्त्वा→ल्यप् ; मानपालशिबिरं—मानपालस्य शिबिरम् (तत्पुरुष) । कुलाभिमान-वृत्तान्तं—कुलस्य अभिमानस्य च वृत्तान्तम् (तत्पुरुष) । निशम्य—नि+शम्+क्त्वा→ल्यप् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परेद्युर्मत्तकालेन प्रेषिताः केचन पुरुषा मानपालमुपेत्य 'मन्त्रिन्, मदीयराजमन्दिरे सुरङ्गया बहुधनमपहृत्य चोरवीरा भवदीयं कटकं प्राविशन्, तान् पंय। नो चेन्महाननर्थः भविष्यति' इति क्रूरतरं वाक्यमब्रुवन् । तदाकर्ण्य रोषारुणितनेत्रो मन्त्री 'लाटपतिः कः, तेन मैत्री का, पुनरस्य वराकस्य सेवया किं लभ्यम् इति तान्निरभर्त्सयत् ते च मानपालेनोक्तं विप्रलापं मत्तकालाय तथैवाकथयन् । कुपितोऽपि लाटपतिर्दोर्वीर्यगर्वेणाल्पसैनिकसमेतो योद्धुमभ्यगात् । पूर्वमेव कृतरणनिश्चयो मानी मानपालः सन्नद्धयोधो युद्धकामो भूत्वा निःशङ्कं निरगात् । अहमपि सबहुमानं मन्त्रिदत्तानि बहुलतुरंगमोपेतं चतुरसारथिं रथं च दृढतरं कवचं मदनुरूपं चापं च विविधबाणपूर्णं तूणीरद्वयं रणसमुचितान्यायुधानि गृहीत्वा युद्धसंनद्धो मदीयबलविश्वासेन रिपूद्धरणोद्युक्तं मन्त्रिणमन्वगाम् । परस्परमत्सरेण तुमुलसंगरकरमुभयसैन्यमतिक्रम्य समुल्लसद्भुजाटोपेन बाणवर्षं तदङ्गे विमुञ्चन्नरातीन्प्राहरम् ।

हिन्दी-अनुवाद—दूसरे दिन मत्तकाल के द्वारा भेजे गये कुछ पुरुषों (सिपाहियों) ने मानपाल के समीप आकर 'हे मन्त्रिन् ! मेरे राजभवन में सुरङ्ग के द्वारा घुसकर बहुत सा धन चुराकर चोर आपके सैन्यशिविर में प्रविष्ट हो गये हैं, उन्हें मुझे सौंप दें। अन्यथा महान् अनर्थ होगा।' इस प्रकार कठोर वचन बोले। उसे सुनकर क्रोध के कारण लाल नेत्रों वाले मन्त्री मानपाल ने 'लाटपति कौन हैं ? उससे मित्रता कब की ? और इस बेचारे की सेवा से मुझे क्या लाभ ? इस प्रकार उन (सिपाहियों) को खूब डाँटा। उन (सिपाहियों) ने मानपाल के द्वारा कही गयी विरोधोक्ति को मत्तकाल से उसी रूप में कह दिया। क्रुद्धित लाटपति भी बाहुबल के घमण्ड से थोड़ी सेना लेकर युद्ध के लिए निकल पड़ा। पहले से ही युद्ध का निश्चय कर लेने वाला, (युद्ध के लिए) समुद्यत योधाओं वाला, युद्ध का इच्छुक अभिमानी मानपाल निडर होकर चल पड़ा। मैं भी सम्मानपूर्वक मन्त्री के द्वारा प्रदत्त अनेकों घोड़ों से युक्त रथ, चतुर सारथी, दृढ़ कवच, मेरे योग्य धनुष, अनेक प्रकार के बाणों से परिपूर्ण दो तरकस और युद्ध के लिए योग्य शस्त्रास्त्र लेकर युद्ध के लिए संनद्ध (उद्युक्त) मेरे बल के विश्वास से शत्रुओं के विनाश के लिए उद्युक्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्त्री के पीछे-पीछे चला । परस्पर द्वेष से परिपूर्ण घमासान युद्ध करने वाली दोनों सेनाओं को लाँघकर मैंने प्रचण्ड भुजाओं के दर्प से उसकी सेनाओं (सिपाहियों) के ऊपर वाणवृष्टि करते हुए शत्रुओं पर प्रहार किया ।

संस्कृत-व्याख्या--परेद्यु:=अन्येद्यु:, मत्तकालेन=लाटाधीश्वरेण, प्रेषिता:, केचन=कतिचन, पुरुषा:=मनुष्या:, मानपालं=एतदाख्यम्, उपेत्य=समीपं गत्वा, मन्त्रिन्=अमात्य, मदीयराजमन्दिरे=मदीये राजभवने, सुरङ्गयां=बिलमार्गेणं, बहुधनं=प्रचुरवित्तम्, अपहृत्य=आदाय, चोरवीरा:=पूर्वोक्ता:, भवदीयं=भवत: इदम्, कटकं=सैन्यशिविरम्, प्राविशन्=अविशन्, तान्=चौरान्, अर्पय=समर्पय, नो चेत्=अन्यथा, महान्=अत्यधिक:, अनर्थ:=हानि:, भविष्यति, इति=एवम्, क्रूरतरं=कठोरतम्, वाक्यं=वचनम्, अब्रुवन्=अवदन् । तदाकर्ण्य=तच्छ्रुत्वा, रोषारुणितनेत्र:=कोपारक्तनयन:, मन्त्री=सचिव:, लाटपति:=लाटेश्वर:, क:, तेन मैत्री=मित्रता का, पुन:=भूय:, अस्य वराकस्य=अस्य विवेकरहितस्य, सेवया=परिचर्यया, किं लब्धुं योग्यम्, इति=एवम्, तान्=पूर्वोक्तान्, निरभर्त्सयत्=अतर्जयत् । ते च=पुरुषा:, मानपालेन=एतदाख्येन, उक्तं=कथितम्, विप्रलापं=विरोधोक्तिम्, मत्तकालाय=एतदाख्याय, तथैव=तेनैव प्रकारेण, अकथयन्=अवदन् । कुपितोऽपि=क्रुद्धितोऽपि, लाटपति:=लाटेश्वर:, दोर्वीर्यगर्वेण=भुजबलदर्पेण, अल्पसैनिकसमेत:=न्यूनसैनिकयुक्त:, योद्धुं=युद्धं कर्तुम्, अभ्यगात्=निर्गत: । पूर्वमेव=प्रागेव, कृतरणनिश्चय:=कृतसङ्ग्रामनिर्णय:, मानी=अभिमानी, मानपाल:=एतदाख्य:, सन्नद्धयोध:=समुद्यतवीर:, युद्धकाम:=सङ्ग्रामाभिलाषी, नि:शङ्कं भूत्वा=शङ्काविरहित:, निरगात्=निर्ययौ । अहमपि=सोमदत्तोऽपि, सबहुमानं=सम्मानसहितम्, मन्त्रिदत्तानि=अमात्यप्रदत्तानि, वहुलतुरङ्गमोपेतं=असंख्याश्वसंयुक्तम्, चतुरसारथिं=निपुणचालकम्, रथं च=स्यन्दनं च, दृढतरं=सुदृढम्, कवचं=तनुत्रम्, मदनुरूपं=मद्योग्यम्, चापं=धनु:, च, विविधबाणपूर्णं=नानाप्रकारबाणपरिपूर्णम्, तूणीरद्वयं=निषङ्गद्वयम्, रणसमुचितानि=युद्धयोग्यानि, आयुधानि=अस्त्राणि, गृहीत्वा=आदाय, युद्धसंनद्ध:=सङ्ग्रामोद्यत:, मदीयबलविश्वासेन=मम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शक्तिविश्वासेन, रिपूद्धरणोद्युक्तं=शत्रुविनाशतत्परम्, मन्त्रिणं=अमात्यम्, अन्वगाम्=अन्वगच्छाम् । परस्परमत्सरेण=अन्योन्यविद्वेषेण, तुमुलसंगरकरं=महासंङ्ग्रामकरम्, उभयसैन्यं=सैन्यद्वयम्, अतिक्रम्य=अतिक्रमणं कृत्वा, समुल्लसद्भुजाटोपेन=समुल्लसतः वृद्धिं गच्छतः भुजाटोपेन वाहुवलेन, तदङ्गे=तेषां शरीरे, बाणवर्षं=शरवृष्टिम्, विमुञ्चन्=परित्यजन्, अरातीन्=शत्रून्, प्राहरम्=अताडयम् ।

टिप्पणी—उपेत्य–उप+इण्+क्त्वा→ल्यप् । मदीयराजमन्दिरे=मदीयस्य राज्ञः मन्दिरे (तत्पुरुष) । अपहृत्य–अप+हृ+क्त्वा→ल्यप् । आकर्ण्य–आ+कर्ण्+क्त्वा→ल्यप् । रोषारुणितनेत्रः–रोषेण अरुणिते नेत्रे यस्य सः (बहुव्रीहि) । लभ्यम्–लभ्+यत् । विप्रलापं–वि+प्र+लप्+घञ् । दोर्वीर्यगर्वेण–दोषोः यत् वीर्यम्, तस्य गर्वेण (तत्पुरुष); 'भुजवाहू प्रवेष्टोः दोः' इत्यमरः । दोः=भुजा । अल्पसैनिकसमेतः–अल्पैः सैनिकैः समेतः (तत्पुरुष) । कृतरणनिश्चयः–कृतः रणस्य निश्चयः येन सः (बहुव्रीहि) । सन्नद्धयोधाः–सन्नद्धाः योधाः यस्य सः (बहुव्रीहि) । युद्धकामः–युद्धस्य कामः (तत्पुरुष); 'कामोऽभिलाषः तर्षश्च' इत्यमरः । मन्त्रिदत्तानि–मन्त्रिण दत्तानि (तत्पुरुष) । वहुलतुरङ्गमेपेतं–वहुलैः तुरङ्गमैः उपेतम् (तत्पुरुष) । चतुरसारथिं–चतुरः सारथिः यस्य तम् (बहुव्रीहि) । विविधवाणपूर्णं–विविधैः वाणैः पूर्णम् (तत्पुरुष) । तूणीर–तरकस; 'तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गाः' इत्यमरः । मदीयबलविश्वासेन–मदीयबलस्य विश्वासेन (तत्पुरुष) । रिपूद्धरणोद्युक्तं–रिपूणाम् उद्धरणे उद्युक्तम् (तत्पुरुष) । अतिक्रम्य–अति+क्रम्+क्त्वा→ल्यप् । समुल्लसद्भुजाटोपेन–समुल्लसतोः भुजयोः आटोपेन ।

ततोऽतिरयतुरंगमं मद्रथं तन्निकटं नीत्वा शीघ्रलङ्घनोपेततदीयरथोऽहमरातेः शिरःकर्तनमकार्षम् । तस्मिन्पतिते तदवशिष्टसैनिकेषु पलायितेषु नानाविधहयगजादिवस्तुजातमादाय परमानन्दसंततो मन्त्री ममानेकविधां संभावनामकार्षीत् ।

हिन्दी-अनुवाद—इसके पश्चात् अत्यन्त वेगवान् घोड़ों से युक्त अपने रथ को उस (लाटपति) के समीप ले जाकर शीघ्रतापूर्वक अतिक्रमण के द्वारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाटपति के रथ को पाकर मैंने शत्रु का शिर काट लिया। उस लाटेश्वर के गिरते ही उसके शेष सैनिकों के भाग जाने पर (शत्रुपक्ष के) अनेक घोड़े, हाथी आदि वस्तु समूह को लेकर अत्यन्त आनन्द से परिपूर्ण मन्त्री ने अनेक प्रकार से मेरा सत्कार किया।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तदनन्तरम्, अतिरयतुरङ्गमं=अजितवघोटकम्, मद्रथं=मत्स्यन्दनम्, तन्निकटं=तत्समीपम्, नीत्वा=आनीय, शीघ्रलङ्घनोपेततदीयरथः=सत्वरातिक्रमणप्राप्ततदीयशताङ्गः, अहं=सोमदत्तः, अरातेः=शत्रोः, शिराकर्त्तनं=मस्तकच्छेदनम्, अकार्षम्=कृतवान्। तस्मिन्=लाटपतौ, पतिते=मृते सति, तदवशिष्टसैनिकेषु=तस्य लाटपातेः अवशिष्टेषु शेषेषु सैनिकेषु सैन्येषु, पलायितेषु=इतस्ततो गतेषु, नानाविधहयगजादिवस्तुजातं=अनेकविधघोटकद्विपादिवस्तुसमूहम्, आदाय=गृहीत्वा, परमानन्दसंततः=परमानन्दपरिपूर्णः, मन्त्री=मानपालः, मम=मे, अनेकविधां=बहुप्रकारम्, सम्भावनां=सत्कारम्, अकार्षीत्=अकरोत्।

टिप्पणी—अतिरयतुरङ्गमम्—अतिरयाः तुरङ्गमाः यस्मिन् तम्(बहुव्रीहि)। नीत्वा—नी+क्त्वा। शीघ्रलङ्घनोपेततदीयरथः—शीघ्रं यत् लङ्घनम्, तेन उपेतः तदीयरथः येन सः (बहुव्रीहि)। शिरःकर्तनम्—शिरसः कर्तनम् (बहुव्रीहि)। तदवशिष्टसैनिकेषु—तस्य अवशिष्टेषु सैनिकेषु (तत्पुरुष)। नाना..............जातम्—नानाविधं हयाश्च गजाश्च आदौ येषां वस्तूनां तेषां जातम् (तत्पुरुष)। आदाय—आ+दा+क्त्वा→ल्यप्। परमानन्दसन्ततः—परमश्चासौ आनन्दश्चेति परमानन्दः तेन संततः (तत्पुरुष)।

मानपालप्रेषितात्तदनुचरादेनमखिलमुदन्तजातमाकर्ण्य संतुष्टमना राजाभ्युद्गतो मदीयपराक्रमे विस्मयमानः समहोत्सवममात्यबान्धवानुमत्या शुभदिने निजतनयां मह्यमदात्।

हिन्दी-अनुवाद—मानपाल के द्वारा प्रेषित अनुचर से उपर्युक्त समस्त वृत्तान्त को सुनकर प्रसन्नचित्त राजा वीरकेतु ने स्वयं अगवानी ली। मेरे पराक्रम पर आश्चर्य करते हुए उसने अत्यन्त उत्साह के साथ अपने मन्त्रियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा बान्धवों की अनुमति से शुभ-मुहूर्त में अपनी पुत्री मुझे दे दी अर्थात् अपनी कन्या से मेरा विवाह कर दिया ।

संस्कृत-व्याख्या—मानपालप्रेषितात्=मानपालाख्येन मन्त्रिणा प्रेषितात् । तदनुचरात्=तस्य भृत्यात्, एनं=उपर्युक्तम्, अखिलं=समस्तम्, उदन्तजातं=वृत्तान्तसमूहम्, आकर्ण्य=श्रुत्वा, सन्तुष्टमनाः=प्रसन्नचेताः, राजाभ्युद्गतः=राजा स्वयमेव सत्कारार्थमागतः, मदीयपराक्रमे=अस्मत् शौर्यकर्मणि, विस्मयमानः=आश्चर्यमावहन्, समहोत्सवं=महोत्सवसहितम्, अमात्यबान्धवानुमत्या=मन्त्रिबान्धवविचारेण, शुभदिने=मङ्गलमये मुहूर्ते, निजतनयां=स्वकन्यकाम् मह्यं=सोमदत्ताय, अदात्=दत्तवान् ।

टिप्पणी–मानपालप्रेषितात्–मानपालेन प्रेषितात् (तत्पुरुष) । तदनुचरात्–तस्य अनुचरात् (तत्पुरुष) । उदन्तजातम्–उदन्तस्य जातमिति (तत्पुरुष) । संतुष्टमनाः–संतुष्टं मनः यस्य सः (बहुव्रीहि) । विस्मयमानः–वि+स्मि+शानच् । अमात्यबान्धवानुमत्या–अमात्यानां बान्धवानां च अनुमत्या (तत्पुरुष) । 'मह्यम् अदात्' यहाँ 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' से सम्प्रदानसंज्ञा तथा 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी होती है ।

ततो यौवराज्याभिषिक्तोऽहमनुदिनमाराधितमहीपालचित्तो वामलोचनयाऽनया सह नानाविधं सौख्यमनुभवन्भवद्विरहवेदनाशल्यसुलभवैकल्यहृदयः सिद्धादेशेन सुहृज्जनावलोकनफलं प्रदेशं महाकालनिवासिनः परमेश्वरस्याराधनायाद्य पत्नीसमेतः समागतोऽस्मि । भक्तवत्सलस्य गौरीपतेः कारुण्येन त्वत्पदारविन्दसंदर्शनानन्दसंदोहो मया लब्ध' इति । तन्निशम्याभिनन्दितपराक्रमो राजवाहनस्तन्निरपराधदण्डे देवमुपालभ्य तस्मै क्रमेणात्मचरितं कथयामास ।

हिन्दी-अनुवाद––तत्पश्चात् युवराज के पद पर अभिषिक्त मैं प्रतिदिन राजा के चित्त को प्रसन्न करता हुआ इस वामलोचना के साथ अनेक प्रकार के सुखों का अनुभव करता हुआ, आपके वियोगजनित वेदनारूपी शल्य (शङ्कु) से व्याकुल हृदय वाला (मैं) सिद्ध पुरुषों के आदेश से मित्र के दर्शन कराने वाले इस प्रदेश में महाकाल निवासी भगवान् शंकर की उपासना के लिए आज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पत्नी के सहित आया हूँ । भक्तवत्सल भगवान् शंकर की कृपा से मैंने आपके चरणकमलों के दर्शन से उद्भूत आनन्द-सन्दोह (अत्यन्त आनन्द) को प्राप्त किया । यह सुनकर राजवाहन ने उसके (सोमदत्त के) पराक्रम की प्रशंसा की और उसके निरपराध दण्ड पर दैव की निन्दा करके क्रमशः अपने समस्त वृत्तान्त को कह सुनाया ।

संस्कृत-व्याख्या—ततः = तत्पश्चात्, यौवराज्याभिषिक्तः = युवराजपदे नियुक्तः, अहं = सोमदत्तः, अनुदिनं = प्रतिदिनम्, आराधितमहीपालचित्तः = संसेवितभूपतिमनाः, अनया = एतया, वामलोचनया = बालचन्द्रिकया, सह = साकम्, नानाविधं = बहुप्रकारम्, सौख्यम् = आनन्दम्, अनुभवन् = अनुभवनं कुर्वन्, भवद्विरहवेदनाशल्यसुलभवैकल्यहृदयः = त्वद्वियोगव्यथाशङ्कुसुलभवैकल्यचेताः, सिद्धादेशेन = सिद्धपुरुषवचनेन, सुहृज्जनावलोकनफलं = मित्रजनविलोकनलाभम्, प्रदेशं = स्थानम्, महाकालनिवासिनः = महाकालवासिनः, परमेश्वरस्य = शिवस्य, आराधनाय = पूजनाय, अद्य = अस्मिन् दिवसे, पत्नीसमेतः = स्त्रीसहितः, समागतोऽस्मि = समयातोऽस्मि, भक्तवत्सल्य = सेवककृपालोः, गौरीपतेः = शिवस्य, कारुण्येन = दयया, त्वत्पदारविन्दसंदर्शनानन्दसंदोहः = भवच्चरणकमलावलोकनानन्दसमूहः, मया = सोमदत्तेन, लब्धः = प्राप्तः, इति । तन्निशम्य = तच्छ्रुत्वा, अभिनन्दितपराक्रमः = प्रशंसितपराक्रमः, राजवाहनः = एतदाख्यः, तन्निरपराधदण्डे = तस्य सोमदत्तस्य निरपराधस्य अपराधशून्यस्य यः दण्डः कारावासः तस्मिन्, दैवं = दिष्टम्, उपालभ्य = निन्दित्वा, तस्मै = सोमदत्ताय, क्रमेण = क्रमशः, आत्मचरितं = निजचरितम्, कथयामास = अचकथत् ।

टिप्पणी—यौवराज्याभिषिक्तः—यौवराज्ये अभिषिक्तः (तत्पुरुष) । आराधितमहीपालचित्तः- आराधितं महीपालस्य चित्तं येन सः (बहुव्रीहि) । अनुभवन्—अनु + भू + शतृ । भवद्विरहवेदनाशल्यसुलभवैकल्यहृदयः = भवतः विरहेण या वेदना, सा एव शल्यम्, तेन वैकल्यम्, यत्र तादृशं हृदयं यस्य सः (बहुव्रीहि) । सिद्धादेशेन—सिद्धस्य आदेशेन (तत्पुरुष) । सुहृज्जनावलोकनफलं—सुहृज्जनस्य अवलोकनम् एव फलं यस्य तथाभूतम् (बहुव्रीहि) । कारुण्यं—दया 'कृपा दयाऽनुकम्पा च कारुण्यं करुणा घृणा' इत्यमरः । त्वत्पदा .....संदोहः-त्वत्पदार-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विन्दयोः संदर्शनेन यः आनन्दः तस्य सन्दोहः (तत्पुरुष)। 'वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम्' इत्यमरः । निशम्य–नि+शम्+क्त्वा→ल्यप् । अभिनन्दितपराक्रमः–अभिनन्दितः पराक्रमः येन सः (बहुव्रीहि)। संदोह–समूह; 'समूहो निवहव्यूहसन्दोहविसरव्रजाः' इत्यमरः । निरपराधदण्डे–निरपराधस्य यः दण्डः तस्मिन् । उपालभ्य–उप+आ+लभ्+यत् ।

पुष्पोद्भवस्यागमनम्

तस्मिन्नवसरे पुरतः पुष्पोद्भवं विलोक्य ससंभ्रमं निजनिटिलतटस्पृष्टचरणाङ्गुलिमुदञ्जलिममुं गाढमालिङ्ग्यानन्दबाष्पसंकुलसंफुल्ललोचनः सौम्य सोमदत्त, अयं स पुष्पोद्भव' इति तस्मै तं दर्शयामास ।

हिन्दी-अनुवाद–उसी समय अपने आगे घबराहट के साथ अपने मस्तक से राजवाहन के चरणाङ्गुलियों को स्पर्श करने वाले और हाथ जोड़ने वाले पुष्पोद्भव को देखकर, उसे दृढ़ता से आलिङ्गनकर आनन्दाश्रु से परिपूर्ण विकसित नेत्रों वाले राजवाहन ने 'सौम्य सोमदत्त !, यह वही पुष्पोद्भव है' ऐसा कहकर उसको (सोमदत्त को) उसे (पुष्पोद्भव को) दिखाया ।

संस्कृत-व्याख्या–तस्मिन्नवसरे=तस्मिन् काले, पुरतः=अग्रे, पुष्पोद्भवं=एतदाख्यम्, विलोक्य=दृष्ट्वा, ससंभ्रमं=सत्वरम्, निजनिटिलतटस्पृष्टचरणाङ्गुलिम्=निजेन स्वेन निटिलतटेन मस्तकस्थितेन स्पृष्टाः चरणाङ्गुलयः पादाङ्गुलयः येन तम्, उदञ्जलिं=बद्धाञ्जलिम्, अमुं=पुष्पोदभवम्, गाढं=दृढम्, आलिङ्ग्य=आश्लिष्य, आनन्दबाष्पसंकुलसम्फुल्ललोचनः=हर्षाश्रुपरिपूर्णविकसितनयनः, सौम्य सोमदत्त=भद्र सोमदत्त, अयं=एषः, सः=प्रसिद्धः, पुष्पोद्भवः=एतदाख्यः, इति=एवं कथयित्वा, तस्मै=सोमदत्ताय, तं=पुष्पोद्भवम्, दर्शयामास=अदर्शयत् ।

टिप्पणी––पुरतः–आगे, स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः' इत्यमरः । विलोक्य–वि+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । निज······चरणाङ्गुलिम्–निजेन निटिलतटेन स्पृष्टाः चरणाङ्गुलयः येन तम् (बहुव्रीहि)। आनन्द······लोचनः–आनन्दबाष्पेण संकुले सम्फुल्ले लोचने यस्य सः (बहुव्रीहि)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तौ च चिरविरहदुःखं विसृज्यान्योन्यालिङ्गनसुखमन्वभूताम् । ततस्तस्यैव महीरुहस्य छायायामुपविश्य राजा सादरहासमभाषत–'वयस्य, भूसुरकार्यं करिष्णुरहं 'मित्रगणो विदितार्थः सर्वथान्तरायं करिष्यतीति' निद्रितान्भवतः परित्यज्य निरगाम् । तदनु प्रबुद्धो वयस्यवर्गः किमिति निश्चित्य मदन्वेषणाय कुत्र गतवान् भवानेकाकी कुत्र गतः' इति । सोऽपि ललाटतटचुम्बदञ्जलिपुटः सविनयमलपत् ।

हिन्दी-अनुवाद—वे दोनों भी बहुत दिनों के वियोग के दुःख को त्यागकर परस्पर आलिङ्गन के सुख का अनुभव करने लगे । तत्पश्चात् उसी वृक्ष की छाया में बैठकर राजा राजवाहन ने आदर के साथ हँसते हुए कहा–'मित्र ! ब्राह्मण के कार्य को करने का इच्छुक मैं 'प्रयोजन को जानने वाले मित्रलोग सभी प्रकार से विघ्न करेंगे' ऐसा विचारकर आप लोगों को निद्रितावस्था में (सोते हुए) छोड़कर निकल गया । तत्पश्चात् जगा हुआ मित्रसमुदाय यह क्या ऐसा निश्चय कर मुझे खोजने के लिए कहाँ गया ? आप अकेले कहाँ गये हैं ? मस्तक को चूमने वाले अञ्जलिपुट से युक्त वह भी नम्रतापूर्वक बोला ।

संस्कृत-व्याख्या—तौ=सोमदत्तपुष्पोद्भवौ, च, चिरविरहदुःखं=दीर्घकालवियोगक्लेशम्, विसृज्य=परित्यज्य, अन्योन्यालिङ्गनसुखं=परस्परसंश्लेषानन्दम्, अन्वभूतां=अनुभवम् अकुरुताम्, ततः=तदनन्तरम्, तस्यैव=पूर्वोक्तस्यैव, महीरुहस्य=पादपस्य, छायायां=अनातपे, उपविश्य=स्थित्वा, राजा=राजवाहनः, वयस्य=मित्र, भुसुरकार्यं=विप्रकार्यम्, करिष्णुः=कर्तुं शीलः, अहं=राजवाहनः, विदितार्थः=ज्ञातप्रयोजनः, मित्रगणः=सुहृत्समूहः, सर्वथा=सर्वप्रकारेण, अन्तरायं=विघ्नम्, करिष्यति, इति, निद्रितान्=सुप्तान्, भवतः=युष्मान्, परित्यज्य=त्यक्त्वा, निरग्राम=निरगच्छम् । तदनु=तत्पश्चात्, प्रबुद्धः=जागरितः, वयस्यवर्गः=मित्रसमूहः, किमिति, निश्चित्य=निर्णीय, मदन्वेषणाय=मन्मार्गणाय, कुत्र=कस्मिन् स्थाने, गतवान् । भवान्=त्वम्, एकाकी=एककः, कुत्र, गतः=यातः, इति । सोऽपि=पुष्पोद्भवोपि, ललाटतटचुम्बदञ्जलिपुटः=भालस्थलस्पृशदञ्जलिपुटः, सविनयं=विनयेन सहितम्, अलपत्=अवोचत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी–महीरुह–वृक्ष । उपविश्य–उप+विश्+क्त्वा→ल्यप् । करिष्णुः–कृ+इष्णुच् । अन्तराय–विघ्न । परित्यज्य–परि+त्यज्+क्त्वा→ल्यप् । प्रबुद्धः-प्र+बुध्+क्त । गतवान्–गम्+क्तवतु । एकाकी–अकेले; 'एकाकी त्वेक एककः' इत्यमरः । 'तदनु······गतवान्'–मेरे चले जाने के पश्चात् जब आपलोग जगे तो क्या निश्चय कर मुझे खोजने कहाँ गये ? 'ललाट······पुटः'–ललाटतटं चुम्बत् अञ्जलिपुटं यस्य सः (बहुव्रीहि) । सविनयं–विनयेन सह (अव्ययीभाव) ।

तृतीयोच्छ्वासः समाप्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थोच्छ्वासः
पुष्पोद्भवचरितम्

'देव, महीसुरोपकारायैव देवो गतवानिति निश्चित्यापि देवेन गन्तव्यं देशं निर्णेतुमशक्नुवानो मित्रगणः परस्परं वियुज्य दिक्षु देवमन्वेष्टुमगच्छत् ।

हिन्दी-अनुवाद---हे राजन् ! ब्राह्मण के उपकार के लिए ही आप गये हैं ऐसा निश्चय होने पर भी आपके द्वारा गन्तव्य देश का निश्चय कर सकने वाले मित्र लोग परस्पर अलग-अलग होकर आपको चारों दिशाओं में खोजने के लिए निकल पड़े ।

संस्कृत-व्याख्या---देव = राजन्, महीसुरोपकाराय = विप्रस्योपकारार्थम् एव = हि, देवः = महाराजः, गतवान् = प्रस्थितः, इति = एवम्, निश्चित्य = निर्णीय, अपि = च, देवेन = राज्ञा, गन्तव्यं = प्रस्थातव्यम्, देशं = स्थानम्, निर्णेतुं = निश्चेतुम्, अशक्नुवानः = अशक्नुवन्, मित्रगणः = मित्रसमूहः, परस्परं = अन्योन्यम्, वियुज्य = पृथग्भूय, दिक्षु = आशासु, देवं = श्रीमन्तम्, अन्वेष्टुं = मार्गितुम्, अगच्छत् = अव्रजत् ।

टिप्पणी---महीसुरोपकाराय-महीसुरस्य उपकारः तस्मै (तत्पुरुष) । गन्तव्यं-गम् + तव्यत् । निर्णेतुं-निर् + नी + तुमुन् । अशक्नुवानः-यहाँ 'शक्लृ' परस्मैपदी धातु से शानच् प्रत्यय किया गया है जो कि अविहित है । वस्तुतः यहाँ शतृ प्रत्यय होकर 'अशक्नुवन्' प्रयोग होना चाहिए । वियुज्य- वि + युज् + क्त्वा→ल्यप् । अन्वेष्टुं-अनु + इष् + तुमुन् ।

अतर्कितः सङ्गमः

अहमपि देवस्यान्वेषणाय महीमटन्कदाचिदम्बरमध्यगतस्याम्बरमणेः किरण-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मसहिष्णुरेकस्य गिरितटमहीरुहस्य प्रच्छायशीतले तले क्षणमुपाविशम् । मम पुरोभागे दिनमध्यसमये संकचितसर्वावयवां कूर्माकृतिमानुषच्छायां निरीक्ष्योन्मुखो गगनतलान्महारयेण पतन्तं पुरुषं कंचिदन्तराल एव दयोपनतहृदयोऽहमवलम्ब्य शनैरवनितले निक्षिप्य दूरापातवीतसंज्ञं तं शिशिरोपचारेण विबोध्य शोकातिरेकेणोद्गतवाष्पलोचनं तं भृगुपतनकारणमपृच्छम् ।

हिन्दी-अनुवाद—मैं भी आपको खोजने के लिए पृथ्वी पर घूमते-घूमते एक दिन दोपहर के समय सूर्य की तेज किरणों को न सह सकने के कारण पर्वत के किनारे एक सघन छाया से युक्त शीतल तल वाले वृक्ष के नीचे थोड़ी देर के लिए बैठ गया। दोपहर के समय अपने समस्त अवयवों को सिकुड़ाये हुए कछुए के समान आकारवाले मनुष्य की छाया को देखकर ऊर्ध्वं मुखवाले (मैंने) आकाश से अत्यन्त वेग के साथ गिरते हुए किसी पुरुष को दया से युक्त हृदय होकर मैंने मध्य में ही सँभालकर धीरे से पृथ्वी पर रखकर दूर से गिरने के कारण नष्ट चेतना वाले उस छायाकार पुरुष को शीतल जल के छीटों से होश में लाकर, शोकाधिक्य के कारण निकले हुए आँसुओं से परिपूर्ण नेत्रों वाले उस पुरुष से पर्वत से गिरने के कारण को पूछा।

संस्कृत-व्याख्या—अहमपि=पुष्पोद्भवोऽपि, देवस्य=श्रीमतः, अन्वेषणाय=मार्गणाय, महीं=भूतलम्, अटन्=परिभ्रमन्, कदाचिद्=एकदा, अम्बरमणे=दिनकरस्य, अम्बरमध्यगतस्य=गगनमध्यावस्थितस्य, किरणं=अंशुजालम्, असहिष्णुः=सोढुमसमर्थः, एकस्य=कस्यचित्, गिरितटमहीरुहस्य=पर्वततीर वृक्षस्य, प्रच्छायशीतले=सघनच्छायशीते, तलं=भागे, क्षणम्=मुहूर्तम्, उपाविशम्=उपविष्टवान् । मम=मे, पुरोभागे=अग्रभागे, दिनमध्यसमये=मध्याह्नकाले, संकुचितसर्वावयवां=आकुञ्चितनिखिलावयवाम्, कूर्माकृतिमानुषच्छायां=कच्छपाकारमानवदेहकान्तिम्, निरीक्ष्य=विलोक्य, उन्मुखः=ऊर्ध्वाननः, गगनतलात्=आकाशप्रदेशात्, महारयेण=महाजवेन, पतन्तं=स्खलन्तम, कञ्चित्=एकम्, पुरुषं=मनुष्यम्, अन्तराले=मध्यभागे, एव=हि, दयोपनतहृदयः=कृपाविष्टमानसः, अहं=पुष्पोद्भवः, अवलम्ब्य=गृहीत्वा अवनितले=भूतले, शनैः=मन्दम्, निक्षिप्य=स्थापायित्वा, दूरापातवीतसंज्ञं=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रावपातापगतचेतनम्, तं=पूर्वोक्तम्, शिशिरोपचारेण=शीतलपदार्थोपचारेण, विबोध्य=विबोधनं कृत्वा, शोकातिरेकेण=शोकाधिक्येन, उद्गतबाष्पलोचनं=निःसृताश्रुनयनम्, तं=पूर्वोक्तं पुरुषम्, भृगुपतनकारणं=प्रपातस्खलनहेतुम्, पृच्छम्=पृष्टवान् ।

टिप्पणी--अन्वेषणाय–अनु+इष्+ल्युट्, चतुर्थी एकवचन । अटन्–ट्+शतृ । अम्बरमध्यगतस्य–अम्बरस्य मध्यं गतस्य, गतस्य–गम्+क्त; ष० ए० व० । अम्बरमणेः–सूर्य के । असहिष्णुः–नञ् (अ)+सह्+इष्णुच् । गिरितटमहीरुहस्य–गिरेः तटम्, तस्मिन् महीरुहस्य (तत्पुरुष) । प्रच्छायशीतले–प्रकृष्टा छाया प्रच्छायम्, तेन शीतलं तस्मिन् (तत्पुरुष) । दिनमध्यसमये–दिनस्य मध्यः, तस्मिन् समये (तत्पुरुष) । सङ्कुचितसर्वावयवां–सङ्कुचिताः सर्वाः अवयवाः यस्याः तादृशीम् (बहुव्रीहि) । कूर्माकृतिम्–कूर्मस्य आकृति-रिवाकृतिः यस्याः ताम् । 'कूर्मे कमठकच्छपौ' इत्यमरः । निरीक्ष्य–निर्+ईक्ष्+क्त्वा→ल्यप् । महारयेण–महांश्चासौ रयः, तेन (बहुव्रीहि) । दयोपनतहृदयः–दयया उपनतं हृदयं यस्य सः (बहुव्रीहि) । दूरापातवीतसंज्ञम्–दूरात् यः आपातः तेन वीता संज्ञा यस्य तम् (बहुव्रीहि) । शिशिरोपचारेण–शिशिरेण उपचारेण (तत्पुरुष) । शोकातिरेकेण–शोकस्य अतिरेकः, तेन (तत्पुरुष) । उद्गतबाष्प-लोचनं–उद्गतं वाष्पं याभ्याम् एवम्भूते लोचने यस्य तम् (बहुव्रीहि) । भृगुपतनकारणं–भृगोः पतनस्य कारणम् (तत्पुरुष); भृगु- प्रपात 'प्रपातस्त्वतटो भृगुः' इत्यमरः ।

सोऽपि कररुहैरश्रुकणानपनयन्नभाषत--'सौम्य, मगधाधिनाथामात्यस्य पद्मोद्भवस्यात्मसंभवो रत्नोद्भवो नामाहम् ।

हिन्दी-अनुवाद--उसने भी अंगुलियों से आँसुओं की बूँदों को पोंछते हुए कहा–सौम्य ! मैं मगधाधिपति राजहंस के मन्त्री पद्मोद्भव का पुत्र रत्नोद्भव हूँ ।

संस्कृत-व्याख्या–सोऽपि पूर्वोक्तः पुरुषोऽपि, कररुहैः=अंगुलिभिः, अश्रुकणान्=नेत्राम्बुलवान्, अपनयन्=प्रोञ्छन्, अभाषत=अवदत्, सौम्य=सुभग,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मगधाधिनाथामात्यस्य=मगधाधीशमन्त्रिणः, पद्मोद्भवस्यं=एतदाख्यस्य, आत्मसम्भवः=सुतः, रत्नोद्भवो नाम=एतदाख्यः अस्मीति शेषः

टिप्पणी—अपनयन्–अप+नी+शतृ । अभाषत–भाष्–धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व० । आत्मसम्भवः–पुत्र, आत्मजस्तनयः सूनुः' इत्यमरः ।

वाणिज्यरूपेण कालयवनद्वीपमुपेत्य कामपि वणिक्कन्यकां परिणीय तया सह प्रत्यागच्छन्नम्बुधौ तीरस्यानतिदूर एव प्रवहणस्य भग्नतया सर्वेषु निमग्नेषु कथं कथमपि दैवानुकूल्येन तीरभूमिमभिगम्य निजांगनावियोगदुःखार्णवे प्लवमानः कस्यापि सिद्धतापसस्यादेशादरेण षोडशहायनानि कथंचिन्नीत्वा दुःखस्य पारमनवेक्षमाणो गिरिपतनमकार्यम्' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—व्यापार की कामना से कालयवन द्वीप में जाकर एक वैश्य-कन्या के साथ विवाह कर उसके साथ लौटते हुए समुद्र के तट के समीप में ही नाव के भग्न हो जाने से सभी लोगों के डूब जाने पर जिस किसी प्रकार दैव की अनुकूलता से किनारे पर आकर, अपनी रमणी (प्रियतमा) के वियोग-रूपी दुःख-सागर में बहता हुआ एक सिद्ध तपस्वी की आज्ञा के प्रति आदर-भाव से सोलह वर्षों को किसी प्रकार व्यतीतकर दुःख के पार को न देखता हुआ मैं पर्वत से नीचे कूद पड़ा ।

संस्कृत-व्याख्या—वाणिज्यरूपेण=व्यापारकामनया, कालयवनद्वीपं कालयवनाख्यं देशम्, उपेत्य=प्राप्य गत्वा वा, कामपि=एकाम्, वणिक्कन्यकां=वणिक्कुमारीम्, परिणीय=विवाह्य, तया=कन्यकया, सह=साकम्, प्रत्यागच्छन्=प्रत्याव्रजन्, अम्बुधौ=सागरे, तीरस्य=तटस्य, अनतिदूरे=समीपे, एव=हि, प्रवहणस्य=नौकायाः, भग्नतया=विशीर्णतया, सर्वेषु=समेषु, निमग्नेषु=सागरे मग्नेषु, कथं कथमपि=येन केन प्रकारेण, दैवानुकूल्येन=भाग्यानुकूलतया, तीरभूमिं=तटप्रदेशम्, अभिगम्य=प्राप्य, निजाङ्गनावियोगदुखार्णवे=स्वकीयरमणीविरहशोकसागरे, प्लवमानः=तरन्, कस्यापि=एकस्य सिद्धतापसस्य=सिद्धतपस्विनः, आदेशादरेण=उपदेशविश्वासेन, षोडशहायनानि=षोडश वर्षाणि, कथाञ्चित्=येन केन प्रकारेण,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नीत्वा=अतिवाह्य, दुःखस्य=शोकस्य, पारं=अन्तम्, अनवेक्षमाणः=अपश्यन्, गिरिपतनं=पर्वतपतनम्, अकार्षम्=कृतवान्, इति ।

टिप्पणी--उपेत्य-उप+इण्+क्त्वा→ल्यप् । परिणीय-परि+नी+क्त्वा→ल्यप् । 'तया सह' 'सहयुक्तेऽप्रधाने' से तृतीया । प्रत्यागच्छन्-प्रति+आ+गम्+शतृ । दैवानुकूल्येन-दैवस्य आनुकूल्येन (तत्पुरुष), 'दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः' इत्यमरः । अभिगम्य-अभि+गम्+क्त्वा→ल्यप् । निजाङ्गनावियोगदुःखार्णवे-निजायाः अङ्गनायाः यद् वियोगदुःखं तद्रूपः अर्णवः तस्मिन् । अङ्गना-सुन्दरी स्त्री । अर्णवः-समुद्र; अर्णांसि सन्ति अस्मिन्निति-अणस्+व । प्लवमानः-प्लव्+शानच् । सिद्धतापसस्य-सिद्धश्चासौ तापसश्चेति, तस्य (कर्मधारय) । आदेशादरेण-आदेशस्य आदरेण (तत्पुरुष) । हायनानि-वर्ष; 'संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः' इत्यमरः । नीत्वा-नी+क्त्वा । अनवेक्षमाणः-अव+ईक्ष्+शानच्=अवेक्षणमाणः, न अवेक्षमाणः=अनवेक्षमाणः । गिरिपतनम्-गिरेः पतनमिति (तत्पुरष) ।

तस्मिन्नेवावसरे किमपि नारीकूजितमश्रावि-'न खलु समुचितमिदं यत्सिद्धादिष्टे पतितनयनमिलने विरहमसहिष्णुर्वैश्वानरं विशसि' इति ।

हिन्दी-अनुवाद--उसी समय पर एक स्त्री के रोने की आवाज सुनायी दी--'यह उचित नहीं है कि सिद्ध पुरुष के द्वारा आदिष्ट पति और पुत्र के मिलन के (भविष्य में) होने पर (भी) विरह को सहन करने में असमर्थ होकर अग्नि में प्रवेश कर रही हो ।

संस्कृत-व्याख्या--तस्मिन्नेवावसरे=तस्मिन्नेव क्षणे, किमपि=अनिर्वचनीयम्, नारीकूजितं=स्त्रीक्रन्दनध्वनिम्, अश्रावि=श्रुतम् । इदं=एतत्, न न खलु समुचितं=नहि खलु योग्यम्, यत्, पतितनयमिलने=पतिपुत्रसङ्गमे, सिद्धादिष्टे=सिद्धमुनिकथिते, विरहं=वियोगम्, असहिष्णुः=सोढुमशक्नुवती, वैश्वानरं=अग्निम्, विशसि=प्रविशसि ।

टिप्पणी--नारीकूजितम्-नार्याः कूजितम् (तत्पुरुष) । सिद्धादिष्टे-सिद्धेन आदिष्टे (तत्पुरुष) । आदिष्ट-आ+दिश्+क्त । पतितनयमिलने-पत्युः तन-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यस्य च मिलने (तत्पुरुष)। वैश्वानर—अग्नि; 'अग्निर्वैश्वानरो वह्निः वीतिहोत्रो धनञ्जयः' इत्यमरः।

तन्निशम्य मनोविदितजनकभावं तमवादिषम्—तात, भवते विज्ञापनीयानि बहूनि सन्ति। भवतु। पश्चादखिलमाख्यातव्यम्। अधुना नारीकूजितमनुपेक्षणीयं मया। क्षणमात्रमत्र भवता स्थीयताम्' इति।

हिन्दी-अनुवाद—ऐसा सुनकर मन से (उनके) पितृभाव को समझकर मैंने उनसे कहा—पिताजी, आपसे बहुत कुछ कहना है। अच्छा, सभी बातें बाद में कहूँगा। इस समय उस स्त्री के क्रन्दन की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। कुछ देर के लिए आप यहीं ठहरें।

संस्कृत-व्याख्या—तन्निशम्य=तच्छ्रुत्वा, मनोविदितजनकभावं=मनोज्ञातपितृभावम्, तं=पूर्वोक्तं पुरुषम्, अवादिषम्=अवदम्, तात=जनक, भवते=ते, विज्ञापनीययानि=निवेदनीयानि, बहूनि सन्ति, भवतु=तिष्ठतु, पश्चात्=अनन्तरम्, अखिलं=समस्तम्, आख्यातव्यं=कथनीयम्। अधुना=सम्प्रति, नारीकूजितं=नारीक्रन्दनम्, मया=पुष्पोद्भवेन, अनुपेक्षणीयं=नहि उपेक्षणीयम। भवता=त्वया, अत्र=अस्मिन् प्रदेशे, क्षणमात्रं=मुहूर्तं यावत्, स्थीयतम्=आस्यताम्।

टिप्पणी—निशम्य–नि+शम्+क्त्वा→ल्यप्। मनोविदितजनकभावं=मनसा विदितः जनकभावः यस्य तम् (बहुव्रीहि)। आख्यातव्यं–आ+ख्या+तव्यत्। नारीकूजितम्–नार्याः कूजितम् (तत्पुरुष)। अनुपेक्षणीयम्–न उपेक्षणीयम्।

तदनु सोऽहं त्वरया किंचिदन्तरमगमम्। तत्र पुरतो भयङ्करज्वालाकुलाहुतभुगवगाहमानसाहसिकां मुकुलिताञ्जलिपुटां वनितां कांचिदवलोक्य ससंभ्रममनलादपनीय कूजन्त्या वृद्धया सह मत्पितुरभ्यर्णमभिगमय्य स्थविरामवोचम्—'वृद्धे भवत्यौ कुत्रत्ये। कान्तारे निमित्तेन केन दुरवस्थानुभूयते? कथ्यताम्' इति।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् मैं शीघ्र ही कुछ दूर आगे गया। वहाँ आगे भयङ्कर ज्वाला वाली आग में कूदने का साहस करने वाली, हाथ जोड़े हुए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक स्त्री को देखकर शीघ्र ही आग से दूर हटाकर रोती हुयी वृद्धा के साथ अपने पिता के पास लाकर वृद्धा से कहा—हे वृद्धे ! आप दोनों कहाँ की रहने वाली हैं ? इस दुर्गम मार्ग में किस कारण से दुःख का अनुभव कर रही हो ? समस्त वृत्तान्त सुनाने की कृपा करें।

संस्कृत-व्याख्या—तदनु=तत्पश्चात्, सोऽहं=पुष्पोद्भवः, त्वरया=शीघ्रगत्या, किञ्चित्, अन्तरं=दूरम्, अगमम्=अगच्छम्। तत्र=तस्मिन् स्थाने, पुरतः=अग्रे, भयङ्करज्वालाकुलहुतभुगवगाहमानसाहसिकां=भयङ्करीभिः भीतिकरीभिः ज्वालाभिः आकुलः परिपूर्णः यः हुतभुक् अग्निः तत्र अवगाहमाना प्रविशन्ती अत एव साहसिका साहसयुक्ता ताम्, मुकुलिताञ्जलिपुटां=आवद्धाञ्जलिम्, वनितां=ललनाम्, काञ्चित्=एकाम्. अवलोक्य=दृष्ट्वा, ससंभ्रमं=सत्वरम्, अनलात्=अग्नेः, अपनीय=दूरीकृत्य, कूजन्त्या=रुदन्त्या, वृद्धया=वृद्धवनितया, सह=साकम्, मत्पितुः=स्वजनकस्य, अभ्यर्णं=अन्तिकम्, अभिगम्य=आनीय, स्थविरां=वृद्धाम्, अवोचम्=अवादिषम्, वृद्धे=स्थविरे, भवत्यौ=युवाम्, कुत्रत्ये=कुत्र जाते, कान्तारे=दुर्गमे मार्गे, केन निमित्तेन=केन कारणेन, दुरवस्था=दुर्दशा, अनुभूयते। कथ्यतां सर्वं वृत्तान्तजातम् इति शेषः।

टिप्पणी—भयङ्कर······साहसिकाम्—भयङ्करीभिः ज्वालाभिः आकुलः यः हुतभुक्, तत्र अवगाहमाना अत एव साहसिका ताम्। हुतभुक्—अग्नि। अवगाहमान—अव+गाह्+शानच्। मुकुलिताञ्जलिपुटाम्—मुकुलितम् अञ्जलिपुटं यया ताम् (वहुव्रीहि)। अपनीय—अप+नी+क्त्वा→ल्यप्। कूजन्त्या—कूज्+शतृ+ङीप् तृ० ए० व०। अभ्यर्ण—समीप, 'उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णा' इत्यमरः। अभिगमय्य—अभि—गम्+णिच्+क्त्वा→ल्यप्। यहाँ अनुप्रास नामक अलङ्कार है।

सा सगद्गदमवादीत्—'पुत्र, कालयवनद्वीपे कालगुप्तनाम्नो वणिजः कस्यचिदेषा सुता सुवृत्ता नाम रत्नोद्भवेन निजकान्तेनागच्छन्ती जलधौ भग्ने प्रवहणे निजधात्र्या मया सह फलकमेकमवलम्ब्य दैवयोगेन कूलमुपेतासन्नप्रसवसमया कस्याञ्चिदटव्यामात्मजमसूत। मम तु मन्दभाग्यतया बाले वनमातंगेन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गृहीते मद्द्वितीया परिभ्रमन्ती 'षोडशवर्षानन्तरं भर्तृपुत्रसंगमो भविष्यति' इति सिद्धवाक्यविश्वासादेकस्मिन्पुण्याश्रमे तावन्तं समयं नीत्वा शोकमपारं सोढुमक्षमा समुज्ज्वलिते वैश्वानरे शरीरमाहुतीकर्तुमुद्युक्तासीत्' इति ।

हिंदी-अनुवाद—वह वृद्धा गद्‌गद स्वर से बोली—पुत्र ! काल-यवन द्वीप में कालगुप्त नामक एक वैश्य की यह सुवृत्ता नामक पुत्री अपने प्रियतम रत्नोद्‌भव के साथ (नाव पर) आती हुयी (सहसा) नाव के समुद्र में डूब जाने पर मुझ धाय के साथ एक फलक (लकड़ी का पटरा) का सहारा लेकर दैवयोग से किनारे पर आ गयी । प्रसव-समय के समीप होने के कारण इसने एक वन में पुत्र उत्पन्न किया । मेरे दुर्भाग्य से वालक को एक वन्य गज के द्वारा उठा लेने पर मेरे साथ भटकती हुयी 'सोलह वर्ष के पश्चात् तुम्हारे पति और पुत्र मिलेंगे ।' इस वचन पर विश्वास के कारण एक पवित्र आश्रम में उतने समय को (१६ वर्ष को) विताकर अपार शोक को सहन करने में असमर्थ होने के कारण प्रज्वलित अग्नि में शरीर को जलाने के लिए तैयार थी ।

संस्कृत-व्याख्या—सा=वृद्धा, सगद्‌गदं=गदगदस्वरसहितम्, अवादीत्=अवदत्, पुत्र=तनय, कालयवनद्वीपे=एतदाख्ये द्वीपे, कालगुप्तनाम्नः=एतदाख्यस्य, वणिजः=वैश्यस्य, कस्यचित्=एकस्य, एषा सुता=इयं पुत्री, सुवृत्ता नाम=एतदाख्या, निजकान्तेन=स्वप्रियतमेन, रत्नोद्‌भवेन=एतदाख्येन, आगच्छन्ती=आव्रजन्ती, जलधौ=सागरे, प्रवहणे=पोते, मग्ने=निमग्ने, निजधात्र्या=स्वकीयया उपमात्रा, मया सह=वृद्धया सह, एकम्, फलकं=काष्ठखण्डम्, अवलम्ब्य=गृहीत्वा, दैवयोगेन=भाग्येन, कूलं=तटम्, उपेता=प्राप्ता, आसन्नप्रसवसमया=समीपप्रजननकालः, कस्याञ्चित्=एकस्याम्, अटव्यां=विपिने, आत्मजं=पुत्रम्, असूत=जनयामास । मम=वृद्धायाः, तु, मन्दभाग्यतया=दुर्भाग्यतया, बाले=बालके, वनमातङ्गेन=विपिनकरिणा, गृहीते=आत्ते, मद्द्वितीया=अहं द्वितीया यस्याः सा, परिभ्रमन्ती=पर्यटन्ती, षोडशवर्षानन्तरं=षोडशवर्षादूर्ध्वम्, भर्तृपुत्रसङ्गमः=पतिसुतमिलनम्, भविष्यति, इति=एवम्, सिद्धवाक्यविश्वासात्=तापसवचनादरात्, एकस्मिन्=कस्मिंश्चित्, पुण्याश्रमे=पवित्राश्रमे, तावन्तं समयं=तावन्तं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालम्, नीत्वा=अतिवाह्य, अपारं=दुस्तरम्, शोकं=दुःखम्, सोढुं=उप-भोक्तुम्, अक्षमा=असमर्था, समुज्ज्वलिते=प्रज्वलिते=वैश्वानरे=अग्नौ, शरीरं=वर्ष्म, आहुतीकर्तुं=भस्मसात्कर्तुम्, उद्युक्ता=तत्परा, आसीत्=अभूत्, इति ।

टिप्पणी—अवादीत्–वद् धातु लुङ् लकार प्र० पु० ए० व० । आगच्छन्ती–आ+गम्+शतृ+ङीप् । जलधौ–जलानि धीयन्ते अत्र–जल+धा+कि, स० ए० व० । अवलम्ब्य–अव+लम्ब्+क्त्वा→ल्यप् । आसन्नप्रसवसमया–आसन्नः प्रसवस्य समयः यस्याः सा, आसन्न–अ+सद्+क्त । समय–काल, 'समयः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः' इत्यमरः । वनमातङ्ग=बनैला हाथी । मद्द्वितीया–अहं द्वितीया यस्याः सा (बहुव्रीहि) । परिभ्रमन्ती–परि+भ्रम्+शतृ+ङीप् । भर्तृपुत्रसङ्गमः–भर्तुः पुत्रस्य च सङ्गमः (तत्पुरुष) । सिद्धवाक्यविश्वासात्–सिद्धस्य वाक्ये विश्वासः तस्मात् (तत्पुरुष) । सोढुं–सह्+तुमुन् । वैश्वानरे=अग्नि में, 'अग्निर्वैश्वानरो वह्निः वीतिहोत्रो धनञ्जयः' इत्यमरः । आहुतीकर्तुं–आहुत+च्वि+कृ+तुमुन् ।

तदाकर्ण्य निजजननीं ज्ञात्वा तामहं दण्डवत्प्रणम्य तस्यै मद्वृत्तमखिलमाख्याय धात्रीभाषणप्रफुल्लवदनं विस्मयविकसिताक्षं जनकमदर्शयम् ।

हिन्दी-अनुवाद—ऐसा सुनकर अपनी माता को जानकर, उसे दण्डवत् प्रणाम करके, उनसे अपने समस्त वृत्तान्त को कहकर मैंने धात्री के भाषण से प्रसन्न मुख और आश्चर्य से आँखें फाड़कर देखने वाले अपने पिता को दिखलाया ।

संस्कृत-व्याख्या—तदाकर्ण्य=तच्छ्रुत्वा, निजजननीं=स्वमातरम्, ज्ञात्वा=विज्ञाय, तां=पूर्वोक्ताम्, दण्डवत्=साष्टाङ्गम्, प्रणम्य=प्रणामं कृत्वा, तस्यै=मात्रे, अखिलं=समस्तम्, मद्वृत्तं=आत्मीयं वृत्तान्तम्, आख्याय=कथयित्वा, अहं=पूर्वोक्तः, धात्रीभाषणप्रफुल्लवदनं=उपमातृवाक्यविकसितमुखम्, विस्मयविकसिताक्षं=आश्चर्यप्रफुल्लनयनम्, जनकं=पितरम्, अदर्शयम्=दर्शितवान् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी—ज्ञात्वा–ज्ञा+क्त्वा । आख्याय–आ+ख्या+क्त्वा→ल्यप् । धात्री……वदनम्–धात्र्याःभाषणेन प्रफुल्लं वदनं यस्य तम् । प्रफुल्ल–प्र+फुल्+क्त, 'प्रफुल्लोत्फुल्लसम्फुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः फुल्लश्चैते विकसिते' इत्यमरः 'वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम्' इत्यमरः । विस्मयविकसिताक्षं–विस्मयेन विकसिते अक्षिणी यस्य सः तम् (बहुव्रीहि) ।

पितरौ तौ साभिज्ञानमन्योन्यं ज्ञात्वा मुदितान्तरात्मनौ विनीतं मामानन्दाश्रुवर्षेणाभिषिच्य गाढमाश्लिष्य शिरस्युपाघ्राय कस्यांचिन्महीरुहच्छायायामुपाविशताम् ।

हिन्दी-अनुवाद—उन माता-पिता ने परिचयात्मक चिह्नों से एक दूसरे को पहचानकर प्रसन्नचित्त हो मुझ विनीत को आनन्दाश्रु की वृष्टि से सींचकर, गाढ़ आलिङ्गन कर और मस्तक सूँघकर (वे) एक वृक्ष की छाया में बैठ गये ।

संस्कृत-व्याख्या—तौ पितरौ=मातापितरौ, साभिज्ञानम्=अभिज्ञानेन परिचयात्मकचिह्नेन सहितम्, अन्योन्यं=परस्परम्, ज्ञात्वा=विदित्वा, मुदितान्तरात्मानौ=प्रसन्नचित्तौ, विनीतं=प्रश्रितम्, माम्=पुष्पोद्भवम्, आनन्दाश्रुवर्षेण=हर्षजनितनेत्रजलवर्षणेन, अभिषिच्य=सिक्त्वा, गाढं=दृढम्, आश्लिष्य=आलिङ्ग्य, शिरसि=मस्तके, उपाघ्राय=आघ्राय, कस्याञ्चित्=एकस्याम्, महीरुहच्छायायां=पादपच्छायायाम्, उपाविशतां=उपविष्टौ ।

टिप्पणी—पितरौ–माता च पिता च पितरौ (द्वन्द्वसमास) यहाँ माता तथा पिता में 'पिता' शेष रहता है । साभिज्ञानम्–अभिज्ञानेन सह (अव्ययीभाव) यहाँ 'सह' को सादेश हो जाता है । अभिज्ञानम्–अभि+ज्ञा+ल्युट् । मुदितान्तरात्मानौ–मुदितः अन्तरात्मा ययोः तौ (बहुव्रीहि) । आनन्दाश्रुवर्षेण–आनन्दस्य अश्रुः तस्य वर्षः तेन (तत्पुरुष) । 'स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि च' इत्यमरः । अभिषिच्य–अभि–सिञ्च्+क्त्वा→ल्यप् । उपाघ्राय–उप+आ+घ्रा+क्त्वा→ल्यप् । महीरुहच्छायायाम्–महीरुहस्य छायायाम्; 'वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः । अनोकहः कुटः सालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ॥' इत्यमरः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'कथं निवसति महीवल्लभो राजहंसः' इति जनकेन पृष्टोऽहं तस्य राज्यच्युतिं त्वदीयजननं सकलकुमारावाप्तिं तव दिग्विजयारम्भं भवतो मातङ्गानुयानमस्माकं युष्मदन्वेषणकारणं सकलमभ्यधाम् । ततस्तौ कस्यचिदाश्रमे मुनेरस्थापयम् ।

हिन्दी-अनुवाद—'महाराज राजहंस किस प्रकार निवास कर रहे हैं ?' पिताजी के द्वारा इस प्रकार पूँछे जाने पर, मैंने उनकी राज्यच्युति, तुम्हारा जन्म, सभी कुमारों का मिलना, तुम्हारा दिग्विजयारम्भ, आपका मातङ्ग के साथ जाना और हम लोगों का आपको खोजने में लग जाना आदि सभी बातें कह सुनायीं । तत्पश्चात् उन दोनों को एक मुनि के आश्रम में ठहरा दिया ।

संस्कृत-व्याख्या—महीवल्लभः=पृथ्वीपतिः, राजहंसः=एतदाख्यः, कथं=केन प्रकारेण, निवसति=निवासं करोति, इति=एवम्, जनकेन=तातेन, पृष्टः=जिज्ञासितः, अहं=पुष्पोद्भवः, तस्य=राज्ञः, राज्यच्युतिं=राज्यभ्रंशम्, त्वदीयजननं=युष्मदुत्पत्तिम्, सकलकुमारावाप्तिं=समस्तसुतप्राप्तिम्, तव=ते, दिग्विजयारम्भं=दिग्विजयस्य दिशां विजयस्य आरम्भः प्रारम्भः तम्, भवतः=ते, मातङ्गानुयानं=एतदाख्यब्राह्मणानुगमनम्, अस्माकं=कुमाराणाम्, युष्मदन्वेषणकारणं=तवान्वेषणहेतुम्, सकलं=समस्तम्, अभ्यधाम्=अकथयम् । ततः=तदनन्तरम्, तौ=पितरौ, कस्यचित्=एकस्य, मुनेः=ऋषेः, आश्रमे=निवसस्थाने, अस्थापयम्=न्यवासयम् ।

टिप्पणी—महीवल्लभः-मह्याः वल्लभः (तत्पुरुष) । सकलकुमारावाप्ति-सकलानां कुमाराणाम् अवाप्तिम् (तत्पुरुष) । अवाप्ति-अव+आप्+क्तिन् । दिग्विजयारम्भम्-दिशां विजयः, तस्य आरम्भः तम् (तत्पुरुष) । मातङ्गानुयानं-मातङ्गस्य अनुयानम् (तत्पुरुष) । अनुयानं-अनु+या+ल्युट् ।

ततो देवस्यान्वेषणपरायणोऽहमखिलकार्यनिमित्तं वित्तं निश्चित्य भवदनुग्रहाल्लब्धस्य साधकस्य साहाय्यकरणदक्षं निष्पाद्य विन्ध्यवनमध्ये पुरातनपत्तनस्थानानि उपेत्य विविधनिधिसूचकानां महीरुहाणामधो विक्षिप्तान् वसुपूर्णान् कलशान् सिद्धाञ्जनेन ज्ञात्वा रक्षिषु परितः स्थितेषु खननसाधनैः उत्पाद्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीनारानसंख्यान् राशीकृत्य तत्कालागतमनतिदूरे निवेशितं वणिक्कटकं कञ्चि-दभ्येत्य तत्र धनिनो बलीवर्दान् गोणीश्च क्रीत्वान्यद्रव्यमिषेण वसु तद्गोणीसंचितं तैरुह्यमानं शनैः कटकमनयम् ।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् आपकी खोज में लगे हुए मैंने समस्त कार्यों का निमित्त धन होता है ऐसा निश्चय कर आपकी कृपा से प्राप्त उपाय से सहायता करने में दक्ष शिष्यगण को तैय्यार कर विन्ध्य-वन के मध्य में पुराने खण्डहरों वाले नगर में पहुँचकर विविध प्रकार के खजाने की सूचना देने वाले वृक्षों के नीचे गड़े हुए धनपूर्ण कलशों को सिद्धाञ्जन के द्वारा जानकर रक्षकों के चारों ओर स्थित होने पर खन्ती, कुदाल आदि अस्त्रों से खोदकर असंख्य अशर्फियों को एकत्रित किया। उसी समय वहाँ समीप में ही व्यापारियों का एक समूह आकर ठहरा, वहाँ से मैंमे बलवान् बैलों वाली कुछ गाड़ियाँ खरीद-कर दूसरे द्रव्य के ढोने के बहाने से उन गाड़ियों पर समस्त धन इकट्ठा कर दिया और उन बैलों के द्वारा ढोकर धीरे से उनके पड़ाव पर लाया।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तत्पश्चात्, देवस्य=श्रीमतः, अन्वेषणपरायणः=मार्गणतत्परः, अहं=पुष्पोद्भवः, अखिलकार्यनिमित्तं=समस्तकार्यकारणम्, वित्तं=धनम्, निश्चित्य=निर्णीय, भवदनुग्रहात्=तव कृपावशात्, लब्धस्य=प्राप्तस्य, साधकस्य=मुनेः, साहाय्यकरणदक्षं=सहायताकरणनिपुणम्, शिष्य-गणं=शिष्यमण्डलम्, निष्पाद्य=सम्पाद्य, विन्ध्यवनमध्ये=विन्ध्यविपिनमध्य-भागे, पुरातनपत्तनस्थानानि=प्राचीननगरभूमीः, उपेत्य=प्राप्य, विविधनिधि-सूचकानां=अनेकप्रकारशेवधिनिर्देशकानाम्, महीरुहाणां=वृक्षाणाम्, अधः=अधस्तले, निक्षिप्तान्=संरक्षितान्, वसुपूर्णान्=धनपरिपूर्णान्, कलशान्=घटान्, सिद्धाञ्जनेन=सिद्धकज्जलेन, ज्ञात्वा=अवगम्य, रक्षिषु=प्रहरिषु, परितः=सर्वतः, स्थितेषु=अवस्थितेषु, खननसाधनैः=खनित्रैः, उत्पाट्य=उत्पाटनं कृत्वा, असंख्यान्=संख्यातीतान्, दीनारान्=स्वर्णमुद्राविशेषान्, राशीकृत्य=एकत्रीकृत्य, तत्कालागतम्=तत्समयोपस्थितम्, अनतिदूरे=समीपे, निवेशितं=संस्थापितं, वणिक्कटकं=वैश्यावासम्, कञ्चित्=एकम्, अभ्येत्य=प्राप्य गत्वा वा, तत्र=तस्मिन्नस्थाने, बलिनः=परिपुष्टान्, बलीवर्दान्=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृषभान्, गोणीः=द्रव्यादिवाहनायरज्जुविनिर्मितपात्रविशेषान्, क्रीत्वा=क्रयं-कृत्वा, अन्यद्रव्यमिषेण=द्रव्यान्तरच्छलेन, तद्गोणीसंचितं=तग्दोणी-संस्थापितम्, वसु=धनम्, तैः=वृषभैः, उह्यमानं=नीयमानम, शनैः=मन्दं यथास्यात्तथा, कटकं=शिविरस्, अनयं=आनीतवान् ।

टिप्पणी—अन्वेषणपरायणः–अन्वेषणे परायणः (तत्पुरुष)। अखिलकार्य-निमित्तम्–अखिलानां कार्याणां निमित्तम् (तत्पुरुष) । कार्य–कृ+ण्यत् । निश्चित्य–निस्+चि+क्त्वा←ल्यप् । भवदनुग्रहात्–भवतः अनुग्रहात् (तत्पुरुष) । साहाय्यकरणदक्षं–साहाय्यकरणे दक्षम् (तत्पुरुष) । शिष्य–शास्+क्यप् 'एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्' इस पाणिनीय सूत्र से क्यप् होता है। उपधा को इत्व और षत्व कार्य होते हैं। विन्ध्यवनमध्ये–विन्ध्यवनस्य मध्ये (तत्पुरुष) । 'अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्' इत्यमरः । पुरातनपत्तनस्था-नानि–पुरातनपत्तनानांस्थानानि (तत्पुरुष) । उपेत्य–उप+इण्+क्त्वा→ल्यप् । विविधनिधिसूचकानां=विविधानां निधीनां सूचकाः तेषां (तत्पुरुष) । निधि–नि+धा+कि । महीरुह–वृक्ष, निक्षिप्तान्–नि+क्षिप्+क्त, द्वितीया बहुवचन । ज्ञात्वा–ज्ञा+क्त्वा । खननसाधनैः=खोजने के साधन (औजार) खन्ती, कुद्दाल आदि । खनन–खन्+ल्युट् । उत्पाटय–उत्+पट्+णिच्+क्त्वा→ल्यप् । दीनारान्=सुवर्ण मुद्राओं को । राशीकृत्य–राशि+च्वि+कृ+क्त्वा→ल्यप् । अभ्येत्य–अभि+इण्+क्त्वा→ल्यप् । बलिनः–बल+इनि । बलीवर्दान्= बैलों को । गोणीः–अनाज रखने का विशेष थैला जिसे हिन्दी में गोनी कहते हैं । क्रीत्वा–क्री+क्त्वा । उह्यमानम्–वह्+शानच् । अनयम्–नी धातु लङ् लकार उत्तम पुरुष एकवचन ।

तदधिकारिणा चन्द्रापालेन केनचिद्वणिक्पुत्रेण विरचितसौहृदोऽहममुनैव साकमुज्जयिनीमुपाविशम् । मत्पितरावपि तां पुरीमभिगमय्य सकलगुणनिलयेन बन्धुपालनाम्ना चन्द्रपालजनकेन नीयमानो मालवनाथदर्शनं विधाय तदनुमत्या गूढवसतिमकरवम् ।

हिन्दी-अनुवाद—उस कटक के अधिकारी वणिक्पुत्र चन्द्रपाल के साथ मित्रता करके मैं उसी के साथ उज्जयिनी में प्रविष्ट हुआ । अपने माता पिता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को भी उस पुरी में लेजाकर समस्त गुणों के निधान चन्द्रपाल के पिता वन्धुपाल के साथ जाकर मालवाधीश का दर्शन किया और उनकी अनुमति से वहीं गुप्त रूप से निवास करने लगा।

संस्कृत-व्याख्या—तदधिकारिणा=तत्स्वामिना, केनचित्=एकेन, वणिक्पुत्रेण=वैश्यसुतेन, चन्द्रपालेन=एतदाख्येन, विरचितसौहृदः=कृतसौहृदः, अहं=पुष्पोद्भवः, अमुना=चन्द्रपालेन, एव=हि, साकं=सह, उज्जयिनीम्, उपाविशं=प्रविष्टः। मत्पितरौ=मदीयां मातरं पितरं च, ताम्=पूर्वोक्ताम्, उज्जयिनीमित्यर्थः। पुरीं=नगरीम्, अभिगमय्य=प्रापय्य। सकलगुणनिलयेन=अखिलगुणनिधानेन, वन्धुपालनाम्ना=वन्धुपालाभिधानेन, चन्द्रपालजनकेन=चन्द्रपालतातेन, नीयमानः=प्राप्यमाणः, मालवनाथदर्शनं=मालवाधिपतिदर्शनम्, विधाय=कृत्वा, तदनुमत्या=मालवाधिपतिनिदेशेन, गूढ़वसतिं=गुप्तवासम्, अकरवम्=कृतवान्।

टिप्पणी—तदधिकारिणा—तस्य अधिकारिणः (तत्पुरुष)। विरचितसौहृदः विरचितं सौहृदं येन स तादृशः (बहुव्रीहि)। 'अमुनैव साकम्' यहाँ 'सहयुक्तेऽप्रधाने' इन सूत्र से 'साकम्' के योग में तृतीया विभक्ति होती है। 'साकं सार्धं समं सह' इत्यमरः। पितरौ—माता च पिता च इति पितरौ—यहाँ मातृ पितृ शब्दों में से द्वन्द्व समास के होने पर पितृ शब्द ही शेष रहता है। अभिगमय्य—अभि उपसर्ग पूर्वक णिजन्त गम् धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है और क्त्वा को ल्यप् होता है। सकलगुणनिलयेन=सकलाश्चते गुणाश्चेति सकलगुणाः तेषां निलयेन (तत्पुरुष)। चन्द्रपालजनकेन=चन्द्रपालस्य जनकः तेन (तत्पुरुष)। 'तातस्तुजनकः पिता' इत्यमरः। नीयमानः—नी+यक्+शानच्। गूढ़वसति—गुप्तवास। वसति—वस्+अति।

ततः काननभूमिषु भवन्तमन्वेष्टुमुद्युक्तं मां परममित्रं बन्धुपालो निशम्यावदत्—सकलं धरणितलमपारमन्वेष्टुमक्षमो भवान्मनोग्लानिं विहाय तूष्णीं तिष्ठतु। भवन्नायकालोकनकारणं शुभशकुनं निरीक्ष्य कथयिष्यामि इति।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् वनभूमि में आपको खोजने के लिए उद्यत मुझे देखकर मेरे परम मित्र बन्धुपाल ने कहा—क्या आप समस्त पृथ्वी मण्डल पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्वेषण कर सकते हैं ? आप अपने मन की ग्लानि को छोड़कर चुपचाप बैठें। आपको स्वामी का दर्शन हो, ऐसा शुभशकुन को देखकर बतलाऊँगा।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तदनन्तरम्, काननभूमिषु=वनप्रदेशेषु, भवन्तं=राजवाहनम्, अन्वेष्टुं=मार्गितुम्, उद्युक्तं=सन्नद्धम्, माम्=पुष्पोद्भवम्, परममित्रं=गाढ़मित्रतायुक्तम्, बन्धुपालः=एतदाख्यः, निशम्य=श्रुत्वा, अवदत्=अकथयत्, सकलं=समस्तम्, अपारं=अनन्तम्, धरणितलं=भूतलम्, अन्वेष्टुं=मार्गितुम्, अक्षमः=असमर्थः, भवान्=श्रीमान्, मनोग्लानिं=चित्तखेदम्, विहाय=परित्यज्य, तूष्णीं=मौनम्, तिष्ठतु। भवन्नायकालोकनकारणं=तव नायकदर्शनकारणम्, शुभशकुनं=शुभसूचकचिह्नम्, निरीक्ष्य=विलोक्य, कथयिस्यामि=भणिस्यामि, इति।

टिप्पणी—अन्वेष्टुम्–अनु+इष्+तुमुन्। उद्युक्तं–उत्+युज्+क्त। परममित्रम्–परमञ्च तत् मित्रम् (कर्मधारय)। निशक्य–नि+शम्+क्त्वा→ल्यप्। अक्षमः–न क्षमः=अक्षमः (नञ् तत्पुरुष)। मनोग्लानिं–मनसः ग्लानिं (तत्पुरुष)। ग्लानि–अवसाद, क्लान्ति, थकावट। भवन्नायक……कारणं–भवतः नायकस्य आलोकनस्य कारणम् (तत्पुरुष)। 'हेतुर्ना कारणं बीजं निदानं त्वादिकारणम्' इत्यमरः। निरीक्ष्य–निर्+ईक्ष्+क्वत्वा→ल्यप्।

बालचन्द्रिकया प्रीतिः

तल्लपितामृताश्वासितहृदयोऽहमनुदिनं तदुपकण्ठवर्ती कदाचिदिन्दुमुखीं नवयौवनावलीढावयवां नयनचन्द्रिकां बालचन्द्रिकां नाम तरुणीरत्नं वणिङ्मन्दिरलक्ष्मीं मूर्तामिवावलोक्य तदीयलावण्यावधूतधीरभावो लतान्तबाणलक्ष्यतामयासिषम्।

हिन्दी-अनुवाद—उसके सुधामय वचनों से आश्वस्त हृदय वाला मैं प्रतिदिन उसी के समीप रहने लगा। एक दिन मैंने मूर्तिमयी वैश्यगृह की लक्ष्मी के समान नेत्रों के लिए चन्द्रिका के समान रमणीक लगने वाली तथा नवीन यौवन से परिपूर्ण यौवन वाली चन्द्रमुखी बालचन्द्रिका नामक तरुणीतत्न को देखा। उसके सौन्दर्य के द्वारा मेरा धैर्य नष्ट हो गया और मैं कामदेव के बाणों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का लक्ष्य वन गया ।

संस्कृत-व्याख्या—तल्लपितामृताश्वासितहृदयः=तद्वचनसुधाश्वसितचित्तः, अहं=पुष्पोद्भवः, अनुदिनं=प्रतिदिनम्, तदुपकण्ठवर्ती=तत्समीपवर्ती, कदाचित्=एकदा, इन्दुमुखीं=चन्द्रमुखीम्, नवयौवनावलीढावयवां=नूतन-युवावस्थाचुम्बितावयवाम, नयनचन्द्रिकां=नेत्रकौमुदीम्, वालचन्द्रिकां नाम=एतदाख्याम्. तरुणीरत्नं=तरुणीश्रेष्ठम्, मूर्तामिव=मूर्तिमतीमिव, वणिङ्-मन्दिरलक्ष्मीं=वैश्यभवनशोभाम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा, तदीयलावण्यावधूतधीर-भावः=वालचन्द्रिकासौन्दर्यतिरस्कृतधैर्यः, लतान्तबाणवाणलक्ष्यतां=कुसुमेषुश-रशर०यताम्, अयासिषम्=अगमम् ।

टिप्पणी—तल्लपिता······हृदयः–तस्य लपितामृतेन आश्वासितं हृदयं यस्य सः (बहुव्रीहि); 'व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः' इत्यमरः । तदुपकण्ठवर्ती–तस्य उपकण्ठे वर्तितुं शीलं यस्य सः । इन्दुमुखीम्–इन्दुरिव मुखं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि) । नव······वयवाम्–नवयौवनेन अवलीढाः अवयवाः यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि) । अवलीढ–अभिव्याप्त, अव+लिह्+क्त । 'अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनः' इत्यमरः । नयनचन्द्रिकाम्–नयनयोः चन्द्रिका ताम् (तत्पुरुष) । 'चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना' इत्यमरः । तरुणीरत्नं–तरुणीषु रत्नम् (तत्पुरुष) । रत्न–श्रेष्ठ 'रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि' इत्यमरः । वणिङ्मन्दिरलक्ष्मीं–वणिजां मन्दिरं, तस्य लक्ष्मीः ताम् (तत्पुरुष); 'भवनागारमन्दिरम्' इत्यमरः। 'मूर्तामिव' यहाँ उत्प्रेक्षालङ्कार है । अवलोक्य–अव+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । तदीय······भावः–तदीयलावण्येन अवधूतः धीरभावः यस्य स तथाभूतः (बहुव्रीहि) । लावण्य–लवण+ष्यञ् । लतान्त ···लक्ष्यताम्–लतान्तः पुष्पं बाणः यस्य सः=लतान्तवाणः, तस्य वाणस्य लक्ष्यताम् (तत्पुरुष) । लक्ष्यताम्–लक्ष्य+तल् । 'लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च' इत्यमरः ।

चकितवालकुरङ्गलोचना सापि कुसुमसायकसायकायमानेन कटाक्षवीक्षणेन मामसकृन्निरीक्ष्य मन्दमारुतान्दोलिता लतेवाकम्पत । मनसाभिमुखैः समाकुञ्चितैः रागलज्जान्तरालवर्तिभिः साङ्गवर्तिभिरीक्षणविशेषैर्निजमनोवृत्तिमकथयत् । चतुरगूढचेष्टाभिरस्या मनोऽनुरागं सम्यग्ज्ञात्वा सुखसंगमोपायमचिन्तयम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी-अनुवाद–चकित वालमृग के समान नेत्रों वाली वह (वालचन्द्रिका) भी कामवाण के तुल्य कटाक्षों से मुझे अनेक बार देखकर मन्द पवन के द्वारा कँपायी गयी लता के समान काँप उठी। अनुराग और लज्जा के मध्य में रहने वाले हाव-भावों से एवं हृदय से मेरे ऊपर थोड़ी पड़ने वाली पैनी दृष्टियों से अपने मन के भावों को कह गयी। उसकी चतुर और गुप्त चेष्टाओं के द्वारा उसके हार्दिक अनुराग को भलीभाँति जानकर उसके साथ सुखपूर्वक मिलने का उपाय सोचने लगा।

संस्कृत-व्याख्या–चकितवालकुरङ्गलोचना=भयान्वितवालमृगनयना, साऽपि =बालचन्द्रिकापि, कुसुमसायकसायकायमानेन=कामवाणतुल्येन, कटाक्षवीक्षणेन=अपाङ्गदर्शनावलोकनेन, माम्=पुष्पोद्भवम्, असकृत्=मुहुर्मुहुः, निरीक्ष्य=दृष्ट्वा, मन्दमारुतान्दोलिता=मन्देन धीरणेन मारुतेन पवनेन आन्दोलिता कम्पिता, लतेव=वल्लीव, अकम्पत=कम्पितवती। मनसाभिमुखैः=स्वान्तेन कृतसमक्षैः, समाकुञ्चितैः=सम्यक् सङ्कोचितैः, रागलज्जान्तरालवर्तिभिः=अनुरागव्रीडामध्यवर्तिभिः, साङ्गवर्तिभिः=उपाङ्गवर्तिभिः, ईक्षणविशेषैः=दृष्टिविशेषैः, निजमनोवृत्तिं=स्वचित्तवृत्तिम्, अकथयत्=अवदत्। अस्याः=बालचन्द्रिकायाः, चतुरगूढचेष्टाभिः=निपुणगुप्तसङ्केतैः, मनोऽनुरागं=चित्तप्रेमाणम्, सम्यक्=साधु, ज्ञात्वा=अवगम्य, सुखसङ्गमोपायं=अनायाससम्मिलनोपायम्, अचिन्तयम्=चिन्तितवान्।

टिप्पणी–चकित……लोचना–चकितश्चासौ वालकुरङ्गः–चकितबालकुरङ्गः तस्य लोचने इव लोचने यस्याः सा तादृशी। कुसुम……मानेन–कुसुमसायकस्य सायकः स इव आचरता। सायकायमान–सायक+क्यङ्+शानच्। कटाक्षवीक्षणेन–कटाक्षेण यद् वीक्षणं तेन। निरीक्ष्य–निर्+ईक्ष्+क्त्वा→ल्यप्। मन्द……दोलिता–मन्देन मारुता आन्दोलिता (तत्पुरुष)। राग……वर्तिभिः रागश्च लज्जा च तयोः अन्तराले वर्तितुं शीलं येषां तैः। 'मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा' इत्यमरः। साङ्गवर्तिभिः–अङ्गेन सह वर्तन्ते यैः तैः। निजमनोवृत्तिम्–निजस्य मनसः वृत्तिः ताम्। चतुरगूढचेष्टाभिः–चतुराः गूढाः याः चेष्टाः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ताभिः । मनोऽनुरागम्—मनसः अनुरागम् (तत्पुरुष) । सुखसङ्गमोपायम्—सुखेन यः सङ्गमः तस्य उपायः तम् ।

बन्धुपालस्य शकुनविचारः

अन्यदा बन्धुपालः शकुनैर्भवद्गतिं प्रेक्षिष्यमाणः पुरोपान्तविहारवनं मया सहोपेत्य कस्मिंश्चिन्महीरुहे शकुन्तवचनानि शृण्वन्नतिष्ठत् । अहमुत्कलिकाविनोदपरायणो वनान्तरे परिभ्रमन्सरोवरतीरे चिन्ताक्रान्तचित्तां दीनवदनां मन्मनोरथैकभूमिं बालचन्द्रिकां व्यलोकयम् ।

हिन्दी-अनुवाद—एक दिन बन्धुपाल मेरे साथ शकुनों से आपके विषय में पता चलाने के लिए गाँव के बाहर विहार वन में गया और वहाँ पर बोलते पक्षियों की बोली सुनने के लिए खड़ा हो गया । उत्कण्ठा की शान्ति में तत्पर, एक वन से दूसरे वन में घूमते हुए मैंने एक सरोवर के किनारे चिन्ता से परिपूर्ण चित्तवाली, दीनमुख वाली और अपने मनोरथ का मुख्य आश्रय उस बालचन्द्रिका को देखा ।

संस्कृत-व्याख्या—अन्यदा=अन्यस्मिन् दिवसे, बन्धुपालः=एतदाख्यः, शकुनैः=शुभनिमित्तैः, भवद्गतिं=श्रीमतः स्थितिम्, प्रेक्षिष्यमाणः=अवलोकयिष्यन्, पुरोपान्तविहारवनं=नगरोपान्तोद्यानम्, मया=पुष्पोद्भवेन, सह=साकम्, उपेत्य=गत्वा, कस्मिंश्चित्=एकस्मिन्, महीरुहे=पादपे, शकुन्तवचनानि=पक्षिभाषितानि, शृण्वन्=आकर्णयन्, अतिष्ठत्=स्थितः । अहं=पुष्पोद्भवः, उत्कलिकाविनोदपरायणः=उत्कण्ठादूरीकरणतत्परः, वनान्तरे=अन्यस्मिन् विपिने, परिभ्रमन्=पर्यटन्, सरोवरतीरे=सरोवरतटे, चिन्ताक्रान्तचित्तां=चिन्ताकुलितहृदयाम्, दीनवदनां=खिन्नाननाम्, मन्मनोरथैकभूमिं=मम मे मनोरथस्य कामस्य एका भूमिः ताम्, बालचन्द्रिकां=एतदाख्याम्, व्यलोकयम्=अपश्यम् ।

टिप्पणी—भवद्गतिम्—भवतः गतिम् (तत्पुरुष) । गतिं—गम्+क्तिन् प्रेक्षिष्यमाणः—प्र+ईक्ष्+इट्+स्य+मुक्+शानच् । पुरोपान्तविहारवनं—पुरस्य उपान्ते यद् विहारवनं तत् । शकुन्तवचनानि—शकुन्तस्य वचनानि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(तत्पुरुष) ; 'शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः' इत्यमरः । उत्कलिका...... परायणः--उत्कलिकायाः विनोदः तस्मिन् परायणः (तत्पुरुष) । वनान्तरे-अन्यद्वनं वनान्तरं तस्मिन् । परिभ्रमन्-परि+भ्रम्+शतृ । सरोवरतीरे-सरोवरस्य तीरे (तत्पुरुष) । चिन्ताक्रान्तचित्तां-चिन्तया आक्रान्तं चित्तं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि) । दीनवदनां-दीनं वदनं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि) । मन्मनोरथैकभूमिं-मम मनोरथस्य एका भूमिः ताम् । 'इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः' इत्यमरः ।

तस्याः ससंभ्रमप्रेमलज्जाकौतुकमनोरमं लीलाविलोकनसुखमनुभवन्सुदत्या वदनारविन्दे विषण्णभावं मदनकदनखेदानुभूतं ज्ञात्वा तन्निमित्तं ज्ञास्यल्लीलया तदुपकण्ठमुपेत्यावोचम्-'सुमुखि तव मुखारविन्दस्य दैन्यकारणं कथय' इति ।

हिन्दी-अनुवाद--उस सुन्दर दाँतों वाली बालचन्द्रिका का शीघ्रतावश प्रेम, लज्जा और उत्सुकता से सुन्दर, विलासपूर्वक अवलोकन सुख का अनुभव करता हुआ उसके मुखकमल में कामपीडाजन्य विषाद को देखकर, उस (विषाद) के कारण को जानने की इच्छा से अनायास ही उसके समीप जाकर मैंने पूछा--हे सुमुखि ! अपने मुखकमल के मलिन होने के कारण को बतलाओ ।

संस्कृत-व्याख्या--तस्याः=बालचन्द्रिकायाः, ससंभ्रमप्रेमलज्जाकौतुकमनोरमं=सहसाप्रेमव्रीडाकौतूहलसुन्दरम्, लीलाविलोकनसुखं=लीलादर्शनानन्दम्, अनुभवन्=अनुभवं कुर्वन्, सुदत्याः=बालचन्द्रिकायाः, वदनारविन्दे=मुखकमले, विषण्णभावं=क्लान्तत्वम्, ज्ञात्वा=अवगम्य, तन्निमित्तं=तत्कारणम्, ज्ञास्यन्=अवगमिष्यन्, लीलया=विलासेन, तदुपकण्ठं=तस्याः समीपम्, उपेत्य=गत्वा, अवोचम्=अवदम्, सुमुखि=सुन्दरि, तव=ते, मुखारविन्दस्य=मुखकमलस्य, दैन्यकारणं=दीनतायाः निमित्तम्, कथय=भण, इति ।

टिप्पणी--ससंभ्रम..........मनोरमम्-संभ्रमेण सह वर्तमानानि-ससंभ्रमाणि, प्रेमा च लज्जा च कौतुकं च तानि, ससम्भ्रमाणि च तानि, तैः मनो-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रमम् (तत्पुरुष) । लीलाविलोकनसुखम्—लीलया विलोकनं, तेन यत्सुखं तत् । अनुभवन्—अनु+भू+शतृ । सुदत्याः—शोभना दन्ताः यस्याः तस्याः (बहुव्रीहि)। मदन ······भूतम्—मदनस्य यत् कदनं तस्य खेदेन अनुभूतम् (तत्पुरुष) । तदुपकण्ठम्—तस्याः उपकण्ठम् (तत्पुरुष) । सुमुखि—शोभनं मुखं यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ । मुखारविन्दस्य—मुखमेव अरविन्दं मुखारविन्दं तस्य; 'वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम्' इत्यमरः । दैन्यकारणं—दैन्यस्य कारणम् (तत्पुरुष) ।

सा रहस्यसंजातविश्रम्भतया विहाय लज्जाभये शनैरभाषत—'सौम्य, मानसारो मालवाधीश्वरो वार्धकस्य प्रबलतया निजनन्दनं दर्पसारमुज्जयिन्यामभ्यषिञ्चत् ।

हिन्दी-अनुवाद—एकान्त होने के कारण विश्वास हो जाने से लज्जा तथा भय को छोड़कर वह धीरे से बोली- सौम्य !, मालवनरेश मानसार ने वृद्धावस्था के कारण अपने पुत्र दर्पसार का उज्जयिनी में राज्याभिषेक कर दिया ।

संस्कृत-व्याख्या—सा=बालचन्द्रिका, रहस्यसञ्जातविश्रम्भतया=रहस्योत्पन्नविश्वासतया, लज्जाभये=त्रपाभये, विहाय=परित्यज्य, शनैः=मन्दम्, अभाषत=अवदत्, सौम्य=सुभग, मालवाधीश्वरः=मालवाधिपतिः, मानसारः=एतदाख्यः, वाधकस्य=वृद्धावस्थायाः, प्रबलतया=अधिकतया, निजनन्दनं=स्वसुतम्, दर्पसारं=एतदाख्यम् उज्जयिन्याम्=राजधान्याम्, अभ्यषिञ्चत्=राज्याभिषेकं चकार ।

टिप्पणी—रहस्य··········विश्रम्भतया—रहस्ये संजातः यः विश्रम्भः यस्याः तस्याः भावः तया । रहस्यं—रहसि भवं—रहस्+यत् । लज्जाभये—लज्जा च भयं चेति ते (द्वन्द्व) । प्रबलतया प्रबलस्य भावः प्रबलता तया; प्रबल+तल् ।

स कुमारः सप्तसागरपर्यन्तं महीमण्डलं पालयिष्यन्निजपैतृष्वसेवावृद्दण्डकर्माणौ चण्डवर्मदारुवर्माणौ धरणीभरणे नियुज्य तत्पश्चरणाय राजराजगिरिमभ्यगात् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी-अनुवाद---वह कुमार सात समुद्र वाले भूमण्डल को पालन करने का भार अपने बुआ के दो उद्दण्ड कर्मवाले (दुष्कर्मी) पुत्रों चण्डवर्मा और दारुवर्मा को सौंप कर स्वयं तपस्या करने के लिए कैलाश पर्वत पर चला गया।

संस्कृत-व्याख्या--स कुमारः=पूर्वोक्तः दर्पसारः, सप्तसागरपर्यन्तं=सप्तसमुद्रसीमान्तम्, महीमण्डलं=भूमण्डलम्, पालयिष्यन्=रक्षिष्यन्, निजपैतृष्वसेयौ=स्वपितुः भगिन्याः पुत्रौ, उद्दण्डकर्माणौ=प्रचण्डकर्माणौ, चण्डवर्मदारुवर्माणौ=एतदाख्यौ, धरणीभरणे=पृथ्वीपरिपालने, नियुज्य=नियुक्तीकृत्य, तपश्चरणाय=तपः कर्तुम्, राजराजगिरिं=कैलाशपर्वतम्, अभ्यगात्=अगच्छत्।

टिप्पणी---महीमण्डलं-मह्याः मण्डलम् (तत्पुरुष)। पैतृष्वसेयौ-पितृष्वसुरपत्यं पुमान्-पितृष्वसृ+ढक्। नियुज्य-नि+युज्+क्त्वा→ल्यप्। राजराजगिरिम्-राजराजस्य गिरिस्तम् (तत्पुरुष)।

राज्यं सर्वमसपत्नं शासति चण्डवर्मणि दारुवर्मा मातुलाग्रजन्मनोः शासनमतिक्रम्य पारदार्यपरद्रव्यापहरणादिदुष्कर्म कुर्वाणो मन्मथसमानस्य भवतो लावण्यायत्तचित्तां माभेकदा विलोक्य कन्यादूषणदोषं दूरीकृत्य बलात्कारेण रन्तुमुद्युङ्क्ते। तच्चिन्तया दैन्यमगच्छम्' इति।

हिदी-अनुवाद---चण्डवर्मा के शत्रुरहित समस्त राज्य पर शासन करने पर दारुवर्मा मामा तथा बड़े भाई की आज्ञा न मानकर परस्त्रीगमन, परद्रव्यापहरण आदि दुष्कर्म करते हुये, कामदेव के सदृश आपके रूप पर मोहित मुझे (दारुवर्मा ने) एक दिन देख लिया और कन्यारमणजन्य दोष को बगैर सोचे वह मेरे साथ बलपूर्वक रमण करने के लिए उद्यत हो गया। इसी चिन्ता से व्याकुल हो रही हूँ (खिन्न हो रही हूँ)।

संस्कृत-व्याख्या---असपत्नं=शत्रुरहितम्, सर्वं=समस्तम्, राज्यं=राज्यभागम्, शासति=परिपालयति, चण्डवर्मणि=एतदाख्ये, दारुवर्मा=एतदाख्यः, मातुलाग्रजन्मनोः=मानसारचण्डवर्मणोः, शासनं=आज्ञाम्, अतिक्रम्य=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उल्लङ्घ्य, पारदार्यपरद्रव्यापहरणादिदुष्कर्म=परस्त्रीहरणपरद्रव्यापहरणादि-कर्म, कुर्वाणः=कुर्वन्, मन्मथसमानस्य=कामदेवतुल्यस्य, भवतः=श्रीमतः, लावण्यायत्तचित्तां=सौन्दर्याधीनहृदयाम्, माम्=बालचन्द्रिकाम्, एकदा=एकस्मिन्नहनि, विलोक्य=दृष्ट्वा, कन्यादूषणदोषं=बालिकादूषणदोषम्, दूरीकृत्य=निराकृत्य, बलात्कारेण=बलप्रयोगेण, रन्तुं=उपभोक्तुम्, उद्युङ्क्ते=चेष्टते । तच्चिन्तया=तस्य चिन्ता निर्वेदः तया, दैन्यं=दीनताम्, अगच्छम्=अगमम् ।

टिप्पणी--शासनं–शास्+ल्युट् । अतिक्रम्य–अति+क्रम्+क्त्वा→ल्यप् । पार…… दुष्कर्म–पारदार्यं च परद्रव्यापहरणं च ते आदिनी यस्य दुष्कर्मणः, तत् । कुर्वाणः–कृ+शानच् । मन्मथ–कामदेव; 'मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः' इत्यमरः । लावण्यायत्तचित्तां–लावण्येन आयत्तं चित्तं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि) । 'अधीनो निघ्न आयत्त' इत्यमरः । 'चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः' इति चामरः विलोक्य–वि+लोक् क्त्वा→ल्यप् । कन्यादूषणदोषं–कन्यायाः दूषणं तदेव दोषः तम् । दूरीकृत्य–दूर+च्वि+कृ→ल्यप् । रन्तुं–रम्+तुमुन् ।

तस्या मनोगतम्, रागोद्रेकं मनोरथसिद्धि्यन्तरायं च निशम्य बाष्पपूर्णलोनां तामाश्वास्य दारुवर्मणो मारणोपायं च विचार्य वल्लभामवोचम्—'तरुणि, भवदभिलाषिणं दुष्टहृदयमेनं निहन्तुं मृदुरुपायः कश्चिन्मया चिन्त्यते । यक्षः कश्चिदधिष्ठाय बालचन्द्रिकां निवसति । तदाकारसंपदाशाशृङ्खलितहृदयो यः संबन्धयोग्यः साहसिको रतिमन्दिरे तं यक्षं निर्जित्य तया एकसखीसमेतया मृगाक्ष्या संलापामृतसुखमनुभूय कुशली निर्गमिष्यति तेन चक्रवाकसंशयाकारपयोधरा विवाहनीयेति सिद्धेनैकेनावादीति पुरजनस्य पुरतो भवदीयैः सत्यवाक्यैर्जनैरसकृत्कथनीयम् । तदनु दारुवर्मा वाक्यानीत्थंविधानि श्रावं श्रावं तूष्णीं यदि भिया स्थास्यति तर्हि वरम्, यदि वा दौर्जन्येन त्वया सङ्गमङ्गीकरिष्यति, तदा स भवदीयैरित्थं वाच्यः--

हिन्दी-अनुवाद--उसके मनोभाव, अपने प्रति प्रेमाधिक्य और अपने मनोरथ की सिद्धि में (दारुवर्मा को) विघ्नरूप सुनकर आँसुओं से परिपूर्ण नेत्रों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाली (रोती हुयी) उस बालचन्द्रिका को आश्वासन देकर और दारुवर्मा के मारने के उपाय को सोचकर अपनी प्रियतमा से कहा—युवति ! तुम्हें चाहने वाले उस दुष्टात्मा दारुवर्मा को मारने के लिए मैं एक सरल उपाय सोच रहा हूँ। तुम अपने आप्तजनों के द्वारा गाँव में यह जनश्रुति फैला दो कि एक सिद्धतपस्वी ने कहा है कि "बालचन्द्रिका के ऊपर एक यक्ष रहता है। उसके सौन्दर्य-सम्पत्ति की आशा से आबद्ध हृदय और सम्बन्ध करने योग्य जो साहसी रतिमन्दिर में उस यक्ष को पराजितकर एक सखी के साथ बैठी उस मृगनयनी से वार्तारूपी सुधा-रस का सुख पाकर सकुशल लौट आयेगा उसी के साथ चक्रवाकों के सन्देह को समुत्पन्न करने वाले स्तनों वाली (बालचन्द्रिका) का विवाह होगा। तत्पश्चात् इस प्रकार की बातें सुनकर यदि दारुवर्मा भयभीत होकर चुप हो गया तो अच्छा ही होगा। यदि इस पर भी दुर्जनतावश तुम्हारे सम्पर्क को न छोड़े तो तुम्हारे आत्मीयजन उससे इस प्रकार कहें—

संस्कृत-व्याख्या—तस्याः=बालचन्द्रिकायाः, मनोगतं=अभिलाषम्, रागोद्रेकं=अनुरागाधिक्यम्, मन्मनोरथसिद्धयन्तरायं=मम अभिलाषनिष्पत्ति-विघ्नम्, च=समुच्चये, निशम्य=श्रुत्वा, बाष्पपूर्णलोचनां=अश्रुपरिपूर्ण-नयनाम्, ताम्=बालचन्द्रिकाम्, आश्वास्य=सान्त्वयित्वा, दारुवर्मणः=एतदाख्यस्य, मरणोपायं=मृत्युसाधनम्, च=अपि, विचार्य=चिन्तयित्वा, वल्लभां=प्रियतमाम्, अवोचम्=अवदम्, तरुणि=सुन्दरि, भवदभिलाषिणं=भवत्याः तव अभिलाषिणम्, दुष्टहृदयं=दुष्टचित्तम्, एनं=दारुवर्माणम्, निहन्तुं=हन्तुम्, मृदुः=सरलः, उपायः=साधनम्, कश्चित्=एकः, मया=पुष्पोद्भवेन, चिन्त्यते=विचार्यते। कश्चित्=एकः, यक्षः=पिशाचविशेषः, बालचन्द्रिकां=एतदाख्यां कन्यकाम्, अधिष्ठाय=आश्रित्य, निवसति=निवासं करोति। तदाकारसम्पदाशाशृङ्खलितहृदयः=बालचन्द्राकृतिसम्पद्भो-गेच्छाबद्धचित्तः, यः=जनः, संबन्धयोग्यः=सम्बन्धानुरूपः, साहसिकः=साहसी, रतिमन्दिरे=सुरतशालायाम्, तं यक्षम्=पूर्वोक्तं पिशाचविशेषम्, निर्जित्य=पराजित्य, एकसखीसमेतया=एकसखीयुक्तया, तया मृगाक्ष्या=तया मृग-नयनया, संलापामृतसुखं=परस्परभाषणसुधानन्दम्, अनुभूय=अनुभवं कृत्वा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुशली=क्षेमयुक्तः, निर्गमिष्यति=निर्यास्यति, तेन=पुरुषविशेषेण, चक्रवाक-संशयाकारपयोधरा=चक्रवाकपक्षिसन्देहाकारकुचा, विवाहनीया=परिणेया, इति=एवम्, एकेन सिद्धेन=एकेन तपसा, अवादि=अभाषि, इति=एवम्, पुरजनस्य=ग्रामवासिनः, पुरतः=अग्रे, भवदीयैः=भवत्पुरुषैः, सत्यवाक्यैः जनैः=आप्तपुरुषैः, असकृत्=पुनः-पुनः, कथनीयम्=भणनीयम् । तदनु=ततः, दारुवर्मा=एतदाख्यः, इत्थंविधानि=एवंविधानि, वाक्यानि=वचनानि, श्रावं-श्रावं=श्रुत्वा, यदि भिया=चेद् भीत्या, तूष्णीं=मौनम्, स्थास्यति=स्थिरतां यास्यति, तर्हि=तदा, वरं=श्रेष्ठम्, यदि वा=चेद्वा, दौर्जन्येन=दुष्टस्वभावेन, त्वया=बालचन्द्रिकया, सङ्गं=सम्पर्कम्, अङ्गीकरिष्यति=स्वीकरिष्यति, तदा=तर्हि, सः=दारुवर्मा, भवदीयैः=त्वदीयैः, इत्थं=एवम्, वाच्यः=कथनीयः ।

टिप्पणी--मनोगतं-मनसि गतम् (तत्पुरुष) । गतम्-गम्+क्त । रागोद्रेकं-रागस्य उद्रेकम् (तत्पुरुष) । मन्मनोरथसिद्ध्यन्तरायम्-मम मनोरथस्य या सिद्धिः तस्याः अन्तरायम् (तत्पुरुष) । 'इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः' इत्यमरः । निशम्य-नि+शम्+क्त्वा→ल्यप् । बाष्पपूर्णलोचनां-बाष्पेण पूर्णे लोचने यस्याः सा तां तादृशीम् (बहुव्रीहि) । मारणोपायं-मारणस्य उपायस्तम् (तत्पुरुष) । भवदभिलाषिणं-भवत्याः अभिलाषिणम् (तत्पुरुष) । तदाकार............हृदयः-तस्याः आकारः एव सम्पत्, तस्यां या आशा तया शृंङ्खलितं हृदयं यस्य स तादृशः (बहुव्रीहि) । निर्जित्य-निर्+जि+क्त्वा→ल्यप् । एकसखीसमेतया-एका चासौ सखी इति एकसखी, तया समेतया (तत्पुरुष) । मृगाक्ष्या-मृगस्य इव अक्षिणी यस्याः सा तया, (बहुव्रीहि) । संलापामृतसुखं-संलापः एव अमृतं तेन सुखम् (तत्पुरुष) । कुशली-कुशलम् अस्यास्तीति, कुशल+इनि । चक्रवाक.......... ......पयोधरा-चक्रवाके संशयः येन तादृशः आकारः ययौ तादृशौ पयोधरौ यस्याः सा तादृशी ।

'सौम्य, दर्पसारवसुधाधिपामात्यस्य भवतोऽस्मन्निवासे साहसकरणमनुचितम । पौरजनसाक्षिकं भवन्मन्दिरमानीतया अनया तोयजाक्ष्या सह क्रीडन्ना-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युष्मान्यदि भविष्यति तदा परणीय तरुणीं मनोरथान्निर्विश' इति ।

हिन्दी-अनुवाद---सौम्य ! पृथ्वीपति दर्पसार के मन्त्री आप का हमारे घर में ऐसा साहस अनुचित है। ग्रामीणजनों के समक्ष आप इसे अपने घर ले जाएँ और अपने घर में इस कमलनयनी के साथ-विहार करते हुए यदि आप आयुष्मान् निकलें तो इसके साथ विवाह कर अपने मनोरथ पूर्ण करें।

संस्कृत-व्याख्या---सौम्य=सुभग, दर्पसारवसुधाधिपामात्यस्य=दर्पसार-नृपतिमन्त्रिणः, भवतः=तव, अस्मिन्निवासे=अस्माकं भवने, साहसकरणं=साहसकार्यम्, अनुचितं=अयोग्यम्। पौरजनसाक्षिकं=ग्रामीणसमक्षम्, भवन्मन्दिरं=तवभवनम्, आनीतया=प्राप्तया, तोयजाक्ष्या=कमलाक्ष्या, सह=साकम्, क्रीडन्=विहरन्, यदि=चेत्, आयुष्मान्=कुशली भविष्यति, तदा=तस्मिन् काले, तरुणीं=युवतीम्, परिणीय=विवाहं कृत्वा, मनोरथान्=कामान्, निर्विश=उपभोगं कुरु, इति ।

टिप्पणी---दर्प····· मात्यस्य-दर्पसारश्चासौ वसुधाधिपश्चेति-दर्पसार-वसुधाधिपः, तस्य अमात्यस्य। अनुचितम्-न उचितं अनुचितम्। भवन्मन्दिरम्-भवतः मन्दिरम् (तत्पुरुष) 'भवनागारमन्दिरम्' इत्यमरः। तोयजाक्ष्या-तोयजे इव अक्षिणी यस्याः सा तया। क्रीडन्-क्रीड्+शतृ। परिणीय-परि+नी+क्त्वा→ल्यप्।

सोऽप्येतदङ्गीकरिष्यति। त्वं सखीवेषधारिण मया सह तस्य मन्दिरं गच्छ। अहमेकान्तनिकेतते मुष्टिजानुपादाघातैस्तं रभसान्निहत्य पुनरपि वयस्यामिषेण भवतीमनु निःशङ्कं निर्गमिष्यामि।

हिन्दी-अनुवाद---वह भी इस बात को स्वीकार कर लेगा। तुम सखी वेषधारी मेरे साथ उसके घर चलना। मैं एकान्त घर में घूसा, लात और घुटनों के प्रहार से उसे तेजी से मारकर पुनः सखी के बहाने तुम्हारे पीछे शङ्कारहित होकर निकल आऊँगा।

संस्कृत-व्याख्या---सोऽपि=दारुवर्मापि, एतत्=पूर्वोक्तम्, अङ्गीकरि-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ष्यति=स्वीकरिष्यति । त्वं=बालचन्द्रिका, सखीवेषधारिणा=सहचरीवेषधारिणा, मया=पुष्पोद्भवेन, सह=साकम्, तस्य=दारुवर्मणः, मन्दिरं=निकेतनम्; गच्छ=व्रज । अहं=पुष्पोद्भवः, एकान्तनिकेतने=निर्जनभवने, मुष्टिजानुपादाघातैः=मुष्ट्यूरुचरणप्रहारैः, तं=पूर्वोक्तम्, रभसात्=वेगात्, निहत्य=मारयित्वा, पुनरपि=भूयोऽपि, वयस्यमिषेण=सखीव्याजेन, भवतीमनु=त्वामनु, निःशङ्कं=शङ्कया रहितम्, निर्गमिष्यामि=निष्क्रमिष्यामि ।

टिप्पणी—सखीवेषधारिणा–वेषं धरतीति वेषधारी सख्याः वेषधारी=सखीवेषधारी, तेन । मन्दिर–घर । 'भवनागारमन्दिरम्' इत्यमरः । मुष्टिजानुपादाघातैः–मुष्ट्या, जानुना, पादेन च ये आघाताः तैः । निहत्य–नि+हन्+क्त्वा→ल्यप् । वयस्यामिषेण–वयस्यायाः मिषेण (तत्पुरुष) । वयस्या–सखी । निर्गमिष्यामि–'निर्+गम् लृट् लकार उत्तमपुरुष एकवचन ।

तदेनमुपायमंगीकृत्य विगतसाध्वसलज्जा भवज्जनकजननीसहोदराणां पुरत आवयोः प्रेमातिशयमाख्याय सर्वथास्मत्परिणयकरणेताननुनयेः । तेऽपि वंशसंपल्लावण्याढ्याय यूने मह्यं त्वां दास्यन्त्येव । दारुवर्मणो मारणोपायं तेभ्यः कथयित्वा तेषामुत्तरमाख्येयं मह्यम्' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—तो इस उपाय को स्वीकार कर भय और लज्जा को छोड़ अपने माता-पिता और भाइयों के समक्ष हम दोनों के प्रेमाधिक्य की बात कहकर सभी प्रकार से हम लोगों के विवाह के लिए उनसे अनुरोध करना । वे भी वंश तथा सौन्दर्य से युक्त मुझ युवक को देखकर अवश्य ही तुम्हारा विवाह मेरे साथ कर देंगे । दारुवर्मा के मारणोपाय को अपने घर के लोगों को वतलाकर उनका उत्तर मुझे वतलाना ।

संस्कृत-व्याख्या—तत् एनम्=पूर्वोक्तम्, उपायं=साधनम्, अङ्गीकृत्य=स्वीकृत्य, विगतसाध्वसलज्जा=अपगतभीतित्रपा, भवज्जनकजननीसहोदराणां=तव तातजननीसहोदराणाण्, पुरतः=समक्षम्, आवयोः, प्रेमातिशयं=प्रेमाधिक्यम्, आख्याय=कथयित्वा, सर्वथा=सर्वप्रकारेण, अस्मत्परिणयकरणे=आवयारुद्वाहकरणे, तान्=पित्रादीन्, अनुनयेः=अनुरुन्ध्याः । तेऽपि=पूर्वोक्ताः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपि, वंशसम्पल्लावण्याढ्याय=कुलगौरवसौन्दर्ययुक्ताय, यूने=तरुणाय, मह्यं=पुष्पोद्भवाय, त्वां=वालचन्द्रिकाम्, दास्यन्ति=वितरिष्यन्ति, एव=हि । दारुवर्मणः=एतदाख्यस्य, मारणोपायं=हननसाधनम्, तेभ्यः=पूर्वोक्तेभ्यः, कथयित्वा=भणित्वा, तेषाम्=पित्रादीनाम्, उत्तरं=प्रतिवाक्यम्, मह्यं=पुष्पोद्भवाय, आख्येयम्=कथनीयम् ।

टिप्पणी—अङ्गीकृत्य-अङ्ग+च्वि+कृ+क्त्वा→ल्यप् । विगतसाध्वसलज्जा-विगते साध्वसलज्जे यस्याः सा । साध्वस–भय; 'भीतिर्भीः साध्वसं भयम्' इत्यमरः । भव………सहोदराणाम्—जनकश्च जननी च सहोदराश्चेति ते, भवत्याः जनकजननीसहोदराः इति, तेषाम् । 'तातस्तु जनकः पिता' इत्यमरः । प्रेमातिशयम्–प्रेम्णः अतिशयम् (तत्पुरुष) । अनुनयेः–अनु उपसर्गपूर्वक 'णीञ् प्रापणे' धातु विधि लिङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन । वंश……ढ्याय–वंशसम्पदा लावण्येन च आढ्याय (तत्पुरुष) । कथयित्वा–कथ्+णिच्+क्त्वा ।

सापि किञ्चिदुत्फुल्लसरसिजानना मामब्रवीत्–'सुभग, क्रूरकर्माणं दारुवर्माणं भवानेव हन्तुमर्हति । तस्मिन्हते सर्वथा युष्मन्मनोरथः फलिष्यति । एवं क्रियताम् । भवदुक्तं सर्वमहमपि तथा करिष्ये' इति मामसकृद्विवृत्तवदना विलोकयन्ती मन्दं मन्दमगारमगात् । अहमपि बन्धुपालमुपेत्य शकुनज्ञात्तस्मात् 'त्रिंशद्दिवसानन्तरमेव भवत्संगः संभविष्यति' इत्यशृणवम् ।

हिन्दी-अनुवाद—कुछ खिले हुए मुखकमल वाली उस (वालचन्द्रिका) ने भी मुझसे कहा–सुभग !, क्रूरकर्मवाले दारुवर्मा को आपही मारने में समर्थ हो सकते हैं । उसके मरने पर आपका मनोरथ अवश्य ही पूर्ण होगा । ऐसा ही करें । आपने जैसा कहा है मैं उसी प्रकार सव कुछ करूँगी । ऐसा कहकर वार-वार मुख पलट कर मुझे देखती हुयी वह धीरे-धीरे घर चली गयी । मैं भी वन्धुपाल के पास आ गया । शकुनशास्त्र को जानने वाले उसने वतलाया कि तीस दिनों के वाद ही आपका सङ्ग होगा ।

संस्कृत-व्याख्या—सापि=वालचन्द्रिकापि, किञ्चित्=ईषत्, उत्फुल्लसरसिजानना=विकसितकमलानना, माम्=पुष्पोद्भवम्, अब्रवीत्=अवदत्,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुभग=सौम्य, क्रूरकर्माणं=घातुकम्, दारुवर्माणं=एतदाख्यम्, भवानेव=त्वमेव, हन्तुम्, अर्हति=समर्थोऽस्ति । तस्मिन्=दारुवर्मणि, हते=मृते, सर्वथा=सर्वप्रकारेण, युष्मन्मनोरथः=युष्माकमभिलाषः, फलिष्यति=सिद्धिं गमिष्यति । एवं=पूर्वोक्तम्, क्रियताम्=विधीयताम् । भवदुक्तं=भवता कथितम्, अहमपि=बालचन्द्रिकापि, सर्वम्, तथा=तेनैव प्रकारेण, करिष्ये=विधास्यामि, इति=एवं कथयित्वा, माम्=पुष्पोद्भवम्, असकृत्=पुनः-पुनः, विवृत्तवदना=परावृत्तानना, विलोकयन्ती=पश्यन्ती, मन्दं मन्दम्=शनैः-शनैः, अगारं=भवनम्, अगात्=अगच्छत् । अहमपि=पुष्पोद्भवोऽपि, बन्धुपालं=एतदाख्यम्, उपेत्य=प्राप्य गत्वा वा, तस्मात्=बन्धुपालात्, शकुनज्ञात्=निमित्तज्ञात्, त्रिंशद्दिवसानन्तरमेव=त्रिंशद्दिनपश्चादेव, भवत्सङ्गः=भवता राजवाहनेन सङ्गः मिलनम्, सम्भविष्यति=सम्यक् भविष्यति, इति=एवम्, अश्रृणवम्=श्रुतवान् ।

टिप्पणी—उत्फुल्लसरसिजानना–उत्फुल्लं सरसिजम् इव आननं यस्याः सा (बहुव्रीहि) । सरसिजम्–कमल, सरसि जातम्–सरस्+ङि+जन्+ड' यहाँ 'सप्तम्यां जनेर्डः' इस सूत्र से 'ड' प्रत्यय होता है तथा 'तत्पुरुषे कृति बाहुलम्, से विकल्प से सप्तमी का अलुक् । 'आननं लपनं मुखम्' इत्यमरः । हन्तुम्–हन्+तुमुन् । विवृत्तं वदनं यस्याः सा (बहुव्रीहि) । विलोकयन्ती–वि+लोक्+णिच्+शतृ+ङीप् । अगारम्=भवन को, 'भवनागारमन्दिरम्' इत्यमरः । उपेत्य–उप+इण्+क्त्वा→ल्यप् । शकुनज्ञात्–शकुनं जानातीति शकुनज्ञः तस्मात् । 'उत्फुल्लसरसिजानना' यहाँ उपमा है ।

तदनु मदनुगम्यमानो बन्धुपालो निजावासं प्रविश्य मामपि निलयाय विससर्ज । मन्मायोपायवागुरापाशलग्नेन दारुवर्मणा रतिमन्दिरे रन्तुं समाहूता बालचन्द्रिका तं गमिष्यन्ती दूतिकां मन्निकटमभिप्रेषितवती ।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् मुझसे अनुगमन किये हुए बन्धुपाल ने अपने घर पहुँचकर मझे भी अपने घर (जाने) के लिए अनुमति दी । मेरी माया से निर्मित उपाय रूपी मृगबन्धिनी में फँसे हुए दारुवर्मा के द्वारा रतिमन्दिर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में रमण करने के लिए बुलायी गयी बालचन्द्रिका ने उसके पास जाते हुए अपनी दूती को मेरे पास भेजा।

संस्कृत-व्याख्या——तदनु=तत्पश्चात्, मदनुगम्यमानः=मया अनुस्त्रियमाणः, बन्धुपालः=एतदाख्यः, निजावासं=स्वगृहम्, प्रविष्य=प्रवेशं कृत्वा, यम्=पुष्पोद्भवम्, अपि=च, निलयाय=भवनाय, विससर्ज=तत्याज। मन्मायोपायवागुरापाशलग्नेन=मत्कपटसाधनमृगबंधनीरज्जुसंलग्नेन, दारुवर्मणा=एतदाख्येन, रतिमन्दिरे=सुरतभवने, रन्तुम्=क्रीडितुम्, समाहूता=आहूता, बालचन्द्रिका=एतदाख्या रमणी, तम्=पूर्वोक्तम्, गमिष्यन्ती=प्रस्थास्यमाना, मन्निकटम्=मत्समीपम्, दूतिकाम्=चेटीम्, अभिप्रेषितवती=प्राहिणोत्।

टिप्पणी——अनुगम्यमानः-अनु+गम्+यक्+शानच्। निजावासम्-निजस्य आवसः, तम्। प्रविश्य-प्र+विश्+क्त्वा→ल्यप्। विससर्ज-सृज् धातु लृट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन। मन्…………लग्नेन-ममं मायया: यः उपायः स एव वागुरा तद्रूपः यः पाशः तस्मिन् लग्नेन (तत्पुरुष)। वागुरा-मृग को बाँधने वाली रस्सी को वागुरा कहते हैं। "वागुरा मृगबंधनी" इत्यमरः। रन्तुम्-रम्+तुमुन्। गमिष्यन्ती-गम्+इट्+स्य+शतृ+ङीप्। यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

अहमपि मणिनूपुरमेखलाकङ्कणकटकताटङ्कहारक्षौमकज्जलं वनितायोग्यं मण्डनजातं निपुणतया तत्तत्स्थानेषु निक्षिप्य सम्यगङ्गीकृतमनोज्ञवेषो वल्लभया तया सह तदागारद्वारोपान्तमगच्छम्। द्वाःस्थकथितास्मदागमनेन सादरं विहिताभ्युद्गतिना तेन द्वारोपान्तनिवारिताशेषपरिवारेण मदन्विता बालचन्द्रिका संकेतागारमानीयत। नगरव्याकुलां यक्षकथां परीक्षमाणो नागरिकजनोऽपि कुतूहलेन दारुवर्मणः प्रतीहारभूमिमगमत्।

हिन्दी-अनुवाद——मैं भी मणिजटित पायल, करधनी, कंगन, बाजूबंद (कटक) कनपासा, हार रेशमी साड़ी और काजल इन स्त्रियों के लिए योग्य आभूषणों को चतुरतापूर्वक उन-उन अंगों में धारण कर भलीभाँति मनोहर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेष में तैयार होकर उस प्रियतमा बालचन्द्रिका के साथ दारुवर्मा के गृहद्वार के पास गया । द्वारपालों के द्वारा निवेदित हमारे आगमन से दारुवर्मा आदर-पूर्वक अगवानी करने के लिए आगे आया और द्वार के समीप ही समस्त परि-वार को अन्दर जाने से रोक दिया केवल मेरे साथ चलती हुई बालचन्द्रिका को पूर्वसंकेतित रतिमन्दिर में ले गया । नगर में फैली हुई यक्ष की कथा को (बालचन्द्रिका के ऊपर यक्ष का निवास है इस जनश्रुति को) जानने के लिए नगरवासी लोग भी कौतूहल वश दारुवर्मा की ड्योढ़ी पर पहुँच गये ।

संस्कृत-व्याख्या—अहमपि=पुष्पोद्भवोऽपि, मणिनूपुरमेखलाकङ्कणकटक-ताटङ्कहारक्षौमकज्जलम् = मञ्जीरकाञ्चीकरभूषणवलयकर्णभूषणहारदुकूलाञ्जनम्, वनितायोग्यम्=स्त्रीजनोचितम्, मण्डनजातम्=आभूषणसमूहम्, निपुणतया=चतुरतया, तत्तत्स्थानेषु=तेषु तेषु अंगेषु, निक्षिप्य=परिधाय, सम्यक्=साधु, अंगीकृतमनोज्ञवेषः=स्वीकृतमञ्जुलवेषः, तया=बालचन्द्रिकया, वल्लभया=प्रेमिकया, सह=साकम्, तदागारद्वारोपान्तम्=तद्भवनप्रतीहार-समीपम्, अगच्छम्=अगमम् । द्वाःस्थकथितास्मदागमनेन=द्वारपालनिवेदिता-स्मदागमनेन, सादरं=आदरेण सहितम् विहिताभ्युद्गतिना=कृताभ्युत्थान-गतिना, तेन=दारुवर्मणा, द्वारोपान्तनिवारिताशेषपरिवारेण=प्रतीहार-प्रदेशापवारितसंपूर्णपरिजनेन, मदन्विता=मयायुक्ता, बालचन्द्रिका=एतदाख्या सुन्दरी ललना, संकेतागारम्=रतिमन्दिरम्, आनीयत् । नगरव्याकुलाम्=पुरव्याप्ताम्, यक्षकथाम्=पिशाचवार्ताम्, परीक्षमाणः=पश्यन्, नागरिक-जनोऽपि=पुरलोकोऽपि, कुतूहलेन=कौतुकेन, दारुवर्मणः=एतदाख्यस्य, प्रती-हारभूमिम्=द्वारदेशम्, अगमत्=अगच्छत् ।

टिप्पणी—मणि······कज्जलं–मणिनूपुरञ्च मेखला च कङ्कणं च कटकञ्च ताटङ्कम् च हारञ्च क्षौमं च कज्जलं चेति एतेषाम् समाहरे क्लीबत्वम् एक-वचनं च । मणिनूपुर–मणिजटितपायल, 'मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम्, इत्यमरः' । मेखला=स्त्रियों के कमर में बाँधे जाने वाले आभूषण को मेखला कहते हैं इसे हिन्दी में करधनी बोला जाता है । "मेखला काञ्चीसप्तकी' इत्यमरः । मण्डन–(मडि) मण्ड्+ल्युट् । निपुणतया=निपुणस्य भावः निपुणता तया–

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निपुण+तल्+टाप् तृतीया एकवचन । निक्षिप्य–नि+क्षिप्+क्त्वा→ल्यप् । अंगीकृतमनोज्ञवेषः–अंगीकृतः मनोज्ञः वेषः येन सः (बहुव्रीहि) । तदागारद्वारोपान्तम्–तस्य आगारस्य द्वारम्, तस्य–उपान्तम् । द्वाःस्थ······गमनेन–द्वाःस्थेन कथितम् आवयोः आगमनं यस्मै तेन (बहुव्रीहि) । विहिताभ्युद्गतिना–विहिता अभ्युद्गतिः येन तेन (बहुव्रीहि) । अभ्युद्गतिः–अभि+उत्+गम्+क्तिन् । द्वारो··················परिवारेण–द्वारोपान्ते निवारितः अशेषः परिवारः येन तेन (बहुव्रीहि) । मदन्विता–मया अन्विता । नगरव्याकुलाम्–नगरे व्याकुलामिति (तत्पुरुष) । परीक्षमाणः–परि+ईक्ष्+शानच् । नागरिकजनः–नगरे भवः नागरिकः, नागरिकश्चासौ जनश्चेति (कर्मधारय) । अगमत्–'गम्' धातु लुङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन ।

दारुवर्मणो वधः

विवेकशून्यमतिरसौ रागातिरेकेण रत्नखचितहेमपर्यङ्के हंसतूलगर्भशयनमानीय तरुणीं, तस्यै मह्यं तमिस्रासम्यगनवलोकितपुंभावाय मनोरमस्त्रीवेषाय च चामीकरमणिमयमण्डनानि सूक्ष्माणि चित्रवस्त्राणि कस्तूरिकामिलितं हरिचन्दनं कर्पूरसहितं ताम्बूलं सुरभीणि कुसुमानीत्यादिवस्तुजातं समर्प्य मुहूर्तद्वयमात्रं हासवचनैः संलपन्नतिष्ठत् ।

हिन्दी-अनुवाद––विवेक से रहित बुद्धि वाले उस दारुवर्मा ने अनुराग (वासना) की अधिकता से हंस के समान स्वच्छ रुई से भरे गद्दों वाले रत्नजटित सुवर्ण निर्मित पलंग पर उस तरुणी बाल चन्द्रिका को बिठाकर, उसको तथा रात्रि होने के कारण अदृष्ट पुंभाव वाले और मनोरम स्त्री के वेष को धारण करने वाले मुझको उसने सुवर्ण और मणिजटित आभूषण, महीन छापे की साड़ियाँ, कस्तूरीमिश्रित चन्दन, कपूरयुक्त पान और सुगन्धित पुष्पादि वस्तुसमह को देकर दो मुहूर्त्त तक हास-परिहास करते हुए समय व्यतीत किया ।

संस्कृत-व्याख्या––विवेकशून्यमतिः=विवेकरहितबुद्धिः असौ=दारुवर्मा, रागातिरेकेण=अनुरागाधिक्येन, रत्नखचितहेमपर्यङ्के=मणिमयस्वर्णनिर्मित-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पल्यङ्के, हंसतूलगर्भशयनं=हंससदृशतूलान्तरालशयनम्, आनीय=आरोप्य, तरुणीं=रमणीम् बालचन्द्रिकाम्, तस्यै=बालचन्द्रिकायै, तमिस्रासम्यगनवलोकितपुंभावाय=क्षपास्पष्टालक्षितपुंभावाय, मनोरमस्त्रीवेषाय=मनोज्ञललनावेषाय, च=समुच्चये, मह्यं=स्त्रीवेशधारिणे पुष्पोद्भवाय, चामीकरमणिमयमण्डनानि=सुवर्णनिर्मित रत्नखचिताभूषणानि, सूक्ष्माणि=श्लक्ष्णानि, चित्रवस्त्राणि=विचित्रवासांसि, कस्तूरिकामिलितं=मृगमदयुक्तम्, हरिचन्दनं=सुगन्धितचन्दनम्, कर्पूरसहितं=घनसारयुक्तम्, ताम्बूलं=मुखभूषणपत्रविशेषम्, सुरभीणि=सुगन्धीनि, कुसुमानि=प्रसूनानि, इत्यादिवस्तुजातं=इत्यादिद्रव्यसमूहम्, समर्प्य=दत्त्वा, मुहूर्तद्वयमात्रं=चतुर्विंशतिक्षणमात्रम्, हासवचनैः=परिहासवाक्यैः, संलपन्=संलापं कुर्वन्, अतिष्ठत्=स्थितोऽभवत् ।

टिप्पणी—विवेकशून्यमतिः–विवेकेन शून्या मतिः यस्य सः (बहुव्रीहि) । मतिः–मन्+क्तिन्; 'बुद्धिर्मनीषा धिषणा धी प्रज्ञा शेमुषी मतिः, इत्यमरः । रागातिरेकेण–रागस्य अतिरेकेण (तत्पुरुष) । रत्न·····पर्यङ्के–रत्नैः खचितः यः हेम्नः पर्यङ्कः तस्मिन् (तत्पुरुष) । 'कनकं हिरण्यं हेम हाटकम्' इत्यमरः । हंसतूलगर्भशयनं–हंसेन तुल्यः यः तूलः स गर्भे यस्य एवम्भूतं शयनम् । आनीय–आ+नी+क्त्वा→ल्यप् । तमिस्रा····· भावाय–तमिस्रया सम्यक् अनवलोकितः पुंभावः यस्य तस्मै (बहुव्रीहि) । 'तमिस्रा तामसी रात्रिः' इत्यमरः । मनोरमस्त्रीवेषाय–मनोरमः स्त्रीवेषः यस्य तस्मै (बहुव्रीहि) । चामीकर······मण्डनानि–चामीकरं मणिश्चेति ताभ्यां युक्तानि मण्डनानि । 'चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने' इत्यमरः । चामीकर–सुवर्ण । चित्रवस्त्राणि–चित्राणि वस्त्राणि । कस्तूरिकामिलितं–कस्तूरिकया मिलितम् (तत्पुरुष) । कर्पूरसहितं–कर्पूरेण सहितम् (तत्पुरुष) । संलपन्–सम्+लप्+शतृ ।

ततो रागान्धतया सुमुखीकुचग्रहणे मतिं व्यधत्त । रोषारुणितोऽहमेनं पर्यङ्कतलान्निःशङ्को निपात्य मुष्टिजानुपादाघातैः प्राहरम् ।

नियुद्धरभसविकलमलंकारं पूर्ववन्मेलयित्वा भयकम्पितां नताङ्गीमुपलालयन्मन्दिराङ्गणमुपेतः साध्वसकम्पित इवोच्चैरकूजमहम्—'हा बालचन्द्रिकाधिष्ठितेन घोराकारेण यक्षेण दारुवर्मा निहन्यते ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् काम की पीड़ा से अन्धा होकर दारुवर्मा ने सुन्दरी बालचन्द्रिका के स्तनों को पकड़ने का निश्चय किया। क्रोध से लाल होकर निःशङ्क मैंने उस दारुवर्मा को पलङ्ग से नीचे पटककर मुक्का, लात और घुटनों के प्रहार से खूब पीटा। बाहुयुद्ध के वेग से अस्त-व्यस्त आभूषणों को पहले की तरह ठीक कर भय से काँपती हुयी सुन्दरी (बालचन्द्रिका) को धैर्य बँधाकर भवन के आँगन में आकर भय से कम्पित के समान मैं तेजी से चिल्लाने लगा—हाय बालचन्द्रिका के ऊपर रहने वाले भयानक यक्ष के द्वारा दारुवर्मा की हत्या की जा रही है।

संस्कृत-व्याख्या—ततः=तत्पश्चात्, रागान्धतया=अनुरागान्धतया, सुमुखीकुचग्रहणे=सुन्दरीस्तनपीडने, मतिं=बुद्धिम्, अकरोत्=चकार। रोषारुणितः=क्रोधेन रक्तवर्णः, अहं=पुष्पोदभवः, एनं=दारुवर्माणम्, पर्यङ्कतलात्=पल्यङ्कात्, निःशङ्कः=शङ्कारहितः, निपात्य=निपातनं कृत्वा, मुष्टिजानुपादाघातैः=मुष्टिजानुचरणप्रहारैः, प्राहरम्=ताडितवान्। नियुद्धरभसविकलं=बाहुयुद्धवेगविपर्यस्तम्, अलंकारं=आभूषणम्, पूर्ववत्=यथावत्, मेलयित्वा=संस्थाप्य, भयकम्पितां=भीतिवेपमानाम्, नताङ्गीं=सुन्दरीं बालचन्द्रिकाम्, उपलालयन्=सान्त्वयन्, मन्दिराङ्गणं=भवनचत्वरम्, उपेतः=प्राप्तः, साध्वसकम्पितः=भयवेपितः, इव=यथा, अहं=पुष्पोद्भवः, उच्चैः=तारस्वरेण, अकूजम्=आक्रन्दम्, हा=शोके, बालचन्द्रिकाधिष्ठितेन=बालचन्द्रिकामाश्रित्य स्थितेन, घोराकारेण=घोरः भयङ्करः आकारः स्वरूपं यस्य तेन, यक्षेण=पिशाचेन, दारुवर्मा=एतदाख्यः, निहन्यते=विनाश्यते।

टिप्पणी—रागान्धतया-रागेण अन्धः=रागान्धः तस्य भावः तेन। सुमुखीकुचग्रहणे–सुमुखी=बालचन्द्रिका, तस्याः कुचग्रहणे (तत्पुरुष)। रोषारुणितः–रोषेण अरुणितः (तत्पुरुष)। निपात्य–नि+पत्+णिच्+क्त्वा→ल्यप्। मुष्टिजानुपादाघातैः–मुष्टेः जानुनोः पादयोः च ये आघातः तैः। नियुद्धरभसविकलम्–नियुद्धे यः रभसः तेन विकलम् (तत्पुरुष); 'नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ' इत्यमरः। नियुद्ध–बाहुयद्ध। रभस–वेग; 'रभसो वेगहर्षयोः' इत्यमरः। मेलयित्वा–मिल्+णिच्+क्त्वा। भयकम्पितां–भयेन कम्पिताम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(तत्पुरुष); 'भीतिर्भीः साध्वसं भयम्' इत्यमरः । नताङ्गीम्—नतम् अङ्गं यस्याः सा ताम् (वहुव्रीहि) । मन्दिराङ्गणम्—मन्दिरस्य अङ्गणम् (तत्पुरुष) । साध्वसकम्पितः—साध्वसेन कम्पितः (तत्पुरुष) । साध्वस—भय । घोराकारेण—घोरः आकारः यस्य तेन (बहुव्रीहि) ।

'सहसा समागच्छत पश्यतेमम्' इति तदाकर्ण्य मिलिता जनाः समुद्यद्बाष्पा हा-हा-निनादेन दिशो बधिरयन्तः 'बालचन्द्रिकामधिष्ठितं यक्षं वलवन्तं शृण्वन्नपि दारुवर्मा मदान्धस्तामेवायाचत । तदसौ स्वकीयेन कर्मणा निहतः, किं तस्य विलापेन' इति मिथो लपन्तः प्राविशन् ।

हिन्दी-अनुवाद—लोगों शीघ्र दौड़ो, इस दारुवर्मा को देखो । ऐसा सुनकर वहाँ पर एकत्रित लोगों ने आँखों में आँसुओं को उछालते हुए और हाहाकार शब्द से दिशाओं को बहिरा करते हुए—'बालचन्द्रिका के ऊपर वलवान् यक्ष का निवास है' ऐसा सुनते (जानते) हुए भी मदान्ध दारुवर्मा ने उस बालचन्द्रिका को ही चाहा अर्थात् वालचन्द्रिका से प्रेम करना चाहा । इसलिए यह अपने ही कृत्य से मरा है । उसके लिए विलाप करने से क्या लाभ अर्थात् कुछ भी नहीं'—इस प्रकार परस्पर बोलते हुए वे लोग प्रविष्ट हुए ।

संस्कृत-व्याख्या—सहसा=झटिति, समागच्छत=समायात, इमं=हन्यमानम्, पश्यत, इति । तदाकर्ण्य=तच्छ्रुत्वा, मिलिताः=समवेताः, जनाः=लोकाः, समुद्यद्बाष्पाः=समुच्छलद्बाष्पाः, हाहानिनादेन=हा हेति शब्देन, दिशः=काष्ठाः, बधिरयन्तः=पूरयन्तः, बालचन्द्रिकामधिष्ठितं=बालचन्द्रिकामाश्रित्य स्थितम्, वलवन्तं=शक्तिशालिनम्, यक्षं=पिशाचम्, शृण्वन्=आकर्णयन्, अपि=च, दारुवर्मा=एतदाख्यः, मदान्धः=विषयाभिलाषविवेकशून्यः, तामेव=बालचन्द्रिकामेव, अयाचत=अभ्यलषत्, तत्=तस्मात्, असौ=दारुवर्मा, स्वकीयेन=स्वीयेन, कर्मणा=व्यापारेण, निहतः=मारितः, तस्य विलापेन किम्=तस्य कृते विलापेन को लाभः ? इति=एवम्, मिथः=परस्परम्, लपन्तः=कथयन्तः, प्रविशन्=प्रविष्टाः अभवन् ।

टिप्पणी—समुद्यद्बाष्पाः—समुद्यत् बाष्पं येषां ते (बहुव्रीहि) । दिशः—दिशाओं को; 'दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः इत्यमरः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मदान्धः–मदेन अन्धः (तत्पुरुष) । विलाप–वि+लप्+घञ् । लपन्तः–लप्+शतृ प्रथमा बहुवचन ।

कोलाहले तस्मिश्चटुललोचनया सह नैपुण्येन सहसा निर्गतो निजावासमगाम् । ततो गतेषु कतिपयदिनेषु पौरजनसमक्षं सिद्धादेशप्रकारेण विवाह्य तामिन्दुमुखीं पूर्वकल्पितान्सुरतविशेषान्यथेष्टमन्वभूवम् । बन्धुपालशकुननिर्दिष्टे दिवसेऽस्मिन्निर्गत्य पुराद् बहिर्वर्तमानो नेत्रोत्सवकारि भवदवलोकनसुखमप्यनुभवामि' इति ।

हिन्दी-अनुवाद—उस कोलाहल में चञ्चल नेत्रों वाली बालचन्द्रिका के साथ निपुणता से शीघ्र निकलकर मैं अपने आवासस्थान को चला गया। तत्पश्चात् कुछ दिनों के व्यतीत होने पर सिद्धादेश के अनुसार नगरवासियों के समक्ष मैंने उस चन्द्रवदना बालचन्द्रिका के साथ विवाह कर पूर्वसङ्कल्पित सुरत-क्रीड़ाओं का यथेच्छ भोग किया । आज बन्धुपाल के द्वारा निर्दिष्ट शकुन के अनुसार निकलकर नगर से बाहर स्थित मैं नेत्रों को आनन्द देने वाले आपके दर्शन सुख का भी अनुभव कर रहा हूँ ।

संस्कृत-व्याख्या—तस्मिन्=पूर्वोक्ते, कोलाहले=कलकले, चटुललोचनया=चञ्चलनयनया, सह=साकम्, नैपुण्येन=कौशलेन, सहसा=झटिति, निर्गतः=निःसृतः, निजावासं=निजस्य स्वस्य आवासं भवनम्, अगाम्=अगच्छम् । ततः=तदनन्तरम्, कतिपयदिनेषु=कतिपयदिवसेषु, पौरजनसमक्षं=नगरवासिनां समक्षम्, सिद्धादेशप्रकारेण=सिद्धाज्ञानुसारेण, तां=पूर्वोक्ताम्, इन्दुमुखीं=चन्द्राननाम्, विवाह्य=परिणीय, पूर्वकल्पितान्=प्राक्सङ्कल्पितान्, सुरतविशेषान्=सम्भोगान्, यथेष्टं=यथेच्छम्, अन्वभूवम्=अनुभूतवान् । बन्धुपालशकुननिर्दिष्टे=बन्धुपालनिमित्तकथिते, दिवसे=दिने, अस्मिन्=एतस्मिन्, निर्गत्य=निःसृत्य, पुरात्=नगरात्, बहिः, वर्तमानः=तिष्ठन्, नेत्रोत्सवकारि=नयनानन्दकरम्, भवदवलोकनसुखम्=त्वद्दर्शनानन्दम्, अपि=च, अनुभवामि=अनुभवं करोमि, इति ।

टिप्पणी—चटुललोचनया–चटुले लोचने यस्याः सा तया । नैपुण्येन–निपुण+ष्यञ् तृ० ए० व० । पौरजनसमक्षं–पौरजनानां समक्षम् (तत्पुरुष) ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्धादेशप्रकारेण–सिद्धस्य आदेशप्रकारेण (तत्पुरुष)। विवाह्य–वि+वह्+णिच्+क्त्वा→ल्यप्। पूर्वसङ्कल्पितान्–पूर्वं सङ्कल्पिताः तान्। वन्धु······निर्दिष्टे–वन्धुपालस्य शकुनेन निर्दिष्टे (तत्पुरुष)। निर्गत्य–निर्+गम्+क्त्वा→ल्यप्। 'पुराद् वहिः' यहाँ 'वहि' के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। वर्तमानः–वृत्+शानच्। भवदालोकनसुखम्–भवतः आलोकनेन यत् सुखम् 'स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि च' इत्यमरः।

एवं मित्रवृत्तान्तं निशम्याम्लानमानसो राजवाहनः स्वस्य च सोमदत्तस्य च वृत्तान्तमस्मै निवेद्य सोमदत्तम् 'महाकालेश्वराराधनानन्तरं भवद्वल्लभां सपरिवारां निजकटक प्रापय्यागच्छ' इति नियुज्य पुष्पोद्भवेन सेव्यमानो भूस्वर्गायमानमवन्तिकापुरं विवेश। तत्र 'अयं मम स्वामिकुमारः' इति बन्धुपालादये बन्धुजनाय कथयित्वा तेन राजवाहनाय बहुविधां सपर्यां कारयन्सकलकलाकुशलो महीसुरवर इति पुरि प्रकटयन्पुष्पोद्भवोऽमुष्य राज्ञो मज्जनभोजनादिकमनुदिनं स्वमन्दिरे कारयामास।

हिन्दी-अनुवाद–इस प्रकार मित्र के समाचार को सुनकर प्रसन्नचित्त राजवाहन ने अपने और सोमदत्त के वृत्तान्त को पुष्पोद्भव से कहकर सोमदत्त से कहा–'महाकाल की पूजा के पश्चात् परिवार के सहित अपनी प्रियतमा को अपने निवासस्थान तक पहुँचाकर लौट आओ' इस प्रकार (सोमदत्त को) नियुक्तकर (राजवाहन) पुष्पोद्भव से सेवित भूमण्डल पर स्वर्ग के समान अवन्तिकापुर में प्रविष्ट हुआ। वहाँ पहुँचकर पुष्पोद्भव ने अपने वन्धुपाल आदि साथियों से 'ये मेरे प्रभु के पुत्र हैं' ऐसा कहकर उन लोगों से अनेक प्रकार से राजवाहन का सत्कार करवाया और नगर में 'ये सकल कलाकुशल ब्रह्मण हैं' ऐसा परिचय देते हुए उन राजा राजवाहन को प्रतिदिन अपने घर में स्नान-भोजन आदि करवाया।

संस्कृत-व्याख्या–एवं=इत्थम्, मित्रवृत्तान्तं=सख्युः प्रवृत्तम्, निशम्य=श्रुत्वा, अम्लानमानसः=प्रसन्नचित्तः, राजवाहनः=एतदाख्यः, स्वस्य च=स्वकीयस्य च, सोमदत्तस्य च=एतदाख्यस्य च, वृत्तान्तं=उदन्तम्, अस्मै=पुष्पोद्भवाय, निवेद्य=निवेदनं कृत्वा, सोमदत्तं=एतदाख्यम्, महाकालेश्वरा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राधनानन्तरं=शिवपूजनानन्तरम्, भवद्वल्लभां=तव प्रियाम्, सपरिवारां=परिवारसहिताम्, निजकटकं=स्वनिवासम्, प्रापय्य=संगमय्य, आगच्छ=आव्रज, इति=एवम्, नियुज्य=आदिश्य, पुष्पोद्भवेन=एतदाख्येन, सेव्यमानः=आराध्यमानः, भूस्वर्गायमानम्=पृथिव्यां स्वर्गसदृशम्, अवन्तिकापुरं=एतदाख्यं नगरम्, विवेश=प्रविष्टः । तत्र=अवन्तिकापुरे, अयं=एषः, मम=मे, स्वामिकुमारः=प्रभुपुत्रः, इति=एवम्, बन्धुपालादये=बन्धुपालः आदिः यस्य तस्मै, बन्धुजनाय=स्वजनाय, कथयित्वा=भणित्वा, तेन=बन्धुजनेन, राजवाहनाय=एतदाख्याय, बहुविधां=अनेकविधाम्, सपर्यां=सत्कारम्, कारयन्, सकलकलाकुशलः=समस्तविद्यापटुः, महीसुरवरः=द्विजश्रेष्ठः, इति=एवम्, पुरि=नगरे, प्रकटयन्=प्रख्यापयन्, पुष्पोद्भवः=एतदाख्यः, अमुष्य=अस्य, राज्ञः=राजवाहनस्य, मज्जनभोजनादिकम्=स्नानाहारादिकम्, अनुदिनं=प्रतिदिनम्, स्वमन्दिरे=निजभवने, कारयामास=अकारयत् ।

टिप्पणी–मित्रवृत्तान्तम्–मित्रस्य वृत्तान्तम् (तत्पुरुष) । निशम्य–नि+शम्+क्त्वा→ल्यप् । अम्लानमानसः–न म्लानं अम्लानं मानसं यस्य सः (बहुव्रीहि) । 'महा······नन्तरम्' महाकालेश्वरस्य आराधनम्, तस्य अनन्तरम् । सेव्यमानः–सेव्+यक्+शानच् । विवेश–'विश्' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व० । स्वामिकुमारः–स्वामिनः कुमारः (तत्पुरुष) । बहुविधाम्–बहवो विधाः यस्याः सा ताम् । सपर्या–पूजा; 'पूजा नमस्यापचितिः सपर्यार्चार्हणाः' इत्यमरः । कारयन्–कृ+णिच्+शतृ । सकलकलाकुशलः–सकलाश्च ताः कलाः=सकलकलाः, तासु कुशलः (तत्पुरुष) । मज्जनभोजनादिकम्–मज्जनं च भोजनं च इति मज्जनभोजने ते आदिनी यस्य तम् ।

चतुर्थोच्छ्वास समाप्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पञ्चमोच्छ्वासः

राजवाहनचरितम्

वसन्तागमनम्

अथ मीनकेतनसेनानायकेन मलयगिरिमहीरुहनिरन्तरावासिभुजङ्गमभुक्तावशिष्टेनेव सूक्ष्मतरेण धृतहरिचन्दनपरिमलभरेण मन्दगतिना दक्षिणानिलेन वियोगिहृदयस्थं मन्मथानलमुज्ज्वलयन्, सहकारकिसलयमकरन्दास्वादनरक्तकण्ठानां मधुकरकलकण्ठानां काकलीकलकलेन दिक्चक्रं वाचालयन्, मानिनीमानसोत्कलिकामुपनयन्, माकन्दसिन्दुवाररक्ताशोककिंशुकतिलकेषु कलिकामुपपादयन्, मदनमहोत्सवाय रसिकमनांसि समुल्लासयन्, वसन्तसमयः समाजगाम ।

हिन्दी-अनुवाद—इसके अनन्तर कामदेव की सेना के प्रधान वीर, मलयाचल के वृक्षों पर निरन्तर निवास करने वाले सर्पों के पीने से अवशिष्ट जैसी, अतएव मन्द और हरिचन्दन की सुगन्ध के भार से मन्द-मन्द चलने वाला दक्षिण पवन वियोगियों के हृदय में स्थित कामाग्नि को प्रज्वलित करती हुयी (वसन्त ऋतु आ गयी—इसका सर्वत्र सम्बन्ध है ।), आम्रबौर के पराग (मधु) का आस्वादन करने से मधुर स्वर वाले भ्रमरों और कोयलों के सूक्ष्म अस्फुट मधुर ध्वनियों से दिशाओं को मुखरित करती हुयी, मानिनी युवतियों के हृदयस्थ उत्कण्ठा को बढ़ाती हुयी, आम, निर्गुण्डी, रक्ताशोक, पलाश और तिलक में कलियों को उत्पन्न कराती हुयी और रसिकों के हृदय में मदन-महोत्सव मनाने का उल्लास भरती हुयी वसन्त ऋतु आ गयी ।

संस्कृत-व्याख्या-अथ=अनन्तरम्, मीनकेतनसेनानायकेन=मन्मथसेनापतिना, मलयगिरिमहीरुहनिरन्तरावासिभुजङ्गमभुक्तावशिष्टेनेव=मलयाचल-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृक्षसततावासशीलसर्पभक्षितावशेषेणेव, सूक्ष्मतरेण=श्लक्ष्णतरेण, धृतहरिचन्दन-परिमलभरेण=गृहीतकल्पवृक्षसौरभातिशयेन, मन्दगतिना=मन्दगमनेन, दक्षिणानिलेन=मलयपवनेन, वियोगिहृदयस्थं=विरहिचित्तस्थम्, मन्मथानलं=कामाग्निम्, उज्ज्वलयन्=उद्दीपयन्, सहकारकिसलयमकरन्दास्वादनरक्त-कण्ठानाम्=आम्रनवपल्लवपरागभक्षणमधुरस्वरयुक्तकण्ठानाम्, मधुकरकलक-ण्ठानां=भ्रमरकोकिलानाम्, काकलीकलकलेन=सूक्ष्मध्वनिकोलाहलेन, दिक्-चक्रं=दिशां मण्डलम्, वाचालयन्=ध्वनयन्, मानिनीमानसोत्कलिकाम्=मानिनीयुवतीचित्तोत्कण्ठाम्,उपनयन्=जनयन्,माकन्दसिन्दुवाररक्ताशोककिंशुक-तिलकेषु=रसालनिर्गुण्डीरक्ताशोकपलाशतिलकेषु, कलिकां=कोरकाम्, उप-पादयन्=प्रापयन्, मदनमहोत्सवाय=काममहोत्सवाय, रसिकमनांसि=सहृदय-चेतांसि, समुल्लासयन्=सम्यक् प्रकारेण उत्साहयन्, वसन्तसमयः=वसन्तर्तुः, समाजगाम=समाययौ ।

टिप्पणी- मीन......नायकेन–मीनः केतनं यस्य तस्य मीनकेतनस्य सेनायाः नायकः तेन (तत्पुरुष) 'अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः' इत्यमरः, 'मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः' इति चामरः । मलय......शिष्टेन–मलयगिरेः महीरुहेषु निरन्तरावासिभिः भुजङ्गमैः भुक्तावशिष्टेन (तत्पुरुष) । धृत......भरेण–धृतः हरिचन्दनानां परिमलस्य भरः येन तथाभूतेन । दक्षिणानि-लेन–दक्षिणश्चासौ अनिलश्चेति तेन । वियोगिहृदयस्थम्–वियोगिनां हृदये तिष्ठतीति तम् । मन्मथानलम्–मन्मथस्य अनलस्तम् (तत्पुरुष) । सहकार...... कण्ठानाम्–सहकाराणां किसलयस्य मकरन्दस्य च आस्वादनेन रक्तः कण्ठः येषां तेषाम् (बहुव्रीहि) । 'आम्रश्चूतो रसालोऽसौ, सहकारोऽतिसौरभः' इत्यमरः । काकलीकलकलेन–काकल्याः कलकलेन (तत्पुरुष) । काकली–सूक्ष्म अस्फुट मधुर ध्वनि; 'काकली तु कले सूक्ष्मे' इत्यमरः । वाचालयन्–वाचाल+णिच्+शतृ । मानिनीमानसोत्कलिकाम्=मानिनीनां मानसेषु उत्कलिकाम् (तत्पुरुष)। उपनयन्–उप+नी+शतृ । माकन्द......तिलकेषु–माकन्दश्च सिन्दुवारश्च रक्ताशोकश्च किंशुकश्च तिलकश्चेति ते माकन्दसिन्दुवाररक्ताशोककिंशुकतिलकाः तेषु (द्वन्द्व) । कलिका–कली; 'कलिका कोरकः पुमान्' इत्यमरः । मदनमहो-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्सवाय—मदनस्य महोत्सवः तस्मै (तत्पुरुष)। रसिकमनांसि—रसिकानां मनांसि (तत्पुरुष)। रसिकों को ही रस की अनुभूति होती है—'सवासनानां सभ्यानां रसस्यास्वादनं भवेत्। निर्वासनास्तु रङ्गान्तः काष्ठकुड्याश्मसन्निभाः।।' वसन्तसमयः—वसन्तस्य समयः (तत्पुरुष) समाजगाम—'सम्+आङ्+गम्' धातु लिट् लकार प्र० पु० ए० व०। यहाँ यमक तथा अनुप्रास नामक अलङ्कार हैं।

राजवाहनस्यावन्तिसुन्दरीदर्शनम्

तस्मिन्नतिरमणीये कालेऽवन्तिसुन्दरी नाम मानसारनन्दिनी प्रियवयस्यया बालचन्द्रिकया सह नगरोपान्तरम्योद्याने विहारोत्कण्ठया पौरसुन्दरीसमवायसमन्विता कस्यचिच्चूतपोतकस्य छायाशीतले सैकततले गन्धकुसुमहरिद्राक्षतचीनाम्बरादिनानाविधेन परिमलद्रव्यनिकरेण मनोभवमर्चयन्ती रेमे।

हिन्दी-अनुवाद—ऐसे अत्यन्त रमणीय वसन्तकाल में राजा मानसार की कन्या अवन्तिसुन्दरी अपनी प्रिय सखी बालचन्द्रिका के साथ विहार करने की उत्कण्ठा से नगर के समीप एक मनोहर वाटिका में गयी। नगर की सुन्दरी-समूह से समन्वित एक छोटे आम्रवृक्ष के शीतल छाया युक्त बालुकामय प्रदेश में गन्ध (चन्दनादि), पुष्प, हल्दी, अक्षत और सूक्ष्म वस्त्रों आदि अनेक प्रकार के सुगन्धित पदार्थों से कामदेव की पूजा करती हुयी क्रीडा करने लगी।

संस्कृत-व्याख्या—अतिरमणीये=अतिमनोहरे, तस्मिन् काले=वसन्तसमये, अवन्तिसुन्दरी नाम=एतदाख्या, मानसारनन्दिनी=मानसारपुत्री, प्रियवयस्यया=सख्या, बालचन्द्रिकया=एतदाख्यया, सह=साकम्, नगरोपान्तरम्योद्याने=पुरसमीपमनोहरोपवने, विहारोत्कण्ठया=विहारेच्छया, पौरसुन्दरीसमवायसमन्विता=नगररमणीसमूहयुक्ता, कस्यचित्=एकस्य, चूतपोतकस्य=शिशुसहकारवृक्षस्य, छायाशीतले=अनातपशीते, सैकततले बालुकामयप्रदेशे, गन्धकुसुमहरिद्राक्षतचीनाम्बरादिनानाविधेन=चन्दनपुष्पहरिद्रातण्डुलश्लक्ष्णवस्त्रादिनानाप्रकारेण, परिमलद्रव्यनिकरेण=सुगन्धितपदार्थसमूहेन, मनोभवं=कामदेवम्, अर्चयन्ती=पूजयन्ती, रेमे=अक्रीडत्।

टिप्पणी—मानसारनन्दिनी—मानसारस्य नन्दिनी (तत्पुरुष)। प्रियवय-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्यया-प्रिया वयस्या=प्रियवयस्या, तया। नगरोपान्तरम्योद्याने-नगरस्य उपान्ते रम्यं यद् उद्यानम्, तस्मिन्। विहारोत्कण्ठया-विहारस्य या उत्कण्ठा तया। पौर......समन्विता-पौरसुन्दरीणां समवायेन समन्विता (तत्पुरुष)। छायाशीतले-छायया शीतले (तत्पुरुष)। गन्ध......विधेन-गन्धश्च कुसुमं च हरिद्रा च अक्षताश्च चीनाम्बरं चेति तानि आदीनि यस्य नानाविधस्य तेन। परिमलद्रव्यनिकरेण-परिमलं च तत् द्रव्यं चेति परिमलद्रव्यम्, तस्य निकरेण (तत्पुरुष)। अर्चयन्ती-अर्च+णिच्+शतृ+ङीप्। रेमे-रम् धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन। अनुप्रास अलङ्कार है।

तत्र रतिप्रतिकृतिमवन्तिसुन्दरीं द्रष्टुकामः काम इव वसन्तसहायः पुष्पोद्भवसमन्वितो राजवाहनस्तदुपवनं प्रविश्य तत्र तत्र मलयमारुतान्दोलितशाखानिरन्तरसमुद्भिन्नकिसलयकुसुमफलसमुल्लसितेषु रसालतरुषु कोकिलकीरालीमधुकराणामालापान् श्रावं श्रावं किञ्चिद्विकसदिन्दीवर-कल्हारकैरव-राजीव-राजीकेलि-लोक-कलहंस-सारस-कारण्डव-चक्रवाक-चक्रवाल-कलरव-व्याकुल-विमल-शीतल-सलिल-ललितानि सरांसि दर्शं दर्शममन्दलीलया ललनासमीपमवाप।

हिन्दी-अनुवाद---उस समय वसन्त के सहायक कामदेव के समान पुष्पोद्भव के साथ राजवाहन कामदेव की पत्नी रति के समान अनिन्द्य सुन्दरी अवन्ति सुन्दरी को देखने की इच्छा से उस उपवन में आ पहुँचा। वहाँ मलय पवन से हिलायी गयी शाखाओं से निरन्तर विकसित नवीन पल्लव, पुष्प और फलों से सुशोभित आम्रवृक्षों पर कोयल, शुकपंक्ति, और भ्रमरों के मधुर आलापों को पुनः-पुनः सुनकर अर्धविकसित नीलकमल श्वेतकमल, सौगन्धिक एवं कुमुदिनियों की पंखुड़ियों पर क्रीडा में आसक्त (क्रीडा के कारण चञ्चल) राजहंस, सारस, कारण्डव और चक्रवाक समुदाय के अस्पष्ट मधुर शब्दों से व्याकुल तथा विमल शीतल जलों से सुशोभित तालावों को पुनः-पुनः देखकर लीलापूर्वक ललना (अवन्तिसुन्दरी) के समीप पहुँच गया।

संस्कृत-व्याख्या---तत्र=तस्मिन् समये, रतिप्रतिकृतिं=रतिसदृशाम्, अवन्तिसुन्दरीं=एतदाख्यां बालिकाम्, द्रष्टुकामः=अवलोकितुमिच्छुकः, कामः इव=मन्मथसदृशः, वसन्तसहायः=वसन्तद्वितीयः, पुष्पोद्भवसमन्वितः=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुष्पोद्भवयुक्तः, राजवाहनः=एतदाख्यः, तदुपवनं=तदुद्यानम्, प्रविश्य=गत्वा, तत्र तत्र=तेषु तेषु, मलयमारुतान्दोलितशाखानिरन्तरसमुद्भिन्नकिसलय-कुसुमफलसमुल्लसितेषु = मलयपवनकम्पितशाखानवरतसुष्ठुविकसितनवपल्लव-पुष्पफलसंशोभितेषु, रसालतरुषु=आम्रवृक्षेषु, कोकिलकीरालीमधुकराणां=पिकशुकपंक्तिभ्रमराणाम्, आलापान्=अस्फुटमधुरशब्दान्, श्रावं श्रावं=श्रुत्वा श्रुत्वा, किञ्चित्=ईषत्, विकसदिन्दीवर-कह्लार-कैरव-राजीव-राजी-केलि-लोल-कलहंस-सारस-कारण्डव-चक्रवाक-चक्रवाल-कलरव-व्याकुल-विमल-शीतल-सलिल-ललितानि = प्रस्फुटितनीलकमलसौगन्धिकश्वेतकमलसामायकमल-पंक्तिक्रीडाचञ्चलकादम्बसारसमद्गुकोकमण्डलकलरवाकुलस्वच्छशीतलजल-मनोहराणि, सरांसि=सरोवराणि, दर्शं दर्शं=पुनः पुनः दृष्ट्वा, अमन्दली-लया=लीलापूर्वकम्, ललनासमीपं=रमणीसन्निधिम्, अवाप=प्राप ।

टिप्पणी—रतिप्रतिकृतिम्—रतेः प्रतिकृतिः ताम् (तत्पुरुष) । दृष्टुकामः—दृष्टुं कामः दृष्टुकामः । वसन्तसहायः—वसन्तः सहायः यस्य सः (बहुव्रीहि) । पुष्पोद्भवसमन्वितः—पुष्पोद्भवेन समन्वितः । प्रविश्य=प्र+विश्+क्त्वा→ल्यप् । मलय..............समुल्लसितेषु—मलयस्य मारुतेन आन्दोलिताः याः शाखाः तासु निरन्तरं समुद्भिन्नैः किसलयकुसुमफलैः समुल्लसितेषु (तत्पुरुष) 'प्रसूनं कुसुमं समम्' इत्यमरः। रसालतरुषु—रसालस्य तरुः तेषु (तत्पुरुष) 'आम्रश्चूतो रसालोऽसौ' इत्यमरः । कोकिलकीरालीमधुकराणाम्—कोकिलाश्च कीराली च मधुकराश्च तेषाम् । किञ्चिद्विकस...........ललितानि—किञ्चि-द्विकसन्तीषु इन्दीवराणां कह्लाराणां कैरवाणानां राजीवानां राजीषु केलि-लोलाः कलहंसाः सारसाः कारण्डवाः चक्रवाकाः तेषां यत् चक्रवालं तस्य कलरवेण व्याकुलानि विमलानि शीतलानि यानि सलिलानि तैः ललितानि (तत्पुरुष) । "सौगन्धिकं तु कह्लारमित्यमरः, कादम्बः कलहंसः स्यात्" इत्यमरः, 'मद्गुः कारण्डवः प्लवः' इति चामरः । अमन्दलीलया—न मन्दः अमन्दः, अमन्दश्चासौ लीला च तया । ललनासमीपम्—ललनायाः समीपम् (तत्पुरुष) ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बालचन्द्रिकया 'निःशङ्कमित आगम्यताम्' इति हस्तसंज्ञया समाहूतो निज-तेजोजितपुरुहूतो राजवाहनः कृशोदर्या अवन्तिसुन्दर्या अन्तिकं समाजगाम ।

हिन्दी-अनुवाद---बालचन्द्रिका के द्वारा 'निःशङ्क यहाँ चले आइए' इस प्रकार हाथों का इशारा देकर बुलाए गये अपने तेज से इन्द्र को भी जीत लेने वाले राजवाहन उस कृशोदरी आवन्तिसुन्दरी के समीप जा पहुँचा ।

संस्कृत-व्याख्या---बालचन्द्रिकया=एतदाख्यया रमण्या, निःशङ्कं=शङ्का-रहितम्, इतः=इह, आगम्यताम्=आव्रज्यताम्, इति=एवम्, हस्तसंज्ञया=करसंकेतेन, समाहूतः=आहूतः, निजतेजोजितपुरुहूतः=स्वप्रभावपराजित-मघवा, राजवाहनः= एतदाख्यः, कृशोदर्याः=सुन्दर्याः, अवन्तिसुन्दर्याः=एत-दाख्यायाःललनायाः, अन्तिकं=समीपम्, समाजगाम=समाययुः ।

टिप्पणी---हस्तसंज्ञया--हस्तस्य संज्ञा हस्तसंज्ञा तया, (तत्पुरुष) । निज-तेजोजितपुरुहूतः--निजतेजसा जितः पुरुहूतः येन सः (बहुव्रीहि) 'इन्द्रो मरुत्वान् मघवा बिडौजा पाकशासनः । वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः ॥ इत्यमरः पुरुहूत=इन्द्र । कृशोदर्या--कृशम् उदरं यस्याः सा तस्याः ।

अवन्तिसुन्दरीवर्णनम्

या वसन्तसहायेन समुत्सुकतया रतेः केलीशालभञ्जिकाविधित्सया कञ्चन नारीविशेषं विरच्यात्मनः क्रीडाकासारशारदारविन्दसौन्दर्येण पादद्वयम्, उद्यान-वनदीर्घिकामत्तमरालिकागमनरीत्या लीलालसगतिविलासम्, तूणीरलावण्येन जङ्घे, लीलामन्दिरद्वार-कदलीलालित्येन, मनोज्ञमूरुयुगम्, जैत्ररथचातुर्येण घनं जघनम्, किञ्चिद्विकसल्लीलावतंस-कह्लार-कोरक-कोटरानुवृत्या गङ्गावर्तसनाभि नाभिम्, सौधारोहणपरिपाट्या वलित्रयम्, मौर्वीमधुकरपङ्क्तिनीलिमलीलया रोमावलिम्, पूर्णसुवर्णकलशशोभया कुचद्वन्द्वम्, लतामण्डपसौकुमार्येण बाहू जयशङ्खाभिख्यया कण्ठम्, कमनीयकर्णपूरसहकारपल्लवरागेण प्रतिबिम्बीकृत-बिम्बं रदनच्छदम्, बाणायमानपुष्पलावण्येन शुचिस्मितम्, अग्रदूतिकाकल-कण्ठिकाकलालापमाधुर्येण वचनजातम् सकलसैनिकनायकमलयमारुतसौरभ्येण निःश्वासपवनम्, जयध्वजमीनदर्पेण लोचनयुगलम्, चापयष्टिश्रिया भ्रूलते,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथमसुहृदः सुधाधरस्यापनीतकलङ्कया कान्त्या वदनम्, लीलामयूरबर्हभङ्ग्या केशपाशं च विधाय समस्तमकरन्दकस्तूरिकासम्मितेन मलयजरसेन प्रक्षाल्य कर्पूरपरागेण सम्मृज्य निर्मितेव रराज ।

हिन्दी-अनुवाद—वह अवन्तिसुन्दरी इस प्रकार प्रतीत हो रही थी, जसे उत्कण्ठा से कामदेव ने (अपनी पत्नी) रति के अनुरञ्जन के लिए पुतली बनाने की इच्छा से एक स्त्री विशेष की रचना की हो। (कामदेव ने) अपने विहार सरोवर में विकसित होने वाले शरत् कालीन कमल की शोभा से मानों (उस स्त्री के) चरण बनाए थे (अर्थात् उस अवन्तिसुन्दरी के चरण अत्यन्त लाल थे)। उपवन की वावड़ी में भ्रमण करने वाली मदोन्मत्त हंसिनी की चाल के द्वारा ही (इस नारी विशेष की) विलास से अलसायी हुई सुन्दर चाल बनायी थी। अपने तरकस के सौन्दर्य से उसकी दोनों जाघें बनायीं थी। (कामदेव ने) अपने रति मन्दिर के द्वार पर लगी हुई कदली की शोभा से उसके दोनों सुन्दर घुटनें बनाये थे। अपने जैत्ररथ की निर्माण चातुरी से उसके सघन-जघन का निर्माण किया था। अर्धविकसित विलास भषणस्वरूप रक्तकमल की कलियों के मध्य जैसी और गंगा के आवर्त्त (भंवर) के सदृश नाभि का निर्माण किया था। प्रासाद की सीढ़ियों के समान त्रिवली बनायी थी। प्रत्यंचा के समान भौरों की पंक्तियों की नीलिमा की शोभा से रोमावली, जल से भरे हुए स्वर्ण कलश की शोभा से स्तनयुगल, लतामण्डप की कोमलता से भुजाओं, विजय शङ्ख। की शोभा से कण्ठ, सुन्दर कर्णभूषण रूप आम्रकिसलय की लालिमा से प्रतिबिम्बित होने वाले बिम्वाफल के समान ओष्ठ, बाण के समान पुण्य की शोभा से सुन्दर मुसकान, (कामदेव की) अग्रदूतिका (सबसे पहले भेजे जाने वाली) कोयल की मधुर वाणी के माधुर्य से शब्दावली, अपने सभी सैनिकों में प्रधान सेनानायक मलयपवन की सुगन्धि से श्वासोच्छ्वास विजयध्वजस्वरूप मछलियों के अहंकार से आँखें, धनुषयष्टि की शोभा से भ्रूलताओं, श्रेष्ठ मित्र चन्द्रमा की निष्कलंक कान्ति से मुख और लीलामयूर के पंखों के समान उसके केश बनाकर मानों कामदेव ने समस्त (सुगन्धित पदार्थ सदृश) पुष्पों का पराग एवं कस्तूरी से मिश्रित चन्दन रस से धोकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कपूर का पराग छिड़क दिया हो इस प्रकार से सुशोभित हो रही थी ।

संस्कृत-व्याख्या—या=अवन्तिसुन्दरी, वसन्तसहायेन=कामदेवेन, समुत्सुकतया=समुत्कण्ठितया, रतेः=कामपत्न्याः, केलीशालभञ्जिकाविधित्सया=क्रीडाशालभञ्जिकानिर्मातुमिच्छया, कञ्चन=एकम्, नारीविशेषं=स्त्री विशेषम्, विरच्य=निर्माय, आत्मनः=स्वस्य, क्रीडाकासारशारदारविन्दसौन्दर्येण=खेलासरोवरशारदकमलशोभया, पादद्वयं=चरणयुगलम्, उद्यानवनदीर्घिकामत्तमरालिकागमनरीत्या = उपवनवापीहृष्टहंसीगमनप्रकारेण, लीलालसगतिविलासं=लीलामन्थरगमनप्रकारम्, तूणीरलावण्येन=निःसङ्गसौन्दर्येण, जङ्घे=जानू, लीलामन्दिरद्वारकदलीलालित्येन=सुरतभवनद्वाररम्भावृक्षसौन्दर्येण, मनोज्ञं=सुन्दरम्, ऊरुयुगं=सक्थियुगलम्, जैत्ररथचातुर्येण=विजयशीलस्यन्दनकुशलतया, घनं=निबिडम्, जघनं=नितम्बपुरोभागम्, किञ्चिद्विकसल्लीलावतंसकह्लारकोरककोटरानुवृत्या=ईषद्विकसल्लीलाभूषणसौगन्धिककलिकाबिलानुक्रमेण, गंगावर्त्तसनाभिं=भागीरथीभ्रमिसनाभिम्, नाभिम्, सौधारोहणपरिपाट्या=राजसदनसोपानानुवृत्या, वलित्रयं=प्राण्यङ्गजत्रयम्, मौर्वीमधुकरपंक्तिनीलिमलीलया=ज्याभ्रमरपंक्तिनीलत्वविलासेन, रोमावलिं=लोमपंक्तिम्, पूर्णसुवर्णकलशशोभया=परिपूर्णस्वर्णकुम्भसौन्दर्येण, कुचद्वन्द्वं=स्तनयुगलम्, लतामण्डपसौकुमार्येण=वल्लीमण्डपकोमलतया, वाहू=भुजौ, जयशङ्खाभिख्यया=विजयकम्बुशोभया, कण्ठं=ग्रीवाम्, कमनीयकर्णपूरसहकारपल्लवरागेण=सुन्दरकर्णावतंससाम्रकिसलयरागेण, प्रतिबिम्बीकृतबिम्बं=अनुकृतबिम्बफलम्, रदनच्छदं=ओष्ठम्, बाणायमानपुष्पलावण्येन=शरायमाणकुसुमसौन्दर्येण, शुचि=स्वच्छम्, स्मितम्=मन्दहासम्, अग्रदूतिकाकलकण्ठिकाकलालापमाधुर्येण=प्रथमदूतिकाकोकिलामधुरास्फुटध्वनिमाधुर्येण, वचनजातं=शब्दसमूहम्, सकलसैनिकनायकमलयमारुतसौरभ्येण=समस्तसेनाप्रधानमलयपवनसौगन्ध्येन, निःश्वासपवनं=निःश्वासवायुम्, जयध्वजमीनदर्पेण=विजयपताकामत्स्याहंकारेण, लोचनयुगलं=नेत्रयगम्, चापयष्टिश्रिया=चापलताकान्त्या, भ्रूलते=भ्रूवल्लौ, प्रथमसुहृदः=प्रधानमित्रस्य, सुधाकरस्य=चन्द्रमसः, अपनीतकलंकया=अपगत-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाञ्छनया, कान्त्या=श्रिया, वदनं=मुखम्, लीलामयूरबर्हभङ्ग्या=विलास-केकिपिच्छभङ्ग्या, केशपाशं=कुन्तलकलापम्, च=समुच्चये, विधाय=कृत्वा, समस्तमकरन्दकस्तूरिकासम्मितेन=निखिलपरागमृगमदयुक्तेन, मलयजरसेन=चन्दनद्रवेण, प्रक्षाल्य=प्रक्षालनं कृत्वा, कर्पूरपरागेण=घनसार-चूर्णेन, सम्मृज्य=संशोध्य, निर्मितेव=रचितेव, रराज=शुशुभे ।

टिप्पणी--वसन्तसहायेन–कामदेव के द्वारा, वसन्तः सहायः यस्य तेन । केली········विधित्सया–केल्यै या शालभञ्जिका तस्याः विधित्सा तया । विरच्य=वि+रच्+क्त्वा→ल्यप् । क्रीडा·····सौन्दर्येण–क्रीडायाः कासारः, तस्मिन् यानि शारदारविन्दानि तेषां सौन्दर्येण । कासार=सरोवर 'कासारः सरसी सरः' इत्यमरः । सौन्दर्यं=सुन्दर+ष्यञ् । उद्यान········रीत्या–उद्यान-वने या दीर्घिका तस्यां मत्ता या मरालिका तस्याः गमनरीतिः तया । रीतिः=प्रकार । लीला····· · विलासम्–लीलया अलसं गतिविलासम् । तूणीर-लावण्येन–तूणीरयोः लावण्येन (तत्पुरुष) । तूणीर–तरकस; 'तूणोपासङ्गतूणीर-निषङ्गाः' इत्यमरः । लीला········लालित्येन—लीलायाः मन्दिरम्–लीला-मन्दिरम्, तस्य द्वारे ये कदल्यौ तयोः लालित्येन (तत्पुरुष) ललित+ष्यञ् । जैत्ररथचातुर्येण–जैत्रः यः रथः तस्य चातुर्येण (तत्पुरुष) । चातुर्य–चतुर+ष्यञ् । किञ्चिद्वि········वृत्त्या–किञ्चिद्विकसत् यत् लीलावतंसकह्लारं, तस्य यः कोरकः तस्य कोटरम्, तस्य अनुवृत्त्या (तत्पुरुष) । कह्लार–लालकमल । गंगावर्त्तसनाभिः–गंगायाः आवर्त्तः तस्य सनाभिः (तत्पुरुष) । आवर्त्त–भँवर, घुमन्ना । 'आवर्त्तोऽम्भसां भ्रमः' इत्यमरः । सौधारोहणपरिपाट्या–सौधेषु यद् आरोहणम्, तस्या या परिपाटी तया । सौध–राजमहल; 'सौधोऽस्त्री राज-सदने' इत्यमरः । वलित्रयम्–वलीनां त्रयम् । 'वलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम्, इत्यमरः । मौर्वी·· · लीलया–मौर्वी एव मधुकरपङ्क्तिः तस्याः नीलिमा, तस्य लीलया (तत्पुरुष) । मौर्वी–प्रत्यञ्चा; 'मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः' इत्यमरः । पूर्ण····शोभया-पूर्णश्चासौ सुवर्णकलशश्चेति–पूर्णसुवर्णकलशः, तस्य शोभया (तत्पुरुष)। लतामण्डपसौकुमार्येण–लतायाः मण्डपः तस्य सौकुमार्येण (तत्पुरुष) । सौकु-मार्यं–सुकुमार+ष्यञ् । जयशंखाभिख्यया–जयस्य शङ्खः, तस्य अभिख्या, तया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्पुरुष । अभिख्या–शोभा । कमनीय·····रागेण–कमनीयः यः कर्णपूरःस चासौ सहकारपल्लवः, तस्य रागेण तत्पुरुष । बाणायमानपुष्पलावण्येन– बाणा इवाचरत् यत् पुष्पम्, तस्य लावण्येन तत्पुरुष । अग्रदूति––माधुर्येण– अग्रदूतिका या कलकण्ठिका, तस्याः कलालापः, तस्य माधुर्येण (तत्पुरुष)। माधुर्य–मधुर+ष्यञ् । सकल····· सौरभ्येण–सकलाः ये सैनिकाः तेषां नायकः यः मलयमारुतः तस्य सौरभ्येण (तत्पुरुष)। जय······दर्पेण–जयध्वजः एव मीनः, तस्य दर्पेण (तत्पुरुष)। चापयष्टिश्रिया–चापस्य या यष्टिः तस्याः श्रिया (तत्पुरुष)। अपनीतकलङ्कया–अपनीतः कलङ्कः यस्याः सा तया (बहुव्रीहि)। लीला––भङ्ग्या–लीलामयूरस्य बर्हम्, तस्य भङ्ग्या (तत्पुरुष)। समस्त ·····सम्मितेन–समस्ताभिः मकरन्दकस्तूरिकाभिः सम्मितेन (तत्पुरुष)। मलयजरसेन–मलयजस्य रसेन (तत्पुरुष)। कर्पूरपरागेण–कर्पूरस्य परागस्तेन (तत्पुरुष)। सम्मृज्य–सम्+मृज्+क्त्वा→ल्यप् । रराज–राज् धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन। यहाँ अनुप्रास, यमक तथा उत्प्रेक्षा अलङ्कारों की शोभा अवलोकनीय है।

सा मूर्तिमतीव लक्ष्मीर्मालवेशकन्यका स्वेनैवाराध्यमानं सङ्कल्पितवरप्रदानायाविर्भूतं मूर्तिमन्तं मन्मथमिव तमालोक्य मन्दमारुतान्दोलिता लतेव मदनावेशवती चकम्पे। तदनु क्रीडाविश्रम्भान्निवृत्ता लज्जया कानि कान्यपि भावान्तराणि व्यधत्त।

हिन्दी-अनुवाद–शरीरधारिणी लक्ष्मी के समान वह मालवेशकन्या (मानसार की पुत्री) अपने ही द्वारा पूजित तथा अभीष्ट वर प्रदान के लिए आविर्भूत (उपस्थित) शरीरधारी कामदेव के समान राजवाहन को देखकर मन्द पवन से काँपती हुयी लता के समान कामदेव के अधीन होकर काँप उठीं। तत्पश्चात् लज्जा के कारण क्रीडा–व्यापार से विरत होकर नाना प्रकार के भावों को (काम-भावों को) अभिव्यक्त करने लगी।

संस्कृत–व्याख्या––सा=पूर्वोक्ता, मूर्तिमती=देहधारिणी, लक्ष्मीरिव=श्रीरिव, मालवेशकन्यका=मानसारकुमारी, स्वेन=निजेन, एव=हि, आराध्यमानं=संसेव्यमानम्, सङ्कल्पितवरप्रदानाय=अभीप्सितवरदानाय, आवि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूतं=समुपस्थितम्, मूर्तिमन्तं=शरीरिणम्, मन्मथमिव=काममिव, तम्=राजवाहनम्, आलोक्य=दृष्ट्वा, मन्दमारुतान्दोलिता=धीरसमीर-कम्पिता, लतेव=वल्लीव, मदनावेशवती=कामभावयुक्ता, चकम्पे=अकम्पत् । तदनु=तत्पश्चात्, क्रीडाविश्रम्भात्=क्रीडाविश्वासात्, निवृत्ता=परावृत्ता, लज्जया=त्रपया, कानि कान्यपि=बहुविधान्यपि, भावान्तराणि=अनुरागविशेषान्, व्यधत्त=धृतवती ।

टिप्पणी–मूर्तिमती–मूर्ति+मतुप्+ङीप् । 'मूर्तिमतीव लक्ष्मीः' यहाँ 'उत्प्रेक्षा' अलङ्कार है । आराध्यमानम्–आ+राध्+यक्+शानच् । 'मूर्तिमन्तं मन्मथमिव' यहाँ भी उत्प्रेक्षा है । आलोक्य–आ+लोक्+क्त्वा→ल्यप् । मन्दमारुतान्दोलिता–मन्दमारुतेन आन्दोलिता (तत्पुरुष) । 'लतेव' में उपमा है । चकम्पे–'कम्प्' धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन । क्रीडाविश्रम्भात्–क्रीडायां विश्रम्भः तस्मात् (तत्पुरुष) ।

'ललनाजनं सृजता विधात्रा नूनमेषा घुणाक्षरन्यायेन निर्मिता । नो चेदब्जभूरेवंविधो निर्माणनिपुणो यदि स्यात्तर्हि तत्समानलावण्यामन्यां तरुणीं किं न करोति' इति सविस्मयानुरागं विलोकयतस्तस्य समक्षं स्थातुं लज्जिता सती किञ्चित्सखीजनान्तरितगात्रा तन्नयनाभिमुखैः किञ्चिदाकुञ्चितैरञ्चितभ्रूलतैरपाङ्गवीक्षितैरात्मनः कुरङ्गस्यानायमानलावण्यं राजवाहनं विलोकयन्त्यतिष्ठत् सोऽपि तस्यास्तदोत्पादितभावरसानां सामग्र्या लब्धबलस्येव विषमशरस्य शरव्यायमाणमानसो बभूव ।

हिन्दी-अनुवाद–रमणी-समाज की रचना करते हुए ब्रह्मा ने निश्चय ही घुणाक्षरन्याय से इसकी रचना की है । अन्यथा यदि ब्रह्मा निर्माणकला में इस प्रकार कुशल होते तो क्या इसके समान लावण्य वाली दूसरी तरुणी का निर्माण न करते ? इस प्रकार आश्चर्य तथा अनुराग के साथ राजवाहन के देखने पर अवन्तिसुन्दरी लज्जा से उस (राजवाहन) के समक्ष न बैठकर सखियों की कुछ आड़ में अपने शरीर को छिपाती हुयी उनके (राजवाहन के) नेत्रों के समक्ष कुछ टेढ़ी और सुन्दर भौंह वाली तिरछी आँखों से राजवाहन की सुन्दरता को क्षण भर के लिए देखने लगी । उस समय ऐसा प्रतीत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो रहा था कि मानो राजवाहन का सौन्दर्य हरिणीरूप उस अवन्तिसुन्दरी को फँसाने के लिए जाल के सदृश हो। उस समय राजवाहन भी अवन्तिसुन्दरी द्वारा उत्पादित विकार रूपी रस की परिपूर्णता से प्राप्त वल वाले कामदेव के बाणों के लक्ष्यभूत (अधीन) मनवाला हो गया।

संस्कृत-व्याख्या—ललनाजनं = रमणीजनम्, सृजता = सृष्टिं कुर्वता, विधात्रा = चतुराननेन, नूनं = ध्रुवम्, एषा = अवन्तिसुन्दरी, घुणाक्षरन्यायेन = दैवयोगेन, निर्मिता = रचिता। नो चेत् = अन्यथा, अब्जभूः = ब्रह्मा, एवंविधः = इत्थम्, निर्माणनिपुणः = रचनाकुशलः, यदि स्यात्, तर्हि = तदा, तत्समानलावण्यां = तस्याः समानम् अनुरूपं लावण्यं सौन्दर्यं यस्याः सा ताम्, अन्यां = अपराम्, तरुणीं = ललनाम्, किं न करोति = कथं न कुरुते, इति = एवम्, सविस्मयानुरागं = साश्चर्यानुरागम् विलोकयतः = अवलोकयतः, तस्य = राजवाहनस्य, समक्षं = पुरतः, स्थातुं = अवस्थातुम्, लज्जिता = त्रपायुक्ता सती, किञ्चित् = ईषत्, सखीजनान्तरितगात्रा = सखीजनव्यवहितशरीरा, तन्नयनाभिमुखैः = तन्नेत्रसम्मुखैः, किञ्चिदाकुञ्चितैः = ईषत्संक्षिप्तैः, अञ्चितभ्रूलतैः = सुशोभितभ्रूलतैः, अपाङ्गवीक्षतैः = नेत्रप्रान्तभागावलोकनैः कटाक्षैर्वा, आत्मनः = स्वस्य, कुरङ्गस्य = मृगस्य, आनायमानलावण्यं = जालायमानसौन्दर्यम्, राजवाहनं = एतदाख्यम्, विलोकयन्ती = पश्यन्ती, अतिष्ठत् = स्थिता। सोऽपि = राजवाहनोऽपि, तस्याः = अवन्तिसुन्दर्याः, तदोत्पादितभावरसानां = तस्मिन्काले प्रकटितभावरसानाम्, सामग्र्या = पूर्णतया, लब्धबलस्येव = प्राप्तसामर्थ्यस्येव, विषमशरस्य = कामदेवस्य, शरव्यायमाणमानसः = शरव्यं लक्ष्यं तदिवाचरतीति तत्, मानसं चेतः यस्य स तादृशः, बभूव = अभूत्।

टिप्पणी–ललनाजनम्–स्त्रीसमाज को; 'प्रतीपदर्शिनी वामा ललना च नितम्बिनी'––अमरकोष। सृजता--सृज् + तृच्, तृ० ए० व०। घुणाक्षरन्यायेन–घुणाक्षर न्याय से। घुणाक्षरन्याय–लकड़ी में लगा हुआ घुन लकड़ी के ऊपरी भाग को उत्कीर्ण सा करता रहता है। कभी-कभी वह उत्कीर्णन अक्षर के रूप में वदल जाता है। वस्तुतः घुन अक्षर लिखता नहीं है, परन्तु संयोगवश अक्षर बन जाता है। इसे ही 'घुणाक्षरन्याय' कहते हैं। संस्कृत में दैववश हुयी घटना को 'घुणाक्षरन्याय' कहते हैं। अब्जभूः–अब्जात् भवतीति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब्ज=कमल । एवंविधः--एवं विधा (प्रकारः) यस्य सः (बहुव्रीहि) । 'विधा विधौ प्रकारे च'-अमरकोष । निर्माणनिपुणः–निर्माणे निपुणः (तत्पुरुष) । तत्समानलावण्याम्–तस्याः समानं लावण्यं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि) । लावण्यम्–लवण+ष्यञ् । लावण्य––'मुक्ताफलेषु, छायायास्तरलत्वमिवान्तरा । प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते ।। सविस्मयानुरागं–विस्मयेन सहितः= सविस्मयः, सविस्मयः अनुरागः यस्मिन् तद् यथा स्यात् तथा । सखीजनान्तरित-गात्रा–सखीजनैः अन्तरितं गात्रं यस्याः सा (बहुव्रीहि) । तन्नयनाभिमुखैः–तस्य नयनयोः अभिमुखैः (तत्पुरुष) । अञ्चितभ्रूलतैः–अञ्चिते भ्रूलते यैस्तैः (बहुव्रीहि) । अपाङ्गवीक्षितैः–अपाङ्गाभ्यां वीक्षितैः (तत्पुरुष) । 'अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ'––अमरकोष । आनायमानलावण्यम्––आनायमानं लावण्यं यस्य तम् (बहुव्रीहि) । आनायमान–आनाय+क्यच्+शानच् । विलोकयन्ती–वि+लोक्+णिच्+शतृ+ङीप् । उत्पादितभावरसानाम्–उत्पादिताः ये भावरसाः, तेषाम् । लब्धबलस्य–लब्धं बलं येन तस्य (बहुव्रीहि) । विषमशरस्य–कामदेव के । शरव्यायमाणमानसः–शरव्यायमाणं मानसं यस्य सः (बहुव्रीहि) । शरव्यायमाण––शरव्य+क्यच्+ शानच् । 'किञ्चित्सखी········ ···'अवन्तिसुन्दरी लज्जा के कारण राजवाहन के समक्ष न बैठकर सखियों की कुछ आड़ में बैठती है । इससे उसकी स्त्रीजन-सुलभ लज्जालुता प्रकट होती है । लज्जा का लक्षण–'धाष्ट्र्याभावो व्रीडा वदनानमनादिकृद्दुराचारात्' । यहाँ 'दुराचारात्' की व्याख्या इस प्रकार है––'दुराचारात् स्वस्य सहसा कुचनितम्बप्रकाशादिदुष्टाचाराद्धेतोः परस्या वा व्याजदर्शनादि दुराचारात्' । कुरङ्गस्यायमान·····अतिष्ठत्' यहाँ उत्प्रेक्षा तथा रूपक है । संयोग श्रृङ्गार की व्यञ्जना है । संयोग श्रृङ्गार का लक्षण–'दर्शनस्पर्शनादीनि निषेवेते विलासिनौ । यत्रानुरक्तावन्योन्यं संभोगोऽयमुदाहृतः' ।। कवि की ललित भाषा भाव के अनुकूल है ।

सा मनसीत्थमचिन्तयत्––'अनन्यसाधारणसौन्दर्येणानेन कस्यां पुरि भाग्यवतीनां तरुणीनां लोचनोत्सवः क्रियते । पुत्ररत्नेनामुना पुरन्ध्रीणां पुत्रवतीनां सीमन्तिनीनां का नाम सीमन्तमौक्तिकीक्रियते । कास्य देवी । किमत्रागमनकारणमस्य मन्मथो मामपहसितनिजलावण्यमेनं विलोकयन्तीमसूययेवातिमात्रं मथ्न-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्निजनाम सान्वयं करोति । किं करोमि । कथमयं ज्ञातव्यः' इति ।

हिन्दी-अनुवाद–वह (अवन्तिसुन्दरी) मन में इस प्रकार सोचने लगी–असाधारण सौन्दर्य से युक्त इन (राजवाहन) के द्वारा किस नगरी में भाग्यवती तरुणियों के नेत्रों को आनन्दित किया जाता होगा अर्थात् किस नगरी की रमणियाँ इनके सुन्दर दर्शन के द्वारा आनन्द लाभ करती होंगी ? इस पुत्ररत्न के द्वारा कौन (स्त्री) पतिव्रता पुत्रवती स्त्रियों में शिरोमुकुट बनायी जा रही है अर्थात् इसकी जननी कौन है ? इनकी पत्नी कौन होगी ? इनके यहाँ आने का क्या कारण है ? (इनके सौन्दर्य से) तिरस्कृत सौन्दर्य वाला कामदेव इनको देखती हुयी मुझको मानो ईर्ष्या के कारण अत्यन्त मथता हुआ (पीड़ित करता हुआ) अपना नाम सार्थक कर रहा है । क्या करूँ ? किस प्रकार से इनका पता लगाऊँ ?

संस्कृत-व्याख्या–सा=अवन्तिसुन्दरी, मनसि=हृदये, इत्थं=अनेन प्रकारेण, अचिन्तयत्=स्मरणमकरोत्, अनेन=एतेन, अनन्यसाधारणसौन्दर्येण=अद्वितीयलावण्येन, कस्यां पुरि=कस्यां नगर्याम्, भाग्यवतीनां=सौभाग्यवतीनाम्, तरुणीनां=ललनानाम्, लोचनोत्सवः=नेत्रयोरानन्दः, क्रियते । अयं कुत्र निवसतीति भावः । अमुना=एतेन, पुत्ररत्नेन=आत्मजरत्नेन, पुरन्ध्रीणां=सुचरित्राणाम्, पुत्रवतीनां सीमन्तिनीनां=पुत्रवतीनां वधूनाम्, का नाम=का नारी नाम, सीमन्तमौक्तिकीक्रियते=केशवेशमौक्तिकीक्रियते । अस्य=एतस्य, देवी=प्रिया, का=का अस्ति ? अस्य=एतस्य, अत्र=उद्याने, आगमनकारणं=आगमनप्रयोजनं किम् ?, मन्मथः=कामः, अपहसितनिजलावण्यं=उपहासविषयीकृतस्वसौन्दर्यम्, एनं = राजवाहनम्, विलोकयन्तीं=अवलोकयन्तीम्, माम्=अवन्तिसुन्दरीम्, असूयया=अक्षान्त्या, इव, अतिमात्रं=भृशम्, मथ्नन्=पीडयन्, निजनाम=स्वकीयाभिधानम्, सान्वयं=सार्थकम्, करोति किं करोमि ? कथं=केन प्रकारेण, अयं=एषः, ज्ञातव्यः=ज्ञातुं योग्यः ।

टिप्पणी-अचिन्तयत्–'चिति स्मृत्याम्' धातु लङ् लकार प्र० पु० ए० व० । अनन्यसाधारणसौन्दर्येण–न अन्यम् अनन्यम्, अनन्यं च तत् साधारणं च अनन्यसाधारणं सौन्दर्यं यस्य तेन (बहुव्रीहि) । पुत्ररत्नेन–पुत्ररत्न । जातौ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाती यदुत्कृष्टं तद्रत्नमभिधीयते'। पुरन्ध्रीणाम्–पतिव्रता स्त्री को 'पुरन्ध्री सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता'–अमरकोष। सीमन्तिनीनां–सीमन्तिनी 'वधू' को कहते हैं। 'स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः'–अमरकोष। अपहसितनिजलावण्यम्–अपहसितं निजलावण्यं येन तम् (बहुव्रीहि)। विलोकयन्ती–वि+लोक्+णिच्+शतृ+ङीप्। असूयया–गुणों में दोषाविष्करण को असूया कहते हैं। 'असूया गुणेषु दोषाविष्करणम्। सान्वयं–सार्थक।

ततो बालचन्द्रिका तयोरन्तरङ्गवृत्तिं भावविवेकैर्ज्ञात्वा कान्तासमाजसन्निधौ राजनन्दनोदन्तस्य सम्यगाख्यानमनुचितमिति लोकसाधारणैर्वाक्यैरभाषत भर्तृदारिके, 'अयं सकलकलाप्रवीणो देवतासान्निध्यकरण आहवनिपुणो भूसुरकुमारो मणिमन्त्रौषधिज्ञः परिचर्यार्हो भवत्या पूज्यताम् इति।

हिन्दी-अनुवाद—तत्पश्चात् बालचन्द्रिका ने मनोविकारों के विज्ञान से उन दोनों की मनोवृत्ति को समझकर, स्त्रीसमाज के समीप में राजकुमार की बात को प्रकाशित करना अनुचित है, ऐसा (सोचकर) लौकिक वाक्यों (साधारण ढंग) से कहा–'भर्तृदारिके, ये सभी कलाओं में कुशल, देवताओं को प्रत्यक्ष करने में समर्थ, युद्ध में कुशल, मणि, मन्त्र और ओषधियों के विशेषज्ञ, पूजा के योग्य ब्राह्मण-कुमार हैं। आप इनका सत्कार करें।

संस्कृत-व्याख्या–ततः=तदनन्तरम्, बालचन्द्रिका=एतदाख्या, भावविवेकैः=मनोविकारविज्ञानैः, तयोः=अवन्तिसुन्दरीराजवाहनयोः, अन्तरङ्गवृत्तिम्=मनोवृत्तिम्, ज्ञात्वा=विज्ञाय, कान्तासमाजसन्निधौ=ललनासमुदायसमीपे, राजनन्दनोदन्तस्य=राजवाहनवृत्तान्तस्य, सम्यक्=साधु, आख्यानम्=कथनम्, अनुचितम्=अयोग्यम्, इति=एवम्, लोकसाधारणैः=लौकिकैः, वाक्यैः=वचनैः, सकलकलाप्रवीणः=समस्तकलाकुशलः, देवतासान्निध्यकरणः=देवानां साक्षात्कारे समर्थः, आहवनिपुणः=युद्धकुशलः, मणिमन्त्रौषधिज्ञः=मणिमन्त्रौषधिज्ञाता, परिचर्यार्हः=पूजायोग्यः, भूसुरकुमारः=ब्राह्मणनन्दनः, भवत्या=त्वया, पूज्यताम्=अर्च्यताम्।

टिप्पणी—भावविवेकैः–भावानां विवेकैः (तत्पुरुष)। ज्ञात्वा–ज्ञा+क्त्वा। कान्तासमाजसन्निधौ–कान्तानां समाजस्य सन्निधौ (तत्पुरुष)। राज-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नन्दनोदन्तस्य–राजनन्दस्य उदन्तः, तस्य (तत्पुरुष) । 'वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यात्' अमरकोष । आख्यानम्––आ+ख्या+ल्युट् । सकलकलाप्रवीणः–सकलासु कलासु प्रवीणः (तत्पुरुष) । देवतासान्निध्यकरणः–देवताओं के साक्षात्कार करने में समर्थ । आहवनिपुणः–आहवे निपुणः (तत्पुरुष) । आहव–युद्ध । मणिमन्त्रौषधिज्ञः–मणिश्च मन्त्रश्च ओषधिश्च, ताः जानातीति तथोक्तः । यहाँ अनुप्रास अलङ्कार है । भाषा मधुर तथा सरल है ।

तदाकर्ण्य निजमनोरथमनोरथमनुवदन्त्या बालचन्द्रिकया सन्तुष्टान्तरङ्गा तरङ्गावली मन्दानिलेनेव सङ्कल्पजेनाकुलीकृता राजकन्या जितमारं कुमारं समुचितासनासीनं विधाय सखीहस्तेन शस्तेन गन्धकुसुमाक्षतघनसारताम्बूलादिनाजातिवस्तुनिचयेन पूजां तस्मै कारयामास ।

हिन्दी-अनुवाद––बालचन्द्रिका के कथन को सुनकर अपने मनोरथ के अनुरूप बोलने वाली बालचन्द्रिका के साथ प्रसन्न चित्त होकर कामपीडिता राजकन्या (अवन्तिसुन्दरी) ने मन्द-पवन से थप-थपायी गयी तरङ्गमाला की तरह, कामदेव को जीतने वाले कुमार को समुचित आसन पर बैठाकर सखियों के हाथ से जुटायी गयी चन्दन, पुष्प, अक्षत, कपूर, ताम्बूल (पान) आदि नाना प्रकार की प्रशस्त वस्तुओं से उसकी पूजा की ।

संस्कृत-व्याख्या––तदाकर्ण्य=तच्छ्रुत्वा, निजमनोरथं=स्वाभिलाषम्, अनुवदन्त्या=कथयन्त्या, बालचन्द्रिकया=एतदाख्यया, सन्तुष्टान्तरङ्गा=प्रसन्नचित्ता, तरङ्गावली=तरङ्गमाला, मन्दानिलेन=मन्दपवनेन, इव, सङ्कल्पजेन=कामेन, आकुलीकृता=व्याकुलीकृता, राजकन्या=अवन्तिसुन्दरी, जितमारम्=पराजितकामदेवम्, कुमारं=राजवाहनम्, समुचितासनासीनम्=योग्यपीठोपविष्टम्, विधाय=कृत्वा, सखीहस्तेन=सखीकरेण, शस्तेन प्रशस्तेन, गन्ध कुसुमाक्षतजनसारताम्बूलादिनाना जातिवस्तुनिचयेन=चन्दनप्रसूनाक्षतकर्पूरताम्बूलादिनानाविधवस्तुसमूहेन, तस्मै=राजवाहनाय, पूजां=सपर्याम्, कारयामास ।

टिप्पणी–अनुवदन्त्या–अनु+वद्+शतृ+ङीप्; तृ० ए० व० । सन्तुष्टान्तरङ्गा–सन्तुष्टम् अन्तरङ्गं यस्याः सा (बहुव्रीहि) । सङ्कल्पजेन–सकल्प से उत्पन्न होने वाले अर्थात् कामदेव से । आकुलीकृता–आकुल+च्वि+कृ+

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्त+टाप् । जितमारं–जितः मारः येन तम् (वहुब्रीह) । 'जितमारं कुमारम्' में यमक है । समुचितासनासीनम्–समुचिते आसने आसीनम् (तत्पुरुष) । गन्धकुसुमाक्षतघनसारताम्बूलादिनानाजातिवस्तुनिचयेन–गन्धश्च कुसुमञ्च अक्षतञ्च घनसारश्च ताम्बूलञ्येति आदीनि येषां नानाजातिवस्तुनिचयानां तेन । 'प्रसूनं कुसुमं समम्–'अमरकोष । 'मन्दानिलेनेव' में उपमा अलङ्कार है ।

राजवाहनोऽप्येवमचिन्तयत्–'नूनमेषा पूर्वजन्मनि मे जाया यज्ञवती । नो चेदेतस्यामेवंविधोऽनुरागो मन्मनसि न जायेत । शापावसानसमये तपोनिधिदत्तं जातिस्मरत्वमावयोः समानमेव । तथापि कालजनितविशेषसूचकवाक्यैरस्या ज्ञानमुत्पादयिष्यामि' इति ।

हिन्दी-अनुवाद––राजवाहन भी इस प्रकार सोचने लगा–यह (राजकुमारी) निश्चय ही पूर्व जन्म में मेरी यज्ञवती नामक पत्नी थी । अन्यथा इसके प्रति मेरे मन में ऐसा अनुराग उत्पन्न नहीं होता । शाप की समाप्ति के समय तपोनिधि (मुनि) के द्वारा प्रदत्त (कहा गया) पूर्वजन्म का स्मरण हम दोनों में समान ही है अर्थात् शाप की समाप्ति पर मुनि का आशीर्वाद था कि 'हम लोगों को पहले जन्म का वृत्तान्त स्मरण रहेगा' वह हम दोनों में समान ही प्रतीत हो रहा है । फिर भी अत्यधिक समय के व्यतीत हो जाने के कारण जो विशेषता उत्पन्न हो गयी है उसको याद कराने वाले वाक्यों के द्वारा इसे स्मरण दिलाऊँगा ।

संस्कृत-व्याख्या––राजवाहनः=एतदाख्यः, अपि=च, एवम्=इत्थम्, अचिन्तयत्=चिन्तयामास, नूनम्=निश्चयम्, एषा=इयम्, पूर्वजन्मनि=जन्मान्तरे, मे=मम, जाया=भार्या, यज्ञवती=एतदाख्या । नो चेत्=अन्यथा, एतस्याम्=अस्याम्, एवंविधः=एवंप्रकारः, अनुरागः=स्नेहातिशयः, मम=मे, मनसि=चेतसि, न जायेत=न उत्पद्येत । शापावसानसमये=शापसमाप्तिकाले, तपोनिधिदत्तम्=तापसार्पितम्, जातिस्मरत्वम्=पूर्वजन्मस्मरणम्, आवयोः=उभयोः, समानमेव=तुल्यमेव । तथापि=एवं सत्यपि, कालजनितविशेषसूचकवाक्यैः=दीर्घकालजनितविशेषप्रकाशकवचनैः, अस्याः=एतस्याः, ज्ञानम्=स्मरणम्, उत्पादयिष्यमि=जनयिष्यामि इति ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी——नूनम्–निश्चय; 'नूनं तर्केऽर्थनिश्चये' इत्यमरः। जाया–पत्नी। शापावसानसमये–शापावसानस्य समये (तत्पुरुष)। तपोनिधिदत्तम्–तपोनिधिना दत्तम् (तत्पुरुष)। कालजनितविशेषसूचकवाक्यैः–कालेन जनितः यः विशेषः तस्य सूचकानि यानि वाक्यानि तैः। ज्ञानमुत्पादयिष्यामि=स्मरण दिलाऊँगा।

राजवाहनस्य पूर्वजन्मवृत्तान्तश्रावणम्

तस्मिन्नेव समये कोऽपि मनोरमो राजहंसः केलीविधित्सया तदुपकण्ठमगमत्। समुत्सुकया राजकन्यया मरालग्रहणे नियुक्तां बालचन्द्रिकामवलोक्य समुचितो वाक्यावसर इति सम्भाषणनिपुणो राजवाहनः सलीलमलपत् 'सखि, पुरा शाम्बो नाम कश्चिन्महीवल्लभो मनोवल्लभया सह विहारवाञ्छया कमलाकरमवाप्य तत्र कोकनदकदम्बसमीपे निद्राधीनमानसं राजहंसं शनैर्गृहीत्वा बिसगुणेन तस्य चरणयुगलं निगडयित्वा कान्तामुखं सानुरागं विलोकयन्–मन्दस्मितविकसितकपोलमण्डलस्तामभाषत–'इन्दुमुखि ! मया बद्धो मरालः शान्तो मुनिवदास्ते। स्वेच्छयानेन गम्यताम्' इति।'

हिन्दी-अनुवाद–उसी समय एक मनोहर राजहंस क्रीड़ा करने की इच्छा से उस (अवन्तिसुन्दरी) के समीप आ गया। (हंस के लिए) उत्सुक राजकन्या के द्वारा हंस के पकड़ने में नियक्त (लगायी गयी) बालचन्द्रिका को देखकर यह बातचीत का उचित अवसर है, ऐसा विचारकर सम्भाषण में निपुण राजवाहन ने प्रेम पूर्वक बोलना प्रारम्भ किया–'सखि, प्राचीन समय में शाम्ब नामक एक नृपति अपनी प्रियतमा के साथ विहार की इच्छा से एक सरोवर के पास गया। वहाँ रक्त कमलसमूह के समीप निद्रा के अधीन चित्त वाले राजहंस को धीरे से पकड़कर और मृणालतन्तु से उसके दोनों पैरों को बाँधकर प्रेमपूर्वक अपनी प्रियतमा के मुख को देखते हुए मन्द–मुस्कराहट से प्रफुल्लित कपोल वाला राजा (शाम्ब) उससे बोला–चन्द्र वदने, मेरे द्वारा बाँधा गया राजहंस मुनि की तरह शान्त बैठा है। (अब मैं इसे छोड़ता हूँ) यह स्वेच्छापूर्वक विचरण करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत-व्याख्या- तस्मिन्नेव समये=तस्मिन्नेव काले, कोऽपि=कश्चिदपि, मनोरमः=सुन्दरः, राजहंसः, केलीविधित्सया=क्रीडाकर्तुमिच्छया, तदुपकाष्ठम्=तस्याः समीपम्, अगमत्=अगच्छत् । समुत्सुकया=समुत्कण्ठितया, राजकन्यया=अवन्तिसुन्दर्या, मरालग्रहणे=राजहंसग्रहणे, नियुक्ताम्=नियोजिताम्, वालचन्द्रिकाम्=एतदाख्याम्, अवलोक्य=विलोक्य, समुचितः=सुयोग्यः, वाक्यावसरः=वार्तांकालः, इति=एवम्, सम्भाषणनिपुणः=वार्तालापकुशलः, राजवाहनः=एतदाख्यः, सलीलम्=लीलया सहितम्, अलपत्=अभाषत, सखि=अवन्तिसुन्दरि, पुरा=प्राचीनसमये, शाम्बो नाम=शाम्बाख्यः, कश्चित्=एकः, महीवल्लभः=भूपतिः, मनोवल्लभया=प्रियतमया, सह=साकम्, विहारवाञ्छया=विहारेच्छया, कमलाकरम्=सरोवरम्, अवाप्य=गत्वा, तत्र=सरोवरे, कोकनदकदम्बसमीपे=रक्तकमलसमूहान्तिके, निद्राधीनमानसम्=निद्रायत्तचित्तम्, राजहंसम्=मरालम्, शनैः=मन्दम्, गृहीत्वा=आदाय, विसगुणेन=नलिनसूत्रेण, तस्य=राजहंसस्य, चरणयुगलम्=पादद्वयम्, निगडयित्वा=वद्ध्वा, कान्तामुखम्=दयिताननम्, सानुरागम्=अनुरागसहितम्, विलोकयन्=अवलोकयन्, मन्दस्मितविकसितैककपोलमण्डलः=मन्दस्मितप्रफुल्लकपोलप्रान्तभागः, ताम्=स्वदयिताम्, अभाषत=अवदत्, इन्दुमुखि=चन्द्रमुखि, मया=शाम्वेन, बद्धः=निगडितः, मरालः=राजहंसः, मुनिवत्=मुनितुल्यः, शान्तः=स्थिरः, आस्ते=वर्तते । अनेन=एतेन, स्वेच्छया=यथेच्छम्, गम्यताम् इति ।

टिप्पणी- केलीविधित्सया-केलीनां विधित्सा, तया (तत्पुरुष) । तदुपकण्ठम्-तस्याः उपकण्ठम् (तत्पुरुष) । 'उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा' इत्यमरः । वाक्यावसरः-वाक्यस्य अवसरः (तत्पुरुष) । सम्भाषणनिपुणः-सम्भाषणे निपुणः (तत्पुरुष) । सलीलम्-शृङ्गार-सम्बन्धी चेष्टाओं के सहित । मनोवल्लभया-मनसः वल्लभा तया (तत्पुरुष) । कमलाकारम्-कमलस्य आकारम् (तत्पुरुष)=सरोवर । अवाप्य-अव+अप्+क्त्वा →ल्यप् । कोकनदकम्वसमीपे-कोकनदानां कदम्बस्य समीपे (तत्पुरुष) । कोकनद-रक्तकमल । निद्राधीनमानसम्-निद्रायाः अधीनं मानसं यस्य सः (बहुव्रीहि) । मन्दस्मित-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विकसितैककपोलमण्डलः–मन्दस्मितेन विकसितम् एकं कपोलमण्डललं यस्य स तादृशः (बहुव्रीहि)। यहाँ अनुप्रास का सौन्दर्य दर्शनीय है।

सोऽपि राजहंसः शाम्बमशपत्–'महीपाल, यदस्मिन्नम्बुजखण्डेऽनुष्ठानपरायणतया परमानन्देन तिष्ठन्तं नैष्ठिकं मामकारणं राज्यगर्वेणावमानितवानसि। तदेतत्पाप्मना रमणीविरहसन्तापमनुभव' इति।

हिन्दी–अनुवाद---उस राजहंस ने शाम्ब को शाप दिया कि राजन्! इस कमल-वन में अनुष्ठान में संलग्न परमानन्द से स्थित मुझ ब्रह्मनिष्ठ (मुनि) का राज्य के मद से तुमने अकारण ही अपमान किया है, इसलिए इस पाप के कारण तुम भी रमणीवियोग जन्य सन्ताप को भोगो।

संस्कृत–व्याख्या---सोऽपि राजहंसः=राजहंसोऽपि, शाम्बम्=एतदाख्यं नृपम्, अशपत्=शशाप। महीपाल=नृप, यत्=यस्मात्, अस्मिन्=एतस्मिन्, अम्बुजखण्डे=कमलवने, अनुष्ठानपरायणतया=अनुष्ठानासक्ततया, परमानन्देन=ब्रह्मानन्देन, तिष्ठन्तम्=वर्तमानम्, नैष्ठिकम्=नियमवन्तम्, माम्=मुनिम्, अकारणम्=अनिमित्तम्, राज्यगर्वेण=राज्यदर्पेण, अवमानितवानसि=तिरस्कृतवानसि, तत्=तस्मात्, एतत्पाप्मना=एतत्पापेन, रमणीविरहसान्तपम्=ललनावियोगदुःखम्, अनुभव=अनुभवं कुरु, इति।

टिप्पणी--अशपत्–शप्+लङ्; प्र० पु० ए० व०। अनुष्ठानपरायणतया–अनुष्ठाने परायणः तस्य भावः, तया। नैष्ठिकम्–निष्ठा+ठक्। 'निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः' इत्यमरः परमानन्देन–परमश्चासौ आनन्दः तेन (कर्मधारय)। पाप्मना=पाप के द्वारा। रमणीविरहसन्तापम्–रमण्याः वियोगेन यः सन्तापः, तम्।

विषण्णवदनः शाम्बो जीवितेश्वरीविरहमसहिष्णुर्भूमौ दण्डवत्प्रणम्य सविनयमभाषत–'महाभाग यदज्ञानेनाकरवं तत्क्षमस्व' इति। स तापसः करुणाकृष्टचेतास्तमवदत्–'राजन् इह जन्मनि भवतः शापफलाभावो भवतु। मद्वचनस्यामोघतया भाविनि जनने शरीरान्तरं गतया अस्याः सरसिजाक्ष्या रसेन रमणो भूत्वा मुहूर्तद्वयं मच्चरणयुगलबन्धकारितया मासद्वयं शृङ्खलानिगडितचरणो रमणीवियोगविषादमनुभूय पश्चादनेकालं वल्लभया सह राज्यसुखं लभस्व' इति। तदनु जातिस्मरत्वमपि तयोरन्वगृह्णात्। 'तस्मान्मरालबन्धनं न करणीयं त्वया' इति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी–अनुवाद—प्राणाधार प्रिया के वियोग को असह्य समझते हुए खिन्न मुख वाले शाम्ब ने भूमि पर दण्डवत् प्रणाम करके नम्रतापूर्वक कहा–'हे महाभाग ! मैंने जो अज्ञान से (अपराध) किया है उसे आप क्षमा करें।' दया से आकृष्ट चित्त वाले उस तपस्वी ने उस (राजा) से कहा—हे राजन् ! इस जन्म में आपका यह शाप अपना फल नहीं दिखायेगा। परन्तु मेरे वचन के अमोघ होने के कारण अगले जन्म में इस कमलनयनी के शरीरान्तर (अन्य शरीर) को प्राप्त कर लेने पर (इसके) प्रेम से स्वामी वनकर, दो मुहूर्त्त तक मेरे पैरों को बाँधने के कारण दो महीने तक बेड़ी से आबद्ध चरणों वाले होकर प्रियतमा के विरह–जन्य दुःख का अनुभव करके, बाद में बहुत समय तक प्रियतमा के साथ राज्य के सुख को प्राप्त करोगे। तत्पश्चात् उन दोनों को जातिस्मरत्व (पूर्व जन्म के वृत्तान्त की याद) का भी वरदान दिया। इसलिए आप इस राजहंस को न बाँधे।

संस्कृत–व्याख्या—विषण्णवदनः=दुःखिताननः, शाम्बः=एतदाख्यः, जीवितेश्वरीविरहम्=प्राणप्रियावियोगम्, असहिष्णुः=सोढुमसमर्थः, सविनयम्=विनयसहितम् अभाषत=अवदत्, महाभाग=महर्षे, अज्ञानेन=अबोधेन, यत्=अनुचितम्, अकरवम्=करवम्=कृतवान्, तत्=कर्म, क्षमस्व=क्षमां कुरु, इति स तापसः=तपस्वी, करुणाकृष्टचेताः=दयाविष्टचित्तः, तम्=शाम्बम्, अवदत्=अवादीत्, राजन्=नृप, इह जन्मनि=अस्मिन् जनने, भवतः=तव, शापफलाभावः=मदुक्तशापफलस्य अभावः, भवतु। मद्वचनस्य=मद्वाक्यस्य, अमोघतया=सफलतया, भाविनि=भविष्यति, जनने=जन्मनि, शरीरान्तरम्=देहान्तरम्, गतायाः=प्राप्तायाः, अस्याः=एतस्याः, सरसिजाक्ष्याः=नलिनलोचनायाः, रसेन=प्रेम्णा, रमणः=वल्लभः, भूत्वा, मुहूर्तद्वयम्=मुहूर्तद्वयमात्रम्, मच्चरणयुगलवन्धकारितया=मत्पादद्वयवन्धकारितया, मासद्वयम्=मासद्वयपर्यन्तम्, शृङ्खलानिगडितचरणः=शृङ्खलाबद्धपादः, रमणीवियोगविषादम्=ललनाविरहदुःखम्, अनुभूय=अनुभवं कृत्वा, पश्चात्=अनन्तरम्, अनेककालम्=बहुकालं यावत्, वल्लभया सह=प्रियतमया सह, राज्यसुखम्=राज्यभोगम्, लभस्व=प्राप्नुहि, इति। तदनु=तत्पश्चात्, तयोः=शाम्बयज्ञवत्योः, जातिस्मरत्वमपि=पूर्वजन्मवृत्तान्तस्मरतामपि अन्व-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गृह्णात्=अनुज्ञातवान् । तस्मात्=तस्मात्कारणात्, मरालबन्धनम्=राजहंसबन्धनम्, त्वया=भवत्या, न करणीयम्=नहि कर्तव्यम्, इति ।

टिप्पणी–विषण्णवदनः–विषण्णं वदनं यस्य सः (बहुव्रीहि) । विषण्ण–वि+सद्+क्त । जीवितेश्वरीविरहम्–जीवितेश्वर्याः विरहम् (तत्पुरुष) । प्रणम्य–प्र+नम्+क्त्वा→ल्यप् । करुणाकृष्टचेताः–करुणया आकृष्टं चेतः यस्य सः (बहुव्रीहि) । शरीरान्तरम्–अन्यत् शरीरम् । रसेन=अनुराग के द्वारा । शृङ्खलानिगडितचरणः–शृङ्खलया निगडितौ चरणौ यस्य सः(बहुव्रीहि) । मरालबन्जनम्–मरालस्य बन्जनम् (तत्पुरुष) । मराल=राजहंस । मधुर वर्णों के द्वारा सुन्दर अनुप्रास ।

सापि भर्तृदारिका तद्वचनाकर्णनाभिज्ञातस्वपुरातनजननवृत्तान्ता नूनमयं मत्प्राणवल्लभः' इति मनसि जानती रागपल्लवितमानसा समन्दहासमवोचत् सौम्य, पुरा शाम्बो यज्ञवतीसन्देशपरिपालनाय तथाविधं हंसबन्धनमकार्षीत् । तथा हि लोके पण्डिता अपि दाक्षिण्येनाकार्यं कुर्वन्ति' इति ।

कन्याकुमारावेवमन्योन्यपुरातनजनननामधेये परिचिते परस्परज्ञानाय साभिज्ञमुक्त्वा मनोजरागपूर्णमानसौ बभूवतुः ।

हिन्दी–अनुवाद–राजकुमार (राजवाहन) की बातें सुनकर उस राजकुमारी अवन्तिसुन्दरी को भी पूर्वजन्म का वृत्तान्त स्मरण हो आया और उसने अपने मन ही मन जान लिया कि निश्चय ही ये मेरे प्राणवल्लभ (प्रियतम) हैं। इस प्रकार अनुरागाधिक्य से उसका चित्त खिल उठा तथा वह मन्द-मुसकान के साथ बोली–सौम्य, पूर्वकाल में भूपति शाम्ब ने अपनी पत्नी यज्ञवती के वचनों के परिपालन के लिए ही उस प्रकार के हंस को बाँधा था। क्योंकि दूसरे के आग्रह से पण्डित लोग भी अकार्य कर बैठते हैं। इस प्रकार अवन्ति–सुन्दरी और राजवाहन परस्पर प्राचीन जन्म और नाम से परिचित होने पर आपस में ज्ञान के लिए सप्रमाण बातों को कहकर काम और अनुराग से परिपूर्ण चित्त वाले हो गये।

संस्कृत–व्याख्या––भर्तृदारिका=राजकुमारी, सापि = अवन्तिसुन्दरी अपि, तद्वचनाकर्णनाभिज्ञातस्वपुरातनजननवृत्तान्ता= राजवाहनवाक्यश्रवण-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्मृत-निजप्राचीनजन्मवृत्तान्ता, नूनम्=निश्चयम्, अयम्=एषः, मत्प्राणवल्लभः =मत्प्रियतमः, इति = एवम्, मनसि = चेतसि, जानती = अपबुध्यती, रागपल्लवितमानसा = अनुरागविकसितकामानसा, समन्दहासम् = मन्दहाससहितं, अवोचत्=अवदत्, सौम्य=सुभग, पुरा = प्राचीनकाले, शाम्बः = एतदाख्यः, यज्ञवतीसन्देशपरिपालनाय=यज्ञवतीवचनपरिरक्षणाय, तथाविधम्, हंसबन्धनम्=राजहंसबन्धनम्, अकार्षीत्=अकरोत् । तथा हि=यतो हि, लोके=जगति, पण्डिताः=बुधाः, अपि, दाक्षिण्येन=अन्यानुरोधेन, अकार्यं=अनुचितं कर्म, कुर्वन्ति इति । एवम्=इत्थम्, कन्याकुमारौ= अवन्तिसुन्दरीराजवाहनौ, अन्योन्यपुरातनजनननामधेये= परस्परप्राचीनजन्मनामधेये, परिचिते=परिज्ञाते, परस्परज्ञानाय=अन्योन्यप्रतिबोधनाय, साभिज्ञम्=सप्रमाणम्, उक्त्वा=कथयित्वा, मनोजरागपूर्णमानसौ = कामदेवानुरागपरिपूर्णमानसौ, बभूवतुः=अभूताम् ।

टिप्पणी— तद्वचना ······ ···वृत्तान्ता–तद्वचनस्य आकर्णनेन अभिज्ञातः स्वपुरातनजन्मवृत्तान्तः यया सा (बहुव्रीहि) । रागपल्लवितमानसा–रागेण पल्लवितं मानसं यस्याः सा (बहुव्रीहि) । यज्ञवतीसन्देशपरिपालनाय–यज्ञवत्याः यः सन्देशः, तस्य परिपालनाय (तत्पुरुष) । 'तथा हि लोके········ कुर्वन्ति'– यह सूक्तिवाक्य है । अन्योन्यपुरातनजनननामधेये–अन्योन्यस्य पुरातनं जननं नामधेयं च ते । मनोजरागपूर्णमानसौ-मनोजेन रागेण च पूर्णं मानसं ययोस्तौ (बहुव्रीहि) । मनोज–कामदेव ।

अवन्तिसुन्दर्या मातुरागमनं विरहे कष्टानुभवश्च

तस्मिन्नवसरे मालवेन्द्रमहिषी परिजनपरिवृता दुहितृकेलीविलोकनाय त देशमवाप । बालचन्द्रिका तु तां दूरतो विलोक्य ससम्भ्रमं रहस्यनिर्भेदभिया हस्तसंज्ञया पुष्पोद्भवसेव्यमानं राजवाहनं वृक्षवाटिकान्तरितगात्रमकरोत्, सा मानसारमहिषी सखीसमेताया दुहितुर्नानाविधां विहारलीलामनुभवन्ती क्षण स्थित्वा दुहित्रा समेता निजागारगमनायोद्युक्ता बभूव ।

हिन्दी-अनुवाद—उसी समय मालवेन्द्र (मानसार) की पटरानी परिजन के साथ कन्या के खेल को देखने के लिए उस स्थान (उद्यान) में आ पहुँची

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बालचन्द्रिका ने उन्हें दूर से ही (आते) देखकर शीघ्र ही (उन दोनों के) रहस्य (प्रेम) के खुल जाने के भय से हाथ के इशारे से पुष्पोद्भव से संसेवित राजवाहन को वृक्षों की ओट में छिपा दिया । वह मानसार की पटरानी सखियों के सहित अपनी कन्या की अनेक प्रकार की विहार–लीलाओं को देखती हुयी कुछ देर तक ठहर कर पुत्री के सहित, अपने भवन को जाने के लिए तैयार हुयी ।

संस्कृत–व्याख्या-- तस्मिन्नवसरे = तस्मिन् काले, मालवेन्द्रमहिषी= मानसारपट्टराज्ञी, परिजनपरिवृता=सेवकयुक्ता, दुहितृकेलीविलोकनाय= कन्याक्रीडावलोकनाय, तं देशम्=पूर्वोक्तं प्रदेशं, अवाप=प्राप । बालचन्द्रिका तु, ताम्=पट्टराज्ञीम्, दूरतः=दूरादेव, विलोक्य= दृष्ट्वा, ससम्भ्रमं= सत्वरम्, रहस्यनिर्भेदभिया=संगोप्यविषयभेदशङ्कया, हस्तसंज्ञया=करसङ्केतेन, पुष्पोद्भवसेव्यमानम्=पुष्पोद्भवसंसेवितम्, राजवाहनम्=एतदाख्यम्, वृक्षवाटिकान्तरितगात्रम् = तरुवाटिकासंगोपितशरीरम्, अकरोत् । सा= पूर्वोक्ता, मानसारमहिषी=मानसारपट्टराज्ञी, सखीसमेतायाः=सखीयुक्तायाः, दुहितुः=अवन्तिसुन्दर्याः, नानाविधाम्=बहुप्रकाराम्, विहारलीलाम्=विहारक्रीडाम्, अनुभवन्ती=पश्यन्ती, क्षणम्=कञ्चित्कालम्, स्थित्वा=विश्रम्य, दुहित्रा=कन्यया, समेता=संयुक्ता, निजागारगमनाय = स्वभवनगमनाय, उद्युक्ता=उद्यता, बभूव ।

टिप्पणी--मालवेन्द्रमहिषी–मालवेन्द्रस्य महिषी (तत्पुरुष) । महिषी= पटरानी । परिजनपरिवृता–परिजनः परिवृता (तत्पुरुष) । परिवृता–परि+ वृ+क्त+टाप् । दुहितृकेलीविलोकनाय–दुहितुः केली=दुहितृकेली, तस्याः विलोकनाय (तत्पुरुष) । केली–क्रीडा, खेल । रहस्यनिर्भेदभिया–रहस्यस्य निर्भेदः, तस्य भिया (तत्पुरुष) । रहस्यम्– रहसि भवम्–रहस्+यत् । पुष्पोद्भवसेव्यमानम्–पुष्पोद्भवेन सेव्यमानम् (तत्पुरुष) । सेव्यमान–सेव्+ यक्+शानच् । वृक्ष········गात्रम्–वृक्षवाटिकायाम् अन्तरितं गात्रं यस्य तथाविधम् । सखीसमेतायाः–सख्या समेतायाः (तत्पुरुष) । निजागारगमनाय– निजस्य अगारं=निजागारम्, तत्र गमनाय (तत्पुरुष) ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मातरमनुगच्छन्ती अवन्तिसुन्दरी 'राजहंसकुलतिलक, विहारवाञ्छया केलिवने मदन्तिकमागतम् भवन्तमकाण्ड एव विसृज्म मया समुचितमिति जनन्यनुगमनं क्रियते । तदनेन भवन्मनोरागोऽन्यथा मा भूत्' इति मरालमिव कुमारमुद्दिश्य समुचितालापकलापं वदन्ती पुनः पुनः परिवृत्तदीननयना वदनं विलोकयन्ती निजमन्दिरमगात् ।

हिन्दी-अनुवाद––माता के पीछे जाती हुयी अवन्तिसुन्दरी ने (हंस के बहाने कुमार से इस प्रकार) कहा–हे राजहंसकुलतिलक, विहार की इच्छा से इस क्रीडोद्यान में अपने समीप आये हुए आपको असमय में ही छोड़कर मेरे द्वारा 'यह उचित है' ऐसा विचारकर माता का अनुगमन किया जा रहा है । इससे आपके हृदय का प्रेम कम न हो, इस प्रकार हंस के बहाने राजकुमार को लक्ष्यकर समुचित वार्तालाप करती हुयी और बार-बार मुड़कर दुःखित नेत्रों से देखती हुयी अपने भवन को चली गयी ।

संस्कृत-व्याख्या–मातरम्=जननीम्, अनुगच्छन्ती=अनुसरन्ती, अवन्ति-सुन्दरी=राजकन्या, राजहंसकुलतिलक=राजहंसवंशभूषण, विहारवाञ्छया =विहारेच्छया, केलिवने=क्रीडोद्याने, मदन्तिकम्=मत्समीपम्, आगतम्=प्राप्तम्, भवन्तम्=त्वाम्, अकाण्ड एव=असमय एव, विसृज्य=परित्यज्य, मया=अवतिसुन्दर्या, समुचितम् = अवश्यकर्तव्यम्, इति=हेतोः, जनन्यनगमनम्=जनन्याः मातुः अनुगमनम् अनुसरणम्, क्रियते । तत्=तस्मात्, अनेन=एतेन, भवन्मनोरागः=तव मनोवृत्तिः, अन्यथा=विपरीतम्, मा भूत्, इति=एवं, मरालमिव=राजहंसमिव, कुमारम्=राजवाहनम् उद्दिश्य=लक्ष्यीकृत्य, समुचितालापकलापम्=समुचितभाषणसमूहम्, वदन्ती=उच्चारयन्ती, पुनः पुनः=भूयोभूयः, परिवृत्तदीन-नयना=परावृत्तदुःखितनेत्रा, वदनम्=आननम्, विलोकयन्ती=पश्यन्ती, निजमन्दिरम्=स्वभवनं, अगात्=अगच्छत् ।

टिप्पणी––अनुगच्छन्ती–अनु+गम्+शतृ+ङीप् । राजहंसकुलतिलक–यह श्लिष्ट पद है । (क) राजकुमार के पक्ष में–राजहंसस्य कुले तिलकः इव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

=राजा राजहंस के कुल में आभषण के समान । (ख) हंस नामक पक्षियों के समूह में तिलक या आभूषण के समान । समुचितमिति –माता जी के साथ जाना समुचित है ऐसा विचारकर । समुचितालाप–कलापम्–आलापस्य कलापः =आलापकलापः, समुचितचासौ आलापकलापश्चेति तम् । परिवृत्तदीननयना– परिवृत्ते दीने नयने यस्याः सा (बहुव्रीहि) । यहाँ श्लेष तथा अनुप्रास अलंकार है । भाषा सरस एवं प्रसादगुण से युक्त है ।

तत्र हृदयवल्लभकथाप्रसङ्गे बालचन्द्रिकाकथिततदन्वयनामधेया मन्मथबाणपतनव्याकुलमानसा विरहवेदनया दिने दिने बहुलपक्षशशिकलेव क्षामक्षामाऽऽहारादिसकलव्यापारं परिहृत्य रहस्यमन्दिरे मलयजरसक्षालितपल्लवकुसुमकल्पिततल्पतलावर्तितनूलता बभूव ।

हिन्दी–अनुवाद—वहाँ प्रियतम की कथाप्रसंग में बालचन्द्रिका के द्वारा कहे गये उस राजकुमार के वंश और नाम को सुनकर वह कामदेव के बाणों से बिद्ध (घायल) हो गयी, प्रिय–वियोग की वेदना से कृष्णपक्ष के चन्द्रमा के समान प्रतिदिन अत्यन्त क्षीण होने लगी और भोजनादि सभी व्यापारों को छोड़कर वह एकान्त कमरे में चन्दन के जल से सिक्त किसलयों और फूलों के बिछौने पर करवटें वदलने लगी ।

संस्कृत-व्याख्या—तत्र = स्वकीये भवने, हृदयवल्लभकथा–प्रसङ्गे = प्राणेशकथाविषये, बालचन्द्रिकाकथिततदन्वयनामधेया=बालचन्द्रिकानिगदित-राजवाहनवंशाभिधाना, मन्मथबाणपतनव्याकुलमानसा = कामरशरपतन-व्यग्रमानसा, विरहवेदनया=वियोगपीडया, दिने दिने=प्रतिदिनम्, बहुल-पक्षशशिकला=कृष्णपक्षचन्द्रकला, इव, क्षामक्षामा=अत्यधिकक्षीण, आहारा-दिसकलव्यापरम् = भोजनादिसमस्तकार्यम्, परिहृत्य = परित्यज्य, रहस्य-मन्दिरे = निर्जनभवने, मलयजरसक्षालितपल्लवकुसुमकल्पिततल्पतलावर्ति-तनुलता=चन्दनद्रवप्रक्षालितकिसलयप्रसूनरचितशय्यावर्तिगात्रलता, बभूव= अभूत् ।

टिप्पणी—हृदयवल्लभकथाप्रसङ्गे–हृदयवल्लभस्य कथायाः प्रसङ्गे (तत्पुरुष) । बाल ·········· नामधेया–बालचन्द्रिकया कथिते तस्य अन्वय-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नामधेये यस्यै सा तथोक्ता (वहुव्रीहि) । अन्वय=कुल, वंश । मन्मथ......... मानसा–मन्मथस्य बाणपतनेन व्याकुलं मानसं यस्या: सा (बहुव्रीहि) । बहुल ....कला–बहुलपक्षे या शशिकला सा इव । 'कला तु षोडशो भाग:'–अमर-कोष । परिहृत्य–परि+हृ+क्त्वा–ल्यप् । मलयज......... तनुलता–मलयज-रसेन क्षालितै: पल्लवै: कुसुमैश्च यत् तल्पतलं तत्र आवर्तिनी तनुलता यस्या: सा तादृशी (वहुव्रीहि) । 'वहुलपक्षशशिकलेव' में उपमा है । अनुप्रास एवं भाषा की सरसता श्लाघनीय है ।

तत्र तथाविधामवस्थामनुभवन्तीं मन्मथानलसन्तप्तां सुकुमारीं कुमारीं निरीक्ष्य खिन्नो वयस्यागण: काञ्चनकलशसञ्चितानि हरिचन्दनोशीरघन-सारमिलितानि तदभिषेककल्पितानि सलिलानि बिसतन्तुमयानि वासांसि च नलिनीदलमयानि तालवृन्तानि च सन्तापहरणानि बहूनि संपाद्य तस्या: शरीर-मशिशिरयत् । तदपि शीतलोपचरणं सलिलमिव तप्ततैले तदङ्गदहनमेव समन्ता-दाविश्चकार ।

हिन्दी–अनुवाद–वहाँ (शय्या) पर उस प्रकार की अवस्था को भोगती हुयी और कामाग्नि से संतप्त सुकुमारी राजकुमारी को देखकर खिन्न सखियों ने सोने के घड़ों में सञ्चित, चन्दन, खस और कपूर-मिश्रित उस (राजकुमारी) के स्नान के लिए तैय्यार किये गये जल को, मृणालसूत्र से निर्मित वस्त्रों को और कमलिनी के पत्तों से निर्मित पंखों को इस प्रकार सन्तापनिवारक बहुत सी वस्तुएँ तैय्यार करके उस (अवन्ति-सुन्दरी) के शरीर को शीतल बनाया। परन्तु वे सभी शीतलोपचार खौलते तेल में पानी के छींटें के समान उसके शरीर को चारों ओर से अत्यधिक संतप्त करने में ही समर्थ हुए ।

संस्कृत-व्याख्या–तत्र=तस्मिन् स्थाने, 'तथाविधाम्=तादृशीम्, अवस्थाम्=वियोगावस्थाम्, अनुभवन्तीम्, मन्मथानलसंतप्ताम्=मदनाग्निना ज्वलन्तीम् । सुकुमारीम्=कोमलाङ्गीम्, कुमारीम्=अवन्तिसुन्दरीम्, निरीक्ष्य=विलोक्य, खिन्न:=विषण्ण:, वयस्यागण:=सखीसमूह:, काञ्चन-कलशसञ्चितानि=सुवर्णघटएकत्रीकृतानि, हरिचन्दनोशीरघनसारमिलितानि=मलयजोशीरकर्पूर-मिश्रितानि, तदभिषेककल्पितानि=तस्या: स्नानाय रचितानि, सलिलानि=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जलानि, विसतन्तुमयानि=मृणालसूत्ररचितानि, वासांसि=वस्त्राणि च, नलिनीदलमयानि=कमलिनीपत्रप्रचुराणि, तालवृन्तानि=तालव्यजनानि च, एवम्, बहूनि, सन्तापहरणानि=कामसन्तापविनाशकानि वस्तूनि, सम्पाद्य=निर्माय, तस्याः=अवन्तिसुन्दर्याः, शरीरम्=वर्ष्म, अशिशिरयत्=शीतलीचकार । तदपि, शीतलोप-चरणाम्=शीतोपचारम्, तप्ततैले=संतप्ततैले, सलिलमिव=जलमिव, समन्तात्, तदङ्गदहनमेव=तस्याः अवन्तिसुन्दर्याः अङ्गे=शरीरे, दहनमेव=अग्निमेव, आविश्चकार=प्रज्वलयामास ।

टिप्पणी--अनुभवन्तीम्-अनु+भू+शतृ+ङीप्, द्वि० ए० व० । मन्मथानलसंतप्ताम्-मन्मथस्य अनलेन संतप्ताम् (तत्पुरुष) । 'मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः'-अमरकोष । काञ्चनकलशसञ्चितानि-काञ्चन-कलशे सञ्चितानि (तत्पुरुष) । हरि.........मिलितानि-हरिचन्दमञ्च उशीरञ्च घनसारश्चेति तैः मिलितानि (तत्पुरुष) । 'सलिलमिव' में उपमा है, 'सुकुमारीं कमारीम्' मे यमक है । विरह-सन्ताप को शमन करने वाली वस्तुएँ अवन्ति सुन्दरी के लिए व्यर्थ सिद्ध हुयीं । अन्यत्र भी कहा गया है-

'अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः ।
अलमलमालि मृणालैरिति वदति दिवानिशं वाला ।।'

किंकर्तव्यतामूढां विषण्णां बालचन्द्रिकामीषदुन्मीलितेन कटाक्षवीक्षितेन बाष्पकणाकुलेन विरहानलोष्णनिःश्वासग्लपिताधरया नताङ्ग्या शनैः-शनैः सगद्गदं व्यलापि-

'प्रियसखि, कामः कुसुमायुधः पञ्चबाण इति नूनमसत्यमुच्यते । इय महमयोमयैरसंख्यैरिषुभिरनेन हन्ये । सखि, चन्द्रमस वडवानलादतितापकरं मन्ये । यदास्मिन्नन्तःप्रविशति शुष्यति पारावारः, सति निर्गते तदैव वर्धते । दोषाकरस्य दुष्कर्म किं वर्ण्यते मया ? यदनेन निजसोदर्याः पद्मालयाया गेहभूतमपि कमलं विहन्यते ।

हिन्दी-अनुवाद-सम्प्रति क्या करना चाहिए ? यह निश्चय करने में असमर्थ और दुःखी वालचन्द्रिका को अश्रुपरिपूर्ण अधखिली आँखों से देखकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विरहाग्नि से उष्ण निःश्वास से मुरझाये हुये अधरों वाली कृशाङ्गी अवन्तिसुन्दरी गद्गद कण्ठ से धीरे-धीरे बोली—

प्रियसखि, (जो यह कहा जाता है कि) कामदेव कुसुमायुध हैं अर्थात् कामदेव के आयुध फूल से बने हैं और उसके बाण भी पांच ही हैं, यह निश्चय ही असत्य है। यहाँ मैं लोहे के असंख्य बाणों के द्वारा प्रताड़ित की जा रही हूँ। सखि, मैं चन्द्रमा को वडवानल से भी अधिक सन्तापकारी मान रही हूँ, अर्थात् चन्द्रमा मुझे अधिक सन्तप्त कर रहा है। क्योंकि जब वह (चन्द्रमा) समुद्र में प्रवेश करता है तो समुद्र सूख जाता है और जब (समुद्र से) निकल जाता है तब समुद्र बढ़ने लगता है। मैं चन्द्रमा के दोषों का वर्णन कहाँ तक करूँ ? वह तो अपनी सगी बहन लक्ष्मी के घर कमल को भी नष्ट कर देता है।

संस्कृत-व्याख्या—किंकर्तव्यतामूढ़ां=सम्प्रति किं कर्तव्यम् अस्मिन् विषये विमूढ़ाम्, विषण्णां=खिन्नाम्, बालचन्द्रिकां=एतदाख्याम्, ईषदुन्मीलिते= किञ्चित् विकसितेन, कटाक्षवीक्षितेन=अपाङ्ग-दर्शनेन, बाष्पकणाकुलेन= अश्रुबिन्दुव्याप्तेन, विरहानलोष्णनिःश्वासग्लपिताधरया= वियोगपावकोष्णमुखवायुक्षामाधरया, कृताङ्ग्या=अवन्तिसुन्दर्या, शनैः-शनैः=मन्दं-मन्दम्, व्यलापि =व्यलपत्। प्रियसखि=बालचन्द्रिके, कामः=मदनः, कुसुमायुध=पुष्पायुधः पाञ्चबाणः=पञ्चशरः, इति=एवम्, ननम्=निश्चयम्, असत्यम्= अतथ्यम्, उच्यते=कथ्यते। इयम्=एषा, अहम्, अयोमयैः=लोहमयैः, असंख्यैः =संख्यातुमशक्यैः,इषुभिः=शरैः, अनेन=एतेन, हन्ये=हतास्मि। सखि, चन्द्रमसं=चन्द्रम्, वडवानलात्=सागराग्नेः, अतितापकरम्=अत्यन्तसन्तापकरम्, मन्ये=चिन्तयामि। यत्=यस्मात् कारणात्, अन्तःप्रविशति=जलमध्ये प्रविशति, अस्मिन्=चन्द्रे, पारावारः=सागरः,शुष्यति। निर्गते सति, तदैव, वर्धते=एधते। दोषाकरस्य=चन्द्रस्य, दुष्कर्म=दुष्कार्यम्, मया=अवतिसुन्दर्या, किं वर्ण्यते। यत् अनेन=एतेन, निजसोदर्याः=स्वभगिन्याः, पद्मनालयायाः=कमलायाः, गेहभूतमपि,=भवनभूतमपि, कमलम्=नलिनम्, विहन्यते=मुकुलीक्रियते।

टिप्पणी–बाष्पकणाकुलेन—बाष्पाणां ये कणः तैः आकुलेन (तत्पुरुष)। विरहा····· धरया–विरहानलस्य उष्णनिःश्वासेन ग्लपितः अधरः यस्याः सा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तया (बहुव्रीहि) । इषुभि.=बाणों के द्वारा । पारावारः=समुद्र । दोषाकरस्य-दोषा=क्षपा, तस्याः करः (तत्पुरुष) तस्य=चन्द्रमा का । पद्‌वालयायाः=लक्ष्मी का । 'लक्ष्मीः पाद्‌वलया पादव कमला श्रीर्हरिप्रिया'–अमरकोष । अनुप्रास अलङ्कार है ।

विरहानलसंतप्तहृदयस्पर्शेन नूनमुष्णीकृतः स्वल्पीभवति मलयानिलः । नवपल्लवकल्पितं तल्पमिदमनङ्गाग्निशिखापटलमिव सन्तापं तनोस्तनोति । हरिचन्दनमपि पुरा निजयष्टिसंश्लेषवदुरगरदनलिप्तोल्वणगरलसंकलितमिव तापयति शरीरम् । तस्मादलमलमायासेन शीतलोपचारे । लावण्य-जितमारो राजकुमार एवागदंकारो मन्मथज्वरापहरणे । सोऽपि लब्धुमशक्यो मया । किं करोमि' इति ।

हिन्दी–अनुवाद–विरह की अग्नि से संतप्त हृदय के स्पर्श से गरम होकर मलयपवन भी कम हो जाता है । नवीन किसलयों से निर्मित यह बिछोना भी कामाग्नि की ज्वाला समूह के समान मेरे शरीर को झुलसा सा रहा है । मलयाचल के चन्दनवृक्षों पर लिपटे हुए सर्पों के दाँतों से निकले हुए विष से व्याप्त चन्दन का लेप भी शरीर को संतप्त कर रहा है । इसलिए इन शीतल उपचारों के प्रयोग का कष्ट न करें । अपने सौन्दर्य से कामदेव को पराजित कर देने वाले वे राजकुमार ही इस कामज्वर से मुझे ठीक कर सकते हैं । परन्तु मेरे द्वारा उनकी प्राप्ति भी कठिन है । क्या करूँ ?

संस्कृत–व्याख्या–विरहानलसंतप्तहृदयस्पर्शेन=वियोगाग्निसंतप्तहृदयसंसर्गेण, नूनम्=निश्चयेन, उष्णीकृतः=उष्णीविहितः, मलयानिलः=मलयपवनः, स्वल्पी-भवति=न्यूनो जायते । नवपल्लवकल्पितम्=नूतनकिसलयनिर्मितम्, इदम्=एतत्, तल्पम्=शय्या, अनङ्गाग्निशिखापटलमिव=कामाग्निज्वाला-पटलमिव, तनोः=शरीरस्य सन्तापं=संज्वरम्, तनोति=प्रकटयति । पुरा=पूर्व–समये, हरिचन्दनमपि=मलयजरसोऽपि, निजयष्टिसंश्लेषवदुरगरदन-लिप्तोल्वण–गरलसंकलितमिव=स्वाश्रितशाखासंश्लेषवत्सर्पदन्तयुक्तोत्कटविषा-भिव्याप्तम् इव, शरीरम्=देहम्, तापयति=सन्तापयति । तस्मात्=तस्मात् कारणात् । शीतलोपचारं=शीतोपचारं, आयासेन=कष्टेन अलमलमिति ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लावण्य-जितमारः=सौन्दर्यपराजितकामः, राजकुमारः=राजवाहनः, एव=हि, मन्मथज्वरापहरणे=कामसन्तापापनयने, अगदङ्कारः=चिकित्सकः। सोऽपि=राजकुमारोऽपि, मया=अवन्तिसुन्दर्या, लब्धुम्=प्राप्तुम्, अशक्यः=न शक्यः। किं करोमि इति।

टिप्पणी–विरहा ······स्पर्शेन–विरहानलेन संप्तहृदयस्य स्पर्शेन (तत्पुरुष)। उष्णीकृतः उष्ण+च्वि+कृ+क्त। नवपल्लवकल्पितम्–नवपल्लवेन कल्पितम् (तत्पुरुष)। अनङ्गाग्निशिखापटलम्–अनङ्गस्य यः अग्निः तस्य या शिखा तस्याः पटलम् (तत्पुरुष)। निजयष्टि·········संकलितम्–निजयष्टेः संश्लेषवन्तः ये उरगाः, तेषां रदनेन लिप्तं यत् उल्वणं गरल तेन संकलितम् (तत्पुरुष)। उरग=सर्प। उल्वण=उत्कट। रदन=दाँत। लावण्यजितकुमारः–लावण्येन जितः मारः येन सः (बहुव्रीहि)। मार=कामदेव। अगदङ्कारः–न गदम् अगदम्, अगदं करोतीति। वैद्य। रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यो चिकित्सके' अमरकोप। मन्मथज्वरापहरणो–मन्मथज्वरस्य अपहरणे (तत्पुरुष)। यहाँ उपमा, यमक एवं अनुप्रास अलङ्कार हैं। 'लावण्यजितमारः' इत्यादि कथन से राजवाहन का सौन्दर्याधिक्य तथा अवन्तिसुन्दरी की उस पर आसक्ति की अधिकता अभिव्यञ्जित हो रही है।

बालचन्द्रिका मनोजज्वरावस्थापरमकाष्ठां गतां कोमलाङ्गीं तां राजवाहनलावण्याधीनमानसामनन्यशरणामवेक्ष्यात्मन्यचिन्तयत्–

'कुमारः सत्वरमानेतव्यो मया। नो चेदेनां स्मरणीयां गतिं नेष्यति मीनकेतनः। तत्रोद्याने कुमारयोरन्योन्यावलोकनवेलायामसमसायकः समं मुक्तसायकोऽभूत्। तस्मात्कुमारानयनं शुकुरम्' इति ततोऽवन्तिसुन्दरीरक्षणाय समयोचितकरणीयचतुरं सखीगणं नियुज्य राजकुमारमन्दिरमवाप। पुष्पवाणबाणतूणीरायमाणमानसोऽनङ्गतप्तावयवसंपर्कपरिम्लानपल्लवशयनमाधिष्ठितो राजवाहनः प्राणेश्वरीमुद्दिश्य सह पुष्पोद्भवेन संलपन्नागतां प्रियवयस्यामालोक्य पादमूलमन्वेषणीया लतेव बालचन्द्रिकागतेति संतुष्टमना निटिलतट-मण्डनीभवदम्बुजकोराकाकृतिलसदञ्जलिपुटाम् 'इतो निषीद' इति निर्दिष्टसमुचितासनासीनामवन्तिसुन्दरीप्रेषितं सकर्पूरं ताम्बूलं विनयेन ददतीं तां कान्तावृत्तान्त-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मपृच्छत् । तया सविनयमभाणि–

हिन्दी–अनुवाद––कामज्वर की चरमसीमा पर पहुँची हुयी एवं राजवाहन के सौन्दर्य पर मुग्ध उस कोमलाङ्गी अवन्तिसुन्दरी की (राजवाहन को छोड़कर) अब अन्य कोई दूसरा रक्षा नहीं कर सकता है, यह देखकर बालचन्द्रिका अपने मन में सोचने लगी–मुझे राजकुमार को यहाँ शीघ्र ले आना चाहिए, अन्यथा कामदेव इसकी स्मरणीय दशा बना देगा । वहाँ उद्यान में इन दोनों के एक-दूसरे के देखने के समय पर कामदेव ने एक साथ ही इन दोनों पर अपने बाणों को छोड़ा था । इसलिए कुमार का लाना सरल (कार्य) है । तत्पश्चात् अवन्तिसुन्दरी की रक्षा के लिए तत्कालोचित सेवा करने में चतुर सखियों को नियुक्त करके (स्वयं) राजकुमार के भवन में चली गयी । कामदेव के बाण रखने वाले तूणीर (तरकश) के समान हृदय वाले, कामदेव से संतप्त अङ्गों के सम्पर्क से मुरझाये हुए पल्लव के बिछौने पर स्थित, प्रियतमा (अवन्तिसुन्दरी) को लक्ष्य कर पुष्पोद्भव के साथ बातचीत करते हुए राजवाहन ने आयी हुयी बालचन्द्रिका को खोजने के योग्य लता को पैर के समीप ही स्थित के समान देखकर 'बालचन्द्रिका आ गयी है' इस प्रकार प्रसन्नचित्त हो, मस्तक पर शोभा के लिए लगाये गये कमल की कली के समान हाथों को जोड़ने वाली (उस बालचन्द्रिका) को 'इधर बैठो' इस प्रकार राजवाहन के द्वारा बतलाये गये उचित आसन पर बैठकर अवन्तिसुन्दरी के द्वारा भेजे गये कर्पूरमिश्रित पान को विनय पूर्वक देती हुयी उससे (राजवाहन ने) अपनी प्रियतमा का समाचार पूछा । वह (बालचन्द्रिका) विनीत–भाव से कहने लगी–

संस्कृत–व्याख्या–बालचन्द्रिका=एतदाख्या, मनोजज्वरावस्थापरमकाष्ठाम् =कामसन्तापदशापरमकाष्ठाम्, गताम्=प्राप्ताम्, ताम्=पूर्वोक्ताम्, कोमलाङ्गीम्=सुकुमारशरीराम्, राजवाहनलावण्याधीनमानसाम्=राजकुमारसौन्दर्यायत्तचित्ताम्, अनन्यशरणाम्=राजकुमारशरणाम्, अवेक्ष्य=विलोक्य, आत्मनि=मनसि, अचिन्तयत्=चिन्तयामास । मया=बालचन्द्रिकया, कुमारः =राजवाहनः, सत्वरम्=शीघ्रम्, आनेतव्यः=प्रापयितव्यः, नो चेत्=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्यथा, मीनकेतनः=कन्दर्पः, एनाम्=अवन्तिसुन्दरीम्, स्मरणीयां गतिं=कथावशेषताम्, नेष्यति=प्रापयिष्यति । तत्रोद्याने=तत्रोपवने, कुमारयोः=राजवाहनावन्तिसुन्दर्योः, अन्योन्यावलोकनवेलायाम्=परस्पर-विलोकनसमये, असमसायकः=कामः, समम्=साकमेव, मुक्तसायकः= त्यक्तशरः, अभूत्=अभवत् । तस्मात्, कुमारानयनम्=राजवाहनानयनम्, सुकरम्=सुसाध्यमिति । ततः=तदनन्तरम्, अवन्तिसुन्दरीरक्षणाय=अवन्तिसुन्दरीरक्षार्थम्, समयोचितकरणीयचतुरम्= अवसरोचितकर्तव्यकुशलम्, सखीगणम्=सखीकुलम्, नियुज्य, राजकुमारमन्दिरम्=राजवाहनभवनम्, अवाप=प्राप । पुष्पवाणबाणतूणीरायमाणमानसः=कामदेवशरतूणीरायमाणचित्तः, अनङ्ग-तप्तावयवसंपर्कपरिम्लानपल्लवशयनम्=कामसंतप्ताङ्गसंसर्गक्षामकिसलयशयनम्, अधिष्ठितः=उपविष्टः, राजवाहनः, प्राणेश्वरीम्=अवन्तिसुन्दरीम्, उद्दिश्य=लक्ष्यीकृत्य, पुष्पोद्भवेन=एतदाख्येन, सह=साकम्, संलपन्=आलपन्, आगताम्=प्राप्ताम्, प्रियवयस्याम्=बालचन्द्रिकाम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा, अन्वेषणीया=अन्वेष्टव्या, लतेव=वल्लीव, पादमूलम्=चरणसमीपम् आगता=प्राप्ता, बालचन्द्रिका इति, संतुष्टमनाः=प्रसन्नचेताः, निटिलतटमण्डनीभवदम्बुजकोरकाकृतिलसदञ्जलिपुटाम्= भालप्रदेशाभरणीभवत्कमलकलिकाकारशोभमानाञ्जलिसम्पुटाम्, इतः=अस्मिन् स्थाने, निषीद=उपविश, इति, निर्दिष्टसमुचितासनासीनाम्= प्रदर्शितयोग्यासनोपविष्टाम्, अवन्तिसुन्दरीप्रेषितम्=राजकुमारीप्रहितम्, सकर्पूरम्=कर्पूरेण सहितम्, ताम्बूलम्=वीटिकाम्, विनयेन=प्रश्रयेण, ददतीम्=राजवाहनाय उपहरन्तीम्, ताम्=बालचन्द्रिकाम्, कान्तावृत्तान्तम्= प्रियतमावार्ताम् अपृच्छत् । तया=बालचन्द्रिकया, सविनयम्=विनयेन सहितम्, अभाणि=अवादि ।

टिप्पणी—मनोज ········ काष्ठाम्—मनोजज्वरावस्थायाः परमकाष्ठा ताम् (तत्पुरुष) । राज ·· ····मानसाम्—राजवाहनस्य लावण्ये अधीनं मानसं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि) । आनेतव्यः—आ+नी+तव्यत् । मीनकेतनः=कामदेव । असमसायकः—असमःसायकः यस्य सः=काम । मुक्तसायकः—मुक्तः सायकः येन सः (बहुव्रीहि) । समयो········चतुरम्—समये यत् उचितकरणीयं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्र चतुरम् । नियुज्य–नि + युज् + क्त्वा–ल्यप् । पुष्प ······ मानसः–पुष्पवाणस्य वाणाः इति पुष्पवाणवाणाः तेषां तूणीरवदाचरत् मानसं यस्य सः (बहुव्रीहि) । अनङ्ग········शयनम्–अनङ्गेन तप्तावयवस्य सम्पर्केण परिम्लानं यत् पल्लवशयनम् । यहाँ 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' से कर्मसंज्ञा होती है । निटिल······पुटाम्–निटिलतटस्य मण्डनीभवत् यत् अम्बुजकोरकम्, तस्या कृतिरिव लसत् अञ्जलिपुटम्, यस्याः ता म् । निटिल=मस्तक, भाल । निर्दिष्टसमुचितासनासीनाम्–निर्दिष्टे समुचिते आसने आसीनाम्, (तत्पुरुष) । अन्वेषणीया लतेव' में उपमा है । अनुप्रास तथा यमक भी है ।

'देव, क्रीडावने भवदवलोकनकालमारभ्य मन्मथमथ्यमाना पुष्पतल्पादिषु तापशमनमलभमाना वामनेनेवोन्नततरुफलमलभ्यं त्वदुरःस्थलालिङ्गनसौख्यं स्मरान्धतया लिप्सुः सा स्वयमेव पत्रिकामालिख्य 'वल्लभायैनामर्पय' इति मां नियुक्तवती । राजकुमारः पत्रिकां तामादाय पपाठ -

हिन्दी–अनुवाद–हे राजन्, क्रीडावन में आपके दर्शन से लेकर (अर्थात् जब से उसने आपको देखा है तब से) कामदेव से पीड़ित होती हुयी, फूलों की शय्या आदि पर भी सन्ताप की शान्ति को न प्राप्त करती हुयी, बौने के द्वारा अलभ्य ऊँचे वृक्ष के फल के समान कामान्ध होकर (दुर्लभ) आपके वक्षःस्थल के आलिङ्गन के सुख को प्राप्त करने की इच्छा से उसने स्वयं ही पत्र लिखकर 'इस पत्र को प्रियतम तक पहुँचा दो' इस प्रकार मुझे (इस कार्य में) नियुक्त किया । राजकुमार ने उस पत्र को लेकर पढ़ना आरम्भ किया-

संस्कृत–व्याख्या–देव=राजन्, क्रीडावने=क्रीडोद्याने, भवदवलोकनकालम्=त्वद्विलोकनसमयम्, आरभ्य, मन्मथमथ्यमाना=कामपीड्यमाना, पुष्पतल्पादिषु=कुसुमशय्यादिषु, तापशमनम्=संज्वरशान्तिम्, अलभमाना=अप्राप्नुवती, वामनेन इव=खर्वेण यथा, उन्नततरुफलम्=समुन्नतवृक्षफलम्, अलभ्यम्=लब्धुमशक्यम्, त्वदुरःस्थलालिङ्गनसौख्यम्=त्वद्वक्षःस्थलालिङ्गनानन्दम्, स्मरान्धतया=कामान्धतया, लिप्सुः=लब्धुमिच्छुः, सा अवन्तिसुन्दरीम्, स्वयमेव, पत्रिकाम्=पत्रम्, आलिख्य=विलिख्य, एनाम्=पत्रिकाम्, वल्लभाय=प्रियाय, अर्पय=देहि, इति, माम्=बालचन्द्रिकाम्, नियुक्तवती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नियुयोज । राजकुमारः=राजवाहनः, ताम्=पत्रिकाम्, आदाय=गृहीत्वा, पपाठ ।

टिप्पणी—मन्मथमथ्यमाना—मन्मथेन मथ्यमाना (तत्पुरुष) । मन्मथ=कामदेव । त्वदुरः...... सौख्यम्—तव उरःस्थलस्य यद् आलिङ्गनम्, तस्य सौख्यम् (तत्पुरुष) । आलिख्य—अ+लिख्+क्त्वा←ल्यप् । आदाय—आ+दा+क्त्वा←ल्यप् । यहाँ अनुप्रास अलङ्कार है ।

'सुभग कुसुमसुकुमारं जगदनवद्यं विलोक्य ते रूपम् ।
मम मानसमभिलषति त्वं चित्तं कुरु तथा मृदुलम् ।।'

हिन्दी-अनुवाद—हे सुभग, पुष्प के समान कोमल, संसार में अनिन्द्य तुम्हारे रूप को देखकर मेरा मन (उसे) चाह रहा है, इसलिए तुम अपने चित्त को अपने अङ्गों के समान कोमल बना लो ।

संस्कृत-व्याख्या—सुभग=प्रिय, कुसुमसुकुमारम्=पुष्पसदृशकोमलम्, जगदनवद्यम्=संसारे निर्दोषम्, ते=तव, रूपम्=स्वरूपम् विलोक्य=दृष्ट्वा, मम=मे, मानसम्=चित्तम्, अभिलषति=वाञ्छति, त्वम्=प्रियः, चित्तम्=मानसम्, तथा=रूपसदृशम्, मृदुलं=कोमलम्, कुरु=विधेहि ।

टिप्पणी—कुसुमसुकुमारम्—कुसुममिव सुकुमारम् । जगदनवद्यम्—जगति अनवद्यम् (तत्पुरुष) । यहाँ अवन्तिसुन्दरी का कथन है कि आपका शरीर तो कुसुम के समान कोमल है जिसे मेरा मन प्राप्त करना चाहता है, परन्तु उसकी प्राप्ति तो तभी सम्भव है जबकि आप कोमल शरीर के समान ही कोमल हृदय बनायें । कहने का भाव यह है कि अपने कोमल हृदय में आप मुझे स्थान दें ।

इति पठित्वा सादरमभाषत—'सखि छायावन्मामनुवर्तमानस्य पुष्पोद्भवस्य वल्लभा त्वमेव तस्या मृगीदृशो बहिश्चराः प्राणा इव वर्तसे । त्वच्चातुर्यमस्यां क्रियालतायामालवालमभूत् । यत्तवाभीष्टं येन प्रियामनोरथः फलिष्यति तदखिलं करिष्यामि ।

हिन्दी-अनुवाद—यह पढ़कर कुमार ने आदरपूर्वक कहा—हे सखि, छाया के समान मेरा अनुसरण करने वाले पुष्पोद्भव की प्रियतमा तुम्हीं उस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृगनयनी (बालचन्द्रिका) के बाहर घूमने-फिरने वाले प्राणों के समान हो। इस कार्य रूपी लता में तुम्हारी चतुरता आलवाल (थलाहे) का कार्य कर रही है। जो तुम्हारा अभीष्ट होगा और जिससे प्रिया का मनोरथ सफल होगा, मैं वह सब (कार्य) करूँगा।

संस्कृत-व्याख्या-इति=एवम्, पठित्वा, सादरम्=आदरेण सहितम्, अभाषत=अवदत्, सखि=बालचन्द्रिके, छायावत्=छायासदृशम्, माम्=राजकुमारम्, अनुवर्तमानस्य=अनुसरतः, पुष्पोद्भवस्य=एतदाख्यस्य, वल्लभा=प्रिया, त्वमेव, मृगीदृशः=चञ्चलनयनायाः, तस्याः=अवन्तिसुन्दर्याः, बहिश्चराः=बहिःभ्रमणशीलाः, प्राणा इव=असव इव, वर्तसे=असि। अस्याम्=एतस्याम्, क्रियालतायाम्=कार्यरूपलतायाम्, त्वच्चातुर्यम्=तव चतुरता, आलवालम्,=आवालम्, अभूत=अभवत्। यत्, तव=ते, अभीष्टम्=अभीप्सितम्, येन=कार्येण, प्रियामनोरथः=प्रियतमाभिलाषः, फलिष्यति=सेत्स्यति, तत्, अखिलं=सम्पूर्णं कर्म, करिष्यामि=विधास्यामि

टिप्पणी-अनुवर्तमानस्य-अनु+वृत्+शानच्। चातुर्यम्-चतुर+ष्यञ्। क्रियालतायाम्-क्रिया एव लता तस्याम्। यहाँ रूपक है। आलवालम्=थलाहा; 'स्यादालवालमावालमावापः'-अमरकोष। प्रियामनोरथः-प्रियायाः मनोरथः (तत्पुरुष)।

नताङ्ग्या मन्मनःकाठिन्यमाख्यातम्। यदा केलीवने कुरङ्गलोचना लोचनपथमवर्तत तदैवापहृतमदीयमानसा सा स्वमन्दिरमगात्। सा चेतसो माधुर्यकाठिन्ये स्वयमेव जानाति। दुष्करः कन्यान्तःपुरप्रवेशः। तदनुरूपमुपायमुपपाद्य श्वः परश्वो व नताङ्गीं संगमिष्यामि। मदुदन्तमेवमाख्याय शिरीषकुसुमसुकुमाराया यथा शरीरबाधा न जायेत तथाविधमुपायमाचर' इति।

हिन्दी-अनुवाद-उस कृशाङ्गी (सुन्दरी) ने मेरे हृदय को कठोर बतलाया है। जिस दिन मैंने उस मृगनयनी को क्रीड़ा-उपवन में देखा उसी दिन वह मेरे मन को चुराकर अपने भवन को चली गयी। हृदय की कोमलता और कठोरता को वह स्वयमेव जानती है। किसी कन्या के अन्तःपुर में प्रवेश अत्यन्त कठिन कार्य है। परन्तु उसके अनुरूप किसी उपाय को सोचकर कल या परसों तक उस कोमलाङ्गी से अवश्य मिलूँगा। इस प्रकार मेरे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृत्तान्त को सुनाकर ऐसा उपाय करना जिससे शिरीषपुष्प के समान कोमल अवन्तिसुन्दरी को शारीरिक कष्ट न होवे।

संस्कृत-व्याख्या–नताङ्ग्या=कोमलाङ्ग्या, मन्मनःकाठिन्यम्=मच्चित्त-कठोरताम्, आख्यातम्=कथितम्। यदा, केलीवने=क्रीड़ोद्याने, कुरङ्गलोचना=मृगनयनी, लोचनपथम्=नयनपथम्, अवर्तत, तदैव=तस्मिन्नेव काले, अपहृतमदीयमानसा=अपहृतमच्चित्ता, सा=पूर्वोक्ता, स्वमन्दिरम्=स्वकीयं भवनम्, अगात्=अगच्छत्। सा=अवन्तिसुन्दरी, चेतसः=हृदयस्य, माधुर्य-काठिन्ये=मधुरताकाठिन्ये, स्वयमेव, जानाति=अवगच्छति। कन्यान्तः-पुरप्रवेशः=कुमारीभवनप्रवेशः, दुष्करः=दुःसाध्यः। तदनुरूपम्=प्रवेशयोग्यम्, उपायम्=साधनम्, उपपाद्य=कृत्वा, श्वः परश्वो वा, नताङ्गीम्=अवन्ति-सुन्दरीम्, संगमिष्यामि=सङ्गमनं करिष्यामि, मदुदन्तम्=अस्मद्-वृत्तान्तम्, एवम्=इत्थम्, आख्याय=कथयित्वा, शिरीषकुसुमसुकुमारायाः=शिरीष-प्रसूनकोमलायाः, यथा=येन प्रकारेण, शरीरबाधा=देहपीड़ा, न जायेत=न भवेत्, तथाविधम्=तादृशम्, उपायम्=उद्योगम्, आचर=विधेहि, इति।

टिप्पणी–मन्मनःकाठिन्यम्–मम मनसः काठिन्यम् (तत्पुरुष)। अपहृत-मदीयमानसा–अपहृतं मदीयं मानसं यया सा (बहुव्रीहि)। माधुर्यकाठिन्ये–माधुर्यञ्च काठिन्यञ्चेति ते (द्वन्द्व)। कन्यान्तःपुरप्रवेशः–कन्यायाः अन्तः-पुरे प्रवेशः (तत्पुरुष)। शिरीषकुसुमसुकुमारायाः–शिरीषस्य कुसुममिव सुकुमारायाः। तथाविधम्–तथा विधा यस्य तम्। 'शिरीष········' इत्यादि में उपमा है।

बालचन्द्रिकापि तस्य प्रेमगर्भितं वचनमाकर्ण्य संतुष्टा कन्यापुरमगच्छत्। राजवाहनोऽपि यत्र हृदयवल्लभावलोकनसुखमलभत तदुद्यानं विरह-वेदनाविनोदाय पुष्पोद्भवसमन्वितो जगाम। तत्र चकोरलोचनावचितपल्लव-कुसुमनिकुरम्बं महीरुहसमूहं शरदिन्दुमुख्या मन्मथसमाराधनस्थानं च नताङ्गीपदपंक्तिचिह्नितं शीतलसैकततलं च सुदतीभुक्तमुक्तं माधवीलतामण्डपा-न्तरपल्लवतल्पं च विलोकय ललनातिलकविलोकनवेलाजनितशेषाणि स्मारं-स्मारं मन्दमारुतकम्पितानि नवचूतपल्लवानि मदनाग्निशिखा इव चकितो दर्श-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दर्शं मनोजकर्णेजपानामिव कोकिलकीरमधुकराणां क्वणितानि श्रावं श्रावं मार-विकारेण क्वचिदप्यवस्थातुमसहिष्णुः परिबभ्राम ।

हिन्दी-अनुवाद---बालचन्द्रिका भी राजकुमार के प्रेमपूर्ण वचनों को सुन-कर अत्यन्त प्रसन्न होकर कन्या के अन्तःपुर को चली गयी । राजवाहन भी जिस क्रीडा-वन में प्रियतमा का प्रथम दर्शन-सुख प्राप्त किया था उसी उद्यान में विरह-वेदना को दूर करने के लिए पुष्पोद्भव के साथ चला गया । वहाँ चकोर के समान नेत्रों वाली अवन्तिसुन्दरी के द्वारा जिनके किसलय एवं पुष्प एकत्रित किये गये थे, उन वृक्ष को, शरच्चन्द्रमुखी (अवन्तिसुन्दरी) के काम-देव के पूजन-स्थान को, कोमलाङ्गी के चरणचिन्हों से चिह्नित शीतल बालु-कामय प्रदेश को तथा सुन्दर दान्तों वाली (अवन्तिसुन्दरी) के द्वारा उपभुक्त माधवीलता-मण्डप के मध्य में स्थित पल्लवशय्या को देखते हुए स्त्रीरत्न के प्रथम-दर्शन से उत्पन्न हुये हाव-भावों को याद याद कर, मन्द पवन के द्वारा कँपाये गये आम्र के नवीन किसलयों को जो कि कामाग्नि की ज्वाला के समान प्रतीत हो रहे थे, आश्चर्यपूर्वक देख देखकर तथा कामदेव के गुप्तचरों के समान कोयल, सुग्गों एवं भौंरों के कूजन को सुन सुनकर काम-विकार से (कामपीडा के कारण) कहीं भी ठहर सकने में असमर्थ (राजकमार राज-वाहन) चारों ओर घूमने लगा ।

संस्कृत-व्याख्या-- बालचन्द्रिकापि=पुष्पोद्भवभार्यापि, तस्य=राजकुमार-स्य, प्रेमगर्भितम्=प्रेमपरिपूर्णम्, वचनम्=वाक्यम्, आकर्ण्य=श्रुत्वा, संतुष्टा= प्रसन्ना सती, कन्यापुरम्=कन्यान्तःपुरम्, अगच्छत्=अगमत् । राजवाहनोऽपि =राजकुमारोऽपि, यत्र=उद्याने, हृदयवल्लभावलोकनसुखम्=प्राणप्रियादर्शना-नन्दम्, अलभत=लेभे, तदुद्यानम् = तमाक्रीडम्, विरहवेदनाविनोदाय= वियोगव्यथापनोदाय, पुष्पोद्भवसमन्वितः=पुष्पोद्भवसंयुक्तः, जगाम=ययौ । तत्र=उद्याने, चकोरलोचनावचितपल्लवकुसुमनिकुरम्बम्=जीवंजीवनयनाव-चितकिसलयप्रसूनसमूहम्, महीरुह-समूहम्=वृक्षसंघम्, शरदिन्दुमुख्या= शरत्कालीनचन्द्रमुख्या, मन्मथसमाराधनस्थानम् = कामपूजनस्थानम्, च, नताङ्गीपदपङ्क्तिचिह्नितम्=कोमलाङ्गीचरणचिह्नाङ्कितम्, शीतलसैकततलम्=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीतलवालुकामयतलम्, च, सुदतीमुक्तमुक्तम् = अवन्तिसुन्दरीमुक्तमुक्तम्, माधवीलतामण्डपान्तरपल्लवतल्पम् = वासन्तीमण्डपमध्यकिसलयतल्पम्, च, विलोकयन् = पश्यन्, ललनातिलकविलोकनवेलाजनितशेषाणि = स्त्रीरत्नावलोकनसमयप्रकटितशेषाणि, स्मारं स्मारम् = स्मृत्वा, स्मृत्वा, मन्दमारुतकम्पितानि = मन्दपवनवेल्लितानि, नवचूतपल्लवानि = नवीनाम्रकिसलयानि, मदनाग्निशिखा इव = कामानलज्वाला इव, चकितः = आश्चर्योपेतः, दर्शंदर्शम् = दृष्ट्वा दृष्ट्वा, मनोजकर्णेजयानामिव = कामसंसूचकानामिव, कोकिलकीरमधुकराणाम् = वनप्रियकीरभ्रमराणाम्, क्वणितानि = रुतानि, श्रावं श्रावं = श्रुत्वा श्रुत्वा, मारविकारेण = कामविकारेण, क्वचिदपि = कुत्रापि, अवस्थातुम् = स्थितिं कर्तुम्, असहिष्णुः = असहनशीलः, परिबभ्राम = परिभ्रमणं चकार।

टिप्पणी—संतुष्टा–सम् + तुष् + क्त + टाप् । हृदय..............सुखम्–हृदय–वल्लभायाः अवलोकनेन यत् सुखम्, तम्। विरहवेदनाविनोदाय विरहस्य वेदना = विरहवेदना, तस्याः विनोदाय (तत्पुरुष) । चकोर...... ..निकुरम्बम्–चकोरलोचनया अवचितानि पल्लवकुसुमनिकुरम्बाणि (पल्लवञ्च कुसुमञ्चेति पल्लवकुसुमे तयोः निकुरम्बानि) यस्य तम् (बहुव्रीहि) । मन्मथसमाराधनस्थानम्–मन्मथस्य यत् समाराधनम्, तस्य स्थानम्। नताङ्गीपदपङ्क्तिचिह्नितम् = नताङ्ग्याः पदपङ्क्त्या चिह्नितम् (तत्पुरुष) । सुदतीभुक्तमुक्तम्-शोभनाः दन्ताः : यस्याः सा सुदती, तया पूर्वं भुक्तम् पश्चात् मुक्तम । माधवी....... .... तल्पम्–माधवीलतायाः मण्डपस्य अन्तरे यत् पल्लवतल्पं तत्। तल्पं = शय्या। ललना ....शेषाणि-ललनातिलकस्य विलोकनवेलायां जनितः शेषः येषां तानि (बहुव्रीहि)। मन्दमरुतकम्पितानि–मन्दमारुतेन कम्पितानि (तत्पुरुष)। 'मदनाग्निशिखा इव' में उपमा है। मनोजकर्णेजपानाम्–मनोजस्य कर्णेजपाः तेषाम् । कर्णे जपन्तीति कर्णेजपाः। यहाँ अनुप्रास का सौन्दर्य तथा भाषा का माधुर्य अत्यन्त हृद्य है।

विद्येश्वरस्यागमनं प्रतिज्ञाकरणञ्च

तस्मिन्नवसरे धरणीसुर एकः सूक्ष्मचित्रनिवसनः स्फुरन्मणिकुण्डलमण्डितो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुण्डितमस्तकमानवसमेतश्चतुरवेषमनोरमो यदृच्छया समागतः समन्ततोऽभ्युल्लसत्तेजोमण्डल राजवाहनमाशीर्वादपूर्वकं ददर्श । राजवाहनः सादरम् 'को भवान्, कस्यां विद्यायां निपुणः' इति तं पप्रच्छ । स च 'विद्येश्वरनामधेयोऽहमैन्द्रजालिकविद्याकोविदो विविधदेशेषु राजमनोरञ्जनाय भ्रमन्नुज्जयिनीमद्यागतोऽस्मि' इति शशंस । पुनरपि राजवाहन सम्यगालोक्य 'अस्यां लीलावनौ पाण्डुरतानिमित्तं किम्' साभिप्रायं विहस्यापृच्छत् ।

हिन्दी-अनवाद---उस समय महीन एवं रंगीन वस्त्रों को धारण किये हुए, चमकते हुए (या चंचल) मणिजटित कुण्डलों को पहने हुए, मुडे हुए सिर वाले एक मनुष्य के साथ, वेष-भूषा से अत्यन्त चतुर एवं सुन्दर एक ब्राह्मण अकस्मात् वहाँ आ पहुँचा । उसने चारो ओर विखरे हुए तेजोमण्डल वाले राजवाहन को आशीर्वादपूर्वक देखा । राजवाहन ने आदरपूर्वक 'आप कौन हैं' ? किस विद्या में निपुण है ? इस प्रकार उससे पूछा । उसने 'विद्येश्वर नामक मैं इन्द्रजाल की विद्या में निपुण विविध देशों में राजाओं के मनोविनोद के लिए घूमता हुआ आज उज्जयिनी नगरी में आ पहुँचा हूँ' इस प्रकार कहा । फिर उसने राजवाहन को अच्छी तरह से देखकर साभिप्राय हंसते हुए पूछा– 'इस उद्यान भूमि में आपके चेहरे पर पीलेपन का क्या कारण है ?

संस्कृत-व्याख्या-- तस्मिन्नवसरे = परिभ्रमणसमये, एकः = कश्चित्, धरणीसुरः=विप्रः, सूक्ष्मचित्रनिवसनः=सूक्ष्मविचित्रवस्त्रः, स्फुरन्मणिकुण्डलमण्डितः=चञ्चद्रत्नजटितकुण्डलविभूषितः, मुण्डितमस्तकमानवसमेतः=परिवापितमस्तकपुरुषसंयुक्तः, चतुरवेषमनोरमः = चतुरवेषसुन्दरः, यदृच्छया= स्वेच्छया, समागतः=प्राप्तः, समन्ततः=चतुर्दिक्षु, अभ्युल्लसत्तेजोमण्डलम्= अभिस्फुरत्प्रतापमण्डलम्, राजवाहनम् = राजकुमारम्, आशीर्वादपूर्वकम्= आशीर्वचनपूर्वकम्, ददर्श=विलोकयामास । राजवाहनः=एतदाख्यः, सादरम् =आदरेण सहितम्, कः भवान् ?, कस्यां विद्यायाम्=कस्मिन् विज्ञाने, निपुणः=कुशलः, इति=एवं, तं=पूर्वोक्तं, पप्रच्छ, स च, विद्येश्वरनामधेयः= विद्येश्वराभिधानः, अहम्, ऐन्द्रजालिकविद्याकोविदः = ऐन्द्रजालिकविज्ञान-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पण्डितः, विविधदेशेषु = विभिन्नदेशेषु, राजमनोरञ्जनाय = नृपमनोविनोदाय, भ्रमन्=अटन्, अद्य = अस्मिन् दिने, उज्जयिनीम्=एतदाख्यां नगरीम्, आगतोऽस्मि=आयतोऽस्मि, इति=एवं, शशंस=कथयामास। पुनरपि=भूयोऽपि, राजवाहनम्, सम्यक्=साधु, आलोक्य=दृष्टवा, अस्यां=एतस्याम्, लीलावनौ = क्रीडाविपिने, पाण्डुरतानिमित्तं = पाण्डुरताकारणं, किम्, साभिप्रायं=साशयं, विहस्य=विशेषेण हसित्वा, अपृच्छत्=पप्रच्छ ।

टिप्पणी–सूक्ष्मचित्रनिवसनः–सूक्ष्मं चित्रं च निवसनं यस्य सः(बहुव्रीहि)। स्फुरन् · मण्डितः–स्फुरत् यत् मणिकुण्डलं तेन मण्डितः(तत्पुरुष)। मुण्डितमस्तकमानवसमेतः–मुण्डितं मस्तकं यस्य एवंभूतेन मानवेन समेतः (तत्पुरुष)। चतुरवेषमनोरमः–चतुरवेषेण मनोरमः (तत्पुरुष)। अभ्युल्लसत्तेजोमण्डलम् अभ्युल्लसत् तेजसां मण्डलं यस्य तम् (बहुव्रीहि)। ऐन्द्रजालिकविद्याकोविदः–ऐन्द्रजालिकविद्यायां कोविदः (तत्पुरुष)। कोविद=पण्डित। लीलावनौ–लीलायाः अवनौ (तत्पुरुष)। पाण्डुरतानिमित्तम्–पाण्डरतायाः निमित्तम् (तत्पुरुष)। अनुप्रास अलंकार है।

पुष्पोद्भवश्च निजकार्यकरणं तर्कयन्नेनमादरेण बभाषे–'ननु सतां सख्यस्याभाषणपूर्वतया चिरं रुचिरभाषणो भवानस्माकं प्रियवयस्यो जातः। सुहृदामकथ्यं च किमस्ति ?

केलीवनेऽस्मिन्वसन्तमहोत्सवायागताया मालवेन्द्रसुताया राजनन्दनस्यास्य चाकस्मिकदर्शनेऽन्योन्यानुरागातिरेकः समजायत। सततसंभोगसिद्ध्युपायाभावेनासावीदृशीमवस्थामनुभवति' इति ।

हिन्दी–अनुवाद–– पुष्पोद्भव ने अपने कार्य में साधन समझते हुए उस पुरुष से आदरपूर्वक कहा–सज्जनपुरुषों की मित्रता बातचीत से ही हो जाया करती है और आप बहुत देर से हम लोगों के साथ प्रिय भाषण करते रहे हैं इसलिए आप मेरे प्रिय मित्र हो गए। मित्रों से कुछ भी छिपाने योग्य नहीं होता है (इसलिए सुनें)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस क्रीडा उपवन में वसन्तमहोत्सव मनाने के लिए आई हुई मालवेन्द्र की कन्या का इस राजकुमार को अचानक दर्शन हो जाने से दोनों में अत्यन्त प्रेम उत्पन्न हो गया। सर्वदा के लिए सुख-सम्भोग की सिद्धि में उपाय के अभाव से यह इस प्रकार की अवस्था का अनुभव कर रहा है।

संस्कृत-व्याख्या–पुष्पोद्‌भवश्च,निजकार्यकरणम्=स्वकार्यसाधनं, तर्कयन्=विचारयन्, एनं=पुरुषम्, आदरेण=सम्मानेन, बभाषे=उवाच, ननु, सतां=सज्जनानां, सख्यस्य=मित्रतायाः, आभाषणपूर्वतया=आलापपूर्वतया, चिरं=बहुकालम्, रुचिरभाषणः=प्रियवचनः, भवान्=त्वम्,अस्माकं=आवयोः, प्रियवयस्यः = सखा, जातः=सम्पन्नः। सुहृदाम्=मित्राणाम्, अकथ्यं=अकथनीयं, च किमस्ति=न किमपि भवति, केलीवने=क्रीडोपवने, अस्मिन्=एतस्मिन्, वसन्तमहोत्सवाय=वसन्तोत्सवाय, आगतायाः=प्राप्तायाः, मालवेन्द्रसुतायाः=अवन्तिसुन्दर्याः, राजनन्दनस्य=राजपुत्रस्य, अस्य=एतस्य, च आकस्मिकदर्शने=सहसा साक्षात्कारे, अन्योन्यानुरागातिरेकः=परस्परप्रेमातिशयः, समजायत = समुत्पन्नोऽभूत्, सततसम्भोगसिद्धि–उपायाभावेन=निरन्तरसम्भोगसाधनाभावेन, असौ=एषः, इदृशीं=एतादृशीम्, अवस्थां=दशाम्, अनुभवति=अनुभवं करोति, इति।

टिप्पणी–निजकार्यकरणम्–निजकार्यस्य करणं (तत्पुरुष)। आभाषणपूर्वतया–आभाषणं पूर्वम् यस्मिन् तस्य भावः तया। रुचिरभाषणः–रुचिरं भाषणं यस्य सः तथोक्तः (बहुव्रीहि)। वसन्तमहोत्सवाय–वसन्तस्य महोत्सवाय (तत्पुरुष)। अन्योन्यानुरागातिरेकः–अन्योन्यानुरागस्य अतिरेकः (तत्पुरुष) सतत‥ ‥‥भावेन–सततं यः सम्भोगः तस्य सिद्धेः यः उपायः तस्य अभावेन (तत्पुरुष)।

विद्येश्वरो लज्जाभिरामं राजकुमारमुखमभिवीक्ष्य विरचितमन्दहासो व्याजहार––'देव, भवदनुचरे मयि तिष्ठति तव कार्यमसाध्यं किमस्ति। अहमिन्द्रजालविद्यया मालवेन्द्रं मोहयन् पौरजनसमक्षमेव तत्तनयापरिणयं रचयित्वा कन्यान्तःपुरप्रवेशं कारयिष्यामीति वृत्तान्त एष राजकन्यकायै सखीमुखेन पूर्वमेव कथयितव्यः' इति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी–अनुवाद–लज्जा से मनोहर राजकुमार के मुख को देखकर मन्द-मन्द मुस्कराते हुए विद्येश्वर ने कहा–हे देव ! आपके मुझ सेवक के रहते हुए आपका कौन सा ऐसा कार्य है जो असाध्य हो। मैं इन्द्रजाल की विद्या से मालवेन्द्र मानसार को मोहित कर पुरवासियों के समक्ष ही उनकी कन्या का विवाह (आपके साथ) करवा कर कन्या के अन्तःपुर में प्रवेश करवा दूंगा। परन्तु यह समाचार आप राजकुमारी अवन्तिसुन्दरी से किसी सखी के द्वारा पहले ही कहलवा दें।

संस्कृत–व्याख्या—विद्येश्वरः=ऐन्द्रजालिकः, लज्जाभिरामं=लज्जया सुन्दरम्, राजकुमारमुखं=राजवाहनलपनम्, अभिवीक्ष्य=विलोक्य, विरचित-मन्दहासः=कृतमन्दहास्यव्यापारः, व्याजहार=उवाच, देव=राजन्, भव-दनुचरे=तव सेवके, मयि=विद्येश्वरे, तिष्ठति=वर्तमाने सति, तव=ते, किं, कार्यम्=मरणीयम्, असाध्यं=दुःसाध्यम्, अस्ति=वर्तते। अहम्=विद्येश्वरः, इन्द्रजालविद्यया=इन्द्रजालविज्ञानेन, मालवेन्द्रं=मानसारम्, मोहयन्=वशी-कुर्वन्, पौरजन समक्षमेव=नागरिकजनसम्मुखमेव, तत्तनयापरिणयं=मानसार-सुताविवाहम्, रचयित्वा=कारयित्वा, कन्यान्तःपुरप्रवेशं=सुतान्तःपुरप्रवेशं, कारयिष्यामि, इति=एवं, एषः वृत्तान्तः=अयं उदन्तः, राजकन्यकायै=राजकुमार्यै, सखीमुखेन=साखीद्वारा, पूर्वमेव=आदावेव, कथयितव्यः=सूचयितव्यः, इति।

टिप्पणी––लज्जाभिरामम्–लज्जया अभिरामम् (तत्पुरुष)। विरचित-मन्दहासः–विरचितः मन्दः हासः येन सः (बहुव्रीहि)। तत्तनयापरिणयं–तस्य तनयायाः परिणयः तम् (तत्पुरुष)। कन्यान्तःपुरप्रवेशम्–कन्यायाः अन्तःपुरे प्रवेशं (तत्पुरुष)।

संतुष्टमना महीपतिरनिमित्तं मित्रं प्रकटीकृतकृत्रिमक्रियापाटवं विप्रलम्भ-कृत्रिमप्रेमसहजसौहार्दवेदिनं तं विद्येश्वरं सबहुमानं विससर्ज।

अथ राजवाहनो विद्येश्वरस्य क्रियापाटवेन फलितमिव मनोरथं मान्य-मानः पुष्पोद्भवेन सह स्वमन्दिरमुपेत्य सादरं बालचन्द्रिकामुखेन निजवल्ल-भायै महीसुरक्रियमाणं संगमोपायं वेदयित्वा कौतुकाकृष्टहृदयः 'कथमिमां क्षपां

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षपयामि' इति चिन्तयन् अतिष्ठत् ।

हिन्दी-अनुवाद– प्रसन्नचित्तवाले राजवाहन ने अकारण मित्र बने इन्द्रजाल विद्या में चतुरता वाले और प्रतारण (छलना), कृत्रिम प्रेम और स्वाभाविक स्नेह को जानने वाले उस विद्येश्वर को सम्मान पूर्वक बिदा किया ।

इसके अनन्तर विद्येश्वर के कौशल से अपने मनोरथ को पूर्ण समझता हुआ राजवाहन पुष्पोद्भव के साथ अपने निवास-स्थान पर आकर बालचन्द्रिका के द्वारा ब्राह्मण के द्वारा बताई गई मिलन की तरकीब को अपनी प्रियतमा (अवन्तिसुन्दरी) को कहलवा कर स्वयं उत्कण्ठित हृदय से (इस) रात्रि को कैसे बिताऊँ इस चिन्ता में पड़ गया ।

संस्कृत-व्याख्या–सन्तुष्टमनाः=प्रसन्नचेताः, महीपतिः=राजवाहनः, अनिमित्तं=अकारणम, मित्रं=सुहृदम्,प्रकटीकृतकृत्रिमक्रियापाटवं=प्रकाशीकृतेन्द्र-जालविद्याचातुर्यम्, विप्रलम्भकृत्रिमप्रेमसहजसौहार्दवेदिनं= प्रतारणाकपटपूर्ण-स्नेहस्वाभाविकमित्रतावेदिनम्, तं विद्येश्वरं=पूर्वोक्तं, सबहुमानं=सम्मानपूर्व-कम्, विससर्ज=विसर्जयामास । अथ=अनन्तरम्, राजवाहनः=राजकुमारः, विद्येश्वरस्य=ऐन्द्रजालिकस्य, क्रियापाटवेन=कार्यकौशलेन,फलितमिव=सिद्ध-मिव, मनोरथं=अभिलाषम्, मन्यमानः=जानन्, पुष्पोद्भवेन=एतदाख्येन, सह=साकम्, स्वमन्दिरं=निजभवनम्, उपेत्य=प्राप्य, सादरं=आदरेण सहितम्, बालचन्द्रिकामुखेन=बालचन्द्रिकाद्वारा, निजवल्लभायै=स्वप्रियायै, महीसुरक्रियमाणं=ब्राह्मणविधीयमानम्, सङ्गमोपायं=मिलनोपायम् वेद - यित्वा=आवेद्य, कौतुकाकृष्टहृदयः=कुतूहलाकृष्टचित्तः, इमां=एताम्, क्षपां= रात्रिम्, कथं=केन प्रकारेण, क्षपयामि,=यापयामि, इति=एवम्, चिन्तयन्= विचारयन्, अतिष्ठत्=स्थितोऽभवत् ।

टिप्पणी–सन्तुष्टमनाः–सन्तुष्टं मनः यस्य सः (बहुव्रीहि) । प्रकटी······ पाटवम्–प्रकटीकृतं कृत्रिमक्रियायां पाटवं येन तम् (बहुव्रीहि) । विप्रलम्भ······ वेदिनम्–विप्रलम्भः कृत्रिमप्रेम सहजसौहार्दं च तानि वेत्ति इति तम् । क्रिया-पाटवेन--क्रियायाः पाटवेन (तत्पुरुष) । वेदयित्वा–विद्+णिच्–क्त्वा । कौतु-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काकृष्टहृदयः—कौतुकेन आकृष्टं हृदयं सः (बहुव्रीहि) । यहाँ अनुप्रास अलंकार है ।

परेद्युः प्रभाते विद्येश्वरो रसभावरीतिगतिचतुरस्तादृशेन महता निजपरिजनेन सह राजभवनद्वारान्तिकमुपेत्य दौवारिकनिवेदितनिजवृत्तान्तः सहसोपगम्य सप्रणामम् 'ऐन्द्रजालिकः समागतः' इति द्वाःस्थैर्विज्ञापितेन तद्दर्शनकुतूहलाविष्टेन समुत्सुकावरोधसहितेन मालवेन्द्रेण समाहूयमानो विद्येश्वरः कक्षान्तरं प्रविश्य सविनयमाशिषं दत्त्वा, तदनुज्ञात, परिजनताड्यमानेषु वाद्येषु नदत्सु, गायकीषु मदकलकोकिलामञ्जुलध्वनिषु, समधिकरागरञ्जितसामाजिकमनोवृत्तिषु पिच्छिकाभ्रमणेषु सपरिवारं परिवृढं (त्तं) भ्रामयन्मुकुलितनयनः क्षणमतिष्ठत् ।

हिन्दी-अनुवाद—दूसरे दिन प्रातःकाल ही रस-भाव और इन्द्रजाल की क्रियायों में चतुर उस विद्येश्वर ने अपने साथियों के साथ राजभवन के द्वार के समीप आकर द्वारपाल के द्वारा अपने वृत्तान्त को पहुँचवाया । (द्वारपाल ने मानसार के) शीघ्र ही समीप जाकर प्रणामपूर्वक निवेदन किया कि कोई ऐन्द्रजालिक आया हुआ है । इस प्रकार द्वारपालों के द्वारा निवेदित उस ऐन्द्रजालिक के दर्शन के कौतूहल से समुत्कण्ठित अन्तःपुर के समीप मालवेन्द्र मानसार के द्वारा बुलाये गए विद्येश्वर ने दूसरे कमरे के भीतर प्रवेश कर विनयपूर्वक आशीर्वाद देकर महाराज के द्वारा आज्ञा प्राप्त कर परिजनों के द्वारा प्रताडित किये गए बाजाओं के बजने पर, मदमत्त कोकिलों की मधुर ध्वनियों वाली गायिकाओं के गाने पर, दर्शकों की दृष्टि को अपनी ओर अत्यधिक अनुराग से आकृष्ट करते हुये, मोर पंखों के मोरछले को घुमाते हुये राजा मानसार को परिवार के सहित भ्रम में डालते हुए क्षण भर के लिए आँखे बन्दकर बैठ गया ।

संस्कृत-व्याख्या—परेद्युः=परस्मिन् दिने, प्रभाते=प्रातःकाले, विद्येश्वरः=ऐन्द्रजालिकः, रसभावरीतिगतिचतुरः = श्रृंगारादिरसभाव-इन्द्रजालक्रिया-, कुशलः, तादृशेन=स्वानुरूपेण, महता=दीर्घेण, निजपरिजनेन=स्ववर्गेण, सह, राजभवनद्वारान्तिकं =राजसदनद्वारसमीपम्, उपेत्य=प्राप्य, दौवारिकनिवेदितनिजवृत्तान्तः =द्वारपालकथितस्वोदन्तः सहसा=झटित, उपगम्य=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपसृत्य, सप्रणामं=प्रणामेन सहितम्, ऐन्द्रजालिक:=विद्येश्वर:, समागत:= समायात:, इति, द्वा:स्थै:=द्वारपालै:, विज्ञापितेन=निवेदितेन, तद्दर्शनकुतूहलाविष्टेन=तदवलोकनकौतूहलाविष्टेन, समुत्सुकावरोधसहितेन=समुत्कण्ठितान्त:पुरयुक्तेन, मालवेन्द्रेण = मानसारेण, समाहूयमान: = आकार्यमाण:, विद्येश्वर: = ऐन्द्रजालिक:, कक्षान्तरं=प्रकोष्ठान्तरम्, प्रविश्य, सविनयं=विनयेन-सहितम्, आशिषं दत्वा=आशीर्वाद कथयित्वा, तदनुज्ञात:=मानसारादिष्ट:, परिजनताड्यमानेषु =परिचारकवर्गाहतेषु, वाद्येषु=वीणादिषु, नदत्सु= ध्वनत्सु, गायकीषु=गायिकास्त्रीषु, मदकलकोकिलामंजुलध्वनिषु= मदमत्त-कोकिलामनोज्ञध्वनिषु, समधिकरागरञ्जितसामाजिकमनोवृत्तिषु=अत्यधिकानुरागाकृष्टसभ्यमानसिकव्यापारेषु, पिच्छिकाभ्रमणेषु = मयूरबर्हविघूर्णनेषु, सपरिवारं=सपरिकरम् परिवृढम्=राजानम्, भ्रामयन्=घूर्णयन्,' मुकुलितनयन: =मुद्रितनेत्र:, क्षणं=मूहूर्तम्, अतिष्ठत् ।

टिप्पणी--रस ··· ···चतुर:–रसा: भावा: रीतिगतयश्चेति तासु चतुर: (तत्पुरुष) । उपेत्य–उप+इ+क्त्वा→ल्यप् । दौवारिक···वृत्तान्त:–दौवारिकेण निवेदित: निजवृत्तान्त: येन स: (बहुव्रीहि) । तद्दर्शन–कुतूहलाविष्टेन–तस्य दर्शने यत् कुतूहलं तेन आविष्ट: तेन । मदध्वनिषु–मदकलानां कोकिलानाम् इव मञ्जुल: ध्वनि: यासां तासु । समधिक······वृत्तिषु–समधिकेन रागेण रञ्जिता सामाजिकानां मनोवृत्ति: येन तेषु । परिवृढम्–राजा को । यहाँ अनुप्रास है ।

तदनु विषमं विषमुल्वणं वमन्त: फणालङ्करणा रत्नराजिनीराजितराजमन्दिराभोगा भोगिनो भयं जनयन्तो निश्चेरु: । गृध्राश्च बहवस्तुण्डैरहिपतीनादाय दिवि समचरन् ।

ततोऽग्रजन्मा नरसिंहस्य हिरण्यकशिपोर्दैत्येश्वरस्य विदारणमभिनीय महाश्चर्यान्वितं राजानमभाषत--'राजन् अवसानसमये भवता शुभसूचकं द्रष्टमुचितम् । तत: कल्याणपरम्परावाप्तये भवदात्मजाकारायास्तरुण्या निखिललक्षणोपेतस्य राजनन्दनस्य विवाह: कार्य:' इति ।

हिन्दी-अनुवाद--तत्पश्चात् भयंकर और तीव्र विष को उगलते हुए बड़े बड़े फनों वाले अपने सिर के रत्नों से राज-मन्दिर के विस्तार को प्रकाशित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर देने वाले और भय को उत्पन्न कर देने वाले साँप विचरण करने लगे। और अनेक गीध अपने मुखों से बड़े-बड़े साँपों को पकड़ कर आकाश में उड़ चले।

तत्पश्चात् उस ब्राह्मण ने भगवान् नृसिंह के द्वारा दैत्यराज हिरण्यकशिपु की छाती को नखों से फाड़ने के अभिनय को दिखाकर अत्यन्त आश्चर्य से युक्त राजा से बोला—हे राजन् खेल के अन्त में आपको शुभसूचक दृश्य देखना उचित है। इसलिए कल्याण परम्परा की प्राप्ति के लिए आपकी कन्या के समान एक युवती का विवाह समस्त राजलक्षणों से युक्त एक राजकुमार से करवाऊँगा।

संस्कृत-व्याख्या—तदनु=तत्पश्चात्, विषमं=भयंकरम्, उल्वणं=तीव्रम्, विषं=गरलम्, वमन्तः=उद्गिरतः, फणालेंकरणः=स्फटाभूषणः, रत्नराजिनी-राजितराजमन्दिराभोगः = मणिसमूहप्रकाशीकृतराजभवनप्रदेशः, भोगिनः= सर्पाः, भयं=भीतिम्, जनयन्तः=प्रकटयन्तः, निश्चेरुः=निर्गत्य चेरुः। गृध्राः= पक्षिविशेषाः च, बहवः=अनेके, तुण्डैः=मुखैः, अहिपतीन्=सर्पान्, आदाय= गृहीत्वा, दिवि=आकाशे, समचरन्=संचेरुः। ततः=अनन्तरम्, अग्रजन्मा= विप्रः, नरसिंहस्य=विष्णोः, हिरण्यकशिपोः=एतदाख्यस्य, दैत्येश्वरस्य= राक्षसाधिपतेः, विदारणं=वक्षःस्थलभेदनम्, अभिनीय=प्रदर्श्य महाश्चर्या-न्वितं=अत्याश्चर्ययुक्तम्, राजानं=नृपम्, अभाषत=अवदत्, राजन्=नृप, अवसानसमये=इन्द्रजालसमाप्तौ, भवता=त्वया, शुभसूचकं=मंगलजनकम्, द्रष्टुम्, उचितं=समुचितम्। ततः=तत्पश्चात्, कल्याणपरम्परावाप्तये= शुभपरम्पराप्राप्तये, भवदात्मजाकारायाः=श्रीमत्कन्याकारायाः, तरुण्याः= युवत्याः, निखिललक्षणोपेतस्य=समस्तलक्षणयुक्तस्य, राजनन्दनस्यः=राज-सुतस्य, विवाहः=परिणयः, कार्यः=करणीयः, इति।

टिप्पणी—उल्वणं=तीव्र। वमन्तः—वम्+शतृ; प्र० ब० व०। फणालरणा—फणाः अलङ्करणं येषां ते (बहुव्रीहि)। रत्न·····भोगाः—रत्नराजिभिः नीरा-जितः राजमन्दिरस्य आभोगः यैः ते (बहुव्रीहि)। आभोग=परिपूर्णता। भोगिनः=सर्प। तुण्डैः=मुखों के द्वारा। अग्रजन्मा=ब्राह्मण। कल्याण ·····प्राप्तये—कल्याणपरम्परायाः प्राप्तये (तत्पुरुष)। भवदात्मजाकारायाः—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भवतः आत्मजाया आकारः इव आकारः यस्याः, तस्याः । निखिललक्षणोपेतस्य–निखिलैः लक्षणैः उपेतस्य (तत्पुरुष) । विवाह–वि + वह् + घञ् ।

तदवलोकनकुतूहलेन महीपालेनानुज्ञातः सः संकल्पितार्थसिद्धिसंभावनसम्फुल्लवदनः सकलमोहजनकमञ्जनं लोचनयोर्निक्षिप्य परितो व्यलोकयत् सर्वेषु "तदैन्द्रजालिकमेव कर्म" इति साद्भुतं पश्यत्सु रागपल्लवितहृदयेन राजवाहनेन पूर्वसङ्केतसमागतामनेकभूषणभूषिताङ्गीमवतिसुन्दरीं वैवाहिकमन्त्रतन्त्रनैपुण्येनाग्नि साक्षीकृत्य संयोजयामास ।

हिन्दी-अनुवाद–उस दृश्य के देखने के कौतूहल से राजा के द्वारा आदिष्ट, संकल्पित मनोरथ की सिद्धि की सम्भावना से प्रसन्नमुख वाले उसने सभी लोगों को मोहित करने वाले अञ्जन को अपने नेत्रों में लगाकर चारों ओर देखा । सभी लोगों के द्वारा "यह ऐन्द्रजालिक का ही कर्म है" इस प्रकार आश्चर्यपूर्वक देखे जाने पर पूर्व संकेत के अनुसार आई हुई अनेक प्रकार के आभूषणों से विभूषित अवन्तिसुन्दरी को विवाह सम्बन्धी मन्त्रों को कुशलता पूर्वक उच्चारण करके और अग्नि को साक्षी बनाकर अनुराग से प्रफुल्लित हृदय वाले राजवाहन के साथ मिला दिया ।

संस्कृत-व्याख्या––तदवलोकनकुतूहलेन=तस्य दर्शनकौतुकेन, महीपालेन= भूपालेन, अनुज्ञातः=आदिष्टः, सः, संकल्पितार्थसिद्धिसम्भावनसम्फुल्लवदनः= अभीप्सितार्थसिद्धिसम्भावनविकसितमुखः, सकलमोहजनकम्= समस्तप्रेक्षकगणभ्रमोत्पादकम्, अञ्जनं=कज्जलम्, लोचनयोः=नयनयोः, निक्षिप्य=संयोज्य, परितः=सर्वत्र, व्यलोकयत्=अपश्यत् । सर्वेषु, तत्=कर्म, ऐन्द्रजालिकमेव= मायिकमेव, कर्म, इति, साद्भुतं=साश्चर्यम्, पश्यत्सु= विलोकयत्सु, रागपल्लवितहृदयेन= अनुरागविकसितचेतसा, राजवाहनेन=एतदाख्येन, पूर्वसङ्केतसमागताम्=पूर्वसूचनानुसारेण उपस्थिताम्, अनेकभूषणभूषिताङ्गीम्=विविधाभूषणसुशोभिताङ्गीम्, अवन्तिसुन्दरीम्=राजकुमारीम्, वैवाहिकमन्त्रतन्त्रनैपुण्येन=विवाहावसरसमुचितमन्त्रलोकाचारकौशलेन, अग्निं=वह्निम्, साक्षीकृत्य=साक्षिणं कृत्वा, संयोजयामास=सम्यक् योजयामास ।

टिप्पणी––तदवलोकनकुतूहलेन–तस्य अवलोकनेन यत् कुतूहलम्, तेन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संकल्पितार्थ··· ·· · ···वदनः—संकल्पितार्थस्य सिद्धेः सम्भावनेन सम्फुल्लं वदनं यस्य सः (बहुव्रीहि)। निक्षिप्य–नि + क्षिप् + क्त्वा → ल्यप्। रागपल्लवित-हृदयेन–रागेन पल्लवितं हृदयं यस्य तेन (बहुव्रीहि)। अनेकभूषणभूषिताङ्गीम्= अनेकैः भूषणैः भूषितानि अङ्गानिः यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि)। वैवाहिक······ नैपुण्येन वैवाहिकमन्त्रतन्त्रेषु नैपुण्येन (तत्पुरुष)। शब्दों का माधुर्य सुन्दर एवं चमत्कारी है।

क्रियावसाने सति 'इन्द्रजालपुरुषाः सर्वे गच्छन्तु भवन्तः' इति द्विजन्मनोच्चैरुच्यमाने सर्वे मायामानवा यथायथमन्तर्भावं गताः। राजवाहनोऽपि पूर्वकल्पितेन गूढोपायचातुर्येणैन्द्रजालिकपुरुषवत्कन्यान्तःपुरं विवेश। मालवेन्द्रोऽपि तदद्भुतं मन्यमानस्तस्मै वाडवाय प्रचुरतरं धनं दत्वा विद्येश्वरम् 'इदानीं साधय' इति विसृज्य स्वयमन्तर्मंदिरं जगाम। ततोऽवन्तिसुन्दरी प्रियसहचरीसमेता, वल्लभोपेता, सुन्दरं मन्दिरं ययौ।

हिन्दी-अनुवाद—कार्य के समाप्त होने पर 'इन्द्रजालपुरुष, आप सब चले जायें, इस प्रकार ब्राह्मण विद्येश्वर के द्वारा तेजी से कहने पर सभी माया पुरुष यथाक्रम अदृश्य हो गये। राजवाहन भी पूर्व निश्चय के अनुसार छिपने की कला में प्रवीणता के द्वारा मायामानव की तरह कन्यान्तःपुर में चला गया। मालवेन्द्र मानसार भी उस सबको अद्भुत मानते हुए उस ब्राह्मण को अत्यधिक धन देकर 'अब तुम जाओ' इस प्रकार विद्येश्वर को विदाकर स्वयं महल के भीतर चला गया। तत्पश्चात् अवन्तिसुन्दरी अपनी प्रियसखियों के सहित पति के साथ अपने सुन्दर भवन में आ पहुँची।

संस्कृत-व्याख्या—क्रियावसाने = कार्यसमाप्ते, सति, इन्द्रजालपुरुषाः = मायापुरुषाः, भवन्तः = श्रीमन्तः, सर्वे, गच्छन्तु = व्रजन्तु, इति = एवम्, द्विजन्मना = मायिकेन, उच्चैः = तारस्वरेण, उच्यमाने = कथ्यमाने, सर्वे, मायामानवाः = मायानिर्मितपुरुषाः, यथायथम् = यथाक्रमम्, अन्तर्भावं = तिरोभावम्, गताः = प्राप्ताः, राजवाहनोऽपि = राजकुमारोऽपि, पूर्वकल्पितेन = पूर्वनिश्चितेन, गूढोपायचातुर्येण = प्रच्छन्नसाधनकौशलेन, ऐन्द्रजालिकपुरुषवत् = मायिकमनुष्यवत्, कन्यान्तःपुरम् = कन्यकावरोधगृहम्, विवेश = प्रविवेश। मालवे-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh